देवी रहस्य

देवी रहस्य

शंकराचार्यांश ब्रह्मानंद अक्षयरुद्र

ॐ नमश्चण्डिकायै

या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

नमो नमस्ते सत्याय

सत्यपूर्णाय शुण्डिने।।

एकदन्ताय शुद्धाय

सुमुखाय नमो नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं

सरस्वत्यै बुधजनन्यै स्वाहा

ऊँ नमः शिवायै

हे भुवनेशि ! माम् पाही

हे पराम्बिका ! मैं पूर्णतः शून्य हूँ मेरे पास कोई भी मत मतान्तर नहीं न ही मैं वक्ता हूँ न ही मौनी बस आपके ध्यान को ही सब कुछ मानता हूँ ज्ञान भक्ति और वैराग्य आदि का यथार्थ विज्ञान क्या है यह भलीभाँति नहीं जानता क्योंकि जो बात सुनने में और पढ़ने में आती है वही मैने श्रवण की और वही अध्ययन किया अब उनका यथार्थ मर्म जो भी हो ये तो आप ही जानों। दो प्रकार के वक्ता (जीव भावी या ब्रह्मभावी) तो बोलकर या रचना करके चले जाते हैं पता ही नहीं वह बात वक्ता की सिद्ध हैं या वह स्वयं अनभिज्ञ है कुछ द्वैत मत के पुजारी हैं तो कुछ अद्वैत मत के; जिसको जो भी अच्छा लगे बस उसी को मानने लगता है ऐसे में एक का निर्णय कहाँ तक सत्य सिद्ध हो ?

और कुछ तो साकार में ही लड़ते और झगड़ते रहते हैं।

अर्थात कुछेक एक ही श्री नारायण के साकार रूप को परब्रह्म मानकर अन्य रूपों को दास समझते रहते हैं तो कोई महारुद्र जी को परब्रह्म मानकर अन्य रूपों को दास समझते है इस प्रकार इस संसार में यही सब कुछ चलता रहता है सम्यक् मौन साधना तो वे इसी प्रपंच के कारण कर ही नहीं पाते । हे देवी ! कोई चाहे किसी भी रूप को परब्रह्मस्वरूप मान कर पूजे मैं तो केवल हे पराम्बा आपका ही रहूँगा। आपका ही मेरे अंतःकरण में समाविष्ट के लिए आवाहन करता हूँ ।

मेरा मन, बुद्धि और चित्त सदा आपमें ही लगा रहे। मणिद्वीप निवासिनी हे भुवनेश्वरी ! मैं अब आपके सिवाय और कुछ नहीं जानता।

- मेरा आत्मा आप
- मेरा प्राण आप और
- यह तन भी आप ही हो।
- मेरी तो आप हो ही हे माँ !

मैं रात दिन आपकी ही प्रसन्नता के लिए दुर्गा दुर्गा षोडशी षोडशी ललिता ललिता और शताक्षी शताक्षी जपता रहूँ। हे देवी आप ही महालक्ष्मी और महासरस्ती हो आप ही योगनिद्रा महाकाली हैं बस आप मुझसे सदा ही प्रसन्न रहें। मैं आपके उद्देश्य से ही देवी स्वधा स्वाहा और दक्षिणा का स्मरण करता हूँ आपके लिये ही मैं जप तप व्रत–उपवास आदि करता हूँ आपके लिए ही मेरी हर क्रिया है। हे भगवती ! इस अक्षयरुद्र पर और इसके परिवार पर (वसुधैव कुटुंबकम से सभी नर नारियों पर) सदा कृपा करें। आप ही एकमात्र गुरु हो आपने जिस सम्यक् ज्ञान को हिमाचल को प्रदान किया यदि वही अपरोक्ष न हुआ तो कृपया अपरोक्ष कर दीजिए क्योंकि यही अपरोक्ष ही निर्वाण और परमपद है।।......

शंकराचार्यांश ब्रह्मानंद अक्षयरुद्र

5 जून 2024

समर्पण

श्रीगुरुदेव नीलकंठ, श्रीगणपति, कुलदेवी जया नामक श्रीदुर्गा, महाविद्याओं (श्री काली जो कृष्ण व रक्त भेद से क्रमशः दक्षिणाऔर सुन्दरी नाम से विख्यात हैं, श्री तारा जिनको तारने वाली कहा है जो नील सरस्वती भी कहलाती हैं और अतिशीघ्र वाक् को सिद्ध करती हैं इनकी कृपा भी सभी देवियों की भाँति धन्य है, कैंची और खड्ग से ये भक्तों के शत्रु समूह को छिन्न–भिन्न कर डालती हैं, तीसरी महाविद्या श्रीछिन्नमस्ता अर्थात वज्रवेरोचनी, चौथी षोडशी अर्थात श्री त्रिपुर सुंदरी जो ललिता ही हैं । पाँचवी अक्षयरुद्रेश्वरी अर्थात अक्षयरुद्र की इष्ट श्रीभुवनेश्वरी जिनका बीज ह्रीं हैं अर्थात जो श्रीसदाशिव जी की प्रिय वनिता है। छटवीं श्रीत्रिपुराभैरवी, (जो परम सौम्य ही हैं जिनके हाथों में पुस्तक और माला सदा रहती है), सातवीं महाविद्या श्री धूम्रा अर्थात श्रीधूमावती अर्थात उग्रतारा इन्होनें ही उग्र चण्डिका को प्रकट किया था। स्वतंत्र तंत्र के अनुसार जब सति योगाग्नि से देहान्त को प्राप्त हुई तब हवन कुण्ड से धुँआ निकला, उसी धुएं से उनका प्रकट हुआ। इन धूमावती की कृपा से रोग नष्ट होते हैं लोग मारण प्रयोग के लिए भी इनको पुकारते हैं। वैसे ये देवी शान्त और स्थितप्रज्ञ हैं। आठवीं श्रीबगलामुखी (पीताम्बरा) हैं और नवीं महाविद्या शिव के अवतार मतंग की शक्ति होने से मातंगी कहलाई। ये श्याम वर्ण की हैं सप्तशती के सप्तम अध्याय में इनका ध्यान है और 10 वीं महाविद्या श्रीकमला है कमलगट्टे की माला से इनका जप करने पर ये अतिशीघ्र धन देती हैं इन्द्र ने इनकी ही स्तुति से पुनः धन और ऐश्वर्य पाया।ये वैष्णवी शक्ति हैं और शैव मतान्तर से एक बार शिव जी ने मुख्य रूप से 10 अवतार लिये थे उनमें एक का नाम कमल था इस कारण उनकी शक्ति को ही कमला कहा गया। शक्ति लहरी और भैरव यामल में इनकी सेवा की विधि विस्तार से दी गई है।) सभी मातृकाओं का समूह ।(माहेश्वरी, वैष्णवी, नारसिंही, वैष्णवी, कौमारी, वाराही, ब्राह्मी और काली तथा..... नरसिंह जी व रुद्रदेव से प्रकट सभी मातृकाओं), नवशक्तियों, "शिवदूती, चामुण्डा और सात मातृकाएं ब्रह्माणी, वैष्णवी, माहेश्वरी, इन्द्राणी, कौमारी, वाराही और नारसिंही। "इनको कुछ ऋषि नवशक्तियाँ कहते हैं और कुछ विद्वान जन प्रभा, माया, जया, सूक्ष्मा, विशुद्धा, नंदिनी, सुप्रभा, विजया और सर्वसिद्धिदा इनको नौ शक्तियाँ कहते हैं तथा कुछ मनीषिगण नवदुर्गा की नौ दुर्गाओं अर्थात नव देवियों शैलपुत्री ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघंटा, कूष्माण्डा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री को नवशक्तियों के रूप में स्वीकार करते हैं पर तत्वतः ये भिन्न–भिन्न न होकर एक ही हैं), पंचक प्रकृति (पार्वती, राधा, सीता अर्थात लक्ष्मी, शारदा और गायत्री) और इनके अवतारों; कलाओं, कलांशाओं (षष्ठी, रिद्धि सिद्धि, धरा, गंगा, यमुना विरजा, गौमती, सुरभि, मनसा, नर्मदा, स्वाहा, स्वधा, दक्षिणा आदि), सभी ब्रह्मनिष्ठ, समस्त संतों, त्रिदेव, सप्तऋषि, श्री नंदीकेश्वर से वर्तमान व्यास जी की गुरुपरंपरा, देवगण, हनुमानजी भैरव जी, सभी शिवगणों,, माता पिता और तीर्थ स्थलों की कृपा से इस महाग्रंथ में शक्ति का संचार हुआ है ....इन सभी की कृपा से यह देवी रहस्य महाग्रंथ भाग प्रथम आप भक्तों के कर कमलों में आ सका अतः सभी देवीय रूपों को नमन।

इन गौरी आदि पंचक प्रकृतियों का लाड़ तो हम सदा से ही पा रहे थे पर मातृकाओं व महाविद्याओं के रहस्य व कृपा बड़ी देर से हुई इन सभी की कृपा ही विशेष अभ्युदय का परिणाम है। मणिद्वीप और सदाशिव लोक, वैकुण्ठ, साकेत, गोलोक, महेश्वर और रुद्र लोक आदि सभी लोकों में विराजमान सभी भक्त समुदायों के आशीर्वाद के लिए आभार । भगवान कार्तिकेय, बटुक, व्यपोहन स्तोत्र में विराजमान प्रत्येक नाम रूप और जो नाम विस्मृत हो रहा हो उन नाम रूप को भी हम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं ।

अतः इन सभी के अनुग्रह से आया यह देवी रहस्य महाग्रंथ श्री साम्बसदाशिव जी को समर्पित है। यह शक्ति रहस्य की गंगा ही है जिसमें चण्डी और चामुण्डा आदि रूपों को ही कलिकाल में रक्षा कवच बताया है।

जब पाप और अत्याचार बढ़ते हैं तब शक्तियों का समुदाय ही विश्व की रक्षा करता है। अतः इन सभी रक्षक विद्याओं को नमस्कार बार बार नमस्कार।

अनुक्रमणिका

1. हे पराम्बा! आपको नमस्कार है।

त्रिदेवों को शक्ति देने वाली, भक्तों के लिए कल्पवृक्ष और भवसागर से मुक्ति देने वाली हे महामाया! हे सदाशिववनिता भुवनेश्वरी ! हे ललिता ! आपको नमस्कार है। हे पराम्बा ! शक्ति और ज्ञान के बिना इस ब्रह्माण्ड में कुछ भी संभव

नहीं आप ही शक्ति , आप ही ज्ञान और आप ही सब कुछ हो । आप ही वायु रूप में मनुष्यों के प्राण हो। उसकी क्षुधा और पिपासा शान्त करने वाली आप ही अन्न और जल रूप हो हे मणिद्वीप निवासिनी ! हे महाकौशिकी और हे योगनिद्रा आपको बार बार नमस्कार है। आप ही अष्ट भैरवों की शक्ति, आप ही योगिनियाँ और मातृकाएं हो आपका बल पराक्रम अतुलनीय है जिसका भान त्रिदेवों को भी नहीं आप ही भाव, अभाव, शान्ति और आनंद हो आप ही अपरोक्ष ज्ञान देकर अपनी समता देकर कृतार्थ करती हो आपका वात्सल्य और आपकी ममता धन्य है हे अक्षयरुद्रेश्वरी ! हे त्रयी बीज (ऐं ह्रीं क्लीं) हो आप ही सभी शक्तिपीठों में विराजमान पराम्बा विशालाक्षी, हरसिद्धि, ज्वालामुखी, सुगंधा, हिंगुला व कामाख्या हो आपको नमस्कार है। आप ही विमला, देवगर्भा, काली, दंतकाली, जयंती और गुह्येश्वरी हो हे भवानी आपको नमस्कार है ।

आप ही धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष देने वाली पाटन देवी, विजयासन, जया, नैना, त्रिपुरमालिनी, गायत्री, वरारोहा, लिंगधारिणी, रम्भा, राधा, उत्पलाक्षी और अरुन्धती हो आपको नमस्कार है बार बार नमस्कार है आपके माहात्म्य का वर्णन करने का साहस इस किंकर में नहीं यह तो आपके ही ज्ञान से पल्लवित और पुष्पित हो रहा है। हे उमा आप सदा ही अनुग्रह करती रहें और इस अक्षयरुद्र की बुद्धि पर आपका ही शासन हो यही अभीष्ट कार्य सिद्ध करने की कृपा करें।

आपको पुनः पुनः नमस्कार है। आप ही सभी गुरुओं का गुरुत्व हो उनके ज्ञान का आधार आप ही हो आपको नमस्कार।

जगत्को धारण करनेवाली हे देवी! आप सिद्धा को नमस्कार है। भगवती शिवाको निरन्तर नमस्कार है। मनोरथ पूर्ण करनेवाली आप भगवती दुर्गाको बार– बार नमस्कार है।

आप शिवा और शान्तिदेवीको नमस्कार है। हे मोक्षदायिनि ! आप विद्यास्वरूपिणीको नमस्कार है। हे जगन्माता ! हे शिवे ! आप विश्वव्यापिनी तथा जगज्जननी को नमस्कार है । हे देवि ! मैं सगुण प्राणी अपनी बुद्धिसे बहुत प्रकारसे चिन्तन करके भी आप निर्गुणा भगवतीकी गतिको नहीं जान पाता। हे विश्वजननि ! प्रत्यक्ष प्रभाववाली, भक्तोंकी पीड़ा दूर करनेमें तत्पर तथा परम शक्तिस्वरूपा आपकी स्तुति मैं कैसे करूँ ?

आप ही देवी सरस्वती हैं, आप ही बुद्धिरूपसे सबके भीतर विराजमान हैं, आप ही सब प्राणियोंकी विद्या, मति और गति हैं और आप ही सबके मनका नियन्त्रण करती हैं, तब मैं आपकी स्तुति कैसे करूँ ? सर्वव्यापी आत्माके रूपकी भी स्तुति भला कैसे की जा सकती है ।

हे माता मुझे भाषाओं का ज्ञान नहीं न ही मुझे वेदों और उपनिषदों का सम्यक् ज्ञान है बस आपकी ही कृपा कटाक्ष मेरा संबल है हे नारद और सनत्कुमार आदि को भक्ति और वैराग्य देने वाली मुझ पर भी कृपा करो।

2. सत्य घटना

देवी पराशक्ति की कृपा अद्भुत और अद्वितीय है वह सभी मनुष्यों के मनोभाव जानने के कारण अन्तर्यामी कहलाती हैं यह अक्षयरुद्र पहले नास्तिक था और कुतर्क पर कुतर्क करते रहता था इस संदर्भ में यथार्थ व परम सत्य बात आपको हम पहले बता चुके पर देवी माहात्म्य के लिए पुनः अति संक्षिप्त विवरण लिख रहे हैं ।

सलकनपुर जो सीहोर जिला में है उससे जुड़ी दो महान घटनाएं हम आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं इस देवी रहस्य नामक पुस्तक में वे दोनों घटनाक्रम होने से नास्तिकों को भी कुछ होश आयेगा कि देवी या देवता नामक शक्ति होती ही हैं वैसे हमने पहले सामान्य सी बात कही थी कि गर्भ में शरीर बनना और फिर उस शरीर की इंद्रियों में शक्ति आना भी आश्चर्य से कम नहीं और दैहिक स्ट्रक्चर भी आश्चर्य से कम नहीं सोचो अगर गला और मस्तिष्क व मुख भी नीचे होता तथा और उसी मुख के समीप से मल मूत्र निकलने के छिद्र होते तो आप क्या कर लेते , वस्तु पकड़ने के लिए अंगुली दी चलने के लिए तलवे और कान के साथ कर्ण शक्ति भी। अतः उस पराशक्ति को मानना ही पड़ेगा। लेकिन हम भी नहीं मानते थे। क्योंकि बिना चमत्कार के नमस्कार नहीं होता यह सच है।

इस शरीर का रचनाकार सच में बड़ा ही समझदार है भले ही आप मत मानो ।

हमारी नास्तिकता एक सपने ने ही दूर की । यह सपना साधारण सपनों की भाँति नहीं था कि धन या महल दिखा या प्रेमिका से मिलन अथवा विरह हो गया आदि आदि । इसी ब्रह्म मुहूर्त के सपने से हमारे अध्यात्म का श्री गणेश हुआ। यह घटना सलकनपुर की देवी विजयासन से ही संबंधित मान लीजिए क्योंकि इस सपने का फोकस वही आध्यात्मिक केंद्र था।

वैसे हमनें सलकनपुर का इतिहास जानने का प्रयास कभी कोशिश नहीं किया जो आवश्यक है भी नहीं जब सार मिल गया तो विस्तार से क्या प्रायोजन??

अब श्रवण करें – इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश के बाद एक सेमेस्टर हम भोपाल के सुरेन्द्र पैलेस में हॉस्टल में रहे पर इंजीनियरिंग कॉलेज से जाने आने में दो घंटे नष्ट हो रहे थे तथा कॉलेज बस का चार्ज भी व्यर्थ जा रहा था क्योंकि सीहोर सिटी से कॉलेज समीप ही था । अतः हम सीहोर में शिफ्ट हो गए आसपास में और भी स्टूडेंट्स थे कुछ मेकेनिकल और कुछ इलेक्ट्रॉनिक्स के । हमारी ब्रांच सीएसई के भी थे पर हम एकांतवास ही पसंद करते थे।अतः त्यागी बिल्डिंग में एक रूम ले लिया।

एक बार जब हम त्यागी बिल्डिंग सीहोर में ही कुछ लोगों से इंजीनियरिंग और वैज्ञानिक पक्ष के कुअहंकार में नास्तिकपने की बात कर रहे थे नवरात्रव्रत का समय ही चल रहा था। तब देवी कुलकुला (सीहोर इंग्लिश पुरा के निकट एक दुर्गा मंदिर) जी के समीप कुछ भक्तों ने हमको अनेक आध्यात्मिक चमत्कारों की बात कही पर हम मात्र यही बोले कि – सब कुछ ढकोसला है जिसे देखा ही नहीं उसकी पूजा हम क्यों करें हम लकीर के फकीर नहीं।

तो कहकर व कुतर्क करते करते सो गए।

शायद भक्तों ने दुआ की होगी या पूर्व जन्म के कुछ पुण्य रहे होंगे इस कारण उसी रात को एक सपना आया जिसमें एक ऐसा नाम लगातार 30–35 बार गूँजा (मधुर स्वर में जैसे कि कोई सुरीला कंठ ही उस शब्द को बार बार उच्चारित कर रहा हो)

जिसको हमनें अपने गुना जिला, भोपाल, ग्वालियर या जहाँ जहाँ पढ़ाई की वहाँ कभी भी नहीं सुना था वह नाम वही था –

(सलकनपुर सलकनपुर सलकनपुर ....)

(सलकनपुर सलकनपुर सलकनपुर ....)

(सलकनपुर सलकनपुर सलकनपुर ....)

(सलकनपुर सलकनपुर सलकनपुर ....)

●●●●●●●●●●●●●●●●●

और नाम के बाद एक गुलाबी रंग की साड़ी और रत्नजड़ित मुकुट पहने एक मनोहर सौन्दर्य से घनीभूत एक महान नारी भी दिखी और सपना टूट गया।

तब हमनें उस बिल्डिंग के किरायेदारों से पूछा कि यह सलकनपुर शब्द क्या है ?

आज तक यह शब्द हमने नहीं सुना । तब वहाँ के विद्यार्थी वर्ग तथा लोगों ने बताया कि –"

यह साधारण शब्द नहीं अपितु एक महान आध्यात्मिक तीर्थ और धाम है जिसकी परमेश्वरी का नाम विजयासन है। सुना है कि रक्त बीज या अन्य असुर के संहार (अर्थात विजय) के बाद देवी पराम्बा को इस स्थान पर देवताओं ने विश्राम करने के लिए आसन दिया था उसी कारण उन दुर्गा जी की संज्ञा विजयासन हुई। वह देवी निश्चित ही आपको पुकार रही हैं और शायद इसी कारण देवी की इच्छा से ही आपने सीहोर इंजीनियरिंग कॉलेज में एडमिशन लिया है और वे बोले कि हम इस नवदुर्गा में जा रहे हैं अतः आप चाहो तो साथ में चल सकते हो। तो हम पहली बार 2002 के आसपास वहाँ गये और उन देवी से कुछ ही मीटर दूर (700–800 मीटर लगभग) एक शिवलिंग के दर्शन भी किये ।

2002–2005 में वह पथ ठीक नहीं था चट्टानों वाला मार्ग था कुछ सीढ़ियाँ अवश्य थी । अब 2024 में वहाँ की स्थिति बहुत बदल गई ऐसा सुना है और देखने के बाद आ गये। इससे हमारा नास्तिकतावाद दूर हो गया क्योंकि ऐसे नाम का सपने में सुनना जो कभी देखा न सुना (और सीहोर जिले में ही मिल भी गया वह धाम) यह किसी अदृश्य शक्ति का ही द्योतक था और फिर वहाँ जाने से हमारा मन अपने आप अध्यात्म की ओर मुख कर गया फिर सोचा कि किस देवता या भगवान को प्रसन्न करें तब शिव जी का भोलापन टी व्ही पर बहुत सुना और एक बार किसी चैनल पर दो तीन भक्तों (हरिकेश , उपमन्यु और गृहपति) की कथा देखी कि वे सब कुछ छोड़कर जंगल भाग गये , खाना पीना भी छोड़ दिया और वहाँ उनको शिव जी ने दर्शन दिये।

बस फिर क्या था ?

हमने भी सोचा अब ईश्वर का होना कन्फर्म हो चुका अतः हमनें सीहोर के बाजार से शिव पुराण खरीद ली यह ग्रंथ ही हमारे जीवन का पहला ग्रंथ था। और परम भक्तों के नाम पुराण में देखकर कन्फर्म कर लिया कि हाँ वे तीनों भक्त (हरिकेश, उपमन्यु और गृहपति) निश्चित ही पहले हुये थे। इस बीच एक मित्र की मृत्यु हो गई जो बहुत ही होनहार था तो हमने भी सोचा कि संसार में लोग नौकरी के लिए ही पढते हैं यदि कठोर परिश्रम कर भी लिया पर 1–2 साल में मर गए तो...........सब कुछ फालतु में गया। सोचकर अब अध्ययन में मन लगना बंद सा हो गया। और संसार को छोडकर सदा के लिए शिवलोक की कामना जाग्रत हो गई। हम इंजीनियरिंग की किताबों को खोलते अवश्य ही थे पर पंचाक्षरी नमः शिवाय मंत्र ही जपते रहते थे पिता और माता को लगता था कि बालक पढ़ रहा है पर यह बालक तो सत्य के दर्शन का इच्छुक हो चुका था अर्थात् हमको शिव के बिना सबकुछ बेकार लगने लगा..... फिर होना क्या था ?

नौ पेपर रुक गए। तो घर वाले और भी चिल्लाते तथा अनेक देवताओं (सिर हिलाकर आने वाले कुछ देवता जो कुछ यथार्थ और कुछ फर्जीबाड़ा भी होता है) को दिखाया हमें कि भूत चिपक गया। अतः झाड़ा फूँकी चालू हुई इसी बीच किसी तथाकथित देवता ने कह डाला कि –"हे बालक ! तुम जिस पाठ को करते हो वह छोड़ दो" ....तब हमें उस समय क्रोध आया और उस देवता को थप्पड़ मार दिया (क्योंकि वह पाठ हमारे गौरीशंकर जी का था) और सेकंड ईयर के बाद पढ़ाई के बीच ही 2005 मई कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को परीक्षा के बहाने से शिव

भक्ति के कारण सलकनपुर के वन में भाग गए। । (दो दिन पहले खाना भी छोड़ दिया था) और वहाँ शायद शाम 7 के आसपास बजे विजयासन देवी के दर्शन किये । घडी या मोबाइल उस समय कुछ भी नही था हमारे पास। उसके बाद और भी अंदर गये जहां एक शिवलिंग था जो पहले भी हमनें देखा था।

बस हमारा जीवन यहाँ से 100 प्रतिशत शिवशक्ति की ओर मुड़ गया ।

(उस वन में जहर और शिवलिंग को लगातार आधा घंटा देखते रहे और रोते रहे ......वहाँ जानवरो के भयंकर शब्द सुनाई दे रहे थे इस तरह वहाँ एक घड़ी बीती। पर लगा कि शिव पुराण की कहानियाँ झूठी है अन्यथा भगवान दर्शन दे देते और सोचा कि दर्शन हो न हो पर हम तो परब्रह्म शिव के लिए मरकर ही रहेंगे। जानवर खा भी गए तो इस विन्ध्याचल पर्वत व देवी के तीर्थ में मरकर शिवलोक तो पहुंच ही जायेंगे वैसे भी घर वाले मात्र पढ पढ पढ पढ ही कहते रहते हैं। हम उधर जाकर करेंगे भी क्या?

इस कारण वापस घर जाने का प्रश्न ही नहीं उठता । अतः पूरा जहर पी गये और फिर... जो कुछ हुआ वह आप सब भक्त जानते ही हो। अतः सार यही है कि ईश्वर पर परम विश्वास करके अपने आपको पूर्णतः समर्पित करके ही जीवन सफल हो सकता है औपचारिक कर्मकाण्ड या औपचारिक पूजा का फल भी औपचारिक ही होता है। उस दिन से आज तक 19 वर्ष हो गए और इस अवधि के बीच में देवी ने हमसे 17 पुस्तकों की रचना करवाई यह देवी रहस्य परम शान्ति दायक 18वाँ महाग्रंथ है उन 17 सालों में हमने औपचारिक पूजा भी करके देखी जिसमें मात्र 15–20 मिनट सुबह और 15–20 मिनट शाम पर इससे हमको कभी भी किसी भी रूप के दर्शन नही हो पाए न ही सकामता पर विशेष धन बल आदि मिला पर जैसे ही 2–2 , 3–3 घण्टे देकर अनुष्ठान किया.......तो जो जो कामना की वह पूर्णतः सिद्ध हुई। अतः औपचारिकता को ही सब कुछ मत मान लेना। यदि औपचारिकता से ही सर्वस्व मिलता तो प्रथम मन्वंतर के नन्हे ध्रुव मथुरा के वन में नही जाते महल के मखमल या डनलप के गद्दे पर ही दर्शन पा लेते और हमें भी

औपचारिक कार्यों से सब कुछ औपचारिक ही होगा। विन्ध्याचल पर्वत के सलकनपुर की ओर रात में जहर पीकर मौत को गले लगाना पड़ा तब जाकर साक्षात्कार हुआ। और सब कुछ औपचारिक रूप से ही होता तो गृहपति, उपमन्यु , हरिकेश आदि को जंगल या तीर्थ में भयंकर तपस्या की जरूरत नहीं होती। मीरा भी वृन्दावन न जाती। पर एक बात सुनें – गृहस्थ पुरुष को 50 तक सामान्य सेवा (या सुबह एकाध घण्टे तथा शाम भी एकाध घंटे) रूप से ही सेवा करना चाहिए उनको मध्यान्ह और अपराह्न काल के 6 घंटे कमाई में ही लगाना चाहिए ताकि गृहस्थाश्रम का योगक्षेम वहन हो सके अन्यथा बाबा जी बन गए तो बच्चों की फीस और बच्चों के विवाह की व्यवस्था कौन करेगा पर शिव पुराण, श्रीमद्देवीभागवत महापुराण, गर्ग संहिता और ब्रह्म वैवर्त पुराण आदि में ऐसे अनेक स्तोत्र हैं जो मात्र 10–10 बार तीन माह तक अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक जपने से ही बहुत कुछ दे डालते हैं। 1000 पाठ से तो भगवान बलभद्र ही अनेक सिद्धों का बाप तक बना डालते हैं और मात्र 30,000 बार देवी की 32 नामावली से महान रक्षा होती है तथा घोर संकटों का नाश हो जाता है साधारण से संकट तो शिवा या शिव जी के सहस्र नाम के 108 बार उच्चारण से ही नष्ट हो जाते हैं और देवी महिषासुर मर्दिनी के पुत्र हनुमान जी के हनुमान चालीसा के शत पाठ से भी संकट दूर हो जाते हैं। और मात्र 12 माला गायत्रीजप की एक वर्ष तक यदि कोई ब्राह्मण या क्षत्रिय वैश्य कर ले तो ऋषित्व मिल जाता है 4 वर्ष तक अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक यही क्रम रहे तो महान महान सिद्धियों का स्वामी गृहस्थ पुरुष भी हो जाता है।

और मात्र 10 माला एक मास से एक मनोकामना पूर्ण हो जाती है। अधिक समय देकर आप पुरश्चरणपूत हो सकते हो पर पर्याप्त धन हो वे ही अपना अधिकांश समय साधना में लगायें अन्यथा आज का वह माहौल नहीं जो पहले था। आजकल तो 60 प्रतिशत पत्नियाँ ऐसे पति को छोड़कर भाग जाती हैं या झूठे केस में फंसा देती है आजकल पतिव्रता नारी और संतोषी संतान नहीं कि आप चाहे कुछ भी करते रहो वे चुपचाप दो वक्त की रोटी खाकर संतुष्ट रह जायेंगे। आजकल उनको सब कुछ चाहिए।

अतः गृहस्थ लोग हिसाब किताब से ही सब कुछ करें पर सकाम भाव की पूजा या अनुष्ठान के लिए 90 दिन तक तो अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक रहना ही होगा। अन्यथा आपको आपके पूर्व जन्म के प्रारब्ध और पाप रुलाते ही रहेंगे या हर सोमवार को या शिववास देखकर रुद्र अभिषेक करवाते रहो। या रक्षा के लिए हर नवमी और चतुर्दशी को सप्तशती का पाठ करते रहो इससे भी सब कुछ प्राप्त होगा।

पर गृहस्थ जीवन के लोग यह जान लें कि पूर्व जन्म के भयंकर पापों का नाश तो करना ही पड़ेगा। अथर्वशीर्ष के 108 पाठ करके मात्र 10 पाठ से भी आप निष्पाप हो सकते हो। पर आत्मिक सुख के लिए आपको देवी गीता से स्थितप्रज्ञ स्थिति लाना ही होगी। यम नियम (सत्य, शौच, अपरिग्रह, स्वाध्याय संतोष, ऋतुकाल पालन आदि) तो गृहस्थ जीवन में भी लागू होते हैं । गृहस्थ जीवन का मतलब स्वतंत्र जीवन नहीं होता। जो गार्हस्थ्य मनुष्य साधन चतुष्टय से संपन्न होता है वही साक्षात् श्री राम सा श्री महारुद्र सा सम्यक् आनंद पा सकता है अन्यथा विश्रांति नहीं मिलेगी। गृहस्थ में थोड़ी–बहुत छूट है पर ऐसा नहीं कि आप विवाह को बलात्कार का लाईसेंस ही समझ लो। और गृहस्थ पुरुष यदि परायी नार और पराये धन को हड़पता है तो भी वह मरकर नरक ही जाता है। यदि मात्र बच्चों को पैदा करके उनको साग सब्जी खिलाने से या धंधा पानी कराने से ही मोक्ष मिलता तो आप पूर्व जन्म में ही मुक्त हो जाते । इस गृहस्थ जीवन में भी पुरुष को गुरुमंत्र की नित्य एक या 10–10 माला जपना ही चाहिए और आप महान हो तो नित्य 21 माला सुबह और 21 माला शाम को। इससे आप पर इतना महान अनुग्रह होगा कि आप कल्पना भी नहीं कर पाओगे। पर 10–10 माला या 5–5 कर लो यही बहुत है आगे अक्षयरुद्र अंशभूतशिव क्या कहे। बस परायी नार की ओर दृष्टिपात मत करना । और रिश्वत मत लेना किसी गरीब की बद्दुआ मत लेना। और एक महत्वपूर्ण बात यह है कि – पूर्व जन्म के पाप से ही अकाल मृत्यु होती है अतः दीर्घायु के लिए अपनी साधना में एक मृत्युञ्जय स्तोत्र शामिल अवश्य कर लेना। श्रीगुरु, श्रीगणेश, श्रीबटुक, आठ चिरंजीवियों और श्री अमृता देवी व भगवान मृत्युञ्जय जी की पूजा करके गले में रुद्राक्ष व भस्म धारण करके यह सेवा नित्य करना।

3. धन्य धन्य हे ब्रह्मदेव !

आपकी एक दिन की आयु में ही 14 बार देवताओं की भर्ती हो जाती है। क्योंकि यह देवता वर्ग मात्र एक मन्वन्तर तक अपना कार्य क्षेत्र संभालता है अगले मन्वन्तर में 11 रुद्र व 12 आदित्य, 8 वसु व मरुद्रण आदि इस ब्रह्माण्ड का कार्य नहीं करते अपितु अन्य विशुद्ध अंतःकरण की आत्माएं इन पदों पर आती हैं कुछ कुछ रिपीट भी हो जाती हैं और देवगणों के नाम भी बदल जाते हैं। अगले मन्वन्तर में अदिति नहीं होगी तो आदित्य भी नहीं होंगे । पिछले मन्वन्तर में भी अदिति व दिति नहीं थी इस कारण देव वर्ग दूसरा था। इंद्र वरुण यम जैसे करोड़ो बार पैदा होते और मरते हैं। आप उन देवताओं के पिता(कश्यप आदि) के भी पिता (मरीचि आदि) तथा परम पिता हो । आपके पद पर भविष्य में परम वीर हनुमान जी को ही परम पात्र समझकर बिठाया जायेगा , आप महारुद्र के अंश हनुमान जी, रुद्र के अंश कार्तिकेय और रुद्र के ही अंश गृहपति (अग्नि देव) के द्वारा भी पूजनीय और सेवनीय हो। ये सब देवताओं का समुदाय आपके एक परार्ध की आयु में अनेकों बार समाप्त हो जाता है और आप उन पर शासन करते हो। आप वेदमाता के पति हो। स्कंदपुराण के अनुसार आप साक्षात् विष्णु जी का ही एक स्वरूप हो। आप परम शाक्त जनों में अग्रणीय और महानतम हो। मधु कैटभ के समय देवी महामाया की कृपा पाने वाले;

देवी भुवनेश्वरी की आज्ञा से विष्णु जी व महादेव की सेवा में सतत् संलग्न रहने वाले हे ब्रह्मदेव ! आपको यह अक्षयरुद्र देवी महिषासुर मर्दिनी की प्रसन्नता के लिए प्रणाम करता है। कृपया अपनी शक्ति व पुत्र पोत्रों सहित इस अक्षयरुद्र अंशभूतशिव पर कृपा बनाये रखें और यह अक्षयरुद्र भी आपकी भाँति पराशक्ति का अनन्य भक्त होकर अपना जीवन सफल करे।

आपकी भक्ति को नमन।

आपकी सेवा को नमन ।

आपके सृजन कार्य को नमन।

हे ब्रह्मदेव! देवी ललिता, भुवनेशी, कौशिकी, महामाया व इनके स्वरूप रक्त दंतिका, मंगलचण्डिका, राधा, पार्वती (गौरी), लक्ष्मी व शारदा सावित्री की जैसी कृपा आप पर है वैसी ही दिव्य कृपा की वर्षा इस अक्षयरुद्र पर हो ।

हे ब्रह्मदेव ! आपको बार–बार नमन। सहस्र कोटी बार नमन। इस अक्षयरुद्र, इसके परिवार व इसके शिष्यों इसके सभी शुभचिंतकों पर कृपा करें । और इसके शत्रुओं तथा इसका अमंगल चाहने वालों को सद्गुण व सद्बुद्धि देकर कृतकृत्य करें।

आपके अतुलनीय पराक्रम को जानकर यह अक्षयरुद्र बार बार बार बार आपको कृतज्ञता वश नमन करता है। और आज तक इस अक्षयरुद्र से जो भी आपके संदर्भ में गलतियाँ हुई हो उसके लिए क्षमा करो। हे प्रभु ! यह दास कितना मूर्ख था जो गुरुओं के गुरु और उनके भी आदि गुरु वेदव्यास व वेदव्यास के भी गुरु (सनत्कुमार) को भी उत्पन्न करने वाले आपकी महिमा को न जान सका ।

यह दास आपकी पत्नी की अनेक बार स्तुति कर चुका पर आपको साधारण समझता रहा ; यही जगत भी कर रहा है। अतः सभी की ओर से मैं आपसे क्षमा याचना करता हूँ इस अक्षयरुद्र को विश्वदूत जानकर सभी को क्षमा करें और परम प्रसन्न होकर देवी के साक्षात्कार हेतु सहयोग व प्रार्थना करें। आप निश्चित ही हर मनुष्य के गुरुओं के भी आदि गुरु हो। और इस अक्षयरुद्र के गुरु (कैलासपति श्रीमहारुद्र जी) के अनन्य दास। अतः हे नाथ! कृ

पा बनाये रखो। तथा इस देवी रहस्य महाग्रंथ में प्रवेश कर जाइये । तथा आप ही हो जो दो महान देवोंसे भी प्रार्थना करें तो वे हरिहर भी इस कृति में प्रवेश करके उसे इस वसुन्धरा के हर शाक्त भक्त के हृदय की शोभा बनाकर इस अक्षयरुद्र की आत्मा को तृप्त कर सकते हो। आपको आपकी शक्ति (ब्रह्माणी सहित) बार बार नमन।

4. 'कपियों से सदा घिरे रहनेवाले हे श्रीरामदूत!' और श्रीभैरव!

विद्युत्–कान्तिके सदृश वर्णवाले, ज्ञानमार्गमें एकनिष्ठ, कर्णयुगलमें सुवर्णनिर्मित कुण्डल धारण करनेवाले, सुन्दर कौपीन धारण करनेवाले, कपियोंसे सदा घिरे रहनेवाले, इच्छानुसार रूप धारण करनेवाले, वानरोंके स्वामी, सुग्रीवको सुख देनेवाले, वज्रके समान देहवाले सर्वपूज्य वायुपुत्रकी मैं वन्दना करता हूँ। हे पवन पुत्र आप पवन देव के वरदान से और श्रीमहारुद्र के तेज से प्रकट हुए हो तथा श्रीराम जी की आज्ञा से देवी पराम्बा के कार्य में भैरव सहित सदा तत्पर हो हे केसरी नंदन ! इस पावन ग्रंथ में भैरव सहित प्रवेश कर इस अंशभूतशिव को कृतकृत्य करो मैं आपका भैरव सहित इन अध्यायों में आवाहन करता हूँ कृपया अनुग्रह करें और देवी की इस पावन रहस्य से शाक्त भक्तों को शीघ्र सिद्धि देने में सहायक सिद्ध हो। आप ही शाक्त भक्तों के हितैषी और उन सबको देवी के साक्षात्कार कराने के लिए परम कृपा करते हो यह बात सबको विदित है । हे वीर आप साक्षात् ब्रह्मापद पर विराजमान होने वाले एकमात्र रुद्र हो और सभी रुद्रगणों के सहायक हो अतः कृपा करें कृपा करें कृपा करें। हे सीतारामचन्द्र जी के परम भक्त और सीताशोकनिवारण कर्ता मैं आपको बार बार नमस्कार करता हूँ। इस भुवनेश्वरी किंकर पर कृपा करें और ऐसी लीला करें जिससे इस भुवनेश्वरीकिंकर को शीघ्र ही पराम्बा के दर्शन हों जिससे यह जीवन सफल हो सके। पूर्व काल में इस अंशभूतशिव से संकल्प की अतीवता अथवा संकल्पों के अहंकार के कारण जो जो गलतियाँ या अपराध हुये हों उनके लिए आप इस दास को अपना अनुज जानकर क्षमा करें ।हे शिवांश ! आप अग्रज होते हुये भी इस अक्षयरुद्र को समय समय पर ज्ञान देने के कारण गुरुतुल्य भी हो अतः शिष्य भाव से मैं अंशभूतशिव आपके श्री चरणों में साष्टांग नमन करता हूँ।

आपको और श्रीबटुक भैरव जी को मैं 108 ,108 नामों से नमन करता हूँ। हे महावीर ! हे भैरव आप अपने सभी नाम रूपों सहित प्रसन्न हों प्रसन्न हों प्रसन्न हों। हे महाभैरव! हे अष्टभैरव! हे कालभैरव आप सभी प्रसन्न हों प्रसन्न हों प्रसन्न हों और जानते हुए या अनजान में मैं जिन जिन रूपों का सुमिरन न किया हो वह रूप भी आपके स्मरण से प्रसन्न हों तथा उन सब रूपों के श्रीचरणों तक इस अक्षयरुद्र का शत शत बार नमन पहुंचे ताकि बिना विघ्न बाधा के यह सारा आध्यात्मिक कार्य सफलता के शिखर पर पहुंचकर इस भू मंडल के सभी मनुष्यों को पावन कर सके।

॥ श्रीहनुमते नमः ॥

(वन्दे विद्युज्वलनविलसद्ब्रह्मसूत्रैकनिष्ठं कर्णद्वन्द्वे कनकरचिते कुण्डले धारयन्तम्। सत्कौपीनं कपिचरवृतं कामरूपं कपीन्द्रं पुत्रं वायोरिनसुतसुखदं वज्रदेहं वरेण्यम् ।।)

● अथ श्रीहनुमत्–अष्टोत्तर शतनामावलिः ●

१ ॐ आञ्जनेयाय नमः ।

२ ॐ महावीराय नमः ।

३ ॐ हनूमते नमः ।

४ ॐ मारुतात्मजाय नमः ।

५ ॐ तत्त्वज्ञानप्रदायकाय नमः ।

६ ॐ सीतामुद्राप्रदायकाय नमः ।

७ ॐ अशोकवनिकाच्छेत्रे नमः ।

८ ॐ सर्वमायाविभञ्जनाय नमः ।

९ ॐ सर्वबन्धविमोक्त्रे नमः ।

१० ॐ रक्षोविध्वंसकारकाय नमः ।

११ ॐ परविद्यापरिहाराय नमः ।

१२ ॐ परशौर्यविनाशनाय नमः ।

१३ ॐ परमन्त्रनिराकत्रे नमः ।

१४ ॐ परयन्त्रप्रभेदकाय नमः ।

१५ ॐ सर्वग्रहविनाशिने नमः ।

१६ ॐ भीमसेनसहायकृते नमः ।

१७ ॐ सर्वदुःखहराय नमः ।

१८ ॐ सर्वलोकचारिणे नमः ।

१९ ॐ मनोजवाय नमः।

२० ॐ पारिजातद्रुमूलस्थाय नमः ।

२१ ॐ सर्वमन्त्रस्वरूपवते नमः ।

२२ ॐ सर्वतन्त्रस्वरूपिणे नमः ।

२३ ॐ सर्वयन्त्रात्मकाय नमः ।

२४ ॐ कपीश्वराय नमः ।

२५ ॐ महाकायाय नमः ।

२६ ॐ सर्वरोगहराय नमः।

२७ ॐ प्रभवे नमः ।

२८ ॐ बलसिद्धिकराय नमः ।

२९ ॐ सर्वविद्यासम्पत्प्रदायकाय नमः ।

३० ॐ कपिसेनानायकाय नमः ।

३१ ॐ भविष्यच्चतुराननाय नमः ।

३२ ॐ कुमारब्रह्मचारिणे नमः ।

३३ ॐ रत्नकुण्डलदीप्तिमते नमः ।

३४ ॐ सञ्चलद्बालसन्नद्धलम्ब–मानशिखोज्ज्वलाय नमः

३५ ॐ गन्धर्वविद्यातत्त्वज्ञाय नमः ।

३६ ॐ महाबलपराक्रमाय नमः ।

३७ ॐ कारागृहविमोक्त्रे नमः ।

३८ ॐ शृङ्खलाबन्धमोचकाय नमः ।

३९ ॐ सागरोत्तारकाय नमः ।

४० ॐ प्राज्ञाय नमः ।

४१ ॐ रामदूताय नमः ।

४२ ॐ प्रतापवते नमः।

४३ ॐ वानराय नमः ।

४४ ॐ केसरिसुताय नमः ।

४५ ॐ सीताशोकनिवारणाय नमः ।

४६ ॐ अञ्जनागर्भसम्भूताय नमः ।

४७ ॐ बालार्कसदृशाननाय नमः ।

४८ ॐ विभीषणप्रियकराय नमः ।

४९ ॐ दशग्रीवकुलान्तकाय नमः ।

५० ॐ लक्ष्मणप्राणदात्रे नमः ।

५१ ॐ वज्रकायाय नमः ।

५२ ॐ महाद्युतये नमः ।

५३ ॐ चिरजीविने नमः ।

५४ ॐ रामभक्ताय नमः ।

५५ ॐ दैत्यकार्यविघातकाय नमः ।

५६ ॐ अक्षहन्त्रे नमः ।

५७ ॐ काञ्चनाभाय नमः ।

५८ ॐ पञ्चवक्त्राय नमः ।

५९ ॐ महातपसे नमः ।

६० ॐ लङ्किनीभञ्जनाय नमः ।

६१ ॐ श्रीमते नमः ।

६२ ॐ सिंहिकाप्राणभञ्जनाय नमः ।

६३ ॐ गन्धमादनशैलस्थाय नमः ।

६४ ॐ लङ्कापुरविदाहकाय नमः ।

६५ ॐ सुग्रीवसचिवाय नमः ।

६६ ॐ धीराय नमः ।

६७ ॐ शूराय नमः ।

६८ ॐ दैत्यकुलान्तकाय नमः ।

६९ ॐ सुरार्चिताय नमः ।

७० ॐ महातेजसे नमः ।

७१ ॐ रामचूडामणिप्रदाय नमः ।

७२ ॐ कामरूपिणे नमः ।

७३ ॐ पिङ्गलाक्षाय नमः ।

७४ ॐ वार्धिमैनाकपूजिताय नमः ।

७५ ॐ कवलीकृतमार्तण्ड–मण्डलाय नमः ।

७६ ॐ विजितेन्द्रियाय नमः ।

७७ ॐ रामसुग्रीवसन्धात्रे नमः ।

७८ ॐ महारावणमर्दनाय नमः ।

७९ ॐ स्फटिकाभाय नमः ।

८० ॐ वागधीशाय नमः ।

८१ ॐ नवव्याकृतिपण्डिताय नमः ।

८२ ॐ चतुर्बाहवे नमः।

८३ ॐ दीनबन्धवे नमः ।

८४ ॐ महात्मने नमः।

८५ ॐ भक्तवत्सलाय नमः ।

८६ ॐ सञ्जीवननगाहर्त्रे नमः।

८७ ॐ शुचये नमः ।

८८ ॐ वाग्मिने नमः।

८९ ॐ दृढव्रताय नमः।

९० ॐ कालनेमिप्रमथनाय नमः ।

९१ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय नमः ।

९२ ॐ दान्ताय नमः ।

९३ ॐ शान्ताय नमः।

९४ ॐ प्रसन्नात्मने नमः ।

९५ ॐ शतकण्ठमदापहृते नमः ।

९६ ॐ योगिने नमः ।

९७ ॐ रामकथालोलाय नमः ।

९८ ॐ सीतान्वेषणपण्डिताय नमः ।

९९ ॐ वज्रदंष्ट्राय नमः ।

१०० ॐ वज्रनखाय नमः ।

१०१ ॐ रुद्रवीर्यसमुद्भवाय नमः ।

१०२ ॐ इन्द्रजित्प्रहितामोघब्रह्मा– स्त्रविनिवारकाय नमः।

१०३ ॐ पार्थध्वजाग्रसंवासिने नमः ।

१०४ ॐ शरपञ्जरभेदकाय नमः ।

१०५ ॐ दशबाहवे नमः।

१०६ ॐ लोकपूज्याय नमः ।

१०७ ॐ जाम्बवत्प्रीतिवर्धनाय नमः ।

१०८ ॐ सीतासमेत श्रीरामपाद–सेवा –धुरन्धराय नमः ।

इति श्री हनुमदष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

●●●●●●●●●●●●●●●●●●

॥अथ श्रीबटुक भैरव अष्टोत्तर शत नामावलिः

१ ॐ भैरवाय नमः ।

२ॐ भूतनाथाय नमः ।

३ ॐ भूतात्मने नमः ।

४ॐ भूतभावनाय नमः।

५ ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः ।

६ ॐ क्षेत्रपालाय नमः।

७ ॐ क्षेत्रदाय नमः ।

८ ॐ क्षत्रियाय नमः ।

९ ॐ विराजे नमः।

१० ॐ श्मशानवासिने नमः ।

११ ॐ मांसाशिने नमः ।

१२ ॐ खर्पराशिने नमः ।

१३ ॐ स्मरान्तकाय नमः ।

१४ ॐ रक्तपाय नमः।

१५ ॐ पानपाय नमः।

१६ ॐ सिद्धाय नमः ।

१७ ॐ सिद्धिदाय नमः ।

१८ ॐ सिद्धिसेविताय नमः ।

१९ ॐ कङ्कालाय नमः ।

२० ॐ कालशमनाय नमः ।

२१ ॐ कलाकाष्ठातनवे नमः ।

२२ ॐ कवये नमः ।

२३ ॐ त्रिनेत्राय नमः ।

२४ ॐ बहुनेत्राय नमः ।

२५ ॐ पिङ्गललोचनाय नमः ।

२६ ॐ शूलपाणये नमः।

२७ ॐ खड्गपाणये नमः।

२८ ॐ कङ्कालिने नमः ।

२९ ॐ धूम्रलोचनाय नमः।

३० ॐ अभीरवे नमः ।

३१ ॐ भैरवीनाथाय नमः।

३२ ॐ भूतपाय नमः ।

३३ ॐ योगिनीपतये नमः ।

३४ ॐ धनदाय नमः।

३५ ॐ धनहारिणे नमः ।

३६ ॐ धनवते नमः ।

३७ ॐ प्रतिभानवते नमः ।

३८ ॐ नागहाराय नमः ।

३९ ॐ नागकेशाय नमः ।

४० ॐ व्योमकेशाय नमः ।

४१ ॐ कपालभृते नमः ।

४२ ॐ कालाय नमः।

४३ ॐ कपालमालिने नमः ।

४४ ॐ कमनीयाय नमः ।

४५ ॐ कलानिधये नमः ।

४६ ॐ त्रिलोचनाय नमः ।

४७ ॐ ज्वलन् – नेत्राय नमः।

४८ ॐ त्रिशिखिने नमः ।

४९ ॐ त्रिलोकपाय नमः ।

५० ॐ त्रिनेत्रतनयाय नमः ।

५१ ॐ डिम्भाय नमः।

५२ ॐ शान्ताय नमः।

५३ ॐ शान्तजनप्रियाय नमः ।

५४ ॐ बटुकाय नमः ।

५५ ॐ बहुवेषाय नमः ।

५६ ॐ खट्वाङ्गवरधारकाय नमः ।

५७ ॐ भूताध्यक्षाय नमः ।

५८ ॐ पशुपतये नमः ।

५९ ॐ भिक्षुकाय नमः।

६० ॐ परिचारकाय नमः।

६१ ॐ धूर्ताय नमः ।

६२ ॐ दिगम्बराय नमः।

६३ ॐ शौरिणे नमः ।

६४ ॐ हरिणाय नमः ।

६५ ॐ पाण्डुलोचनाय नमः।

६६ ॐ प्रशान्ताय नमः।

६७ ॐ शान्तिदाय नमः ।

६८ ॐ सिद्धाय नमः।

६९ ॐ शङ्करप्रियबान्धवाय नमः ।

७० ॐ अष्टमूर्तये नमः ।

७१ ॐ निधीशाय नमः ।

७२ ॐ ज्ञानचक्षुषे नमः ।

७३ ॐ तपोमयाय नमः ।

७४ ॐ अष्टाधाराय नमः ।

७५ ॐ षडाधाराय नमः

७६ ॐ सर्पयुक्ताय नमः ।

७७ ॐ शिखीसख्ये नमः ।

७८ ॐ भूधराय नमः ।

७९ ॐ भूधराधीशाय नमः ।

८० ॐ भूपतये नमः ।

८१ ॐ भूधरात्मजाय नमः ।

८२ ॐ कङ्कालधारिणे नमः ।

८३ ॐ मुण्डिने नमः ।

८४ ॐ नागयज्ञोपवीतकाय नमः ।

८५ ॐ जृम्भणाय नमः।

८६ ॐ मोहनाय नमः।

८७ ॐ स्तम्भिने नमः ।

८८ ॐ मारणाय नमः ।

८९ ॐ क्षोभणाय नमः ।

९० ॐ शुद्धाय नमः ।

९१ ॐ नीलाञ्जनप्रख्याय नमः ।

९२ ॐ दैत्यघ्ने नमः।

९३ ॐ मुण्डभूषिताय नमः ।

९४ ॐ बलिभुजे नमः ।

९५ ॐ बलिभुंनाथाय नमः ।

९६ ॐ बालाय नमः।

९७ ॐ बालपराक्रमाय नमः ।

९८ ॐ सर्वापत्तारणाय नमः ।

९९ ॐ दुर्गाय नमः ।

१०० ॐ दुष्टभूतनिषेविताय नमः ।

१०१ ॐ कामिने नमः ।

१०२ ॐ कलानिधये नमः ।

१०३ ॐ कान्ताय नमः ।

१०४ ॐ कामिनीवशकृद्वशिने नमः ।

१०५ ॐ सर्वसिद्धिप्रदाय नमः ।

१०६ ॐ वैद्याय नमः ।

१०७ ॐ प्रभवे नमः ।

१०८ ॐ विष्णवे नमः ।

इति श्री रुद्रयामलेतंत्रे श्री बटुकभैरवाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

5. हे भुवनेशि! मां पाही
उच्चारण का अतुलनीय प्रभाव–

'हे भुवनेशि!'

हे भुवनेशि!

हे भुवनेशि! इन चार अक्षरों से युक्त परम नाम के उच्चारण से मनुष्य भवरोग का नाश कर कृतकृत्य हो जाता है। अनंतकोटी ब्रह्माण्डों के सभी त्रिदेवों व देवगणों पर जिनका आधिपत्य है जो सर्वेश्वरों की भी एकमात्र परमेश्वरी और परम तत्व है उन भगवती को मैं प्रणाम करता हूँ । जो शाश्वत , वेदों द्वारा भी नेति नेति कही जाने वाली और समस्त विश्व को अक्षय आनन्द देने वाली है उस पराम्बा को मैं प्रणाम करता हूँ । अनासक्त तथा मोक्षकी इच्छा रखनेवाले योगीजन और भोगकी कामना करनेवाले सकामी लोग भी उन्हीं कल्याणकारिणी भगवती जगदम्बाकी उपासना करते हैं। जिन योगमाया की भक्तिके लेशलेशांश के लेशलेश–लवांशको प्राप्त करके प्राणी मुक्त हो जाता है, उनकी उपासना कौन व्यक्ति नहीं करेगा ?

हे देवी आप ही षोडशी,शताक्षी व त्रिपुराभैरवी आदि महाविद्या हो मैं आपको बार बार नमस्कार करता हूँ । जो आपका शरणागत है वह सतत् ही ब्रह्मभाव में रमण करता है क्योंकि आप उसे अपरोक्ष ज्ञान देकर कृतार्थ कर देती हो । हे सदाशिववनिता मुझ पर दया करके मेरे सपरिवार व मेरे सभी शुभचिंतकों को भवरोग से मुक्ति दे दीजिए। साथ ही इस वैवस्वत मन्वन्तर के जितने भी देव, देवगण हैं उनको भी उनकी भार्याओं व सभी सदस्यों सहित मणिद्वीप में स्थान दीजिए। त्रिदेव जो सदा आपकी आज्ञा का पालन करने में सदा तत्पर हैं और सदा आपकी सेवा में अपने अंशों, गणों, बच्चों व भार्याओं सहित तत्पर रहते हैं उनका उनके अभिन्न सदस्यों व भक्तों सहित परम मंगल करने की कृपा करें । हे देवी आप ही आदिशक्ति हो, आप ही सभी का प्राण, आप ही मन बुद्धि और चित्त हो । हे वृषध्वजेश्वरी! हे नारायणी! हे कालरात्रि हे तारा ! हे कमला, उमा, रमा ब्रह्माणी, शारदा, गायत्री, राधा, षष्ठी, मंगल चण्डिका, धरा, सुरभि, नर्मदा, गंगे, यमुना, क्षिप्रा, गंडकी, गोमती, तुलसी, स्वाहा, स्वधा, दक्षिणा और क्षमा व अरुन्धती आपको नमस्कार है । तीन महादेवियों के रूप में आप ही हो अतः हे महालक्ष्मी, महा सरस्वती और महाकाली आपको नमस्कार है । सभी विद्याएं और सभी मातृकाएं आप ही हो आपको नमस्कार है ।

आप ही पंचक प्रकृति, अष्ट मातृकाएं, नवदुर्गा , नवशक्तियाँ और दस महाविद्या हो आपको नमस्कार है। सभी भैरवों की शक्ति और योगिनियों के रूप में लीलारत आपको नमस्कार है। और विशेष रूप से विन्ध्याचल पर्वत की विजयासन देवी जो सलकनपुर में निवास करती है तथा इस अक्षयरुद्र की प्राणदायिनी है उस रूप को नमस्कार है। हे पराम्बा आपको सभी रूपों से नमस्कार बार बार नमस्कार। हे भुवनेशि ! मैं केवल आपकी ही शरण स्वीकार करता हूँ मेरा अंतःकरण सदा आपसे युक्त रहे।

–"हे भुवनेशि! मैं जैसा भी हूँ आपका ही पुत्र हूँ मारो या तारो यह आपकी इच्छा बस मैं केवल आपकी ही शरण में पड़ा हूँ"।

अथवा हे महालक्ष्मी हे महिषासुर मर्दिनी ! हे सर्वेश्वरेश्वरी! हे शुम्भ निशुम्भ का वध करने वाली पराम्बिका! हे महाकाली ! हे क्लीं बीज रूपिणी महामाया ! मैं आपके चरणों में पड़ा हूँ। ऐसा उच्चारण करने वाले को वे भगवती दया करके तीनों लोक प्रदान कर देती हैं ।

और 'मेरी रक्षा कीजिये' (माम् पाही...) इस वाक्य के एक बार ही कहनेपर (उसे पहले ही त्रिलोक दे देनेके कारण) अब कुछ भी न दे पानेसे वे उस भक्तकी ऋणी हो जाती हैं। परंतु मनुष्य अपने आचरणों को भी सुधारे अन्यथा वह संकट में फंसे तो आश्चर्य कैसा ? पापी मनुष्य को दण्ड देने के लिए तो देवी ने ही यमदेव की रचना की है। पर जो पाप कर्म से दूर है उसको ही माता का आशीर्वाद मात्र एक बार के उच्चारण से ही प्राप्त होता है। पापी को तो अपना अधर्म ही खा डालता है। उन भगवती के विद्या तथा अविद्या–ये दो रूप जानना चाहिए। विद्यासे प्राणी मुक्त होता है और अविद्यासे बन्धनमें पड़ता है। भुवनेश्वरी के स्मरण से जितेन्द्रिय व शाक्त सद्गुरु प्राप्त होते हैं वे उस शिष्य को देवी की विद्या (बीज मंत्र ह्रीं) देकर तथा पराशक्ति की भक्ति का उपदेश देकर मुक्त कर देते हैं।

देवी भुवनेश्वरी के नाम का मात्र एक बार उच्चारण करने से ही समस्त ब्रह्माण्डों के सभी ईश्वरों के सुमिरन व जप तप व्रत–उपवास का फल भविष्य में निश्चित ही प्राप्त हो जाता है और निष्काम भाव से कहा जाए तो वह मणिद्वीप में परम स्थान पाकर पराविज्ञान को भी प्राप्त हो जाता है।

ब्रह्मा, विष्णु और महेश– ये सब उन भुवनेश्वरी के अधीन रहते हैं। भगवान् शंकर या भगवान विष्णु के सभी अवतार रस्सीसे बँधे हुएके समान भगवतीसे ही नियन्त्रित रहते हैं। भगवान् विष्णु कभी वैकुण्ठमें और कभी क्षीरसागरमें आनन्द लेते हैं, कभी अत्यधिक बलशाली दानवोंके साथ युद्ध करते हैं, कभी बड़े–बड़े यज्ञ करते हैं, कभी तीर्थमें कठोर तपस्या करते हैं और ! कभी महामाया के अधीन होकर योगनिद्राके वशीभूत होकर शय्यापर सोते हैं। सावित्री के पति, भगवान् विष्णु तथा पार्वती वल्लभ भी कभी स्वतन्त्र नहीं रहते

ऐसे ही इन्द्र, वरुण, यम, कुबेर, अग्नि, सूर्य, चन्द्र, अन्य श्रेष्ठ देवतागण जो कश्यप आदि के पुत्र मात्र हैं तथा सनक सनन्दन मुनि और वसिष्ठ आदि महर्षि–ये सब–के– सब बाजीगरके अधीन कठपुतलीकी भाँति सदा भगवतीके वशमें रहते हैं। जिस प्रकार नथे हुए बैल अपने स्वामीके अधीन रहकर विचरण करते हैं, उसी प्रकार सभी देवता कालपाशमें आबद्ध रहते हैं सब इन देवी को ही इष्ट मानकर मन ही मन उनके बीज का स्मरण करते हैं।

●हे महेश्वरि ! हम असहाय जनोंपर दया कीजिये।

●हे अम्बिके ! समस्त अपराधोंसे युक्त हम बालकों पर कृपा न करना आपके लिये शोभनीय नहीं है।

● सभीके भीतर निवास करनेवाली हे देवेश्वरि ! आप अपना कोप दूर कीजिये। आप प्राणी को जैसी प्रेरणा देती हैं, वैसा ही वह करता है। इस मानवकी अन्य गति है ही नहीं।

●हे महेश्वरि! आप बार–बार क्या देख रही हैं ? (कृपया दया दृष्टि रखें हमारे अपराधों को न देखें हे पराशक्ति !)

●आप जैसा चाहें, वैसा करनेमें पूर्ण समर्थ हैं।

● हे महेशानि ! इस (दुर्गमासुर रूपी) उत्पन्न हुए घोर संकटसे हमारा उद्धार कीजिये।

● हे अम्बिके ! जीवनी शक्तिके अभावमें हमारी स्थिति कैसे रह सकती है?

●हे महेश्वरि ! आप प्रसन्न हो जाइये।

● हे जगदम्बिके! आप प्रसन्न हो जाइये।

●अनन्तकोटि ब्रह्माण्डकी अधीश्वरि ! आपको बार–बार नमस्कार है।

●कूटस्थरूपिणी देवीको नमस्कार है,

●चिद्रूपा देवीको बार–बार नमस्कार है,

●वेदान्तोंके द्वारा ज्ञात होनेवालीको नमस्कार है और

●अखिल भुवनों की स्वामिनी (हे भुवनेश्वरी! आप)को बार–बार नमस्कार है।

●सम्पूर्ण आगमशास्त्र 'नेति–नेति' इन वचनोंसे जिनका ज्ञान कराते हैं, हम सब प्रकारसे उन सर्वकारण–स्वरूपिणी भगवतीके शरणागत हैं ॥

●हे वेदान्तवेद्ये! आपको नमस्कार है।

●हे ब्रह्मस्वरूपिणि ! आपको नमस्कार है।

●अपनी मायासे सम्पूर्ण जगत्की रचना करनेवाली, भक्तोंके लिये देह धारण करनेवाली तथा कल्पवृक्षके समान उनके मनोरथ पूर्ण करनेवाली हे देवि ! आपको बार–बार नमस्कार है।

●सदा सन्तुष्ट रहनेवाली और सभी उपमाओंसे रहित हे भुवनेश्वरि ! आपको नमस्कार है।

● हे देवि ! हमारी शान्तिके लिये आपने सहस्र नेत्रोंसे सम्पन्न अनुपम रूप धारण किया है, अतः आप 'शताक्षी' नामसे विख्यात हों। ●हे जननि ! भूखसे अत्यन्त पीडित होनेके कारण आपकी स्तुति करनेके लिये हमलोगोंमें सामर्थ्य नहीं है। हे महेशानि ! हे अम्बिके ! अब आप कृपा कीजिये।

6. श्री मंगलचण्डिका श्रीदुर्गा रूप

रक्ष रक्ष महादेवी हे दुर्गा स्वरूपिणी मंगल चण्डिके!!! रक्ष रक्ष

देवी श्री मंगल चण्डिका साक्षात् श्रीदुर्गा अम्बा का ही एक विग्रह है। इसी कारण हरेक शाक्त इनका स्मरण हर मंगलवार को करता ही है जिस प्रकार श्रीरामजी के उपासक श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर श्री कृष्ण जी को राम जी का स्वरूप समझकर सेवा करते हैं वैसा ही यहाँ समझे।

एक ही ईश्वर समय समय पर भिन्न–भिन्न रूप धारण करके अपनी लीला करता है द्वैत नाम की सत्ता है ही नहीं मात्र अज्ञानी लोग ही भेद उत्पन्न करते हैं इसी कारण भेदज्ञ जनों को कुटिल स्वभाव वाले राक्षसों का अंश कहा जाता है। ह्रीं बीज की पराम्बिका ही मंगल करने वाली और मंगलवार के मान को बढ़ाने के लिए साक्षात् मंगलचण्डिका हुई हैं ये अपने स्मरण करने वाले भक्तों को उसके इष्ट से अतिशीघ्र मिलाती हैं भक्त चाहे किसी को भी ध्याये पर हर मंगलवार को इनका सुमिरन इष्ट का रूप समझकर निष्काम भाव से भी कर सकता है और एक महत्वपूर्ण बात मंगल ग्रह की कृपा से भूमि लाभ होता है ऋण रूपी संकट का नाश भी होता है पर मंगल देव ने एक महत्वपूर्ण बात भी कही है कि जो मेरी इष्ट इन मंगलेश्वरी या मंगल चण्डिका का हर मंगलवार को सुमिरन करेगा उसे मैं शीघ्र ही ऋण और शोक से मुक्त कर दूँगा मैं मंगल चण्डिका के स्तवन से जितना प्रसन्न होता हूँ उतना प्रसन्न मेरा भजन सहस्र बार भी किया जाए तो भी उतना नहीं होता अतः भक्त गण सकामी हों या निष्कामी पराशक्ति के इस सौम्य 16 वर्षीय किशोरी रूप से परिपूर्ण देवी का हर मंगलवार को स्तवन अवश्य करे।

देवी मंगल चण्डिका देवी का माहात्म्य श्रीमद्देवीभागवत महापुराण में स्पष्ट है तथा अनेक शास्त्रों में इनकी अतुलनीय महिमा है। अतः इनकी सेवा करके हर शाक्त मंगल ही मंगल को पाता है उसका बाल भी बांका नहीं हो सकता। हर क्षण उसके जीवन में मंगल की शुभ बेला आती है आठों पहर मंगल के साम्राज्य को वह पाकर धन्य हो जाता है। यह अक्षयरुद्र भी देवी भुवनेश्वरी का किंकर है पर हर मंगलवार को भुवनेश्वरी के इस अवतार का ध्यान करके ही धन्य मानता है।

राधारानी, कालिका ,षष्ठी आदि के महान भक्त भी हर मंगलवार को अपनी इष्ट की प्रसन्नता के लिए निश्चित ही मंगल चण्डिका का ध्यान करते हैं।

श्रीमद्देवीभागवत महापुराण के नवें स्कन्ध के अध्याय 47 में देवी का विशेष रूप से वर्णन है। देखिए पुराणों वचन–

श्रीनारायण बोले – हे ब्रह्मपुत्र ! भगवती मंगलचण्डी का आख्यान और उनका पूजा– विधान आदि सुनिये, जिसे मैंने धर्मदेवके मुखसे सुना था। यह उपाख्यान श्रुतिसम्मत है तथा सभी विद्वानोंको अभीष्ट है ॥

●कल्याण करने में सुदक्षा जो चण्डी अर्थात प्रतापवती हैं तथा मंगलोंके मध्यमें जो प्रचण्ड मंगला हैं, वे देवी 'मंगलचण्डिका' नामसे विख्यात हैं।

●अथवा भूमिपुत्र मंगल भी जिन चण्डीकी पूजा करते हैं तथा जो भगवती उन मंगलकी अभीष्ट देवी हैं, वे 'मंगलचण्डिका' नामसे प्रसिद्ध हैं ॥

●मनुवंशमें उत्पन्न मंगल नामक एक राजा सात द्वीपोंवाली सम्पूर्ण पृथ्वीके स्वामी थे। ये भगवती उनकी पूज्य अभीष्ट देवी थीं, इससे भी वे 'मंगलचण्डिका' नामसे विख्यात हैं ॥

● वे ही मूर्तिभेदसे मूलप्रकृति भगवती दुर्गा हैं। कृपारूपिणी होकर वे देवी साक्षात् प्रकट होनेवाली हैं और स्त्रियोंकी अभीष्ट देवता हैं ॥

●सर्वप्रथम भगवान् रुद्र ने विष्णु की प्रेरणासे तथा ब्रह्माजीके उपदेशसे उन परात्परा भगवतीकी पूजा की थी। हे ब्रह्मन् ! त्रिपुरासुरके घोर वधके समय जब कैलासपति संकटमें पड़ गये थे और उस दैत्यके द्वारा रोषपूर्वक उनका विमान आकाशसे नीचे गिरा दिया गया था, तब ब्रह्मा और विष्णुका उपदेश मानकर दुर्गतिको प्राप्त भगवान् शंकरने भगवती दुर्गा की ही स्तुति की थी इससे वे चण्डिका प्रकट हुई और शंकर जी का मंगल करके वे मंगलचण्डी ही कहलाई, जिन्होंने केवल रूप बदल लिया था (सा च मंगलचण्डी। या बभूव रूपभेदतः)

वे शिवजीके सामने प्रकट होकर बोलीं– हे आशुतोष प्रभो ! अब आपको कोई भय नहीं है, भगवान् श्रीहरि वृषरूपमें आपका वाहन बनेंगे और मैं युद्धमें शक्तिस्वरूपा होकर आपकी सहायता करूँगी, इसमें सन्देह नहीं है। हे वृषध्वज ! तब मायास्वरूप भगवान् श्रीहरिकी सहायतासे आप देवताओंको पदच्युत कर देनेवाले अपने शत्रु उस त्रिपुरदैत्यका वध कर डालेंगे। हे मुनिवर! ऐसा कहकर वे भगवती अन्तर्धान हो गयीं और उसी क्षण वे भगवान् शिवकी शक्ति बन गयीं। तत्पश्चात् उमापति शंकरने विष्णुजीके द्वारा दिये गये शस्त्रसे उस दैत्यको मार डाला। उस दैत्यके धराशायी हो जानेपर सभी देवता तथा महर्षिगण भक्तिपूर्वक अपना सिर झुकाकर भगवान् शिवकी स्तुति करने लगे ॥ ये स्तुति यथार्थ में मंगल चण्डिका की कृपा का परिणाम थी। उसी क्षण भगवान् शिवके सिरपर पुष्पोंकी वर्षा होने लगी। ब्रह्मा तथा विष्णुने परम प्रसन्न होकर उन्हें शुभाशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् हे मुने ! भगवान् शंकरने विधिवत् स्नान करके पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, अनेक प्रकारके वस्त्र, पुष्प, चन्दन, भाँति–भाँतिके नैवेद्य, वस्त्रालंकार, माला, खीर, पिष्टक, मधु, सुधा, अनेक प्रकारके फल आदि उपचारों, संगीत, नृत्य, वाद्य, उत्सव तथा नामकीर्तन आदिके द्वारा भक्तिपूर्वक उन देवी मंगलचण्डिकाका पूजन किया।

हे नारद ! माध्यन्दिनशाखामें बताये गये ध्यानमन्त्रके द्वारा भगवती मंगलचण्डीका भक्तिपूर्वक ध्यान करके उन्होंने मूल मन्त्रसे ही सभी द्रव्य अर्पण किये।

'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वपूज्ये देवि मङ्गलचण्डिके

हुं हुं फट् स्वाहा'

यह इक्कीस अक्षरोंवाला मन्त्र पूजनीय तथा भक्तोंको समस्त अभीष्ट प्रदान करनेवाला कल्पवृक्ष ही है। दस लाख जप करनेसे इस मन्त्रकी सिद्धि निश्चितरूपसे हो जाती है (मंत्र के सिद्ध होने पर देवी के साक्षात्कार भी होते हैं।)

अब वेदोक्त तथा सर्वसम्मत ध्यानका श्रवण कीजिये–

●'सोलह वर्षकी अवस्थावाली,

●सर्वदा सुस्थिर यौवनसे सम्पन्न,

●बिम्बाफलके समान होठोंवाली,

●सुन्दर दन्तपंक्तिवाली,

●शुद्धस्वरूपिणी,

●शरत्कालीन कमलके समान मुखवाली,

●श्वेत चम्पाके वर्णकी आभावाली,

●विकसित नीलकमलके सदृश नेत्रोंवाली,

●जगत्का पालन–पोषण करनेवाली,

●सभीको सम्पूर्ण सम्पदाएँ प्रदान करनेवाली और

●घोर संसारसागरमें पड़े हुए प्राणियोंके लिये ज्योतिस्वरूपिणी भगवतीकी मैं सदा आराधना करता हूँ।' यह भगवती मंगलचण्डिकाका ध्यान है।

अब उनका स्तवन सुनिये –

महादेवजी बोले – जगत् की माता, विपत्तिराशि का नाश करनेवाली, हर्ष तथा मंगल उत्पन्न करनेवाली, हर्ष तथा मंगल देनेमें प्रवीण, हर्ष तथा मंगल प्रदान करनेवाली, कल्याणकारिणी, मंगल करनेमें दक्ष, शुभस्वरूपिणी, मंगलरूपिणी, मंगल करनेमें परम योग्यतासम्पन्न, समस्त मंगलोंकी भी मंगलरूपा, सज्जनोंको मंगल प्रदान करनेवाली, सभी मंगलोंकी आश्रय– स्वरूपिणी, मंगलवारके दिन पूजी जानेवाली, मंगलग्रहकी अभीष्ट देवी, मनुवंशमें उत्पन्न राजा मंगलके लिये सदा पूजनीया, मंगलकी अधिष्ठात्री देवी, मंगलोंके लिये भी मंगल, संसारके समस्त मंगलोंकी आधारस्वरूपा, मोक्षरूप मंगल प्रदान करनेवाली, साररूपिणी, मंगलाधार, सभी कर्मोंकी फलस्वरूपिणी तथा मंगलवारको पूजित होनेपर सबको महान् सुख प्रदान करनेवाली हे देवि मंगलचण्डिके ! रक्षा कीजिये, रक्षा कीजिये।

भगवान् शिव ने इस स्तोत्रसे देवी मंगलचण्डिकाकी स्तुति की तथा प्रत्येक मंगलवारको उनकी पूजा करने लगे।

●इस प्रकार सर्वप्रथम भगवान् शिवके द्वारा वे सर्वमंगला देवी मंगलचण्डिका पूजित हुईं।

● दूसरी बार मंगलग्रहने उनकी पूजा की,

●तीसरी बार राजा मंगलने उन कल्याणमयी देवीकी पूजा की।

●चौथी बार मंगलवारके दिन भद्र महिलाओंने उनकी पूजा की।

●तत्पश्चात् पाँचवीं बार अपने कल्याणकी कामना रखनेवाले पुरुषोंने शिव तथा मंगल की आज्ञा से देवी मंगलचण्डिकाका पूजन किया। और यह पूजन संपूर्ण विश्व में प्रति मंगल वार को होने से इनके उपासक धन्य होने लगे।

इस तरह विश्वेश्वर शिवके द्वारा पूजित ये भगवती सभी लोकोंमें पूजी जाने लगीं। तदनन्तर सभी देवताओं, मुनियों, मानवों तथा मनुओंके द्वारा भगवती मंगलचण्डिका सर्वत्र पूजित हो गयीं। जो व्यक्ति एकाग्रचित्त होकर भगवती मंगलचण्डिकाके इस मंगलमय स्तोत्रका श्रवण करता है, उसका सदा मंगल होता है और उसका अमंगल कभी नहीं होता, पुत्र–पौत्रोंसहित उसके मंगल की दिन–प्रतिदिन वृद्धि होती रहती है।

(तन्मंगलम् भवेत्तस्य न भवेत्तदमंगलं)

श्री मंगलचण्डिका स्तोत्र को हर मंगलवार को 5 पाठ से दुर्गा देवी की अतुलनीय कृपा होती है, ऋण दूर हो जाता है तथा पृथ्वी लाभ भी,उसका कभी भी अमंगल नही होता। अब देववाणी में सुनें–

अथ श्री मंगलचण्डिका स्तोत्रम्–

महादेव उवाच

रक्ष रक्ष जगन्मातर्देवि मङ्गलचण्डिके।

हारिके विपदां राशेर्हर्षमङ्गलकारिके ॥1
हर्षमङ्गलदक्षे च हर्षमङ्गलदायिके ।

शुभे मङ्गलदक्षे च शुभे मङ्गलचण्डिके ॥ 2
मङ्गले मङ्गलार्हे च सर्वमङ्गलमङ्गले।

सतां मङ्गलदे देवि सर्वेषां मङ्गलालये ॥ 3
पूज्ये मङ्गलवारे च मङ्गलाभीष्टदेवते ।

पूज्ये मङ्गलभूपस्य मनुवंशस्य सन्ततम् ॥ 4
मङ्गलाधिष्ठातृदेवि मङ्गलानां च मङ्गले ।

संसारमङ्गलाधारे मोक्षमङ्गलदायिनि ॥ 5
सारे च मङ्गलाधारे पारे च सर्वकर्मणाम्।

प्रतिमङ्गलवारे च पूज्ये मङ्गसुखप्रदे ॥ 6

इति श्री मंगलचण्डिका स्तोत्रम् संपूर्णम्। ।

7. माँ श्री बगलामुखी जी

दस महाविद्याओं की उपासना में देवी बगलामुखी पर विद्वानों का अत्यधिक ध्यान गया है क्योंकि इस विश्व में शत्रुओं की कमी नहीं लोग बात बात पर मारने काटने पर उतारु हो जाते हैं इस कलिकाल में छल कपट का ही बोलबाला है ऐसे में शत्रुमर्दिनी के रूप में देवी बगलामुखी को पुकारना ही अनिवार्य है। ये देवी वात्सल्य और करुणा की मूर्ति ललिता का ही एक स्वरूप है। जिस प्रकार कमला और रमा लक्ष्मी आदि नाम धनदायक, सरस्वती, भारती नाम विद्या व विवेक दाता होते हैं उसी प्रकार शत्रुओं के नाश के लिए देवी पराम्बा का यही रूप शीघ्र प्रभावी है।

व्यष्टिरूपमें शत्रुओंको नष्ट करनेकी इच्छा रखनेवाली तथा समष्टिरूपमें परमात्माकी संहार– शक्ति ही बगला है।

इनके दो भुजा रूप व चार भुजा रूप इन दो रूपों में सेवा का विधान है। जब ये दक्षिणाम्नायात्मक होती हैं तो इनकी दो भुजाएं होती है और जब ये ऊर्ध्वाम्नायात्मक होती हैं तो इनकी चार भुजाएं धारण करके ही कल्याण करती हैं।

पीताम्बराविद्याके नामसे विख्यात बगलामुखीकी साधना प्रायः शत्रुभयसे मुक्ति और वाक्–सिद्धिके लिये की जाती है। इनकी उपासनामें हरिद्रामाला, पीत–पुष्प एवं पीतवस्त्रका विधान है। महाविद्याओंमें इनका आठवाँ स्थान है।

दक्षिणाम्नाय और ऊर्ध्वाम्नाय में मंत्र के अक्षरों का भी अंतर है। दक्षिणाम्नाय में ह्लीं बीज सहित 34 अक्षरों का मंत्र होता है। मेरु तंत्र में ऊर्ध्वाम्नाय के अंतर्गत 36 अक्षरी मंत्र बताया है।

ध्यान–

इनके ध्यानमें बताया गया है कि ये सुधासमुद्र के मध्य में स्थित मणिमय मण्डप में रत्नमय सिंहासन पर विराज रही हैं। ये पीतवर्णके वस्त्र, पीत आभूषण तथा पीले पुष्पोंकी ही माला धारण करती हैं। इनके एक हाथमें शत्रुकी जिह्वा और दूसरे हाथमें मुद्गर है।

सांख्यायन तन्त्र में श्री बगलामुखी जी के एक अक्षर से लेकर 1000 अक्षरों तक के मंत्र हैं और विविध रूप व प्रयोग भी।

महाविष्णु की तपस्या –

स्वतन्त्र–तन्त्र के अनुसार भगवती बगलामुखीके प्रादुर्भावकी कथा इस प्रकार है– सत्ययुगमें सम्पूर्ण जगत्को नष्ट करनेवाला भयंकर तूफान आया। प्राणियोंके जीवन पर आये संकटको देखकर भगवान् महाविष्णु चिन्तित हो गये। वे सौराष्ट देशमें हरिद्रा सरोवरके समीप जाकर भगवतीको प्रसन्न करनेके लिये तप करने लगे। साक्षात् श्री विद्या ललिता जी ने ही उस सरोवर से वगलामुखी रूपमें प्रकट होकर उन्हें दर्शन दिया तथा विध्वंसकारी तूफान का स्तम्भन तत्काल कर दिया। बगलामुखी महाविद्या भगवान् विष्णु के तेज व तप से युक्त होनेके कारण वैष्णवी शक्ति भी कही जाने लगी।   मंगलवार युक्त चतुर्दशी की अर्धरात्रिमें इनका प्रादुर्भाव हुआ था। अतः इस कारण मंगलवार की चतुर्दशी को इन देवी का विशेष पूजन करना ही चाहिए।

श्री मंगल चण्डिका जी को भी मंगल अति प्रिय है।

एक अन्य मन्त्र इस प्रकार भी है– जो मात्र लिख रहे हैं पर बिना गुरु के मार्गदर्शन के अनुष्ठान न करें मात्र मंत्र के दर्शन कर लें । इस मंत्र के दर्शन मात्र का भी अत्यधिक माहात्म्य है इस कारण लिख रहे हैं।

"ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं श्रीबगलानने

मम रिपून् नाशय नाशय

ऐश्वर्याणि देहि देहि

शीघ्रं मनोवांछितं कार्यं साधय साधय

ह्रीं स्वाहा।

इनका यन्त्र 'मध्यत्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल और भूपुर' से बनता है। रुद्रयामल के अतिरिक्त 'विष्णुयामल, सिद्धेश्वरतन्त्र, विश्वसारोद्धारतंत्र, मेरुतंत्र और उत्कटशम्बर नागेन्द्रप्रयाणतन्त्र' में भी बगलामुखी की आराधना पर विस्तार से लिखा गया है, जिनमें कवच, शतनाम, सहस्रनाम, स्तोत्र आदि अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं।

इस विद्याका उपयोग दैवीय प्रकोप की शान्ति, धन–धान्यके लिये पौष्टिक कर्म एवं आभिचारिक कर्मके लिये भी होता है। यह भेद केवल प्रधानताके अभिप्रायसे है; अन्यथा इनकी उपासना भोग और मोक्ष दोनोंकी सिद्धिके लिये की जाती है। देवी का हर रूप निश्चित ही कल्याणकारी ही होता है अतः साधकों को देवी के एक रूप को इष्ट मानकर सदा ही उसी रूप को सतत् भजना चाहिए। और हर देवीय रूप में अपनी इष्ट को देखकर ही नमन करना चाहिए। देवी ललिता अर्थात षोडशी को कौन नहीं जानता जो प्रधान देवी हैं बस यही समझ लीजिए कि वे ललिता ही साक्षात् वगलामुखी हैं। जिस प्रकार दुर्गा जी ही मंगल चण्डिका बनकर रुद्र देव की रक्षा के लिए प्रकट हुई थी उसी प्रकार ये षोडशी ही वगलामुखी रूप में वही ललिता देवी ही हैं।

यजुर्वेदकी काठकसंहिताके अनुसार दसों दिशाओंको प्रकाशित करनेवाली, सुन्दर स्वरूपधारिणी 'विष्णुपत्नी त्रिलोक जगत्की ईश्वरी मानोता कही जाती है। स्तम्भनकारिणी शक्ति व्यक्त और अव्यक्त सभी पदार्थोकी स्थितिका आधार पृथ्वीरूपा शक्ति है। बगला उसी स्तम्भनशक्तिकी अधिष्ठात्री देवी है। शक्तिरूपा बगलाकी स्तम्भन शक्तिसे द्युलोक वृष्टि प्रदान करता है। उसीसे आदित्यमण्डल ठहरा हुआ है और उसीसे स्वर्ग लोक भी स्तम्भित है। भगवान् श्रीकृष्णाने भी गीतामें उसी शक्तिका समर्थन किया है। तन्त्रमें वही स्तम्भनशक्ति वगलामुखीके नामसे जानी जाती है। श्रीवगलामुखीको 'ब्रह्मास्त्र' के नामसे भी जाना जाता है। ऐहिक या पारलौकिक देश अथवा समाजमें दुःखद् अरिष्टोंके दमन और शत्रुओंके शमनमें बगलामुखीके समान कोई मन्त्र नहीं है। चिरकालसे साधक इन्हीं महादेवीका आश्रय लेते आ रहे हैं।
इनके पंच मंत्रभेद हैं –

बडवामुखी,
जातवेदमुखी,
उल्कामुखी,
ज्वालामुखी तथा
बृहद्भानुमुखी ये पाँच मन्त्रभेद ही प्रमुख हैं।
कुण्डिका तन्त्र में वगलामुखी के जपके विधानपर विशेष प्रकाश डाला गया है।
इनका एक स्तोत्र रुद्रयामल तंत्र में है वह कोई भी जप सकता है । डैली 17 पाठ लगातार 17 दिन तक करने से इन देवी का एक स्तोत्रात्मक पुरश्चरण संपन्न हो जाता है।

जो घोर शत्रुओं का नाश तक कर डालता है या साधारण से शत्रु हों तो उनकी बुद्धि को स्तंभित कर देता है। शिव जी के पंचाक्षरी के अनुष्ठान के लिए भी लग्न मुहूर्त आदि की विशेष आवश्यक नहीं उसी प्रकार मुण्डमालातन्त्र में कहा गया है कि इनकी सिद्धिके लिये भी नक्षत्रादि विचार , कालशोधन, कुलाकुल , षड् ऋतु समय पर विचार विमर्श की आवश्यकता नहीं (यह छः ऋतुएं जो 24 घण्टे में ही नित्य आती हैं वर्षभर की ऋतुओं का समय अलग बात है यह एक दिन का षट् कर्म ऋतुकाल कहा जाता है। इसके अंतर्गत हेमंत ऋतु " अर्थात प्रातःकाल " में ही शान्ति कर्म और बसन्त " दोपहर से पहले " में वशीकरण का विधान है। व शरद ऋतु " अर्थात आधी रात " में ही मारण कर्म किया जाना चाहिए अर्थात देवी वगलामुखी की सेवा में इन सब नियमों की भी आवश्यकता नहीं है। ये देवी बस भाव की भूखी हैं क्योंकि परमोत्तम शक्ति मात्र भाव देखती हैं पर हाँ पीत पुष्प व पीत आभूषण आदि का ख्याल अवश्य रखें।

बगला महाविद्या ऊर्ध्वाम्नाय के अनुसार ही उपास्य है। अर्थात माता मानकर ही देवी की पूजा का विधान है न कि भोग्य रूप समझकर। कुछ कुछ देवी के रूपों (यक्षिणी आदि) की अलग अलग भाव से पूजा की जाती है पर 10 महाविद्याएं माताओं की भी माता हैं अतः पुत्र भाव से ही इनकी सेवा करके कल्याण होगा। इस आम्नायमें शक्ति केवल पूज्य मानी जाती है, भोग्य नहीं। श्रीकुलकी सभी महाविद्याओं की सकाम उपासना गुरुके सानिध्यमें रहकर सतर्कतापूर्वक ही की जाना चाहिए। सकामता में ब्रह्मचर्यका पालन और बाहर–भीतर की पवित्रता अनिवार्य है।

सर्वप्रथम ब्रह्माजी ने श्रीवगला महाविद्याकी उपासना की थी। ब्रह्माजीने इस विद्याका उपदेश सनकादिक मुनियोंको दिया। सनत्कुमारने देवर्षि नारदको और नारद ने सांख्यायन नामक परमहंस को इसको उपदेश किया। सांख्यायन ने गुरुआज्ञा से छत्तीस पटलॉमें उपनिबद्ध बगलातन्त्रकी रचना की। बगलामुखीके दूसरे उपासक भगवान् विष्णु और तीसरे उपासक परशुराम हुए तथा परशुरामने यह विद्या द्रोणाचार्य को बतायी।

श्रीबगलाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम् ।।

श्रीनारद उवाच ।।
भगवन् देव–देवेश ! सृष्टि–स्थिति–लयात्मकम्।
शतमष्टोत्तरं नाम्नां बगलाया वदाधुना ।।
। श्रीभगवानुवाच ।।
श्रृणु वत्स प्रवक्ष्यामि, नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।
पीताम्बर्या महा–देव्याः स्तोत्रं पाप–प्रणाशनम् ।।
यस्य प्रपठनात् सद्यो, वादी मूको भवेत् क्षणात् ।
रिपूणां स्तम्भनं गाति, सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।।
विनियोगः–

ॐ अस्य श्री पीताम्बर्यष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रस्य, श्रीसदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्रीपीताम्बरा देवता, श्रीपीताम्बरा प्रीतये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः–
श्रीसदा–शिव ऋषये नमः शिरसि,
अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे,
श्रीपीताम्बरा देवतायै नमः हृदि,
श्रीपीताम्बरा प्रीतये जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे । ।।

अष्टोत्तर–शत–नाम–स्तोत्र ।।

ॐ बगला विष्णु–वनिता, विष्णु–शंकर–भामिनी ।
बहुला वेद–माता च, महा–विष्णु–प्रसूरपि ।।1।।

महा–मत्स्या महा–कूर्मा, महा–वाराह–रूपिणी ।
नरसिंह–प्रिया रम्या, वामना बटु–रूपिणी ।।2।।

जामदग्न्य–स्वरूपा च, रामा राम–प्रपूजिता ।
कृष्णा कपर्दिनी कृत्या, कलहा कलकारिणी ।।3।।

बुद्धि–रूपा बुद्ध–भार्या, बौद्ध–पाखण्ड–खण्डिनी ।
कल्किरूपा कलि–हरा, कलि–दुर्गति–नाशिनी ।।4।।

कोटि–सूर्य–प्रतिकाशा, कोटि–कन्दर्प–मोहिनी ।
केवला कठिना काली, कला कैवल्य–दायिनी ।।5।।

केशवी केशवाराध्या, किशोरी केशव–स्तुता ।
रुद्र–रूपा रुद्र–मूर्ति, रुद्राणी रुद्र –देवता ।।6।।

नक्षत्र–रूपा नक्षत्रा, नक्षत्रेश–प्रपूजिता ।
नक्षत्रेश–प्रिया नित्या, नक्षत्र–पति–वन्दिता ।।7।।

नागिनी नाग–जननि, नाग–राज–प्रवन्दिता ।
नागेश्वरी नाग–कन्या, नागरी च नगात्मजा ।।8।।

नगाधिराज–तनया, नग–राज–प्रपूजिता ।
नवीन नीरदा पीता, श्यामा सौन्दर्य–कारिणी ।।9।।

रक्ता नीला घना शुभ्रा, श्वेता सौभाग्य–दायिनी ।
सुन्दरी सौभगा सौम्या, स्वर्णभा स्वर्गति–प्रदा ।।10

रिपु–त्रास–करी रेखा, शत्रु–संहार–कारिणी ।
भामिनी च तथा माया, स्तम्भिनी मोहिनी शुभा।।11।।

राग–द्वेष–करी रात्रि, रौरव–ध्वसं–कारिणी ।
यक्षिणी सिद्ध–निवहा सिद्धेशा सिद्धि–रूपिणी ।12।।

लंका–पति–ध्वसं–करी, लंकेश–रिपु–वन्दिता ।
लंकानाथ –कुलहरा, महा–रावण–हारिणी ।।13।।

देव–दानव–सिद्धौघ–पूजिता परमेश्वरी ।
पराणु–रूपा परमा, पर–तन्त्र–विनाशिनी ।।14।।

वरदा वरदाराध्या, वर–दान–परायणा ।
वर–देश–प्रिया वीरा, वीर–भूषण–भूषिता ।।15।।

वसुदा बहुदा वाणी, ब्रह्म–रूपा वरानना ।
बलदा पीत–वसना, पीत–भूषण–भूषिता ।।16।।

पीत–पुष्प–प्रिया पीतहारा पीत–स्वरूपिणी ।

।।फल–श्रुति।।

इति ते कथितं विप्र ! नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।।17।

यः पठेद् पाठयेद् वापि, श्रृणुयाद् ना समाहितः ।
तस्य शत्रुः क्षयं सद्यो, याति वै नात्र संशयः ।।18।।
प्रभात–काले प्रयतो मनुष्यः, पठेत् सु–भक्त्या परिचिन्त्य पीताम् ।
द्रुतं भवेत् तस्य समस्त–वृद्धिर्विनाशमायाति च तस्य शत्रुः ।। ।।
इति श्रीविष्णु–यामले श्रीनारद–विष्णु–संवादे। श्रीबगलाऽष्टोत्तर–शत–नाम–स्तोत्रं संपूर्णम्।

8. महिषासुर मर्दिनी रक्षा स्तोत्र

जिन भक्तों को अधिक समय न मिले वह सप्तशती के मध्यम चरित्र के अध्याय चार में देवताओं द्वारा की हुई स्तुति के इस अंश का पाठ करके ही अपने घर से बाहर कदम रखें तो भी उनकी परम रक्षा दसों दिशाओं से होती है। यह रक्षक विद्या नामक अंश दुर्गा सप्तशती के मध्यम चरित्र के अध्याय चार से लिया गया रक्षा कवच ही है। जो मात्र चार श्लोकों का है। अतः प्रेम से सुनें– और एक बात ध्यान रहे कि स्तोत्र के पाठ से बिना दीक्षा के भी परमेश्वरी का दर्शन होता है जब याज्ञवल्क्य व निमि ने गुरु को त्याग दिया तब स्तोत्र से ही इन दोनों ने भगवान सूर्य तथा देवी के साक्षात्कार किए थे। बालक शुक्राचार्य ने भी गुरु अंगिरा को त्याग करने के बाद स्वरचित स्तुति से ही भगवान नीलकण्ठ से अनगिनत वरदान पाये। हांलांकि जगदम्बा के स्वामी श्री सदाशिव जी के पंचाक्षरी '' नमः शिवायः'' के लिए भी दीक्षा व लग्न मुहूर्त आदि की आवश्यकता नहीं। आगे देखें यह परम रक्षक स्तोत्र–

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ।।२४
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे । भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ।। २५
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते। यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ २६
खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके। करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ २७ ॥

संस्कृत न आये तो हिन्दी में भी उच्चारण करके ही प्रस्थान करें।

इस स्तुति से पहले समय हो तो 18 भुजा धारिणी महालक्ष्मी जो महिषासुर का वध करके उसका मंगल करने वाली हैं उनका ध्यान करें व पूजा।

तात्पर्य–

हे देवी! आप शूल तथा खड्ग से हमारी रक्षा करो तथा घण्टे की ध्वनि और धनुष की टंकार से भी हमारी रक्षा करो। हे चण्डिके! आप अपने शूल को घुमाकर पूर्व, पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण दिशा में हमारी रक्षा करो। तीनों लोकों में जो आपके सौम्य रूप हैं तथा घोर रुप हैं, उनके द्वारा भी आप हमारी रक्षा करो तथा इस पृथ्वी की भी रक्षा करो। हे अम्बिके! आपके कर–पल्लवों में जो खड्ग, शूल और गदा आदि शस्त्र शोभा पा रहे हैं, उनसे हमारी रक्षा करो।

सार रूप से पुनः कुछ विस्तार से श्रवण करें– सप्तशती के अध्याय चार पर जो देवी स्तुति है (26 श्लोकों की) वह महिषासुर के मरने के बाद देवताओं ने गायी है उसका मनोकामना पूर्ति के लिए अत्यधिक माहात्म्य है पर इस स्तुति से पहले सहस्त्र या 18 भुजाओं वाली देवी महालक्ष्मी या मूल चतुर्भुजी महालक्ष्मी का ध्यान करना चाहिए क्योंकि 4 भुजी महालक्ष्मी ही उस समय देवताओं के तेज को माध्यम बनाकर महिषासुर को मारने के लिए सहस्र भुजा के रूप में प्रकट हुई थी। पर सहस्र की जगह 18 भुजा ही दर्शायी जाती हैं। ध्यान के बाद मानसिक या पंचोपचार पूजा तथा संभव हो तो ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः मंत्र को बिल्वपत्र के तीनों पत्तों पर चंदन या केसर से लिखकर

देवी के चरणों में समर्पित करें (देवी काली जी की पूजा करके भी उनको बिल्वपत्र का विधान है इस अध्याय में देवी चण्डिका व चामुण्डा दोनों का अतुलनीय पराक्रम बताया गया है। तदोपरान्त अध्याय चार की संपूर्ण स्तुती मात्र से परम कल्याण करें और समय कम हो तो उपर्युक्त 4 श्लोकों से रक्षा का कार्य तो निश्चित ही करें।

अथवा

आप मात्र इस अध्याय के 17वें श्लोक का 21 या 51या 108 बार जप करके भी धन धान्य पा सकते हो तथा दुख व दरिद्रता से मुक्त भी इस श्लोक से मनुष्य हो जाते हैं तथा भय संकट और अभिचार कर्म का कुप्रभाव भी इस श्लोक से नष्ट हो जाता है। तथा रक्षा कवच के रूप में आप इसी अध्याय के महान चार श्लोकों का पाठ भी दोनों समय करते रहें उन श्लोकों का संकेत दे रहे हैं जो इस कृति के अन्य अध्याय में स्पष्ट रूप से लिखे हुये हैं। आप भोजपत्र पर इन चार श्लोकों को लिखकर घर में भी रखें तो महामारी का भय नहीं होता तथा उस घर में नकारात्मक ऊर्जा वाले तत्व प्रवेश नहीं करते।
वह 17 वाँ श्लोक का संकेत –
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः..................... सदाऽऽर्द्रचित्ता। ।
तथा रक्षा कवच रूप – शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।........रक्ष सर्वतः।। जो ऊपर वर्णित है।

9. देवी कौशिकी की महाकृपा

जो मनुष्य इन देवी (पराशक्ति महालक्ष्मी) के कौशिकी रूप (आठ भुजाओं से युक्त महासरस्वती रूप) का भजन करता है वह उनकी कृपा से तत्काल ही संकट और समस्या से मुक्त होकर परम सुखी हो जाता है। संकट के नाश के लिए वह सप्तशती के पाँचवे अध्याय के संपूर्ण 75 श्लोकों का पाठ करे।

संकेत– (देवा ऊचुः।।८।। नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः .... या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः..... ....भक्तिविनम्र मूर्तिभिः ।।८२.....)

अथवा

जो मानव धन चाहे वह उसी के 56, 57 व 58 वें श्लोक (मात्र दो लाईन में हैं) का नित्य 1 माला पश्चिम दिशा की ओर मुख करके कमलगट्टा या रुद्राक्ष की माला से जपे। और संभव हो तो सवा लाख।

अथवा

विपत्ति और संकट दूर करने के लिए आप मात्र श्लोक क्रमांक 82 की एक माला ही जपें। पर ध्यान का केंद्र अष्टभुजी कौशिकी होना चाहिए। जिनको महासरस्वती भी कहते हैं और जो पार्वती की पुत्री नाम से भी सुप्रसिद्ध हैं क्योंकि ये देवी उस समय प्रकट हुई थी जब देवता पराम्बा शिवा अर्थात मूल प्रकृति के दूसरे रूप जिसे मूर्ति रहस्य में महा सरस्वती कहा है, की स्तुति इन 75 श्लोकों से कर रहे थे।

जब पार्वती गंगा स्नान करने आई थी तब पार्वती जी ने पूछा कि हे देवों! आप किसकी स्तुति कर रहे हो तब ये महासरस्वती देवी गौरी के शरीर कोश से प्रकट हुई और कौशिकि संज्ञा प्राप्त की। और अपना यथार्थ परिचय बताया। यह सब इस पंचम अध्याय के श्लोक क्रमांक 85 में वर्णित है। उसी क्षण गौरी पार्वती का तन कृष्ण वर्ण का हो गया और उनका नया नाम कालिका भी हुआ। (कालिकेति समाख्याता) । अब आप इन देवी अष्ट भुजा धारी कौशिकी जी के दर्शन करें। जो इसी अध्याय में है। इनका ध्यान करके पूजा करें तदोपरान्त स्तोत्र जपें। सप्तशती के प्रसंगों के अनेको युगों बाद कालान्तर में इन्होनें ही दुर्गमासुर का वध करके दुर्गा की संज्ञा को प्राप्त किया। ये 12वें अध्याय में भविष्यवाणी है। इस कौशिकी अवतार में इन्होंने ही शुम्भ और निशुम्भ को मारा । यह पावन कथा हर मानव को जीवन में कम से कम एक बार तो सुनना या पढना ही चाहिए। इस अवतार में इनका सहयोग सातवें पाठ में काली देवी ने भी किया था रक्तबीज तथा चण्ड–मुण्ड के नाश के लिए उन काली ने खट्वांग ,पाश व तलवार से असुरों को मारा। वे चीते के चमडे की साडी पहने हुए थी व नर मुण्डों की माला थी। हड्डियों के ढांचे के रूप की लीला थी। उसी दिन से इन देवी का नाम चामुण्डा हुआ। दक्ष यज्ञ में यज्ञ के विध्वंस के लिए वीरभद्र के साथ महारुद्र देव की जटा से भी ये कालिका प्रकट हो चुकी हैं।

10. दुर्गा केवलं

सदा ही श्रीदुर्गा श्रीदुर्गा और केवल श्रीदुर्गा ही जपो ....जपे जाओ जपे जाओ...... वही राधे और वही चामुण्डा व वही चण्डिका साक्षात् हैं शेष सब कुछ भूल जाओ। ये देवी ही समस्त ब्रह्माण्डों के त्रिदेवों का योगक्षेम वहन करती हैं। इनको विधि पूर्वक मल्लिका अर्थात् बेला के पुष्प अर्पित करके मानव विष्णु तक बन जाता है या इनकी प्रकृति विद्या को कंठ पर धारण करने मात्र से वह त्रिदेवों के समान सेवनीय ,पूजनीय व दर्शनीय हो जाता है।

दुर्गा दुर्गेति दुर्गेति दुर्गानाम परं मनुम् ।
योे जपेत् सततं चण्डि ! जीवन्मुक्तः स मानवः ॥
महोत्पाते महारोगे महाविपदि सङ्कटे ।
महादुःखे महाशोके महाभयससुत्थिते ।
यः स्मरेत् सततं दुर्गां जपेत् यः परमं मनुम् ।
स जीवलोको देवेशि ! नीलकण्ठत्वमवाप्नुयात् ॥
–मुण्डमालातन्त्रम्'

अर्थात्

दुर्गा, दुर्गा, दुर्गा–
यह दुर्गा नाम श्रेष्ठ मंत्र है।
हे चण्डी! जो मानव सर्वदा इस मंत्र का जप करता है,
वह मानव जीवन्मुक्त है।
महाउत्पात में, महारोग में, महाविपत्ति में,
संकट में, महादुःख में, महाशोक में,
महाभय के उपस्थित होने पर जो सदा
दुर्गा का स्मरण करता है,
जो दुर्गा इस श्रेष्ठ मंत्र का जप करता है,

हे देविशि! जीवलोक में वह नीलकंठत्व अर्थात् रुद्र स्वरूपता का लाभ प्राप्त कर लेता है।

11. श्रीदुर्गा सप्तशती पाठ के दो नियम

दुर्गा सप्तशती के पाठ के दो तरीके हैं एक अति संक्षिप्त और एक यह जो हम बता रहे हैं।

इसके अनुसार शुद्ध होकर सप्तशती पुस्तक को सामने बाजोट पर विराजमान करें संभव हो तो देवी का यंत्र भी रखें । फिर पूर्व की ओर मुख करके संकल्प व पूजा का जो प्रकार है वह भलीभांति संपन्न करें। योनीमुद्रा से देवी को नमन करें ।

(पुस्तक की पूजा का मन्त्र यह है जो सर्वविदित है वह वाराही तंत्र में है। – ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्

पूजा के बाद शापोद्धार करें । मारीच कल्प के अनुसार शाप विमोचन का मंत्र– ॐ श्रीं श्रीं क्लीं हूं ॐ ऐं क्षोभय मोहय उत्कीलय उत्कीलय उत्कीलय ठं ठं। 108 बार जप) तथा अध्याय 2,3,4 का पाठ , फिर पहले अध्याय का पाठ अब 5–13 अध्यायों के पाठ से उत्कीलन हो जाता है।

(वैसे कुछ विद्वानों के अनुसार छः अंगों के साथ सप्तशती पाठ से ही शापोद्धार हो जाता है अतिरिक्त शापोद्धार की आवश्यकता नहीं । पर ये छः अंगों का क्रम यह हो –

पहले देवी कवच

फिर अर्गला स्तोत्र तदोपरान्त कीलक स्तोत्र (ये तीन इसी क्रम में) अब पाठ करके तीनों रहस्य (प्राधानिक, वैकृतिक और मूर्ति रहस्य ये तीन)

यह क्रम है पर चिदम्बरम संहिता में

- अर्गला स्तोत्र
- कीलक स्तोत्र
- देवी कवच (यह क्रम है) यह चिदम्बरम संहिता का क्रम एक प्रकार से इस अक्षयरुद्र को सही लगता है क्योंकि स्तुति करके भगवति को प्रसन्न करके ही उनसे कवच द्वारा संरक्षण मांगना चाहिए। यह व्यवहारिक भी लगता है। पर आगे जो भी अच्छा लगे वह करें। और कुछ न करना हो तो मात्र सिद्ध कुंजिका स्तोत्र के पाठ के बाद ही मूल पाठ करें। श्री रुद्रयामल के गौरीतंत्र के कुंजिका स्तोत्र में भगवान शिव ने डायरेक्ट ही यह कहा है कि इसका पाठ करके सीधे ही सात सौ श्लोक पढ़े न तो कवच, अर्गला, कीलक की आवश्यकता है न ही तीन रहस्यों को । सूक्त भी आवश्यक नहीं और तो और न्यास, ध्यान व पूजा भी आवश्यक नहीं। भगवती पराशक्ति इस सिद्ध कुंजिका को सुनते ही छः अंगों (क. अ . की तथा त्रिरहस्य) का फल दे देती हैं अतः सिद्ध कुंजिका पाठ करके तुरंत 13 अध्याय करें।

एक और नवार्ण मन्त्र व सूक्त को जोड़ा जाए तो यह क्रम मिलता है।

1. कवच 2. अर्गला 3. कीलक 4. रात्रिसूक्त 5. नवार्ण मन्त्र की एक माला 6. सम्पूर्ण सप्तशती 7. पुनः नवार्ण 8. देवी सूक्त अब 9,10,11 अर्थात त्रयी सूक्त 12 . स्वाहा देवी के षोडश नाम वाला स्तोत्र, 13–17 क्षमा, आरती दक्षिणा और प्रदक्षिणा, साष्टांग नमन

अथार्गलास्तोत्रम् ॥

ॐ अस्य श्रीअर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विर्ष्णुऋषिः,अनुष्टुप् छन्दः,

श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, श्रीजगदम्बाप्रीतये सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः॥

ॐ नमश्चण्डिकायै॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥1॥

जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते॥2॥

मधुकैटभविद्राविविधातृवरदे नमः।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥3॥

महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥4॥

रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनि।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥5॥

शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥6॥

वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥7॥

अचिन्त्यरुपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥8॥

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥9॥

स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥10॥

चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥11॥

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥12॥

विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥13॥

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥14॥

सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥15॥

विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥16॥

प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥17॥

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥18॥

कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥19॥

हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥20॥

इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥21॥

देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥22॥

देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥23॥

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम् ॥24॥

इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः।
स तु सप्तशतीसंख्यावरमाप्नोति सम्पदाम॥25॥

॥ इति देव्या अर्गलास्तोत्रं सम्पूर्णम्

12. देवी अथर्वशीर्ष का अद्भुत माहात्म्य

हम अनेक वर्षों से चारों (और एक इस) अथर्वशीर्षों का वर्णन कर रहे हैं यह आप जानते भी हो पर एक महत्वपूर्ण बात केवल शाक्त भक्त ही जानते हैं वह यह कि – मात्र पराशक्ति का अथर्वशीर्ष ही सब पर भारी है । केवल इस अथर्वशीर्ष के ही पाठ से आपको अन्य चारों अथर्वशीर्ष के पाठ का दिव्य फल मिल जाता है। इस अथर्वशीर्ष के पाठ के बिना किसी भी मूर्ति की स्थापना करने पर भी वह मूर्ति की देवी उस साधक को शक्ति और भक्ति नहीं दे सकती। इसके 108 बार पाठ करके इसे सिद्ध करने के बाद जो मात्र 10 पाठ ही करता है (उच्चारण पूर्वक) वह पूर्णतः पवित्र और निष्पाप हो जाता है। रात 9 के बाद इसे जप करने पर मनुष्य की वाणी सिद्ध हो जाती है। नवीन प्रतिमा के पास बैठकर जप करने से देवी का परम सान्निध्य प्राप्त होता है। भौमाश्विनी पर देवी मंदिर में इसके जप करने से उसे महा मंगल, परमसुख तथा मोक्ष प्राप्त होता है । वह भवरोग से मुक्त होकर मणिद्वीप प्राप्त कर कृतकृत्य हो जाता है।

आइये देखते हैं यह महा माहात्म्य युक्त श्रीदेव्यथर्वशीर्षम्

ॐ दुर्गायै नमः

●●●●●●●●●●●●●●●

अथ श्री देव्यथर्वशीर्षम्

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति ॥ १ ॥

(सभी देववर्ग देवी के पास गए और पूछने लगे कि आप कौन हो ?)

●●●●●●●●●●●●●●●●●

साब्रवीत् दृ अहं ब्रह्मस्वरूपिणी ।

(तब ऐश्वर्य और सौंदर्य की प्रतिमूर्ति वह पराम्बा बोली कि –" मैं ही एकमात्र परब्रह्म स्वरूपिणी हूँ)

मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत् ।

शून्यं चाशून्यं च ॥ २

अहमानन्दानानन्दौ ।

अहं विज्ञानाविज्ञाने।

अहं ब्रह्माब्रह्मणी वेदितव्ये।

अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि ।

अहमखिलं जगत् ॥ ३ ॥

(मैं ही सबकी उत्पत्ति का कारण हूँ आनन्द और अनानन्द रूपा मैं ही हूँ अर्थात निष्पाप व धर्मपरायण जितेन्द्रिय और क्रोधरहित शान्तचित्त ब्रह्मज्ञानियों को आनन्द रूप में मैं ही प्राप्त होती हूँ तथा अधार्मिक लोगों के अनानन्द रूप (विक्षेपण स्थिति) में भी मैं ही हूँ । ज्ञानियों का विज्ञान और अज्ञानियों का अविज्ञान मैं ही हूँ।

जानने योग्य परब्रह्म और न जानने योग्य अपर ब्रह्म भी मैं ही हूँ। पंचभूत और अपंचभूत भी मैं ही हूँ और तो और यह चराचर विश्व मैं ही हूँ अर्थात मैं ही एकमात्र परब्रह्म हूँ मेरे सिवाय कुछ भी नहीं ।)

●●●●●●●●●●●●●●●●●

वेदोऽहमवेदोऽहम् । विद्याहमविद्याहम्। अजाहमनजाहम्। अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम् ॥४॥ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि । अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ ॥५॥ अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि अहं विष्णुपुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि ॥६॥

अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते । अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे । य एवं वेद । स दैवीं सम्पदमाप्नोति ॥ ७ ॥

●●●●●●●●●●●●●●●●●●

ते देवा अब्रुवन्

(सुनकर देवताओं ने यथार्थ पराविज्ञान जाना तब देवतावर्ग कृतकृत्य होकर बोला कि –)

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ ८ ॥

तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् । दुर्गा देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः ॥९॥ देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति । सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु ॥ १० ॥

कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम् । सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम् ॥ ११ ॥

महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि ।

तन्नो देवी प्रचोदयात् ।।12

अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव ।

तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः।।13 ।।

कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः। पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्यैषा विश्वमातादिविद्योम् ॥ १४ ॥

एषाऽऽत्मशक्तिः ।

एषा विश्वमोहिनी ।

पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा। एषा श्रीमहाविद्या ।
य एवं वेद स शोकं तरति ॥ १५ ॥

(यही आत्मशक्ति है यही विश्वमोहिनी महामाया है । ये ही षोडशी महाविद्या है जो पाश अंकुश और धनुष बाण धारण करती हैं जिनका नाम ललिता त्रिपुरसुन्दरी भी है आगे ऋषि कहते हैं कि जो इन महालक्ष्मी अर्थात ह्रीं बीज स्वरूपिणी भुवनेश्वरी या 18 भुजा धारण करने वाली पराशक्ति को सर्वेश्वरेश्वरी रूप में जानता है वह शोक को पार कर अमृत प्राप्त कर कृतकृत्य व धन्य धन्य महाधन्य हो जाता है)

नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः ॥ १६ ॥

सैषाष्टौ वसवः । सैषैकादश रुद्राः । सैषा द्वादशादित्याः ।

सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः ।

सैषा सत्त्वरजस्तमांसि । सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी । सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः। सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतींषि । कलाकाष्ठादिकालरूपिणी । तामहं प्रणौमि नित्यम् ॥

पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम् ।
अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम् ॥ १७

वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम् ।
अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम्। ।18

एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः।
ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः ॥ १६ ॥

वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम् । सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्तष्टात्तृतीयकः ।

नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः।
विच्चे नवार्णकोऽर्णः । स्यान्महदानन्ददायकः ॥ २० ॥

हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां

प्रातः सूर्यसमप्रभाम् ।

●●●●●●●●●●●●●●●

पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम् ।
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे ।।21

नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम् ।
महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम् ॥ २२ ॥

(कामधेनु के समान भक्तों के मनोरथ पूर्ण करने वाली सौम्य रूपा जो पाश अंकुश वरद और अभय मुद्रा धारण करती हैं जो तीन नेत्र धारण करती हैं लाल रंग के वस्त्र धारण करती हैं उन परब्रह्म स्वरूपिणी पराशक्ति को मैं भजता हूँ ।)

महाभय का नाश करने वाली

भयंकर संकटों का भी तत्काल नाश करने वाली

और महाकारुण्य रूपा अर्थात महान करुणा की मूर्ति आपको मैं नमस्कार करता हूँ । बार बार नमस्कार करता हूँ ।

●●●●●●●●●●●●●●

यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया। यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता । यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या । यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यते अजा। एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका । एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका । अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजैका नैकेति ॥ २३ ॥ मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी ।

ज्ञानानां चिन्मयातीता' शून्यानां शून्यसाक्षिणी ।

●यस्याः● परतरं ●नास्ति● सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता ॥ २४ (जिनसे श्रेष्ठ कुछ भी नहीं किसी भी लोक में जिनसे श्रेष्ठ अन्य कोई भी नहीं वे ही मेरी माँ अम्बिका महालक्ष्मी भुवनेश्वरी ही दुर्गा नाम से प्रसिद्ध हैं ।

●●●●●●●●●●●●●●

तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम् ।
नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम् ॥ २५

अर्थात

संसार सागर के त्रिविध तापों से डरा हुआ मैं उन दुराचारनाशक, दुर्विज्ञेय और संसार से तारने वाली पराम्बा दुर्गा देवी को नमस्कार करता हूँ बार बार नमस्कार करता हूँ।

इति श्री देव्यथर्व शीर्षम् संपूर्णम्

●●●●●●●●●●●●●

13. गौरी तंत्र में सफलता की चाबी अर्थात् सिद्ध कुंजिका

देखिए श्रीरुद्रयामल के गौरी तंत्र, विश्वसार तंत्र, वृहद विज्ञान तंत्र , कुलार्णव तंत्र , मुण्डमाला तंत्र में पाँच बाते अति महत्वपूर्ण हैं।

1.●पहली बात यह कि गौरीतंत्र में यह सिद्ध कुंजिका स्तोत्र दिया गया है, विश्व सार तंत्र में 108 नाम की नामावली है उसको भौमवती अमावास्या को शतभिषा नक्षत्र की रात में लिखने मात्र से अतुलनीय धन अपने आप ही आ जाता है। (वह पाठ यह है – ॐ सती साध्वी भवप्रीता... ब्रह्म वादिनी नामक चौदह श्लोक हैं)

2.●वृहद विज्ञान तंत्र में अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठ गुरु का अद्‌भुत माहात्म्य है।

3.●कुलार्णव तंत्र में कुलेश महादेव ने इष्ट पादुकाओं के सुमिरन का अद्वितीय माहात्म्य बताया है।

यह परा श्री पादुका स्तोत्र नाम से विख्यात है। यह पादुका स्तोत्र आप स्तोत्र निधिवन भाग एक में देखें) ,
वृहद विज्ञान तंत्र का गुरु माहात्म्य (हमने शिव चरित मानस भाग द्वितीय में दिया है ।
4.●यह 108 नाम स्तोत्र निधिवन भाग द्वितीय में हैं अवश्य देखें।
5. और दुर्गा नाम का अद्वितीय माहात्म्य मुण्डमाला तंत्र से देखें ।
और यह प्रस्तुत है सिद्ध चाबी का रहस्य जिससे सफलता का ताला खुलता है।

सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम्

शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत् //१ //

न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम् // २ //

कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम् // ३ //

गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठमात्रेण संसिद्धयेत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् //४ //

(यह कुंजिका स्तोत्र का माहात्म्य है जिसका अर्थ यह है कि जो भी देवी का भक्त इस अग्रवर्णित स्तोत्र का पाठ करके सप्त शती का पाठ करेगा उसको सप्तशती के पाठ का सम्यक् फल प्राप्त होगा। जो इसे नहीं पढ़ेगा उसे 13 अध्यायों वाली मार्कण्डेय पुराण की सप्तशती का फल नहीं मिलने वाला। और एक महत्वपूर्ण बात भी महादेव ने कौशिकी की माँ पार्वती से कही है कि इस कुंजिका को पढ़ने मात्र से देवी के न्यास का फल, ध्यान का फल,

देवी की पूजा का फल, कवच का फल, अर्गला कीलक, देवी सूक्त व रहस्य का संपूर्ण फल भी मिल जाता है अतः साधक सीधे ही इसका पाठ करके सप्तशती का पाठ कर सकते हैं।

अथ मन्त्रः

ॐ

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥

ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः

ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ॥

॥ इति मन्त्रः ॥

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि ।।१।।

नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि ।
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे ॥ २ ॥

ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका ।
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते ॥३ ॥

चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी।
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि ॥ ४ ॥

धां धीं धू धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी।
क्रां क्रीं क्रू कालिका देवि शां शीं शू मे शुभं कुरु ॥ ५ ॥

हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः ॥ ६ ॥

अं कं चं टं

तं पं यं शं

वीं दुं ऐं वीं हं क्षं

धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ७ ॥

पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा।

सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे ॥ ८॥

इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहेतवे ।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति ॥

यस्तु कुञ्जिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत् ।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा। ।

इति श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

।।ॐ तत् सत्। ।

देखिए जो मनुष्य रहस्यों (प्राधानिक, वैकृतिक और मूर्ति जो की आजकल सप्तशती की पुस्तक में आते ही हैं) को पढ़ना चाहे वह सप्तशती के बाद ही पढ़े न कि पहले। हमने इस महाग्रंथ के किसी एक अध्याय (दुर्गा सप्तशती पाठ के दो नियम) में सारे नियम लिख दिए हैं । हालांकि कभी भी अकेले स्वाध्याय का लक्ष्य हो तो यूँ ही रहस्यों को पढ़ने की मनाही नहीं पर सकाम अनुष्ठान में सप्तशती का संकल्प लेकर नियम पालने वालों के लिए (जिसने सिद्ध कुंजिका नहीं पढ़ा उसे) यह त्री रहस्य सप्तशती के बाद पढ़ने ही चाहिए। वैसे विस्तार का नियम यह था कि–पूजा आदि, कवच, अर्गला स्तोत्र, कीलक स्तोत्र, रात्रिसूक्त, नवार्ण, सप्तशती, नवार्ण पुनः, देवीसूक्त, रहस्य, स्वाहा देवी के 16 नामों का सुमिरण आरती दक्षिणा और क्षमा आदि।

14. श्रीचण्डिका
अनुग्रह अर्थात् सप्तशती माहात्म्य

इस भारत में पराशक्ति श्रीदुर्गा जी का भक्त भौतिक वस्तुओं के लिए कभी भी नहीं रो सकता । वह यदि रोता है तो अपने अहंकार से या संतों से देवी माहात्म्य न सुन पाने के कारण ही। अब देखो कौन कौन रो रहा है ?

उत्तर– जो मनुष्य अपने आपको देवी का भक्त तो कहता है परंतु आज तक उसने मार्कण्डेय पुराण का 700 श्लोकी एक महाअंश नहीं पढ़ा वह वास्तव में देवी का भक्त है ही नहीं अर्थात जो आज तक की हर नवदुर्गा को दुर्गा सप्तशती की शरण में नहीं गया वह वास्तव में शापित भक्त ही है। उसका जटिल प्रारब्ध ही मान लो।

<u>जो देवी के माहात्म्य नामक सप्तशती रहस्य</u>

<u>से हीन और वंचित है</u>

<u>वह अभागा ही है ।</u>

औपचारिक पूजा पाठ से देवी की परम प्रसन्नता नहीं मिलती यह औपचारिक पूजा मात्र अल्पफल देने वाली है । लगातार साल भर आप भले ही डैली देवी का अभिषेक गन्ने के रस से कर लो या आम्रधारा से तदोपरान्त आप भले ही नित्य 10000 मल्लिका पुष्पों से देवी की पूजा करके हवन कर डालो या डैली 10000 संध्यापूत जितेन्द्रिय ब्राह्मणों या धर्मपरायण गरीबों को 56 भोग खिलाओ फिर भी वे देवी को परम प्रसन्न नहीं कर सकते यह सब देवी ने ही सप्तशती के अंतर्गत 12 वें अध्याय में कहा है । हालांकि मुख्य पाठ 11 अध्यायों का ही है शेष दो तो महिमा के लिए जपने का आदेश है ताकि माहात्म्य जानकर सामान्य नर नारी अपनी श्रृद्धा को बढ़ा दें आजकल के लोग बिना फल के भला क्या कर सकते हैं नथिंग।

अतः अब देखो देवी दुर्गा ने क्या कहा है – खुद ही पढ़ लो ।

और पढ़कर चुपचाप हर नवदुर्गा में (या कम से कम क्वांर की नवदुर्गाओं में) नौ दिन तक आप निश्चित ही देवी के पराक्रम संबंधित तीनों चरित्र निश्चित ही पढ़ो यह हम अक्षयरुद्र आपसे आशा करते हैं। ताकि आपका भय, आपका संकट, आपकी समस्याओं पर चण्डिका का आघात हो, आप पर करुणा और कृपा की वर्षा हो ताकि आप सुरक्षित हो सकें। पर एक स्तोत्र,देवी कवच, सिद्धकुंजिका के पाठ के बाद आप सप्तशती पढे तो महाकृपा होती है।

<u>पुनः सार सुन लें –</u>

<u>मात्र एक बार ये 13 अध्याय पढ़ने से ही</u>

<u>आपको 365 दिन की श्रीदुर्गा सेवा</u>

<u>का महाफल मिल जाता है।</u>

बलि, पूजा, यज्ञ, ब्राह्मण भोज आदि का सारा फल मात्र एक बार के पाठ 700 श्लोक से आपको मिल जायेंगे। विधि के बारे में परेशान न हों मात्र सिद्ध कुंजिका के बाद ही सीधे ही एक या दो बैठक में पूरे 13 अध्याय उच्चारण

पूर्वक पढ़े। भाषा की चिंता न करें माता भाव देखती हैं पर आपको संस्कृत आती हो तो मूल देववाणी में ही उच्चारण करें।

अब देखो – देवी महिषासुर मर्दिनी और शुम्भ निशुम्भ का घात करने वाली व मधु कैटभ का नाश करने वाली देवी ने क्या कहा – हे देवताओं !

जो मधुकैटभका नाश (अध्याय एक),

महिषासुरका वध (अध्याय 2–4)

तथा धूम्र लोचन, चण्ड मुण्ड, रक्तबीज वध से लेकर शुम्भ–निशुम्भके संहार के प्रसंग (अध्याय 5 –11) का पाठ करेंगे ॥ तथा–

●**अष्टमी,**
●**नवमी**
●**चतुर्दशी**

को भी जो एकाग्रचित्त हो भक्तिपूर्वक मेरे उत्तम माहात्म्य (अध्याय 12 ,13 सहित पाठ) का श्रवण करेंगे ॥

● उन्हें कोई पाप नहीं छू सकेगा।
● उनपर पापजनित आपत्तियाँ भी नहीं आयेंगी।
● उनके घरमें कभी दरिद्रता नहीं होगी तथा
● उनको कभी प्रेमीजनोंके विछोहका कष्ट भी नहीं भोगना पड़ेगा ॥
●इतना ही नहीं, उन्हें शत्रुसे, लुटेरोंसे, राजासे, शस्त्रसे, अग्नि (बिजली तथा आग) से तथा जल की राशिसे भी कभी भय नहीं होगा ॥

इसलिये सबको एकाग्रचित्त होकर भक्तिपूर्वक मेरे इस माहात्म्यको सदा पढ़ना और सुनना चाहिये। यह परम कल्याणकारक है ॥

● मेरा माहात्म्य महामारीजनित समस्त उपद्रवों को नष्ट करने वाला है। तथा

● आध्यात्मिक आधिदैविक और आधिभौतिक ये तीनों प्रकारके उत्पातों (तापों) को शान्त करनेवाला है ॥

●मेरे जिस मन्दिर में प्रतिदिन विधिपूर्वक (सम्पूर्ण विधि से पुजारी द्वारा या किसी भी भक्त के द्वारा नित्य) मेरे इस माहात्म्यका पाठ किया जाता है, उस स्थान को मैं कभी नहीं छोड़ती। वहाँ सदा ही मेरा सन्निधान बना रहता है अर्थात मैं 24 घण्टे उस मंदिर में निवास करती हुई परम कृपा करके अभ्युदय का कारण बनती हूँ।
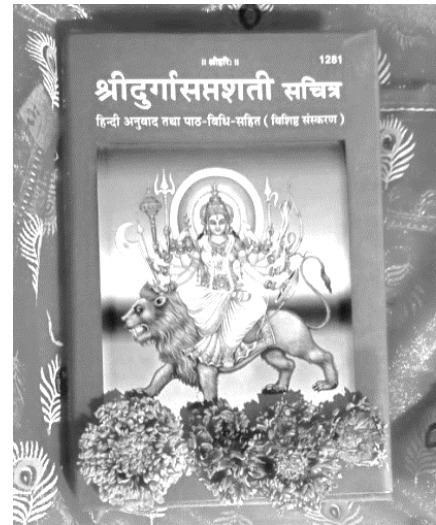
●**बलिदान,**

●**पूजा,**

●**होम तथा**

●महोत्सवके अवसरोंपर मेरे इस चरित्रका पूरा– पूरा पाठ और श्रवण करना चाहिये ॥

(कोई सुनाने वाला न हो तो पाठ स्वयं करना चाहिए अथवा किसी संध्यापूत जितेन्द्रिय ब्राह्मण को नियुक्त करके उनसे सपरिवार मंदिर या प्रांगण में बैठकर सुनने की व्यवस्था करवाना चाहिए; पर कथा के बीच में कथा को छोड़कर साधारण घर गृहस्थी की बातें या राजनीति की बातें न करे वक्ता अन्यथा वह वक्ता दोष को भी पाता है)

ऐसा करने पर (सप्त शती के 13 अध्यायों को सुनने या वाचन करने पर तथा नव दिवस अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक रहने पर)मनुष्य विधि को जानकर या बिना विधि जाने भी मेरे लिये जो बलि, पूजा या होम आदि करेगा, उसे मैं बड़ी प्रसन्नताके साथ ग्रहण करूँगी ॥

■शरत्कालमें जो वार्षिक महापूजा की जाती है, उस अवसरपर जो मेरे इस माहात्म्यको भक्तिपूर्वक सुनेगा,

■वह मनुष्य मेरे प्रसादसे सब बाधाओंसे मुक्त तथा

■धन,

■धान्य एवं

■पुत्रसे सम्पन्न होगा– इसमें तनिक भी संदेह नहीं है ॥

■मेरे इस माहात्म्य, मेरे प्रादुर्भावकी सुन्दर कथाएँ तथा युद्धमें किये हुए मेरे पराक्रम सुननेसे मनुष्य निर्भय हो जाता है ॥

■मेरे माहात्म्यका श्रवण करनेवाले पुरुषोंके शत्रु नष्ट हो जाते हैं,

■उन्हें कल्याणकी प्राप्ति होती तथा

■उनका कुल आनन्दित रहता है ॥

■सर्वत्र शान्ति–कर्ममें, बुरे स्वप्न दिखायी देनेपर तथा ग्रहजनित भयंकर पीड़ा उपस्थित होनेपर मेरा माहात्म्य श्रवण करना चाहिये ॥

■इससे सब विघ्न तथा

■भयंकर ग्रह–पीड़ाएँ शान्त हो जाती हैं और मनुष्योंद्वारा देखा हुआ

■ दुःस्वप्न शुभ स्वप्नमें परिवर्तित हो जाता है ॥

■बालग्रहोंसे आक्रान्त हुए बालकोंके लिये यह माहात्म्य शान्तिकारक है तथा

■ मनुष्योंके संगठनमें फूट होनेपर यह अच्छी प्रकार मित्रता करानेवाला होता है ॥

■ **यह माहात्म्य समस्त दुराचारियोंके बलका नाश करानेवाला है।**

■**इसके पाठमात्र से राक्षसों, भूतों और पिशाचोंका नाश हो जाता है ॥**

■ **मेरा यह सब माहात्म्य मेरे सामीप्यकी प्राप्ति करानेवाला है।**

पशु, पुष्प, अर्घ्य, धूप, दीप, गन्ध आदि
उत्तम सामग्रियोंद्वारा पूजन करनेसे,
ब्राह्मणोंको भोजन करानेसे,
होम करनेसे,
प्रतिदिन अभिषेक करनेसे,
नाना प्रकार के अन्य भोगों का अर्पण करने से
तथा दान देने आदिसे
एक वर्षतक जो मेरी आराधना की जाती है
और उससे मुझे जितनी प्रसन्नता होती है,
उतनी प्रसन्नता मेरे इस उत्तम चरित्र
का एक बार श्रवण करनेमात्रसे हो जाती है।

■यह माहात्म्य श्रवण करने पर सम्पूर्ण पापोंको हर लेता और आरोग्य प्रदान करता है ॥
■मेरे प्रादुर्भावका कीर्तन समस्त भूतोंसे रक्षा करता है तथा
■मेरा युद्धविषयक चरित्र दुष्ट दैत्योंका संहार करनेवाला है ॥
■इसके श्रवण करनेपर मनुष्योंको शत्रुका भय नहीं रहता।
ॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐ

देवताओ ! तुमने और ब्रह्मर्षियोंने जो मेरी स्तुतियाँ की हैं ॥ 24 ॥ तथा ब्रह्माजीने जो स्तुतियाँ की हैं, वे सभी कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती हैं।

●वनमें,
●सूने मार्गमें
●अथवा दावानल से घिर जानेपर ॥
●निर्जन स्थानमें,
●लुटेरोंके दावमें पड़ जानेपर या
●शत्रुओंसे पकड़े जानेपर अथवा
●जंगलमें सिंह, व्याघ्र या जंगली हाथियोंके पीछा करनेपर ॥
●कुपित राजाके आदेशसे वध या
●बन्धनके स्थानमें ले जाये जानेपर अथवा
●महासागरमें नावपर बैठनेके बाद भारी तूफानसे नावके डगमग होनेपर ॥ और
●अत्यन्त भयंकर युद्धमें शस्त्रोंका प्रहार होनेपर (मेरे माहात्म्य के चिंतन मात्र से रक्षा हो जाती है)
●अथवा शारीरिक वेदना से पीड़ित होनेपर, किं बहुना, सभी भयानक बाधाओंके उपस्थित होनेपर जो मेरे इस चरित्रका स्मरण करता है, वह मनुष्य संकटसे मुक्त हो जाता है।

●मेरे प्रभावसे सिंह आदि हिंसक जन्तु नष्ट हो जाते हैं तथा लुटेरे और शत्रु भी मेरे चरित्रका स्मरण करनेवाले पुरुषसे दूर भागते हैं ॥

नोट – मेष राशि में सूर्य के प्रवेश करने पर तो स्त्रोत का फल अनेक गुना बढ़ जाता है अतः देवी के भक्त आज चैत्र शुक्ल पक्ष की अष्टमी को लगातार 4 घंटे भी संपूर्ण 13 अध्याय कर सकते हैं। या मात्र मध्यम चरित्र ही पढ़ लें निश्चित ही मंगल होगा।

देवी ने ऊपर ये तीन तिथि स्पष्ट कही हैं। (अष्टमी, नवमी और चतुर्दशी)

– भुवनेश्वरी किंकर अक्षयरुद्र अंशभूतशिव

15. वैकृतिक रहस्य का वर्णन

देवी रहस्य महाग्रंथ के इस अध्याय में वैकृतिक रहस्य का वर्णन है इस अध्याय को समझने के लिए हमने इसे कुछ सरल और सहज कर दिया है आशा है कि शक्ति के उपासक इसे पढ़कर विश्रांति को पायेंगे। इसमें 3 महान स्वरूपों की सेवा पूजा का वर्णन है। देवी के हर भक्तों को इस रहस्य का ज्ञान होना ही चाहिए ताकि वह सभी प्रकार की भ्रांतियों से मुक्त रहे। इस जगत में आजकल अधिकांश लोग मनचाहा ज्ञान परोस रहे हैं जिनका शास्त्रों से कोई वास्ता ही नहीं अतः उचित है कि भगवान वेदव्यास या अन्य सनातन ऋषियों के द्वारा रचित ग्रंथों से ही सत्य समझा जाए।

अथ श्री वैकृतिक रहस्य–

ऋषि कहते हैं– राजन् । पहले जिन सत्त्वप्रधाना त्रिगुणमयी महालक्ष्मी जिनका बीज देवी प्रणव है अर्थात ह्रीं, उनके ही तामसी आदि भेदसे तीन स्वरूप बतलाये गये, वे ही सभी लोकों और समस्त विश्व में शर्वा, चण्डिका, दुर्गा, भद्रा और भगवती आदि अनेक नामोंसे कही जाती है। देवी महालक्ष्मी ही महाकाली रूप से भीतर से सतोगुणी होते हुए भी बाहर से तमोगुणमयी कही जाती हैं वे महाकाली भगवान् विष्णु की योगनिद्रा कही गयी हैं विष्णु और महेश आदि को देह भी वे ही प्रदान करती हैं। मधु और कैटभका नाश करनेके लिये ब्रह्माजीने जिनकी स्तुति की थी, उन्हींका नाम महाकाली है ॥ जो इन श्रीमहाकाली का उपासक है वह काल को भी अपने अधीन करने की क्षमता पा लेता है।

इनके–

- दस मुख,
- दस भुजाएँ और
- दस पैर हैं।

वे काजलके समान काले रंगकी है तथा तीस नेत्रोंकी विशाल पङ्क्तिसे सुशोभित होती है। भूपाल ! उनके दाँत और दाढ़ें चमकती रहती है। यद्यपि उनका रूप भयंकर है, तथापि वे रूप, सौभाग्य, कान्ति एवं महती सम्पदाकी अधिष्ठान (प्राप्तिस्थान) हैं।

●●श्री महाकाली के आयुध ●●

वे अपने 10 हाथोंमें–

1. खड्ग,
2.बाण,
3. गदा,
4. शूल,
5.चक्र,
6. शङ्ख,
7.भुशुण्डि,
8.परिघ,

9.धनुष तथा

10.जिससे रक्त चूता रहता है, ऐसा कटा हुआ मस्तक धारण करती हैं।

ये महाकाली भगवान् विष्णु की दुस्तर माया हैं। इनकी ही कृपा से विष्णु रुद्र आदि माया की रचना और लीला आदि कर पाते हैं।(यथार्थ में ये देवी त्रिदेव की माँ के समान है क्योंकि देह का निर्माण कर कृतकृत्य करने वाली माँ ही कही जाती है और यह सप्तशती के प्रथम अध्याय से स्पष्ट होता है)

आराधना करनेपर ये देवी श्री महाकाली; बीज क्लीं है जिनका चराचर जगत को और सभी देवताओं के प्रवर्ग को भी अपने उपासकके अधीन कर देती हैं ॥5–6॥

इनका सहस्र नाम अथवा अष्टोत्तरशतनाम भी जपा जा सकता है या रात्रिसूक्त भी। (अब आगे सुनें) दनु व कश्यप के पोते अर्थात महिषासुर को मारने के लिए इसी मन्वन्तर में सम्पूर्ण देवताओंके अङ्गोंसे जिनका प्रादुर्भाव हुआ था, वे अनन्त कान्तिसे युक्त साक्षात् महालक्ष्मी ही थी मात्र 4 के स्थान पर 18 भुजा धारण कर ली थी। कहीं कहीं सहस्र भुजा का भी वर्णन है। यह मार्कण्डेय पुराण और श्रीमद्देवीभागवत महापुराण में स्पष्टीकरण है।

(हालांकि वैष्णव ग्रंथ वराह पुराण में महिषासुर मर्दिनी को वैष्णवी घोषित किया है पर इससे फर्क नहीं पड़ता सभी दैवीय रूप मूल पराशक्ति के ही हैं भक्त अपनी भक्ति की अतिशयोक्तिपूर्णता पर कुछ भी वर्णन कर सकते हैं अथवा अलग अलग कल्पों की घटनायें भी हो सकती हैं पर दैवीय बीज और देवी प्रणव मात्र ह्रीं ही है इससे सिद्ध होता है कि मणिद्वीप में रहने वाली पराशक्ति महालक्ष्मी ही भिन्न भिन्न स्वरूप से सभी स्थलों पर लीला कर रही है। मूर्ति रहस्य में भी यह स्पष्ट है। इन महालक्ष्मी को ही भुवनेश्वरी, सर्वज्ञ, सर्वेश्वरी, अजा, निर्गुणा आदि कहा जाता है हिमालय को भी जो पुत्री प्राप्त हुई श्रीमद्देवीभागवत महापुराण के अनुसार वह पुत्री भी इनके ही ललाट से उत्पन्न हुई थी और इनका ही अंश थी जो आज भी है। जब देवताओं और हिमाचल ने तप किया था तो चैत्र मास के शुक्ल पक्ष को नवमी व शुक्रवार में मणिद्वीप की महालक्ष्मी (भुवनेश्वरी रूप भी)

जी ने दर्शन दिये और सप्तम स्कन्ध अध्याय 31 में यह स्पष्ट किया। इन पराम्बा को अक्षयरुद्र का बार बार नमस्कार है। इस वैकृतिक रहस्य के अनुसार

उन्हें ही त्रिगुणमयी प्रकृति कहते हैं तथा वे ही महिषासुरका मर्दन करनेवाली हैं।

- उनका मुख गोरा,
- भुजाएँ श्याम,
- स्तनमण्डल अत्यन्त श्वेत,
- कटिभाग और चरण लाल तथा
- जङ्घा और पिंडली नीले रंगकी हैं। ये सदा ही

अजेय हैं किसी भी ब्रह्माण्ड में इनसे बढ़कर शक्ति, ऐश्वर्य और सौन्दर्य किसी का भी नहीं ये ही अपनी कला या अंश से विविध रूपों में लीला करती हैं। दुर्गा सप्तशती और मार्कण्डेय पुराण व दुर्गनाशन स्तोत्र की या प्रकृति कवच की अधिष्ठात्री ये एकमात्र हैं। ये ही श्रीमद्देवीभागवत महापुराण के अनुसार पंचक प्रकृति रूप (पार्वती, शारदा, लक्ष्मी, गायत्री व राधा हैं ये ही गंगा और नर्मदा आदि) परम से भी परम शक्तिसम्पन्न होने से उनको अपने शौर्यका सात्विक अभिमान है परंतु वे अपनी संपूर्ण शक्तियाँ अपने उपासक को भी दे सकती हैं। अष्टोत्तरशतनाम पाठ करके देवी कवच या प्रकृति कवच करने वाले को इनकी विशेष कला शीघ्र मिलती हैं इसी कारण वह पुरुष साक्षात् देवी का स्वरूप हो जाता है यही मत्स्य पुराण में सिद्ध पीठ के माहात्म्य में लिखा है।

- इनके सौन्दर्य की तुलना किसी से भी नहीं हो सकती।
- कटिके आगेका भाग बहुरंगे वस्त्रसे आच्छादित होनेके कारण अत्यन्त सुन्दर एवं विचित्र दिखायी देता है।

●उनकी माला, वस्त्र, आभूषण तथा अङ्गराग सभी विचित्र हैं।

●वे कान्ति, रूप और सौभाग्यसे सुशोभित हैं।

●यद्यपि उनकी हजारों भुजाएँ है, तथापि उन्हें अठारह भुजाओंसे युक्त मानकर उनकी पूजा करनी चाहिये।
(वैष्णव जन 20 भुजा मानकर उनके वैष्णवी नाम की सेवा कर सकते हैं यह वराह पुराण में वर्णन है)

अब●●उनके दाहिनी ओरके निचले हाथोंसे लेकर बायीं ओरके निचले हाथोंतक (क्लॉकवाईज) ●● क्रमशः जो अस्त्र हैं, उनका वर्णन किया जाता है ॥

● अक्षमाला,

● कमल,

● बाण,

● खड्ग,

● वज्र,

● गदा,

● चक्र,

● त्रिशूल,

● परशु,

● शङ्ख,

● घण्टा,

● पाश,

● शक्ति,

● दण्ड,

● चर्म (ढाल),

● धनुष,

● पानपात्र और

● कमण्डलु–इन आयुधोंसे उनकी भुजाएँ विभूषित हैं।

आसन –

वे कमलके आसनपर विराजमान हैं, सर्वदेवमयी हैं तथा सबकी ईश्वरी हैं। राजन् ! जो इन महालक्ष्मी– देवीका पूजन करता है, वह सब लोकों तथा देवताओंका भी स्वामी होता है(और वह त्रिदेव भी बन सकता है त्रिदेव पद के लिए जो पुष्पादि की परिमाण है वह श्रीमद्देवीभागवत महापुराण में लिखा है।)॥

●●●●●●ॐ●●●●●●

अब महासरस्वती जी के रूप और आयुध आदि का वर्णन करते हैं । जो अतिशीघ्र सर्वज्ञ बनाती हैं ।

जो एकमात्र सत्त्वगुणके आश्रित हो पार्वतीजीके शरीरसे प्रकट हुई थीं तथा जिन्होंने शुम्भ नामक दैत्यका संहार किया था, वे साक्षात् महासरस्वती कही गयी हैं॥ हे पृथ्वीपते ! शुंभ और निशुम्भ के वध हेतु इन्होनें चार के स्थान

पर आठ भुजाएं धारण की थी। अतः कौशिकी नामधारी इन देवी की आठ भुजाएँ हैं तथा वे अपने हाथोंमें क्रमशः बाण, मुसल, शूल, चक्र, शङ्ख, घण्टा, हल एवं धनुष धारण करती हैं ॥

ये महासरस्वतीदेवी, जो निशुम्भका मर्दन तथा शुम्भासुरका संहार करनेवाली हैं, भक्तिपूर्वक पूजित होनेपर सर्वज्ञता प्रदान करती हैं ॥

राजन् ! इस प्रकार तुमसे महाकाली आदि तीनों मूर्तियोंके स्वरूप बतलाये, अब जगन्माता महालक्ष्मीकी तथा इन महाकाली आदि तीनों मूर्तियोंकी पृथक् पृथक् उपासना श्रवण करो ॥

■■■■■■■■■■■■■■■

पूजा का नियम –

जब महालक्ष्मी (मूल रूप) की पूजा करनी हो, तब उन्हें मध्यमें स्थापित करके उनके दक्षिण और वामभागमें क्रमशः महाकाली (मूला रूपा चतुर्भुजी) और महासरस्वती (मूल चतुर्भुजी रूपा) का पूजन ○●○करना चाहिये और पृष्ठभागमें तीनों युगल देवताओंकी पूजा करनी चाहिये ॥

(यह आगे समझने के लिए मूर्ति रहस्य के जोड़े भी पढ़ लेना)

महालक्ष्मीके ठीक पीछे मध्यभागमें सरस्वती के साथ ब्रह्माका पूजन करे। (यह सरस्वती और गौरी व लक्ष्मी अंशभूताएं हैं)

उनके दक्षिणभागमें गौरीके साथ रुद्रकी पूजा करे

तथा वामभागमें लक्ष्मीसहित विष्णुका पूजन करे। महालक्ष्मी आदि तीनों महादेवियोंके सामने निम्नाङ्कित तीन देवियों की भी पूजा करनी चाहिये ॥

●मध्यस्थ महालक्ष्मी के आगे मध्यभागमें अठारह भुजाओंवाली महालक्ष्मीका पूजन करे।

● उनके वामभागमें दस मुखोंवाली महाकालीका तथा ●दक्षिणभागमें आठ भुजाओंवाली महासरस्वतीका पूजन करे ॥

●■●■●■●■

महत्वपूर्ण – राजन् !जब केवल अठारह भुजाओंवाली महालक्ष्मीका अथवा दशमुखी कालीका या अष्टभुजा

सरस्वतीक्ता पूजन करना हो, तब सब अरिष्टोंकी शान्तिके लिये इनके दक्षिणभागमें कालकी और वामभागमें मृत्युकी भी भलीभाँति पूजा करनी चाहिये। जब शुम्भासुरका संहार करनेवाली अष्टभुजादेवीकी पूजा करनी हो, तब उनके साथ उनकी नौ शक्तियों का और दक्षिणभागमें रुद्र एवं वामभागमें गणेशजीका भी पूजन करना चाहिये ।

- ब्राह्मी(ब्राह्मा जी की संपूर्ण शक्ति का आधार)
- माहेश्वरी (शंकर जी की संपूर्ण शक्ति का आधार) ,
- कौमारी(कुमार स्कन्द की संपूर्ण शक्ति का आधार)
- वैष्णवी(विष्णु जी की संपूर्ण शक्ति का आधार)

- वाराही (वराह जी की संपूर्ण शक्ति का आधार)
- नारसिंही(नरसिंह जी की शक्ति का मूल स्रोत) ,
- ऐन्द्री(इन्द्र की संपूर्ण शक्ति का आधार)
- चामुण्डा (काली) और
- शिवदूती – ये नौ शक्तियाँ हैं)।

इनमें सात को महामातृकाएं भी कहते हैं तथा मत्स्य पुराण के अनुसार नरसिंह भगवान से उत्पन्न आठ मातृकाओं (उसी पुराण में नाम हैं अथवा इसी देवी रहस्य महाग्रंथ में मातृका शक्ति नामक अध्याय में आप 8–8 की संख्या वाली चार प्रकार की मातृकाओं के नाम पढ़ सकते हैं) इन चार में से एक वर्ग की आठ की स्वामिनी ये चामुण्डा अर्थात काली ही हैं। यह आपको मत्स्य पुराण से स्पष्ट हो पायेगा यहाँ हम सार लिख रहे हैं।

□□□□□□□□□□□□□□□□□□

'नमो देव्यै...' इस स्तोत्रसे महालक्ष्मीकी पूजा करनी चाहिये ॥ तथा उनके तीन

अवतारोंकी पूजाके समय उनके चरित्रोंमें जो स्तोत्र और मन्त्र आये हैं, उन्हींका उपयोग करना चाहिये।

●अठारह भुजाओंवाली महिषासुरमर्दिनी महालक्ष्मी ही विशेषरूपसे पूजनीय हैं; क्योंकि वे ही प्रत्यक्ष महालक्ष्मी हैं वे ही महाकाली तथा महासरस्वती हुई हैं वे ही मूल प्रकृति व आद्या हैं। पुण्य–पापोंकी अधीश्वरी तथा सम्पूर्ण

लोकोंकी महेश्वरी हैं ॥

जिसने महिषासुरका अन्त करनेवाली महालक्ष्मीकी भक्तिपूर्वक आराधना की है, वही संसारका स्वामी है। अतः जगत्को धारण करनेवाली भक्तवत्सला भगवती चण्डिका की अवश्य पूजा करनी चाहिये ॥

देवी चण्डिका के भक्त से बड़ा अन्य कोई भी नहीं।

अतः हे भुवनेशि! मैं (अक्षयरुद्र) मात्र आपकी शरण स्वीकार करता हूँ सबका मूल तत्व मात्र और मात्र आप ही हो ऐसा भाव रखकर उनके चरणों की ही सेवा करें।

□□□□□□□□□□□
हे भुवनेशि ! माम् पाहि ।
हे भुवनेशि माम् पाही।
हे भुवनेशि माम् पाही ।
□□□□□□□□□□□

अर्घ्य आदिसे, आभूषणोंसे, गन्ध, पुष्प, अक्षत, धूप, दीप तथा नाना प्रकारके भक्ष्य पदार्थोंसे युक्त नैवेद्योंसे, रक्तसिञ्चित बलिसे, मांससे तथा मदिरासे भी देवीका पूजन होता है।'

(●●बलि और मांस आदिसे की जानेवाली पूजा ब्राह्मणों या सात्विक व अति दयालु भक्तों को छोड़कर बतायी गयी है। अति दयालु किसी की भी बलि नहीं ले सकते फिर चाहे उस पशु को मोक्ष ही क्यों न मिल रहा हो अथवा उस बलि से सहस्र वरदान की संभावना ही क्यों न हो पर शेष लोग उनके अनुसार जैसा चाहे वैसी पूजा करें) उन वैष्णवीय लोगों या अति दयालुओं के लिये मांस और मदिरासे कहीं भी पूजाका विधान नहीं है।)

प्रणाम, आचमनके योग्य जल, सुगन्धित चन्दन, कपूर तथा ताम्बूल आदि सामग्रियों को भक्तिभावसे निवेदन करके देवीकी पूजा करनी चाहिये। देवीके सामने बायें भागमें कटे मस्तकवाले महादैत्य महिषासुरका पूजन करना

चाहिये, जिसने भगवतीके साथ सायुज्य प्राप्त कर लिया। इसी प्रकार देवीके सामने दक्षिण भागमें उनके वाहन सिंहका पूजन करना चाहिये, जो सम्पूर्ण धर्मका प्रतीक एवं षड्विध ऐश्वर्यसे युक्त है। उसीने इस चराचर जगत्को धारण कर रखा है।

तदनन्तर बुद्धिमान् पुरुष एकाग्रचित्त हो देवीकी स्तुति करे। फिर हाथ जोड़कर तीनों पूर्वोक्त चरित्रोंद्वारा भगवतीका स्तवन करे। यदि कोई एक ही चरित्रसे स्तुति करना चाहे तो ●●केवल मध्यम चरित्र●● के पाठसे कर ले; किंतु प्रथम और उत्तर चरित्रोंमेंसे एकका पाठ न करे।

आधे चरित्र का भी पाठ करना मना है। जो आधे चरित्रका पाठ करता है, उसका पाठ सफल नहीं होता। पाठ–समाप्तिके बाद साधक प्रदक्षिणा और नमस्कार कर तथा आलस्य छोड़कर जगदम्बाके उद्देश्यसे मस्तक पर हाथ जोड़कर और उनसे बारंबार त्रुटियों या अपराधोंके लिये क्षमा–प्रार्थना करे।

सप्तशतीका प्रत्येक श्लोक मन्त्ररूप है, उससे तिल और घृत मिली हुई खीरकी आहुति दे ॥ 26–34॥ अथवा सप्तशतीमें जो स्तोत्र आये हैं, उन्हींके मन्त्रोंसे चण्डिकाके लिये पवित्र हविष्यका हवन करे। होमके पश्चात् एकाग्रचित्त हो महालक्ष्मीदेवीके नाम–मन्त्रोंको उच्चारण करते हुए पुनः उनकी पूजा करे ॥ तत्पश्चात् मन और इन्द्रियोंको वशमें रखते हुए हाथ जोड़ विनीत–भावसे देवीको प्रणाम करे और अन्तःकरणमें स्थापित करके उन सर्वेश्वरी चण्डिकादेवीका देरतक चिन्तन करे। चिन्तन करते–करते उन्हींमें तन्मय हो जाय ॥ इस प्रकार जो मनुष्य प्रतिदिन भक्तिपूर्वक परमेश्वरीका पूजन करता है, वह मनोवाञ्छित भोगोंको भोगकर अन्तमें देवीका सायुज्य प्राप्त करता है ॥

जो पुरुष पराम्बा भक्तवत्सला महालक्ष्मी (चण्डी) का प्रतिदिन पूजन नहीं करता, भगवती परमेश्वरी उसके पुण्योंको जलाकर भस्म कर देती हैं ॥ क्योंकि वायु, अग्नि, पृथिवी आदि तथा ग्रह नक्षत्र या देवतागण, त्रिदेवों आदि का योगक्षेम ये महालक्ष्मी ही वहन करती हैं और ये ही सबकी गुरु हैं। इस ब्रह्माण्ड के सभी गुरुओं के ज्ञान और वैराग्य का आधार ये ही हैं। प्राधानिक रहस्य भी भक्त चाहें तो अवलोकन करें उसमें भी मूल सत्ता और मूल तत्व चार भुजा धारी महालक्ष्मी (मणिद्वीप निवासिनी भुवनेश्वरी) ही हैं महालक्ष्मी के स्वरूप में उनकी चार भुजाओं में मातुलुङ्ग (बिजौरे का फल), गदा, खेट(ढाल) और पानपात्र है और मस्तक पर नाग, लिंग (शिवलिंग) तथा योनी यह प्राधानिक रहस्य का मूल रूप है। तथा वे ही वर अभय पाश और अंकुश के रूप में मणिद्वीप में भुवनेश्वरी कहलाती हैं।

इसलिये तुम सर्वलोकमहेश्वरी चण्डिकाका शास्त्रोक्त विधिसे पूजन करो। उससे तुम्हें यथार्थ सुख मिलेगा(संसार के पत्ते फूल आदि की सेवा से क्या लाभ जड़ रूपी महादेवी की ही पूजा करें ऋग्वेद के देवीसूक्त की परमेश्वरी भी ये ही हैं)॥

इति वैकृतिक रहस्य सम्पूर्णम्

16. शत चण्डी व लघुसप्तशती पाठ

यदि पूरे ७०० श्लोकों का पाठ करने की शक्ति या समय न हो तो इसी देवी माहात्म्य के मात्र मध्यम चरित्र का पाठ करने पर भी वही फल मिलता है। हालांकि भविष्य पुराण में मात्र प्रथम चरित के पाठ से भी अथवा तृतीय चरित्र के पाठ से भी अलग अलग भक्त ने सिद्धि प्राप्त की थी पर अनेकानेक विद्वान मध्यम चरित्र को ही उत्तमोत्तम मानते हैं क्योंकि मूर्ति रहस्य के अनुसार मूल तत्व महालक्ष्मी ही है जिससे महाकाली और महासरस्वती ये दो रूप बने अतः मूल ही सब कुछ होने से मूल में पानी डालना ही सर्वोत्कृष्ट है। हालांकि भविष्य पुराण भी 18 पुराणों में ही शामिल है। प्रस्तुत ग्रन्थ में तीन चरित्र हैं– प्रथम, मध्यम और उत्तर । ●प्रथम अध्याय को प्रथम चरित्र,

●द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ अध्याय को 'मध्यम चरित्र' तथा

● पंचम से ग्यारह तथा दो महिमा भी ये त्रयोदश तक के अध्यायों को उत्तर चरित्र कहा गया है। साधक की अशक्त दशा में तीनों में से मध्यम चरित्र के ही पाठ का विधान है।

इस मध्यम चरित्र (२, ३, ४ अध्यायों) में कुल १५५ मन्त्र हैं, जिनमें पूरे अनुष्टुप् आदि छन्दों के १४४ श्लोक हैं, २ आधे (अनुष्टुप्) श्लोक और ६ मात्र 'उवाच' (इतना मात्र) हैं। इस लघु पाठ विधि में भी सम्प्रदायानुसार आदि–अन्त में यथा शक्ति १०, २८ या १०८ बार मूलमन्त्र (नवार्ण मन्त्र) का जप अवश्य अनिवार्य है।

यह सप्तशती अनुष्ठान सकाम भी होता है और निष्काम भी । देवी महात्म्य के ही उपासक राजा सुरथ ने राज्य प्राप्ति के लिए इसका अनुष्ठान किया, जबकि दूसरे उपासक समाधि वैश्य ने ज्ञान प्राप्ति के लिए किया। सकाम से निष्काम ही उत्तमोत्तम है। पर मन अति चंचल है तो भोग से भी योग की सिद्धि कभी न कभी अवश्य होती है। अपने साथ अति न करें जितना बल उठा सके उतना ही उठायें। योगियों की अवस्था को पाने के लिए समय लगता ही है।

भगवती ने भी अन्त में राजा को उसकी कामना देखकर राज्य प्राप्ति का वर दिया ही है। पर पुनः सुने कि – निष्काम भाव से 'भगवती प्रीत्यर्थ' संकल्प के साथ किया गया यह अनुष्ठान सर्वोत्कृष्ट है, किन्तु जो सकाम भाव से इसका अनुष्ठान करते हैं, उनका यह अनुष्ठान भी 'अप्रशस्त' नहीं कहा जा सकता। कारण, इस प्रकार सकाम अनुष्ठान करते–करते एक समय ऐसा आयेगा जब वह भोगते भोगते थककर एक दिन भगवती के चरणों में पहुंच ही जायेगा।

●सप्तशती पाठ के नवचण्डी, शतचण्डी, सहस्रचण्डी आदि अनेक विधान हैं।

● इन सभी में पाठ की परम सिद्धि के लिए पाठ का दशांश हवन, उसका दशांश तर्पण उसका दशांश मार्जन तथा उसका दशांश ब्राह्मण भोजन अत्यावश्यक होता है। ● नव– रात्र आदि में जो नौ दिनों तक नवचण्डी–पाठ किये जाते हैं, उनमें प्रायः पाठ के दशांश हवन, तर्पण और मार्जन आदि के लिए एक पाठ अधिक करके साङ्गता कर ली जाती है, जो साम्प्रदायिक मान्यता है. किन्तु कामना विशेष से पृथक नवचण्डी, शतचण्डी सहस्रचण्डी आदि अनुष्ठान करने हों तो इन हवनादि अंगों का विकल्प न होकर मूलरूप में उन्हें ही करने पर ही साङ्गता होती है। अतएव पाठकों की सुविधा के लिए यहाँ संक्षेप में शतचण्डी–विधान दिया जा रहा है, जो तन्त्रशास्त्र के सर्वमान्य ग्रन्थ 'मन्त्र महोदधि' से संकलित है।

1.किसी शिवालय या दुर्गा मन्दिर के निकट एक सुन्दर मण्डप बनाया जाय, जिसमें दरवाजा और वेदी भी बनी हो । उसके चारों ओर तोरण (बंदनवारे) लगायें और ध्वजारोपण भी करें। मण्डप के बीच पश्चिम की ओर या मध्य में हवन कुण्ड का निर्माण करे ।

तदनन्तर यजमान स्नान नित्यक्रियादि से निवृत्त होकर

पाठ हवन के लिए 10 सद् ब्राह्मण चुनें अर्थात वेदसम्पन्न, सत्य सिद्ध, विनम्र, लोभहीन जितेन्द्रिय, सदाचारी, कुलीन, सत्यवादी, शास्त्रवित्, नम्रता और दया से सम्पन्न तथा दुर्गा सप्तशती का पाठ करने में सक्षम होने चाहियें। संस्कृत का ज्ञान भी हो। उन्हें विधिपूर्वक पाद्य, अर्घ्य, आचमन देकर मधु– पर्क निवेदन करना चाहिये और सुवर्ण, वस्त्रादि का दान करते हुए जप के लिए माला और आसन देने तथा हविष्यान्न अर्पण करने का विधान है। इन विचारशील ब्राह्मणों को हविष्यान्न भोजन और भूमि पर शयन करना तथा मन्त्रार्थ–चिन्तन में ध्यान लगाते हुए मार्कण्डेय पुराणोक्त चण्डिका स्तवन का दस–दस बार पाठ करना चाहिये। इसके अतिरिक्त प्रत्येक ब्राह्मण को नवार्ण मन्त्र का दस हजार जप जपार्थ नियुक्त जाप के लिए विहित बताते हैं तो कुछ लोग प्रत्येक ब्राह्मण के लिए एक–एक हजार ही नवार्ण मन्त्र जप का विधान करते हैं, जो सम्प्रदायानुसार ग्राह्य है।

यह जप सम्पुट–पाठ से पृथक् करना उचित है। प्रत्येक मन्त्र के आदि–अन्त में किसी बीज या अन्य मन्त्र का उच्चारण करके किया जाने वाला 'सम्पुट पाठ' कहलाता है। शक्ति साम्प्रदायिकों का मत है कि शतचण्डी का प्रारम्भ ऐसे समय करना चाहिये जो कुल सौ पाठ अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी या पूर्णिमा तिथियों में पूरा हो जाय ।

इस अनुष्ठान में यजमान को चाहिये कि वह नौ कुमारियों "का पूजन करे, जो दो वर्ष से लेकर दस वर्ष की आयु की हों। ये कुमारिकाएँ हीनाङ्गी, अधिकाङ्गी, कुष्ठी और फोड़ोंवाली, अन्धी, कानी, कुरूपा, केकरी (ऐंचातानी) कुबड़ी, अधिक रोमों बाली, दासी से उत्पन्न. रोगिणी और दुष्टा नहीं होनी चाहिये । कुमारिका पूजन में ऐसी कन्याएँ अग्राह्य मानी गयी हैं।

सम्पूर्ण मनोरथों की सिद्धि के लिए ब्राह्मण की ही कन्या का वरण करें , यश के लिए क्षत्रिय–कन्या का, धन के लिए वैश्य कन्या का और पुत्र के लिए शूद्र कन्या का पूजन करने का विधान है।

शास्त्रों में इन नौ कुमारिकाओं के पृथक–पृथक नाम भी दिये गये हैं,
जो इस प्रकार हैं–

●●दो वर्ष की कन्या 'कुमारी'

●●●तीन वर्ष की 'त्रिमूर्ति'

●●●●चार वर्ष की 'कल्याणी'

●●●●●पांच वर्ष की 'रोहिणी'

●●●●●●छः वर्ष की 'कालिका'

●●●●●●●सात वर्ष की 'चण्डिका'

●●●●●●●●आठ वर्ष की 'शाम्भवी'

●●●●●●●●●नौ वर्ष की 'दुर्गा'

●●●●●●●●●●दस वर्ष की 'सुभद्रा' कहलाती है ।

भगवान शंकर द्वारा कथित निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर इन नौ कुमारिकाओं का आवाहन करना चाहिये–
मन्त्राक्षरमयी लक्ष्मीं मातृणां रूपधारिणीम् । नवदुर्गात्मिका साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहम् ।।

तदनन्तर शंकर प्रोक्त निम्नलिखित एक–एक मन्त्र बोलकर एक–एक कुमारिका का गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, भक्ष्य–भोज्य एवं वस्त्रालङ्कारादि से पूजन करना चाहिये ।

१. कुमारी मन्त्र –

जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ।
पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते ।।

२. त्रिमूर्ति मन्त्र–
त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्गज्ञानरूपिणीम् ।
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्ति पूजयाम्यहम् ।।

३. कल्याणी मन्त्र –
कालात्मिकां कलातीतां कारुण्यहृदया शिवाम् ।
कल्याणजननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥

४. रोहिणो मन्त्र –
अणिमादिगुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकाम्
अनन्तशक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजायाम्यहम् ॥

५. कालिका मन्त्र –
कामाचारां शुभां कान्तां कालचक्रस्वरूपिणीम् ।
कासदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम् ॥

६.चण्डिका मन्त्र–
चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्डप्रभंजिनीम्
पूजयामि सदा देवीं चण्डिका चण्डविक्रमाम् ।।

७. शाम्भवी मन्त्र –
सदानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम् ।
सर्वभूतात्मिकां लक्ष्मीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम् ॥

८. दुर्गा मंत्र–
दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःखविनाशिनीम् ।
पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गा दुर्गतिनाशिनीम् ॥

8 सुभद्रा मन्त्र –
सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभ्यां सुखसौभाग्यदायिनीम् ।
सुभद्रा जननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥

कुमारी पूजन के पश्चात् वेदी पर सुन्दर सर्वतोभद्रमण्डल बनाकर उस पर विधिपूर्वक कलशस्थापन करना चाहिये तथा उस पर भगवती, पार्वती, दुर्गा की प्रतिमा रखकर उनका आवाहन करना चाहिये। उनके समक्ष नाना उपचारों द्वारा कन्याओं, ब्राह्मणों तथा नवार्ण मन्त्र द्वारा आवरण देवताओं का पूजन करने का विधान है। तत्पश्चात् सप्तशती मन्त्र की स्थापना करके मन्त्रस्य देवताओं का, पीठ तथा पीठस्थ देवताओं का पूजन करना चाहिये । तदनन्तर प्रधान देवता भगवती दुर्गा का षोडशोपचार पूजन विहित है।

इसी प्रकार चार दिनों तक पूजनादि क्रम चलाते रहना चाहिये ।

इसमें भी प्रत्येक ब्राह्मण प्रथम दिन सप्तशती स्तोत्र के सभी श्लोक; अर्थात पहले दिन एक – एक बार(संपूर्ण ही सभी 10 ब्राह्मणों द्वारा) अर्थात कुल 10 बार यह सप्तशती पहले दिन ही हो जायेगी।

,दूसरे दिन दो–दो पाठ (दो बार संपूर्ण)

, तीसरे दिन तीन तीन बार (संपूर्ण)

, चौथे दिन चार बार संपूर्ण 700 श्लोकों का पाठ करे । इस प्रकार पाठ वृद्धि क्रम से चार दिनों में पाठों की शत संख्या पूर्ण हो जाती है।

यथा– दस ब्राह्मणों द्वारा प्रथन दिन एक–एक पाठ–

१०

+द्वितीय दिन दो–दो पाठ – २०

+ तृतीय दिन तीन–तीन पाठ – ३०

+ चतुर्थ दिन चार–चार पाठ–४० = १०० पाठ ।

पाँचवें दिन पाठ का दशांश हवन करना चाहिए।

हवन के समय स्वाहा कहकर हवन करना चाहिए तथा तर्पण के समय दुर्गा तर्पयामी; और मार्जन के लिए दुर्गा मार्जयामि।

और एक महत्वपूर्ण बात– जो गरीब हो या अधिक खर्च का सामर्थ्य न हो वह स्वयं ही शुचिता पूर्वक करके

हवन के स्थान पर (हवन के निमित्त)10 पाठ करे।

तर्पण के निमित्त मात्र एक पाठ और मार्जन के निमित्त 1 पाठ और एक पाठ संपूर्ण ब्राह्मण संतर्पण के लिए। तो भी देवी प्रसन्न होती हैं। जिनके पास घर गृहस्थी चलाने के लिए ही धन नहीं वह शत चण्डी के लिए दस ब्राह्मणों को पाँच दिन के लिए 7–7 हजार (कुल सत्तर हजार) और वस्त्र या अन्न दान कहाँ से करेगा वैश्य सुरथ ने भी स्वयं ही सब कुछ किया था बस यम नियम गुरुदेव से पूछ लिये थे कि कौन सा पाठ करना है। क्योंकि उस समय वह 13 पाठ नहीं थे जो आजकल हैं इनमें तो सुरथ, वैश्य और सुमेधा नाम भी शामिल है। और उनकी क्या साधना थी यह भी आप सप्तशती के अंतिम अध्यायों से जान सकते हो।

17. देवीय पापप्रशमन स्तोत्र

जो तीनों लोकोंद्वारा नमस्कृत, उल्काके आकारवाली, सनातनी देवी, दक्षकन्या, महादेवी, गौरी, हिमालयपुत्री, कल्याणमयी, एकपर्णा, अग्रजा, सौम्या, एकपाटला, अपर्णा, वरदायिनी, वरप्रदान करनेमें सदा तत्पर, उमा, असुरोंका संहार करनेवाली साक्षात् कौशिकी, कपर्दिनी,महापुराण खट्वांग धारण करनेवाली, दिव्य, हाथके अग्रभागमें वृक्षका पल्लव धारण करनेवाली, नैगमेय आदि चारों दिव्य पुत्रोंसे घिरी हुई, मेनाकी पुत्री, जलसे उत्पन्न, कमलके समान नेत्रोंवाली, शोकरहित महात्मा नन्दीकी माता, शुभावतीकी सखी, शान्त स्वभाववाली, पंचचूड़ा, वर प्रदान करनेवाली, सभी प्राणियोंकी सृष्टिके लिये प्रकृतिके स्वरूपको प्राप्त, अव्यय (शाश्वत), महत् आदि तेईस तत्त्वोंसे सम्पन्न, लक्ष्मी आदि शक्तियोंसे सदा नमस्कृत, नन्दनन्दिनी, महादेवी मनोन्मनी, मायामयी, अलंकरणसे प्रीति करनेवाली, (अपनी) मायासे ब्रह्मा आदि तथा चराचरसहित सम्पूर्ण जगत्को क्षुब्ध एवं मोहित करनेवाली, योगियोंके हृदयमें सर्वदा विराजमान, संसारमें एक तथा अनेक रूपोंमें स्थित, नीलकमलके समान नेत्रोंवाली, गणेश्वरों– ब्रह्मा–इन्द्र–यम–कुबेर आदि सभी देवताओंके द्वारा परम भक्तिसे नित्य स्तुत होनेवाली, (उनके द्वारा) स्तुत होकर उनकी माताके रूपमें सभी विपत्तियोंका नाश करनेवाली, भक्तोंके कष्टोंका हरण करनेवाली, भव्य, सांसारिक भावोंको नष्ट करनेवाली, दिव्य और बिना प्रयासके भक्तोंको भोग तथा मोक्ष प्रदान करनेवाली हैं– वे साक्षात् महादेवी मेरे पापको शीघ्र दूर करें।

मूल स्तोत्र –

त्रैलोक्यनमिता देवी सोल्काकारा पुरातनी ।
दाक्षायणी महादेवी गौरी हैमवती शुभा ।।1

एकपर्णाग्रजा सौम्या तथा वै चैकपाटला ।
अपर्णा वरदा देवी वरदानैकतत्परा ।। 2

उमासुरहरा साक्षात्कौशिकी वा कपर्दिनी।।
खट्वाङ्गधारिणी दिव्या कराग्रतरुपल्लवा ं3

नैगमेयादिभिर्दिव्यैश्चतुर्भिः पुत्रकैर्वृता।
मेनाया नन्दिनी देवी वारिजा वारिजेक्षणा ।। 4

अम्बा या वीतशोकस्य नन्दिनश्च महात्मनः ।
शुभावत्याः सखी शान्ता पञ्चचूडा वरप्रदा ।।5।

सृष्ट्यर्थं सर्वभूतानां प्रकृतित्वं गताव्यया ।
त्रयोविंशतिभिस्तत्त्वैर्महदाद्यैर्विजृम्भिता 6।।

लक्ष्म्यादि शक्तिभिर्नित्यं नमिता नन्दनन्दिनी ।
मनोन्मनी महादेवी मायावी मण्डनप्रिया ।। 7

मायया या जगत्सर्वं ब्रह्माद्यं सचराचरम् ।
क्षोभिणी मोहिनी नित्यं योगिनां हृदि संस्थिता ।। 8

एकानेकस्थिता लोके इन्दीवरनिभेक्षणा ।
भक्त्या परमया नित्यं सर्वदेवैरभिष्टुता ।।9

गणेन्द्राम्भोजगर्भेन्द्रयमवित्तेशपूर्वकैः ।
संस्तुता जननी तेषां सर्वोपद्रवनाशिनी ॥ 10

भक्तानामार्तिहा भव्या भवभावविनाशिनी ।
भुक्तिमुक्तिप्रदा दिव्या भक्तानामप्रयत्नतः ।।11

सा मे साक्षान्महादेवी पापमाशु व्यपोहतु ।।

18.1 ह्रीं बीज व नवरात्रि व्रत से देवी के दर्शन

यह सत्य कथा है जो पूर्वकाल में घटित हुई थी इसमें एक गरीब सुशील नाम का वैश्य था जो अत्यधिक परेशान था और अपनी पारिवारिक समस्याओं व गरीबी से इतना परेशान हो गया कि मरने तक का विचार करने लगा। आईए देखते हैं कि देवी शिवा की कृपा से वह किस प्रकार धनवान हुआ तथा किस उपाय से उसे पराम्बा के साक्षात्कार भी हुए।

वह दुखी मन से इधर उधर भटक रहा था । एक दिन उसे एक शाक्त भक्त के दर्शन हुए वह शाक्त भक्त जितेन्द्रिय व ब्राह्मण भी थे। तब ब्राह्मण से उसने अपने मन की कुछ बात कही। (तब ब्राह्मण ने कहा)

हे सुशील वैश्य ! तुम दरिद्र हो यह बड़े ही आश्चर्य की बात है ! क्या तुमको किसी गुरु ने आज तक भगवती पराशक्ति के माहात्म्य के विषय में नहीं बताया अथवा तुम संत सान्निध्य से दूर रहकर अपने अहंकार को पोषण दे रहे हो या तुम्हारे घर में क्या कोई देवी के अतुलनीय प्रभाव को नहीं जानता ? हे सुशील वैश्य सुनों ! जो आदिशक्ति को जानता है वह दरिद्र किस प्रकार रह सकता है ? क्या तुम माया बीज के तत्काल प्रभाव को नहीं जानते ? क्या तुम उस नौ दिवसीय महाव्रत के अनुपम चमत्कार से अनभिज्ञ हो जो किष्किन्धा पर्वत पर नारद जी के मार्गदर्शन में श्रीरामजी ने भी किया था ? इस विश्व में मुख्यतः भारत भूमि में रहने वाला कोई भी मनुष्य दरिद्र हो यह बड़े आश्चर्य की बात है जिस भूमि पर देवी महालक्ष्मी ने अनेक लीला की हो उस भूमि के निवासी यदि देवी की शरण में न जाकर अन्यत्र भटके या देवी को न पूजें तो यह घोर आश्चर्य की बात है?

सुशील वैश्य– हे प्रभो! (एक ब्राह्मण देव) मैं कुछ भी नहीं जानता, ऐसा लगता है कि मैं घोर पाप से पीड़ित हूँ इस कारण देवी माहात्म्य को आज तक नहीं जान पाया। मुझे न तो ऐसा परिवार मिला जिसमें देवी की सेवा होती है न ही ऐसे मित्र मिले जो देवी के भक्त हों न ही मुझे देवी चरित्र का कोई शास्त्र देखने को मिला परंतु अब मुझे निश्चित ही ऐसा आभास हो रहा है कि आपकी शरण स्वीकार करके तथा आपकी आज्ञा मानकर मैं देवी की कृ पा का अधिकारी अवश्य ही हो जाऊँगा। हे स्वामी ! आप जितेन्द्रिय और शम दम युक्त हो तथा देवी जगदम्बिका के कृपा प्राप्त अतः मेरा कल्याण कीजिए। मुझे मेरे लिए धन की आवश्यकता नहीं परंतु मेरे बच्चे भूख से पीड़ित हैं तथा एक पुत्री विवाह के योग्य भी होने जा रही है मेरी दरिद्र स्थिति के कारण मेरे पड़ोसी भी मेरा तथा मेरी संतानों का उपहास करते हैं इससे मैं अब मानसिक रूप से भी महादुखी हूँ । मैने सुना है कर्म ही पूजा है पर मेरा कर्म निष्फल क्यों हो रहा है ? हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! यदि आपने कृपा कर कोई उपाय नहीं बताया तो मैं आपके ही समीप इसी वन में प्राण त्याग दूँगा।

ब्राह्मण श्रेष्ठ– हे सुशील! तुम संतों के लिए विनम्र व्यवहार करने वाले हो तथा निश्छल मन से उपाय भी पूछ रहे हो अतः चिन्ता न करो मैं तुमको अति सरल और सुगम उपाय बताता हूँ। ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारे धार्मिक स्वभाव से ही महामाया अब तुम पर कृपा करना चाहती हैं ? हे वैश्य! मात्र पत्नि और बच्चों के लिए पुरुषार्थ करने से धन , आयुष्य और यश आदि नहीं मिलता । यदि कर्म ही पूजा होती तो सब अतुलनीय ऐश्वर्य को प्राप्त हो जाते पर यह गलत धारणा है । कर्म तो अनिवार्य है ही पर उस कर्म का उत्तमोत्तम फल देने वाली एकमात्र शिवा ही हैं वे ही अनेक रूपों में लीला करती हैं। देवी की कृपा होने पर ही अल्प पुरुषार्थ भी बलिष्ठ होकर सहस्र गुना लाभ दायक सिद्ध होने लगता है। और देवी की कृपा न हो तो 8 प्रहर का पुरुषार्थ भी लाभ नहीं देता।

तब ब्राह्मण श्रेष्ठ ने उससे कहा कि – तुम शारदीय नवरात्र का व्रत–उपवास करो तथा उस उपवास के समय देवी चण्डिका की मल्लिका पुष्प और चंदन मिश्रित बिल्वपत्र से पूजा करना (उनके श्रीचरणों में बिल्वपत्र अर्पण करना है) ऐसा करने वाला इस जन्म में भी सब कुछ प्राप्त करता है और पुनर्जन्म में पुनःभोग चाहिए तो वह राजपद प्राप्त कर कृतकृत्य होता है।

रक्तचन्दन संमिश्रै कौमलैर्बिल्वपत्रकैः ।
भवानी पूजिता येन स भवेन्नृपति क्षितौ। ।

तथा तुमको शास्त्रों का अधिक ज्ञान न हो तो भी चिन्तित न हों एकमात्र सदाशिवकान्ता बीज अर्थात शिववनिता बीज जिसे मायाबीज कहते हैं उसका यथासंभव जप करना । देवी की पूजा रात्रिकालीन अनिवार्य है और पूरे नौ दिन व्रत–उपवास का सामर्थ्य न हो तो अंतिम तीन दिन ही व्रत–उपवास करके नवमी को ही हवन, ब्राह्मणभोज व कन्याभोज के बाद उपवास का कार्य संपन्न करना इसी से देवी निश्चित ही तुमको दरिद्रता से मुक्त करके अतुलनीय धन धान्य से सम्पन्न कर देंगी। और ऐसे ऐसे दिव्य माध्यम तुमको प्राप्त होंगे जिससे तुम धनाढ्य और महान ऐश्वर्य से युक्त हो जाओगे।

हे वैश्य! नवरात्र के माहात्म्य का सम्यक् वर्णन कोई भी देवता भलीभाँति नहीं कर सकता तो मनुष्य क्या करेगा उन दिनों में देवी विशेष कृपा रूप समुद्र से अपने भक्तों को स्नान कराती हैं । इस ब्रह्माण्ड में नवरात्र के समान और इससे बढ़कर व्रत अन्य कोई भी न तो हुआ है न ही होगा।

व्रतानि यानि चान्यानि दानानि विविधानि च।
नवरात्रव्रतस्यास्य नैव तुल्यानि भूतले। ।

इस व्रत से दरिद्र भी कुबेर के समान धनवान, रोगी भी आरोग्यवान तथा अविवाहित को सुशील कन्या अवश्य प्राप्त होती है। संतानहीन स्त्री भी इस व्रत से आज्ञाकारी देवपुत्र प्राप्त करके अपने गर्भ को सार्थक कर लेती है।

जड़ बुद्धि के मनुष्य भी देवगुरु के समान संभाषण करने वाले महाविद्वान हो जाते हैं अज्ञानी भी पराविज्ञान को प्राप्त हो जाते हैं हे सुशील वैश्य! तीनों महान देवता और अन्य देवगण भी इसी व्रत से और देवी के मायाबीज से ही देवत्व को प्राप्त हुए हैं। देवी को अपने चरणों में बिल्वपत्र अति प्रिय है उस बिल्वपत्र पर ह्रीं भुवनैश्वर्यै नमः का उच्चारण करके अर्पण करें । और माया बीज से अपने आपको आच्छादित करें अर्थात नौ दिन ही इसी जप में तत्पर रहें। तथा हे वत्स! एक बात सुनों मैं तुमको यह ह्रीं बीज का उपदेश दे रहा हूँ इस बीज के यथासंभव जप करते हुए यदि तुम सतत् नौ वर्ष तक नवरात्र व्रत भी करोगे तो नवें वर्ष की अष्टमी की रात तुमको देवी का साक्षात्कार अवश्य होगा। उसने देवी का व्रत किया तथा यथासंभव ह्रीं बीज का सतत जप भी किया । और इन ज्ञानी महात्मा ने इस सुशील को चण्डी कवच भी दयावश दिया था तो यह नवदुर्गा में तीनों काल स्नान करके कवच पाठ भी करता था तो इस प्रकार व्रत बीज व कवच से देवी की कृपा हुई और उसको देवी ने ऐसे ऐसे माध्यम उपलब्ध कराये जिससे वह 6 मास के अंदर पर्याप्त धन का पाकर सुखी हुआ तथा कुछ वर्षों में वह महाधनवान हो गया । फिर उसने यह व्रत हर वर्ष किया पर कवच और ह्रीं का आश्रय नित्य लिया इस उपाय से उसे नवें वर्ष की नवरात्र की अष्टमी को सिंह पर आरुढ परामबा का साक्षात्कार हुआ इससे वह जीवन्मुक्त हो गया।

18.2 बीज मंत्र की कृपा से महामूर्ख भी ज्ञानी हुआ

● देवी के बीज का जप कोई भी कर सकता है अतः डरने की आवश्यकता नहीं। कोई आपको इसका उपदेश या आज्ञा दे दे तो और भी अच्छी बात है पर इस जगत के सारे के सारे विप्रबन्धु यदि घोर कलिकाल में अहंकारी हो जाएं और तीनों वर्णों को मना करने लगें तो भी आप इसका जप इस शिवांश अक्षयरुद्र की आज्ञा मानकर कर सकते हैं। वे न भी दे तो भी देवी के बीज पर हर शाक्त भक्त का जन्म सिद्ध अधिकार होता ही है।

● देवी आदिशक्ति इतनी दयालु है कि शाक्त या कोई भी भक्त यदि बीज मंत्र का उच्चारण अधूरा भी करे तो भी कल्याण ही करती है इस कारण देवी के भक्तों को विधि निषेध में कभी भी भय नहीं करना चाहिए, परंतु विधि प्राप्त हो जाये तो यथा संभव विधि का पालन करके सहस्र गुना अधिक फल भी मिलता ही है । हे नारद ! जो लोभी ब्राह्मण बेचारे भोले मानवों को साधना के नाम पर डराता है (कि ऐसा नहीं करोगे तो वैसा हो जायेगा , वैसा नहीं करोगे तो ऐसा हो जायेगा) वह नरक जाता है। देवी ममता और वात्सल्य की मूर्ति है वह कभी भी अपने बच्चों को दण्ड नहीं देती।

परंतु लोभी व कलियुगी मनुष्य ही अपने मत मतान्तरों से भय उत्पन्न करते हैं। शिवा का अर्थ ही कल्याणकारी और मंगलकारी शक्ति से है अतः वह अमंगल या भयदात्री कैसे हो सकती है। उन परात्परा की दया असीमित और अनन्त है अतः एक कथा सुनें जिससे मात्र अधूरे बीज मंत्र के (विधिहीन) उच्चारण से ही एक मूर्ख ब्राह्मण का परम मंगल हो गया। और एक चक्रवाक पक्षी तक को भी मोक्ष मिल गया। पुत्रेष्ठी यज्ञ संबंधित कथा है अति संक्षिप्त में कह रहे हैं सुनें –

देवदत्त ब्राह्मण के कोई पुत्र नहीं था उसने पुत्र उत्पन्न हेतु तमसा नदी के तट पर उत्तम यज्ञ का आयोजन करवाया। उसमें गोभिल को उद्‌गाता, याज्ञवल्क्य को अध्वर्यु तथा मुनि सुहोत्र को ब्रह्मा बनाया अन्य को भी पद दिये पर गोभिल जी के थोड़े–बहुत स्वर भंग से निपुत्र देवदत्त नाराज हुआ और उसने अति क्रोध में श्रीगोभिल को मूर्ख कह डाला। तो गोभिल जी ने भी उसे यह शाप दे डाला कि मूर्ख कैसे होते हैं अब तू देखना.........अतः "महामूर्ख बेटा उत्पन्न होगा तेरा " तब सुनकर देवदत्त भयंकर उदास हो गया। और बोला –

वेद के विद्वान कहते हैं कि मूर्ख या नालायक पुत्र की अपेक्षा संतानहीन रहना कहीं अधिक अच्छा है । मैं ब्राह्मण हूँ अब मैं उस मूर्ख पुत्र को लेकर ब्राह्मणों की सभा में व्यर्थ ही अपमानित होऊँगा। ऐसा शाप आपने क्यों दे डाला। मूर्ख ब्राह्मण 'पशु एवं शूद्र' के समान सभी कार्योंमें अयोग्य माना जाता है। अतः हे विप्रवर! मूर्ख पुत्रको लेकर मैं क्या करूँगा ? अतः ऐसा शाप आपने क्यों दिया मेरा इतना बड़ा अपराध तो नहीं था। आप शाप मुझे देते मैं अपराधी था न कि मेरा पुत्र। मूर्ख ब्राह्मण (जो ब्राह्मणों के कर्म से अनभिज्ञ हो तथा जिसे गायत्री आदि का विस्तृत ज्ञान न हो, न ही वेदपाठ करता हो न ही कर्मकांड की विधि विधान जानता हो वह तो) शुद्रतुल्य होता है; इसमें सन्देह नहीं है; क्योंकि वह न तो पूजाके योग्य होता है और न दान लेनेका पात्र ही होता है। वह सब कार्यों के लिए निन्द्य होता है उसे दान देने से दाता को कोई लाभ भी नहीं होता ।

पशुवच्छूद्रवच्चैव न योग्यः सर्वकर्मसु।
किं करोमीह मूर्खेण पुत्रेण द्विजसत्तम ॥
यथा शूद्रस्तथा मूर्खा ब्राह्मणो नात्र संशयः ।
न पूजार्हो न दानार्हो निन्द्यश्च सर्वकर्मसु ॥

किसी देशमें रहता हुआ वेदशास्त्रविहीन ब्राह्मण कर देनेवाले शूद्रकी भाँति एक राजाके द्वारा समझा जाना चाहिये उसका सम्मान राजा न करें अन्यथा मूर्ख भी सम्मान पाने लग गए तो विद्वान भी शास्त्रों का अध्ययन अध्यापन छोड़कर तथा परम पुरुषार्थ छोड़कर आलसी और प्रमादी हो जायेंगे अतः पात्र देखकर ही ब्राह्मणों को दान दें और पात्र से ही कर्मकांड करायें। मूर्ख और संध्याहीन व वेदहीन से नहीं। फल की इच्छा रखनेवाले पुरुषको चाहिये कि देव तथा पितृकार्योंके अवसरपर मूर्ख ब्राह्मणको आसनपर न बैठाये । राजा भी वेदविहीन ब्राह्मणको शूद्रके समान समझे और उसे प्रणाम भी न करे उसे शुभ कार्योंमें नियुक्त न करे, बल्कि उसे कृषिके काम में लगा दे ।

देशे वै वसमानश्च ब्राह्मणो वेदवर्जितः ।

करदः शूद्रवच्चैव मन्तव्यः स च भूभुजा ॥

नासने पितृकार्येषु देवकार्येषु स द्विजः ।

मूर्खः समुपवेश्यश्च कार्यस्य फलमिच्छता ॥

राज्ञा शूद्रसमो ज्ञेयो न योज्यः सर्वकर्मसु।

कर्षकस्तु द्विजः कार्यो ब्राह्मणो वेदवर्जितः ॥

यदि भविष्य में अथवा कलिकाल में सारे ब्राह्मण मूर्ख हो जाये तो बुद्धिमान क्षत्रिय या बुद्धिमान वैश्य को चाहिए कि ब्राह्मणके अभावमें कुशके चटसे स्वयं श्राद्धकार्य करे परंतु पतित और मूर्ख ब्राह्मण को भूलकर भी न बुलाये।

और दान भी न करें। अतः कुश के चट से स्वयं ही श्राद्ध कर्म या अन्य अनिवार्य कार्य कर लेना ठीक है, किंतु मूर्ख ब्राह्मणसे कभी भी श्राद्धकार्य आदि नहीं कराना चाहिये ।मूर्ख ब्राह्मणको भोजनसे अधिक अन्न नहीं देना चाहिये; क्योंकि देनेवाला व्यक्ति नरकमें जाता है और लेनेवाला तो विशेषरूपसे नरकगामी होता है ।

मूर्ख ब्राह्मण को शूद्र से अधिक नहीं समझना चाहिए जो संध्यापूत व वेदपाठी न हो उनको शूद्र ही माना जाए उनको नमन तो क्या दर्शन भी न करें।

●●●●●●●●●●●●●●●

विना विप्रेण कर्तव्यं श्राद्धं कुशचटेन वै।

न तु विप्रेण मूर्खेण श्राद्धं कार्यं कदाचन ॥

आहारादधिकं चान्नं न दातव्यमपण्डिते ।

दाता नरकमाप्नोति ग्रहीता तु विशेषतः ॥

●●●●●●●●●●●●●●●

उस राजाके राज्यको धिक्कार है, जिसके राज्यमें बुद्धिमान ब्राह्मण नहीं रहते व सभी मूर्ख लोग निवास करते हैं । ऐसे राजा को धिक्कार है जो ज्ञानी व बुद्धिमान ब्राह्मण को छोड़कर मूर्ख ब्राह्मण का भी सम्मान करता फिरता है व उनको क्षुधा से अधिक अन्न आदि का दान करता है। ऐसे मंत्री के नियमों व राजसभा को ही धिक्कार है जो मूर्खब्राह्मण को भी सभा में सम्मानित करना चाहते हैं। विद्वान ब्राह्मण ब्रह्मा के समान और मूर्ख ब्राह्मण शुद्रतुल्य होता है। साथ ही जहाँ मूर्ख और पण्डितके बीच आसन, पूजन और दानमें रंचमात्र भी भेद नहीं माना जाता। वह राजसभा भी कुछ ही कालखण्ड में छिन्न–भिन्न हो जाती है। पूजन और सम्मान सदा पात्र का ही किया जाये अपात्र व अयोग्य का नहीं।

अतः विज्ञ पुरुषको चाहिये कि वह मूर्ख और पण्डितकी जानकारी अवश्य कर ले । जहाँ दान, मान तथा परिग्रहसे मूर्खलोग महान् गौरवशाली माने जाते हैं, उस देशमें पण्डितजनको किसी प्रकार भी नहीं रहना चाहिये।

दुर्जन व्यक्तियोंकी सम्पत्तियाँ दुर्जनोंके उपकारके लिये ही होती हैं। जैसे अधिक फलोंसे लदे हुए नीमके वृक्षका उपभोग केवल कौए ही करते हैं।

धिग्राज्यं तस्य राज्ञो वै यस्य देशेऽबुधा जनाः ।
पूज्यन्ते ब्राह्मणा मूर्खा दानमानादिकैरपि ॥

आसने पूजने दाने यत्र भेदो न चाण्वपि।
मूर्खपण्डितयोर्भेदो ज्ञातव्यो विबुधेन वै ॥

मूर्खा यत्र सुगर्विष्ठा दानमानपरिग्रहैः ।
तस्मिन्देशे न वस्तव्यं पण्डितेन कथञ्चन ॥

असतामुपकाराय दुर्जनानां विभूतयः ।
पिचुमन्दः फलाढ्योऽपि काकैरेवोपभुज्यते ॥

इस प्रकार देवदत्त ने बहुत समयतक दुख किया पर अपनी गलती पर भी बहुत रोया और गोभिल जी से क्षमा मांगी । सच में महात्माओं का क्रोध क्षणभर का होता है और पापियों का क्रोध वर्षों का या जीवन भर का। यही संत और असंत की परख करता है चारों वर्णों में जो भी अकारण क्रोध करे , अपने क्रोध में ही जलता रहे , शम दम शान्ति आदि से हीन हो तथा स्त्रीलम्पट व लोभी हो वह ब्राह्मण हो या क्षत्रिय , वैश्य अथवा शूद्र ; संन्यासी या वानप्रस्थ अथवा नैष्ठिकब्रह्मचर्य व्रतधारी या गृहस्थ वे सब महामूर्ख हैं और पूजन के योग्य नहीं उनके दर्शन के बाद गंगा स्नान से ही शुद्धि होती है।

हम देवदत्त के मूर्ख पुत्र के बारे में कह रहे थे अतः अब सुनें आगे –

इस प्रकार गोभिल जी ने क्षमा कर दिया पर यह कहा कि शाप तो मिथ्या नहीं होगा पर एक उपाय बताता हूँ वह यह कि अपने पुत्र को सत्यवादी बना देना आगे का कार्य भगवती सहज करेंगी। तो बच्चे का जन्म हुआ तथा नाम उतथ्य रखा।

आठवें वर्षमें शुभ योग तथा शुभ दिन में पिता देवदत्तने अपने उस पुत्रका विधिवत् उपनयन संस्कार सम्पन्न किया।

ब्रह्मचर्यव्रतमें स्थित उतथ्यको आचार्य वेद पढ़ाने लगे, किंतु वह एक शब्दका भी उच्चारण नहीं कर सका, मूढकी भाँति चुपचाप बैठा रहा। उसके पिताने उसे अनेक प्रकारसे पढ़ानेका प्रयत्न किया, किंतु उस मूर्खकी बुद्धि उस और प्रवृत्त नहीं होती थी। वह मूर्खके समान पड़ा रहता था। इससे उसके पिता देवदत्त उसके लिये बहुत चिन्तित हुए। इस प्रकार निरन्तर वेदाभ्यास करते हुए वह बालक बारह वर्षका हो गया, किंतु भलीभाँति सन्ध्यावन्दन करनेतककी विधि भी न जान पाया सब कुछ सुनकर भी सब कुछ भूल जाता था।

सभी ब्राह्मणों, तपस्वियों तथा अन्यान्य लोगोंमें यह बात विस्तृतरूपसे फैल गयी कि देवदत्तका पुत्र महामूर्ख निकल गया। वह जहाँ कहीं जाता, लोग उसकी हँसी उड़ाते थे। यहाँतक कि उसके माता–पिता भी उस मूर्खको कोसते हुए उसकी निन्दा किया करते थे । पर सत्य बोलने की आज्ञा भी देते रहते थे। इस प्रकार जब सभी लोग, माता–पिता तथा बन्धु–बान्धव उसकी निन्दा करने लगे, तब उस ब्राह्मण बालकके मनमें वैराग्य उत्पन्न हो गया और वह वनमें चला गया । अन्धा या पंगु पुत्र ठीक है, किंतु मूर्ख पुत्र ठीक नहीं है–माता–पिताके ऐसा कहनेपर वह उदास सा होकर वनमें चला गया।

वह गंगाके किनारे एक उत्तम स्थानपर सुन्दर पर्णकुटी बनाकर वह वनवासीका जीवन व्यतीत करते हुए एकनिष्ठ होकर वहीं रहने लगा।

'मैं असत्य नहीं बोलूँगा'–

ऐसी दृढ़ प्रतिज्ञा करके ब्रह्मचर्यव्रतका पालन करते हुए वह उसी सुन्दर आश्रममें रहने लगा । वह उतथ्य वेदाध्ययन, जप, ध्यान तथा देवताओंकी आराधना आदि कुछ भी नहीं जानता था। वह ब्राह्मण आसन, प्राणायाम तथा प्रत्याहार भी नहीं जानता था। वह भूतशुद्धि तथा कारणके विषयमें भी कुछ नहीं जानता था। वह शापोद्धार मंत्र, कीलक मन्त्र, सिद्ध कुंजिका या जप तप, गायत्री नहीं जानता था। उसे सम्यक् रूपसे शौच, स्नान–विधि तथा आचमनतकका ज्ञान नहीं था। वह ब्राह्मण प्राणाग्निहोत्र, वैश्वदेव, अतिथि सत्कार, सन्ध्या वन्दन, समिधा तथा होम आदिके विषयमें भी नहीं जानता था।

प्रातःकाल उठकर वह किसी तरह सामान्य रूपसे दन्तधावन कर लेता था, तत्पश्चात् शूद्रकी भाँति बिना मन्त्र बोले ही गंगामें स्नान कर लिया करता था। दोपहरके समय वह अपनी इच्छासे वन्य फल लाकर उन्हें खा लिया करता था। उस मूर्खको भक्ष्य तथा अभक्ष्यका भी ज्ञान नहीं था ।

वहाँ निवास करता हुआ वह ब्राह्मण सदैव सत्यभाषण करता था और झूठ कभी नहीं बोलता था। (उसकी इस सत्यनिष्ठासे प्रभावित होकर) लोगोंने इस ब्राह्मणका नाम 'सत्यतपा' रख दिया । वह न तो कभी किसीका अहित करता था और न अविहित कार्य ही करता था। वह यही सोचता हुआ निडर होकर उस कुटीमें सोता था कि मेरी मृत्यु कब होगी ? मैं इस वनमें दुःखपूर्वक जी रहा हूँ। मुझ मूर्खके जीवनको धिक्कार है, अतः अब मेरा शीघ्र मर जाना ही उत्तम है । दैवने ही मुझे किसी पाप से मूर्ख बनाया है, इसके अतिरिक्त कोई अन्य कारण मुझे जान नहीं पड़ता। उत्तम कुलमें जन्म–ग्रहण करके भी मैंने अपना जीवन व्यर्थ गँवा दिया।

जैसे रूपसम्पन्न वन्ध्या स्त्री, फलरहित वृक्ष तथा दूध न देनेवाली गाय–ये सब निरर्थक होते हैं, उसी प्रकार मैं भी निष्फल कर दिया गया हूँ ।

●●●दिन–रात इस प्रकारके अनेक तर्क–वितर्क करता हुआ वह द्विज गंगाके तटपर स्थित उस पावन आश्रममें रहता था । अब वह ब्राह्मण सर्वथा विरक्त हो गया और उस निर्जन वनमें स्थित आश्रममें रहता हुआ शान्तचित्त होकर समय बिताने लगा । इस प्रकार निर्मल जलवाले उस वनमें रहते हुए उस ब्राह्मणके चौदह वर्ष बीत गये; पर उसने न कोई जप किया, न आराधना की और न कोई मन्त्र ही वह जान सका, केवल उसने वनमें रहकर कालक्षेप ही किया। वहाँके लोग केवल उसके इस प्रसिद्ध व्रतको जानते थे कि यह सदा सत्य बोलता है। और मौन रहता है (अतः मुनि नाम हो गया) अतः सब लोगोंमें उसका यह सुयश फैल गया कि यह सदा सत्यव्रती है और मिथ्याभाषी नहीं ॥

●●

एक दिन आखेट करता हुआ एक महान् मूर्ख निषाद हाथोंमें धनुष–बाण लिये हुए उसी गहन वनमें आ पहुँचा। यमराजके समान शरीर तथा भीषण आकृतिवाला वह निषाद आखेट करते समय वधकार्यमें बड़ा ही कुशल जान पड़ता था ।

उस धनुर्धारी किरातने एक सूअरको लक्ष्य करके बड़े जोरसे खींचकर बाण चलाया। तब बाणसे बिंधा हुआ वह सूअर भयभीत होकर भागता हुआ उस मुनिके समीप जा पहुँचा ।

जब वह सूअर आश्रम–परिधिमें पहुँचा तो भयसे काँप रहा था और उसका शरीर रक्तसे लथपथ था। उस बेचारेको इस दशामें देखकर उस समय सत्यव्रतमुनि अत्यन्त दयार्द्रचित्त हो गये। रक्तसे सराबोर शरीरवाले उस आहत सूअरको अपने आगेसे जाते देखकर दयाके अतिरेकसे काँपते हुए मुनिने बिन्दुरहित सारस्वत बीजमन्त्र

'ऐ–ऐ' 'ऐ–ऐ'

का उच्चारण किया । (हालांकि यह ऐं नहीं था) ऐ देवनागरी लिपि का आठवाँ वर्ण है और एक स्वर भी है। पर देवी के बीजमंत्र का हिस्सा ही है। ऐ की मात्रा " ै " इस प्रकार से होती है। अतः कै खै गै घै चै छै जै झै टै ठै आदि में देवी सरस्वती की महा कृपा समाई हुई है। और एक बात कहें तो आपको यह बीज ऐं या इसका अंश ऐ कक्षा 1 में ही स्कूल के शिक्षक की वाणी से प्राप्त हो चुका है अतः वे भी आपके गुरु ही हुए। पर जितेन्द्रिय पुरुष के द्वारा सुनकर जपने से 1000 गुना लाभ होता है। तथा ब्रह्मज्ञानी की वाणी मात्र से भी आपको ऐं अथवा ह्रीं या क्लीं सुनाई दे जाए तो भी लाखों गुना फल मिलने लगता है। इसी कारण संतों की अधिक महिमा है।

उन्हें इसके पूर्व न तो इस मन्त्रका ज्ञान था और न उन्होंने कभी इसे सुना ही था; दैवयोग से ही उनके मुखसे यह मन्त्र निकल पड़ा। अब भी उन विमूढ़को नहीं मालूम था कि यह सारस्वत बीजमन्त्र है।

उसने मंत्र की दीक्षा भी नहीं थी। इस प्रकार कहा जा सकता है कि देवी का बीज सर्वसिद्धिप्रदाय व स्वयंसिद्ध है। परंतु विधि का ज्ञान हो तो विधिवत ही जपें। और विधि न मिले तो भी देवी की प्रसन्नता के लिए ऐं भी जप सकते हैं। ह्रीं ह्रीं या क्लीं क्लीं भी ।

पर ऐसा नहीं कि विधि न हो तो बीज ही छोड़कर कोने में रख दें।

वे महात्मा सत्यव्रतमुनि तो उस घायल सूअरके शोकमें डूबे हुए थे । इसी बीच बाणकी पीड़ाके कारण अत्यन्त सन्तप्तचित्त तथा काँपते हुए शरीरवाला वह सूअर कोई दूसरा मार्ग न पाकर सत्यव्रतके आश्रममण्डलमें प्रविष्ट होकर कहीं झाड़ीमें छिप गया ॥

थोड़ी देर बाद कानतक खींचे धनुषको धारण किये हुए दूसरे कालके समान विकराल देहवाला वह निषादराज भी उस सूअरको खोजता हुआ मुनिके निकट आ पहुँचा ॥

वहाँ कुशासनपर बैठे हुए अद्वितीय सत्यव्रतमुनिको देखकर वह व्याध प्रणाम करके उनके सामने खड़ा हो गया और पूछने लगा– हे द्विजराज ! वह सूअर कहाँ गया ?

तो वह सत्यव्रत धर्म संकट में पड़ गया कि क्या कहूँ। यदि सुअर का पता देता हूँ तो वह मार डालेगा उसे और झूठ बोलता हूँ तो मेरा संकल्प नष्ट होगा।

तब अचानक ही उसे सारी विद्याएं देवी महासरस्वती के अधूरे बीज से ही प्राप्त हो गई।

तब उसने संस्कृत में बोला कि –

या पश्यति न सा ब्रूते

या ब्रूते सा न पश्यति।

अहो व्याध स्वकार्यार्थिन् किं पृच्छसि पुनः पुनः ।।

अर्थात

जो देखती है वह (आँखें)बोलती नहीं और जो बोलती है वह देखती नहीं ।

अतः अपने ही प्रायोजन कि सिद्धि में तत्पर हे व्याध! तुम बार बार क्यों पूछ रहे हो?

तो यह सब बातें व्याध को मुहावरेदार लगी और वह चुपचाप चला गया।

और इसी दिन से यह उतथ्य (मुनि / सत्यव्रत) श्रीवाल्मीकि के समान महाकवि हो गए। और जगप्रसिद्ध हुए। यह स्वयंभू गुरु ही हुये।

पर जो मनुष्य किसी जितेन्द्रिय शाक्त भक्त से यह (कोई भी एक बीज या नवार्ण) मंत्र ले ले तो निश्चित ही शीघ्र ही सब कुछ पाप लेगा।

19. माँ षोडशी महाविद्या

श्री षोडशी मैया ही महात्रिपुरसुन्दरी ,ललिता व राजराजेश्वरी , बालापंचदशी आदि नाम से विश्वविख्यात हैं जिनकी पूजा श्रीयंत्र में भी की जाती है ये श्रीविद्या ही है जो 10 महाविद्याओं में प्रमुख हैं । अक्षयरुद्र के अनुसार आरंभिककाल में इनके बाल रूप अर्थात् बाला त्रिपुरसुन्दरी का भजन करना चाहिए इनके तीन अक्षरी मंत्र का पुरश्चरण करके उसे सिद्ध करना चाहिए तदोपरान्त आगे की यात्रा।

एषाऽऽत्मशक्तिः ।
एषा विश्वमोहिनी ।
पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा।
एषा श्रीमहाविद्या ।
य एवं वेद स शोकं तरति ॥

(अर्थात् यही आत्मशक्ति है यही विश्वमोहिनी महामाया है । ये ही महाविद्या है। पाश अंकुश और धनुष बाण धारण करती हैं आगे ऋषि कहते हैं कि जो इन पराशक्ति सर्वेश्वरेश्वरी को जानता है वह शोक को पार कर जाता है अर्थात वह अमृत प्राप्त कर कृतकृत्य धन्य धन्य, महाधन्य हो जाता है यहाँ अमृत का तात्पर्य जीवन्मुक्त अवस्था से समझना चाहिए।

नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः ॥
हे भगवती ! तुम्हें नमस्कार है ।
माता ! हे पराम्बा ! कृपया सब प्रकार से हमारी रक्षा करो।
रक्षा करो ।
रक्षा करो ।

कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः ।
पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्यैषा विश्वमातादिविद्योम् ॥

यह मंत्र श्री देव्यथर्व शीर्ष के 14 वें श्लोक में वर्णित है जो प्रत्यक्ष होते हुए भी अदृश्य ही है जिसे सब मंत्रों में मुकुट मणि और मंत्र शास्त्र में पंचदशी की संज्ञा प्राप्त है। यह मंत्र जिसने सिद्ध कर लिया वह पुरुष अनेकों ब्रह्माण्डों का सृजन, पालन तथा संहार भी कर सकता है और इस विश्व में वह शरभ अवतार के श्री शरभ की भाँति सर्वज्ञ और स्वतंत्र होकर सब पर शासन कर सकता है उसके पास ऐसी मातृका शक्ति आती है जिसके कारण वह शाक्त अतुलनीय और सर्वेश्वर ही हो जाता है। श्रीमद्देवीभागवत महापुराण के अनुसार त्रिदेव आदि भी देवी त्रिपुर सुन्दरी की कृपा से ही इन पदों पर आसीन होकर साक्षात भगवान सदाशिव के समान ऐश्वर्य और सम्मान पाकर आज इस ब्रह्माण्ड में परमात्मा ही कहे जा रहे हैं पर इस रहस्य का ज्ञान केवल शाक्त भक्तों को ही है कि उनके प्रभुत्व का आधार उनको प्राप्त तीन मातृकाएं हैं और कुछ भी नहीं और ये तीनों महान मातृकाएं (अर्थात तीन माताएं देवी ललिता की अंशभूत तीन देवियाँ हैं) इस कारण ये तीनों देवता स्वयं इन मातृकाओं की सदा ही पूजा करते है यहाँ तक कि इन तीनों देवताओं की भार्याएं भी इन मातृकाओं को पति की भाँति ही पूजती हैं क्योंकि इनके पति को बल, पराक्रम और सिद्धियों का मूल कारण ये मातृकाएं हैं। जो भी भक्त इन षोडशी माँ की शरण ग्रहण करते है उनमें

और ईश्वर में कोई भी भेद नहीं रह जाता वह भक्त जीते जी ही साक्षात् ईश्वर महादेव का स्वरूप ही हो जाता है और स्त्री प्रत्यक्ष महादेवी रूप हो जाती है अर्थात् साक्षात् देवी का एक विग्रह हो जाती है। इनके चार हाथों में धनुष बाण पाश और अंकुश शोभायमान हैं जो शांतमुद्रा में लेटे सदाशिव प्रभु पर स्थित कमल पर आसीन हैं इनका विग्रह सौम्य और हृदय दया से आपूरित है। संसार के सभी तंत्र और मंत्र सदैव इनकी ही आराधना में तत्पर रहकर शक्तियाँ अर्जित करते हैं। तंत्रशास्त्र में निहित साधना से दैहिक व दैविक कष्ट तो दूर हो सकते हैं पर मानसिक कष्टों और भवरोग से निवृत्ति की परम औषधि मात्र त्रिपुरसुन्दरी माँ और इनका आत्मरूप भुवनेश्वरी ही है। ये ही श्रीललिता हैं।

जिस प्रकार 51 शक्तिपीठों के क्षेत्र में रहने वाला चांडाल भी पूज्यनीय है वैसे ही वह भक्त पूज्यनीय हो जाता है जो नित्य नियम से एक, द्विकाल या त्रिकाल संध्या में इनके कवच (त्रिपुरसुन्दरी ललिता कवच या प्रकृति कवच) का पाठ करता है। और जो दंपति सतत् 1 वर्ष तक ब्रह्मचर्य पूर्वक इस कवच का जाप कर चुके वे साक्षात् गौरी शंकर के समान पूज्यनीय, दर्शनीय व पवित्र हैं और साक्षात् शिव शक्ति ही मानने योग्य। आदिगुरु शिव स्वरूप श्रीमद् शंकराचार्य जी ने श्रीविद्या रूप में साक्षात् लीलारत षोडशी देवी की ही उपासना की थी, सभी प्रधान पीठों की आत्मा त्रिपुरसुन्दरी षोडशी ही हैं जो श्रीविद्या रूप में पूजित होकर भक्तों के त्रिविध ताप का हरण करके भवरोग से मुक्त ही कर देती हैं।

इनके ध्यान के लिए (श्रीशंकराचार्य कृत सौन्दर्य लहरी से)

अमृतमयी समुद्र के मणिका द्वीप में कल्पवृक्षों से युक्त एक मनोहर बारी है उसी द्वीप में नवरत्नों के नौ परकोटे हैं उस वन में चिंतामणी निर्मित भव्य महल में ब्रह्ममय सिंहासन है जिसके फलक साक्षात् सदाशिव और चार पाये चार कृत्यों के चार देवता (सृजनकर्ता ब्रह्मा, पालनकर्ता विष्णु, संहारक रुद्र और तिरोभाव कर्ता महेश्वर अर्थात् ईश्वर) हैं उन सदाशिव जी के नाभि से निर्गत कमल पर माँ षोडशी त्रिपुरसुंदरी महाविद्या विराजमान हैं। जिनके हाथों में धनुष वाण और पाश अंकुश हैं.........उनका ध्यान करना चाहिए ।

शिवांश दुर्वासा इनके परम उपासक थे । वे लोग धन्य हैं जो इन त्रिपुरसुन्दरी आद्याशक्ति या माँ भुवनेश्वरी जगदम्बा की शरण ग्रहण करते हैं।

ब्रह्म–यामल तंत्र शास्त्र में देवी षोडशी महाविद्या के सहस्र नाम फलदायी अष्टोत्तरशतनाम बताये गए हैं जो अत्यधिक गुप्त हैं पर भक्तों के लिए शिव जी की आज्ञा है कि ये अवश्य ही एकान्त स्थान पर देवी की भक्ति का परीक्षण करके बताये जायें। इन नामों को अपने साथ लेकर मर जाना श्रेष्ठ है पर अपात्र को बताना पूर्णतः निषिद्ध है।

॥ श्रीषोडश्यै नमः ॥

ध्यान

बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।

पाशाङ्कुशवराभीतीर्धारयन्तीं शिवां भजे ॥
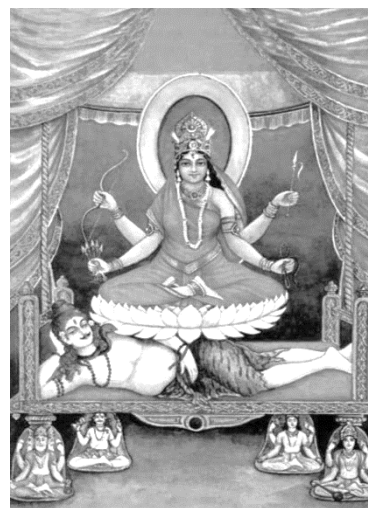
(जो उदयकालके सूर्यमण्डलकी–सी कान्ति धारण करनेवाली हैं, जिनके चार भुजाएँ और तीन नेत्र हैं तथा जो अपने हाथोंमें पाश, अंकुश, वर एवं अभयकी मुद्रा धारण किये रहती हैं, उन शिवादेवीका में ध्यान करता हूँ।)

विनियोग

ॐ अस्य श्रीषोडश्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य शम्भुऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीषोडशी देवता धर्मार्थकाममोक्षसिद्धये विनियोगः।

भृगु उवाच
चतुर्वक्त्र जगन्नाथ स्तोत्रं वद मयि प्रभो ।
यस्यानुष्ठानमात्रेण नरो भक्तिमवाप्नुयात् ॥

ब्रह्मोवाच
सहस्रनाम्नामाकृष्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।
गुह्याद् गुह्यतरं गुह्यं सुन्दर्याः परिकीर्तितम् ॥

अथ श्रीषोडशी–अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

ॐ त्रिपुरा षोडशी माता त्र्यक्षरा त्रितया त्रयी।
सुन्दरी सुमुखी सेव्या सामवेदपरायणा ॥ 1॥

शारदा शब्दनिलया सागरा सरिताम्बरा।
शुद्धा शुद्धतनुः साध्वी शिवध्यानपरायणा ॥ 2॥

स्वामिनी शम्भुवनिता शाम्भवी च सरस्वती ।
समुद्रमथिनी शीघ्रगामिनी शीघ्रसिद्धिदा ॥ 3॥

साधुसेव्या साधुगम्या साधुसन्तुष्टमानसा ।
खट्वाङ्गधारिणी खर्वा खड्ग खर्पर धारिणी ॥ 4॥

षड्वर्गभावरहिता षड्वर्गपरिचारिका ।
षड्वर्गा च षडङ्गा च षोढा षोडशवार्षिकी ॥ 5 ॥

क्रतुरूपा क्रतुमती ऋभुक्षा क्रतुमण्डिता ।
कवर्गादिपवर्गान्ता अन्तःस्थानन्तरूपिणी ॥ 6॥

अकाराकाररहिता कालमृत्युजरापहा।
तन्वी तत्त्वेश्वरी तारा त्रिवर्षा ज्ञानरूपिणी ॥ 7 ॥

काली कराली कामेशी छाया संज्ञाप्यरुन्धती ।
निर्विकल्पा महावेगा महोत्साहा महोदरी ॥ 8॥

मेघा बलाका विमला विमलज्ञानदायिनी।
गौरी वसुन्धरा गोप्त्री गवाम्पतिनिषेविता ॥ 9 ॥

भगाङ्गा भगरूपा च भक्तिभावपरायणा ।
छिन्नमस्ता महाधूमा तथा धूम्रविभूषणा ॥ 10 ॥

धर्मकर्मादिरहिता धर्मकर्मपरायणा।
सीता मातङ्गिनी मेधा मधुदैत्यविनाशिनी ॥ 11 ॥

भैरवी भुवना माताभयदा भवसुन्दरी।
भावुका बगला कृत्या बाला त्रिपुरसुन्दरी ॥ 12॥

रोहिणी रेवती रम्या रम्भा रावणवन्दिता ।
शतयज्ञमयी सत्त्वा शतक्रतुवरप्रदा ॥ 13॥

शतचन्द्रानना देवी सहस्रादित्यसन्निभा ।
सोमसूर्याग्निनयना व्याघ्रचर्माम्बरावृता ॥ 14॥

अर्धेन्दुधारिणी मत्ता मदिरा मदिरेक्षणा ।

इति ते कथितं गोप्यं नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥
सुन्दर्याः सर्वदं सेव्यं महापातकनाशनम् ।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं कलौ युगे ॥
सहस्त्रनामपाठस्य फलं यद्वै प्रकीर्तितम् ।
तस्मात्कोटिगुणं पुण्यं स्तवस्यास्य प्रकीर्तनात् ॥
पठेत् सदा भक्तियुतो नरो यो
निशीथकालेऽप्यरुणोदये वा।
प्रदोषकाले नवमीदिनेऽथवा
लभेत भोगान्परमाद्भुतान्प्रियान् ॥

॥ इति ब्रह्मयामले पूर्वखण्डे श्रीषोडश्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

इन षोडशी महाविद्या माँ का बाला रूप बालासुंदरी या बाला त्रिपुरसुन्दरी कहा जाता है तथा इनका ही एक रूप ललिता है जिनके हाथों में पुण्ड्र ईख धनुष, पुष्पमय वाण और अंकुश शोभायमान हैं। जो परम मंगल रूप है ललिता पंचकम् में इस स्वरूप की ही पाँच श्लोकों में स्तुती है,जो इस प्रकार है। माँ ललिता त्रिपुरसुन्दरी के अति

सौभाग्यप्रद और सुललित इन पाँच श्लोकों को जो पुरुष नित्य प्रातःकाल पढ़ता है उसे शीघ्र ही प्रसन्न होकर ललिता देवी विद्या, धन, निर्मल सुख और अनंत कीर्ति देकर अनुग्रहित करती हैं।

सुनें–

ललिता पंचकम्

प्रातः स्मरामि ललितावदनारविन्दं
विम्बाध पृथुलमौक्तिकशोभिनासम्।
आकर्णदीर्घनयनं मणिकुण्डलाढ्यं
मन्दस्मितं मृगमदोज्ज्वलभालदेशम् ।।1।।

प्रातर्भजामि ललिताभुजकल्पवल्लीं
रक्तांगुलीयल सदंगुलिपल्लवाढ्याम्
माणिक्यहेमवलयांगदशोभमानामं
पुण्ड्रेक्षुचापकुसुमेषुसृणीदधानाम (2)

प्रातर्नमामि ललिताचरणारविन्दम्
भक्तेष्टदाननिरतं भवसिंधुपोतम्।
पद्मासनादिसुरनायकपूजनीयमं
पद्मांकुशध्वजसुदर्शनलांछनाढ्यम् (3)
प्रातःस्तुवे परशिवां ललितां भवानीं
त्रय्यन्तवेद्यविभवां करुणानवद्याम्
विश्वस्य सृष्टिविलयस्थितिहेतुभूतां
विद्येश्वरीं निगमवाङ्. मनसातिदूरामं (4)

प्रातर्वदामि ललिते तव पुण्यनाम
कामेश्वरीति कमलेति महेश्वरीति
श्री शाम्भवीति जगतां जननी परेति
वाग्देवतेति वचसा त्रिपुरेश्वरीति (5)
महिमा

यः श्लोकपंचकमिदम् ललितम्बिकायाः
सौभाग्यदं सुललितं पठति प्रभाते।
तस्मै ददाति ललिता झटिति प्रसन्ना
विद्यां श्रियम् विमलसौख्य मनन्तकीर्तिम्।।
ऊँ तत्सत

हे पराम्बा! आप एक होकर भी अनेक रूपों में विराजमान होकर अलग अलग अनन्य भक्तजनों की आश्रयभूता हो हे भगवति! मैं आपके चरणों की शरण में पड़ा हूँ। आपके चरणों में प्रणत होने से प्राप्त हुये थोड़े से फल के कारण मेरा इंद्रिय समुदाय आपके चरणों में अटल स्थान प्राप्त करें।

भगवति स्थिरभक्तजनाश्रये प्रतिगतो भवतीचरणाश्रयम्।
करणजातमिहास्तु ममाचलं नुतिलवाप्ति फलाशयहेतुतः।।
(मत्स्य पुराण)

हे माँ परमदयालु जगजननी! आप पराविद्या महाकाली रूप से योगनिद्रा होकर श्रीहरि को भी निद्रा के वशीभूत कर सकती हो और मधु कैटभ समय प्रसंग में कर भी रखा था तब तुम्हारी स्तुती यहाँ कौन कर सकता है मुझ महारुद्रांश के पास तो वो ऐश्वर्य या उनके समान ज्ञान भी नहीं जो उन त्रिकार्यों को करने वाले त्रिदेवों के पास है तो फिर मैं किस प्रकार आपका वंदन करुं। हे पराशक्ति मैं केवल आपके चरणों में झुकते हुये प्रणाम ही कर सकता हूँ हे माँ मुझे भवसागर से मुक्ति दीजिए।

यया त्वया जगत्स्त्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत।
सोऽपि निद्रावशं नीतं कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।।
(मार्कण्डेय पुराण)

श्रीराम ,शंकर आदि महान महान देव भी आपके भक्त हैं तो इस अक्षयरुद्र की क्षमता ही क्या है जो आपसे विमुख हो सके । हे देवी ! कल्याण करो कल्याण करो कल्याण करो।

श्रीराम– जो लोग विपत्तियों में दुर्गतिनाशक आप भगवती का स्मरण करते हैं वे विषम परिस्थितियों में भी दुःखी नहीं होते, हे माँ आप मुझे (मुझ राम को रावण के वध का वरदान देकर) विजय प्रदान कीजिए आपको नमस्कार है।

ये त्वां स्मरन्ति दुर्गेषु देवीं दुर्गविनाशिनीम्।
नावसीदन्ति दुर्गेषु जय देहि नमोऽस्तु ते।।
(श्रीमद्भागवत महापुराण)

हे देवी पराशक्ति! आप ही आनंदवन (काशी) में संकटा नामक 10 भुजाओं वाली, तीन नेत्रों से सुशोभित, माला, कमण्डलु, कमल, शंख, गदा, त्रिशूल, और डमरू खड्ग, ढाल से विभूषित, वर और अभय मुद्रा... धारण करने वाली भगवती कही गयी हो जिनकी महिमा स्वयं मार्कण्डेय जी ने युधिष्ठिर के पूछने पर गायी थी जिनके इन आठ नामों को त्रिकाल संध्या के समय लेने पर भयंकर से भी भयंकर संकटों का नाश तो होता ही है महावन्ध्या नारी भी आज्ञाकारी संतान लाभ प्राप्त कर लेती है। हे देवी आपके आठ नामों से युक्त (पद्म पुराण के) इन दो श्लोकों को जो भी भक्त पराम्बा सर्वेश्वरी के प्रीत्यर्थे नित्य जपता है उसके सभी संकटों का नाश आप सहज ही कर देती हो। वह सारे भयों से सहज ही मुक्त हो जाता है।

संकटा प्रथमं नाम द्वितीयं विजया तथा।
तृतीयं कामदा प्रोक्तं चतुर्थं दुःखहारिणी।।
शर्वाणी पंचमं नाम षष्ठं कात्यायनी तथा।
सप्तमं भीमनयना सर्वरोगहराऽष्टमम्।।
(पदम् पुराण)

छोटे बड़े प्राणियों से सेवित सबको तारने वाली आपको नमस्कार है, नमस्कार है संसार बंधन का उच्छेद करने वाली अद्वैतरूपा आपको नमस्कार है।

आप परम शांत, सर्वश्रेष्ठ तथा मनो वांछित वर देने वाली है, आपको बारम्बार नमस्कार है।

परापरशताढ्यायै तारायै ते नमो नमः।
पाशजाल निकृन्तिन्यै अभिन्नाये नमोऽस्तु ते
(स्कंद पुराण)

भगवती को प्रत्येक पल प्रतिपल ध्याना ही जीवन का परम सदुपयोग है पर नित्य ध्याकर भी जो भक्त हर माह में कृष्ण पक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी को अपना सर्वस्व समर्पित करते हुये यह कहता है कि हे पराम्बा! मेरे पास जो भी है आपका ही है इस पर मेरा अधिकार नहीं पर हे माँ व्यवहारिक रूप से और समर्पण शब्द को सार्थक करते हुये ये (धन, कीमती पदार्थ, आभूषण गाड़ी, पद, पत्नि और पुत्रादि) सब आपको अर्पित हैं और कृपया ये आपका प्रसाद बनकर मुझे प्राप्त हों। इस भाव से तथा मन की निश्छलता से भगवती निश्चित ही प्रसन्न होती हैं अन्यथा नहीं यह कीलक में स्पष्ट कहा गया है।

कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः।
ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति।।

तथा साथ ही इसी कृष्ण पक्ष की इन दो तिथियों के अलावा नवमीं में भी जो भक्त मधुकैटभ का नाश करने वाली महामाया महाकाली, महिषासुर का वध करने वाली महालक्ष्मी और महासरस्वती कौशिकी माँ द्वारा निशुम्भ मर्दिनी व शुम्भ के संहार के प्रसंग का पाठ तथा देवी महामाया के माहात्मय का श्रवण करते हैं उनको कभी भी कोई भी पाप नहीं छू सकता। उन पर पापजनित आपत्तियाँ भी नहीं आती, वह कभी दरिद्र नहीं होता उसे कभी प्रेमीजनों के विछोह का कष्ट भी नहीं भोगना पड़ता, इतना ही नहीं उस भक्त को शत्रु, लुटेरा, राजा, आग, शस्त्र तथा जल से भी कोई भी भय नहीं होता, वह पाठक कभी भी महामारी जनित उपद्रवों का शिकार नहीं होता तथा आधि व्याधि और उपाधि त्रिविध ताप से सदा ही सुरक्षित बना रहता है।

जो मानव इस पाठ (सप्तशती) को इन तीनों तिथियों तथा विशेष पूजा महोत्सव पर करता है वह पूजा, होम आदि की शेष विधि न भी जानें तो भी माँ सदा ही प्रसन्न रहती हैं। और मुख्य रूप से शारदीय नवरात्री में इस पाठ का आश्रय सदा ही लेना चाहिए इससे वह माँ का अनन्य भक्त धन धान्य, पुत्र और वैभव आदि से संपन्न हो जाता है उसका कल्याण सुनिश्चित ही हो जाता है तथा उसके शत्रु नष्ट हो जाते हैं। बुरे स्वप्न दिखने पर, ग्रहजनित भयंकर पीड़ा और दुराचारियों से पीड़ित को, राज्य से परेशानी.... पर इस सप्तशती का पाठ अनिवार्य ही करना चाहिए पाठ मात्र से राक्षसों, भूतों तथा पिशाचों का नाश हो जाता है। एक वर्ष तक जो विभिन्न आयोजन रखकर, भिन्न भिन्न उपचारों से माँ की पूजा और वृत किये जाते हैं तथा लगातार 12पक्षों तक ब्राह्मण भोज, होम, अभिषेक किये जाते हैं उतना फल तो मात्र एक बार के स्वाध्याय और पाठ से ही प्राप्त हो जाता है। यही सत्य है। घोर संकट में, लुटेरों के बीच फसने पर, दावानल से घिर जाने पर, व्याघ्र के बीच फंसने पर जो इस अद्वितीय माहात्मय का श्रवण या पाठ करते है वे अतिशीघ्र ही संकट से मुक्त हो जाते हैं।

परेशानी और समस्या आने पर रोने से समाधान नहीं होता अतः रोना नहीं चाहिए।
और ऋषियों की आज्ञा मानकर माँ जगदम्बा की शरण स्वीकार कर लेना चाहिए।

20. श्रीत्रिपुरा भैरवी

ॐ ऐं ह्रीं हसौः त्रिपुरायै प्रेतपद्मासन–समास्थितायै नमः

श्री देवी श्रीत्रिपुराभैरवी जी को नमन बार बार नमन।

श्रीत्रिपुरा भैरवी अपने दायें हाथों में (सीधे हाथ में) वर मुद्रा और जपमालिका (माला) धारण करती हैं तथा बायें हाथ में अभय मुद्रा और पुस्तक (विद्या) धारण करती हैं ये देवी बाणसमूह से भरा तरकस और धनुष भी सदा अपने पास रखती हैं। तथा पद्म के आसन (तांत्रिक प्रयोग की भाषा में प्रेतपद्मासन नाम) पर बैठी हुई हैं।

यह ध्यान भगवान अग्निदेव ने वसिष्ठ जी को बताया है मात्र ध्यान करने पर भी ये देवी त्रिपुरा भैरवी कहीं कहीं इनको मात्र त्रिपुरभैरवी या महा भैरवी अथवा भैरवी भी कहा गया है पर इनके सीधे हाथ में ही जपमाला है यह ध्यान रहे अनेक पेन्टर डेढ़े हाथ में माला और डेढ़े (बायें) में ही वरमुद्रा वाला रूप बना देते हैं जो ठीक नहीं।

अब 'त्रिपुराभैरवी 'के पूजनकी विधि देखें –

● इसमें आठ भैरवोंका पूजन करना चाहिये। उनके नाम इस प्रकार हैं–

1. असिताङ्गभैरव,
2.. रुरुभैरव,
3. चण्डभैरव,
4. क्रोधभैरव,

5. उन्मत्तभैरव,
6. कपालिभैरव,
7. भीषणभैरव तथा
8. संहारभैरव।

ब्राह्मी आदि मातृकाएँ भी पूजनीय हैं। स्वाहापति अग्निदेव ने जिनको मातृकाओं की संज्ञा दी है वे ये आठ देवी हैं –

उनके नाम इस प्रकार हैं–

1. ब्राह्मी,
2.. माहेश्वरी,
3. कौमारी,
4. वैष्णवी,
5. वाराही,
6. इन्द्राणी,
7. चामुण्डा तथा
8. महालक्ष्मी) । 'अकार' आदि ह्रस्व स्वरोंके बीजको आदिमें रखकर
भैरवोंकी पूजा करनी चाहिये ।

(अ इ उ ऋ लृ ए ओ अं...... ये आठ अक्षर ही ह्रस्व स्वर कहे जाते हैं ऐसा श्री राघवभट्ट जी ने कहा था जो महान विद्वान थे)

तथा 'आकार' आदि दीर्घ अक्षरों के बीज को आदिमें रखकर 'ब्राह्मी' आदि मातृकाओंकी अर्चना करनी चाहिये' ।

आ
ई
ऊ
ॠ
ॡ
ऐ
औ
अः
(● सामान्य ज्ञान– वर्ण विज्ञान में –

अ की पंक्ति में 16 वर्ण हैं ।

● क की पंक्ति में 5 (क ख ग घ ङ)
● च की पंक्ति में 5 (च छ ज झ ञ)
●ट की पंक्ति में 5 (ट ठ ड ढ ण)
●त की पंक्ति में 5 (त थ द ध न)

●प की पंक्ति में 5 (प फ ब भ म)
●य की पंक्ति में 4 (य र ल व)
● श की पंक्ति में 4 (श ष स ह)
●●●● ये 49 अक्षर हुये और 3 क्ष त्र ज्ञ अर्थात कुल 52
,श् र को संयुक्त करने पर श्र बनेगा (यह श्र डेढ़ अक्षर है)

अब आगे सुनें –

अग्नि आदि चार कोणोंमें चार वटुकोंका पूजन कर्तव्य है।

1. समयपुत्र वटुक,
2.. योगिनीपुत्र वटुक,
3. सिद्धपुत्र वटुक तथा
4. चौथा कुलपुत्र वटुक

ये चार वटुक हैं।
इनके अनन्तर आठ क्षेत्रपाल पूजनीय हैं। इनमें –

1. 'हेतुक' क्षेत्रपाल प्रथम हैं ।
2.. और 'त्रिपुरान्त' द्वितीय।
3. तीसरे 'अग्निवेताल'
4. चौथे 'अग्निजिह्व',
5. पाँचवें 'कराल' तथा
6. छठे 'काललोचन' हैं।
7. सातवें 'एकपाद' तथा
8. आठवें 'भीमाक्ष' कहे गये हैं।

(ये सभी क्षेत्रपाल यक्ष हैं जो देवी के कृपा पात्र हो चुके

और उन देवी के आदेश से पूजनीय हुये ; शक्तिपीठ और सिद्ध पीठ के 108 नाम जो मत्स्य पुराण व श्रीमद्देवीभागवत महापुराण के सप्तम स्कन्ध में हैं आप भी नित्य जपोगे तो परम पूजनीय हो जाओगे देवता वर्ग भी आपको पूजेगा यह वहाँ स्पष्टीकरण है और यथार्थ पराविज्ञान तो होगा ही ब्रह्मनिष्ठ भी हो जाओगे यह अक्षयरुद्र सत्य कहता है।

आगे देखो –

इन सबका पूजन करके त्रिपुरादेवीके प्रेतरूप पद्मासनकी पूजा करे। ऐं क्षै प्रेतपद्मासनाय नमः । इस मंत्र से आसन की पूजा।

अब देवी पराम्बा के इस रूप (त्रिपुरा भैरवी मैया) की पूजा का मंत्र– '

ॐ ऐं ह्रीं हसौः त्रिपुरायै प्रेतपद्मासन–समास्थितायै नमः।'

– इस मूल मन्त्र से प्रेतपद्मासनपर विराजमान त्रिपुराभैरवीकी पूजा करे। उनका ध्यान इस प्रकार है –

– 'त्रिपुरादेवी'

●●बायें हाथों में अभय एवं पुस्तक (विद्या) धारण करती हैं ।
●●तथा दायें हाथमें वरदमुद्रा एवं माला (जपमालिका)।

देवी बाणसमूहसे भरा तरकार और धनुष भी लिये रहती हैं।' (मूलमन्त्र से हृदयादि न्यास करे)

फिर देवी के गुरुप्रदत्त मंत्र से या गुरु आज्ञा से इसी मूल मंत्र से माला करें।

अब देवी का स्तोत्र जो भी जपना हो सप्रेम जपे ।

इतना ही करना है

अब सुनें एक प्रयोग जो शत्रु के उच्चाटन के लिए है। यह साधारण मनुष्य न करे। और जो भी करे पहले रक्षा कवच धारण करे तब करे। रक्षा कवच से गलती होने पर भी रक्षा होती है।

अब प्रयोगविधि–

● गो–समूहके मध्यमें स्थित हो,
● श्मशान आदिके वस्त्र पर
● चिता के कोयले से
● अष्टदलकमलका चक्र लिखे (बनाना है जो सरल होता है)या लिखावे।
● उसमें द्वेषपात्रका नाम लिखकर लपेट दे।
● फिर चिताकी राख को सानकर एक मूर्ति बनावे।
● उसमें द्वेषपात्र की स्थितिका चिन्तन करके
● उक्त यन्त्रको नीले रंगके डोरेसे लपेटकर मूर्तिके पेटमें धंसा दें ।
● ऐसा करनेसे उस व्यक्तिका उच्चाटन हो जाता है।

नोट– पर यह प्रयोग स्वार्थ के लिए न करें यदि कोई देश पर घात लगाकर बैठा हो तब करें और किसी दक्ष तांत्रिक गुरु के मार्गदर्शन में। और हृदय मजबूत होना चाहिए।

हम अक्षयरुद्र केवल सात्विक और सौम्य पूजा करते हैं तथा शत्रु नष्ट करने के लिए दुर्गनाशन स्तोत्र को ही जपते हैं जो सभी के लिए सुगम है। यह दुर्गनाशन स्तोत्र ब्रह्म वैवर्त पुराण में है।

पर प्रयोग नष्ट न हो इस कारण इस ग्रंथ में दे दिया। आजकल सारी विद्याएं नष्ट होती जा रही हैं। और तो और लोग देवी त्रिपुरा भैरवी का ध्यान भी सम्यक् रूप से नहीं करते आगे राम ही जानें क्या होगा।

21. श्री दुर्गा मानसपूजा

श्रीशिव स्वरूप श्रीशंकराचार्य जी अद्वैत की पराकाष्ठा पर थे पर वहाँ पहुंचकर भी उन्होनें लौकिक जगत को निष्पाप बनाने के लिए अनेक उपाय व स्तोत्र इस विश्व को दिये। उन्होनें मानसिक पूजा के लिए कुछ श्लोकों की रचना की थी जिसके पाठ मात्र से संपूर्ण पूजा का फल साधक प्राप्त कर लेता है। और हमने पहले भी कहा था कि आदिगुरु शंकराचार्य वाक् सिद्ध थे यदि वे अवतार न होते तो भी वाक् सिद्ध पुरुष की वाणी सिद्ध होती ही है।।

कहने का अभिप्राय यह है कि उन्होने लिखा कि – इन श्लोकों से सारा महाफल प्राप्त होगा अतः निश्चित ही सब कुछ प्राप्त हो जायेगा।

आभूषण आदि अर्पण का फल भी, छत्र का फल भी आदि आदि सब कुछ। अतः आईये हम इन श्लोकों को अर्थ सहित पढ़े।

॥ अथ श्री दुर्गा मानसपूजा ॥

उद्यच्चन्दनकुङ्कुमारुणपयो धाराभिराप्लावितां नानानर्घ्यमणिप्रवालघटितां दत्तां गृहाणाम्बिके।
आमृष्टां सुरसुन्दरीभिरभितो हस्ताम्बुजैर्भक्तितो मातः सुन्दरि भक्तकल्पलतिके श्रीपादुकामादरात् ॥१॥

अर्थ– हे माता त्रिपुरसुन्दरि ! हे भुवनेशि! हे पराम्बा! तुम भक्तजनों की मनोकामना पूर्ण करने वाली कल्पलता हो। माँ यह पादुका आदरपूर्वक तुम्हारे श्रीचरणों में समर्पित है, इसे ग्रहण करो। यह उत्तम चन्दन और कुंकम से मिली हुई लाल जल की धारा से धोई गई है। भाँति–भाँति की बहुमूल्य मणियों तथा मूँगों से इसका निर्माण हुआ है और बहुत–सी देवांगनाओं ने अपने करकमलों द्वारा भक्तिपूर्वक इसे सब ओर से धो–पोंछकर स्वच्छ बना दिया है।

देवेन्द्रादिभिरर्चितं सुरगणैरादाय सिंहासनं चञ्चत्काञ्चनसंचयाभिरचितं चारुप्रभाभास्वरम् ।
एतच्चम्पककेतकीपरिमलं तैलं महानिर्मलं गन्धोद्वर्तनमादरेण तरुणीदत्तं गृहाणाम्बिके ॥२॥

अर्थ – हे माँ ! देवताओं ने तुम्हारे बैठने के लिए यह दिव्य सिंहासन लाकर रख दिया है, इस पर विराजो। ये वह सिंहासन है, जिसकी देवराज इन्द्र आदि भी पूजा करते हैं। अपनी कान्ति से दमकते हुए राशि–राशि सुवर्ण से इसका निर्माण किया गया है। यह अपनी मनोहर प्रभा से सदा प्रकाशमान रहता है। यह चम्पा और केतकी की सुगन्ध से पूर्ण अत्यन्त निर्मल तेल और सुगन्धयुक्त उबटन है, जिसे दिव्य युवतियाँ आदरपूर्वक तुम्हारी सेवा में प्रस्तुत कर रही हैं, कृपया इसे स्वीकार करो।

पश्चाद्देवि गृहाण शम्भुगृहिणि श्रीसुन्दरि प्रायशो गन्धद्रव्यसमूहनिर्भरतरं धात्रीफलं निर्मलम्।
तत्केशान् परिशोध्य कङ्कतिकया मन्दाकिनीस्रोतसि स्नात्वा प्रोज्ज्वलगन्धकं भवतु हे श्रीसुन्दरि त्वन्मुदे ॥ ३॥

अर्थ– देवि ! इसके पश्चात यह विशुद्ध आँवले का फल – ग्रहण करो। शिवप्रिये ! त्रिपुरसुन्दरि ! इस आँवले में प्रायः जितने भी सुगन्धित पदार्थ हैं, वे सभी डाले गये हैं, इससे यह परम सुगन्धित हो गया है। अतः इसको लगाकर बालों को कंघी से झाड़ लो और गंगाजी की पवित्र धारा में नहाओ। इसके बाद यह दिव्य गन्ध सेवा में प्रस्तुत है, यह तुम्हारे आनन्द की वृद्धि करने वाला हो।

सुराधिपतिकामिनी–करसरोजनालीधृतां सचन्दनसकुङ्कुमागुरुभरेण विभ्राजिताम्।
महापरिमलोज्ज्वलां सरसशुद्धकस्तूरिकां गृहाण वरदायिनि त्रिपुरसुन्दरि श्रीप्रदे ॥४॥

अर्थ– सम्पत्ति प्रदान करने वाली वरदायिनी त्रिपुरसुन्दरि ! यह सरस शुद्ध कस्तूरी ग्रहण करो। इसे स्वयं देवराज इन्द्र की पत्नी महारानी शची अपने करकमलों में लेकर सेवा में खड़ी हैं। इसमें चन्दन, कुंकुम तथा अगुरु आदि होने से और भी इसकी शोभा बढ़ गई है। इससे बहुत अधिक गन्ध निकलने के कारण यह बड़ी मनोहर प्रतीत होती है।

गन्धर्वामरकिन्नरप्रियतमा संतानहस्ताम्बुज– प्रस्तारैध्रियमाणमुत्तमतरं काश्मीरजापिञ्जरम्।
मातर्भास्वरभानुमण्डललसत्कान्तिप्रदानोज्ज्वलं चैतन्निर्मलमातनोतु वसनं श्रीसुन्दरि त्वन्मुदम् ॥५॥

अर्थ–माँ श्रीसुन्दरि ! हे महालक्ष्मी! यह परम उत्तम निर्मल वस्त्र सेवा में समर्पित है, यह तुम्हारे हर्ष को बढ़ावे। माता ! इसे गन्धर्व, देवता तथा किन्नरों की प्रेयसी सुन्दरियाँ अपने फैलाए हुए करकमलों में धारण किये खड़ी हैं। यह केसर में रँगा हुआ पीताम्बर है। इससे परम प्रकाशमान सूर्यमण्डल की शोभामयी दिव्य कान्ति निकल रही है, जिसके कारण यह बहुत ही सुशोभित हो रहा है।

स्वर्णाकल्पितकुण्डले श्रुतियुगे हस्ताम्बुजे मुद्रिका मध्ये सारसना नितम्बफलके मञ्जीरमङ्घ्रिद्वये।
हारो वक्षसि कङ्कणौ क्वणरणत्कारौ करद्वन्द्वके विन्यस्तं मुकुटं शिरस्यनुदिनं दत्तोन्मदं स्तूयताम् ॥६॥

अर्थ – तुम्हारे दोनों कानों में सोने के बने हुए कुण्डल झिलमिलाते रहें, करकमल की एक अंगुली में अँगूठी शोभा पावे, कटिभाग में नितम्बों पर करधनी सुहाए, दोनों चरणों में मंजीर मुखरित होता रहे, वक्षःस्थल में हार सुशोभित हो और दोनों कलाइयों में कंकन खनकते रहें। तुम्हारे मस्तक पर रखा हुआ दिव्य मुकुट प्रतिदिन आनन्द प्रदान करे। ये सब आभूषण प्रशंसा योग्य हैं।

ग्रीवायां धृतकान्तिकान्तपटलं ग्रैवेयकं सुन्दरं सिन्दूरं विलसल्ललाटफलके सौन्दर्यमुद्राधरम्।
राजत्कज्जलमुज्ज्वलोत्पलदल–श्रीमोचने लोचने तद्दिव्यौषधिनिर्मितं रचयतु श्रीशाम्भवि श्रीप्रदे ॥७॥

अर्थ – धन देने वाली शिवप्रिये पार्वती ! तथा हे कौशिकी ! हे तुम गले में बहुत ही चमकीली सुन्दर हंसली पहन लो, ललाट के मध्य भाग में सौन्दर्य की मुद्रा (चिह्न) धारण करने वाले सिन्दूर की बिंदी लगाओ तथा अत्यन्त सुन्दर पद्मपत्र की शोभा को तिरस्कृत करने वाले नेत्रों में यह काजल भी लगा लो, यह काजल दिव्य औषधियों से तैयार किया गया है।

अमन्दतरमन्दरोन्मथितदुग्धसिन्धूद्भवं निशाकरकरोपमं त्रिपुरसुन्दरि श्रीप्रदे।
गृहाण मुखमीक्षतुं मुकुरबिम्बमाविद्रुमै– विनिर्मितमघच्छिदे रतिकराम्बुजस्थायिनम् ॥८॥

अर्थ– पापों का नाश करने वाली संपत्तिदायिनी त्रिपुरसुन्दरि ! अपने मुख की शोभा निहारने के लिए यह दर्पण ग्रहण करो। इसे साक्षात रति रानी ने अपने करकमलों से लाकर सेवा में उपस्थित हैं। इस दर्पण के चारों ओर मूँगे जड़े हैं। प्रचण्ड वेग से घूमने वाले मन्दराचल की मथानी से जब क्षीरसागर मथा गया, उस समय यह दर्पण उसी से प्रकट हुआ था। यह चन्द्रमा की किरणों के समान उज्जवल है।

कस्तूरीद्रवचन्दनागुरुसुधा धाराभिराप्लावितं चञ्चच्चम्पकपाटलादिसुरभिद्रव्यैः सुगन्धीकृतम्।
देवस्त्रीगणमस्तकस्थितमहा रत्नादिकुम्भव्रजै– रम्भः शाम्भवि संभ्रमेण विमलं दत्तं गृहाणाम्बिके ॥६॥

अर्थ– भगवान शंकर की धर्मपत्नी पार्वतीदेवी ! और हे क्लीं बीज की सर्वेश्वरी! महाकाली! देवांगनाओं के मस्तक पर रखे हुए बहुमूल्य रत्नमय कलशों द्वारा शीघ्रतापूर्वक दिया जाने वाला यह निर्मल जल ग्रहण करो। इसे चम्पा और

गुलाल आदि सुगन्धित द्रव्यों से सुवासित किया गया है तथा यह कस्तूरी रस, चन्दन, अगरु और सुधा की धारा से आप्लावित है।

कलारोत्पलनागकेसरसरो जाख्यावलीमालती– मल्लीकैरवकेतकादिकुसुमै रक्ताश्वमारादिभिः ।
पुष्पैर्माल्यभरेण वै सुरभिणा नानारसस्रोतसा ताम्राम्भोजनिवासिनीं भगवतीं श्रीचण्डिकां पूजये ॥ १०॥

अर्थ– मैं कह्लार, उत्पल, नागकेसर, कमल, मालती, मल्लिका, कुमुद, केतकी और लाल कनेर आदि फूलों से, सुगन्धित पुष्पमालाओं से तथा नाना प्रकार के रसों की धारा से लाल कमल के भीतर निवास करने वाली श्रीचण्डिका देवी आपकी पूजा करता हूँ।

मांसीगुग्गुलचन्दनागुरुरजः कर्पूरशैलेयजै– र्माध्वीकैः सह कुङ्कुमैः सुरचितैः सर्पिर्भिरामिश्रितैः ।
सौरभ्यस्थितिमन्दिरे मणिमये पात्रे भवेत् प्रीतये धूपोऽयं सुरकामिनीविरचितः श्रीचण्डिके त्वन्मुदे ॥ ११॥

अर्थ – श्रीचण्डिका देवि ! महिषासुर का वध करके भय से मुक्त करने वाली हे महालक्ष्मी! देववधुओं के द्वारा तैयार किया हुआ यह दिव्य धूप तुम्हारी प्रसन्नता बढ़ाने वाला है। यह धूप रत्नमय पात्र में, जो सुगन्ध का निवास स्थान है, रखा हुआ है, यह तुम्हें संतोष प्रदान करे। इसमें जटामांसी, गुग्गुल, चन्दन, अगरु–चूर्ण, कपूर, शिलाजीत, मधु, कुंकुम तथा घी मिलाकर उत्तम रीति से बनाया गया है।

घृतद्रवपरिस्फुरद्रुचिररत्नयष्ट्यान्वितो महातिमिरनाशनः सुरनितम्बिनीनिर्मितः।
सुवर्णचषकस्थितः सघनसारवर्त्यान्वित– स्तव त्रिपुरसुन्दरि स्फुरति देवि दीपो मुदे ॥ १२॥

अर्थ– देवि ! त्रिपुरसुन्दरि ! तुम्हारी प्रसन्नता के लिए – यहाँ यह दीप प्रकाशित हो रहा है। यह घी से जलता है, इसकी दीयट (दीपक का आधार) में सुन्दर रत्न का डंडा लगा है, इसे देवांगनाओं ने बनाया है। यह दीपक सुवर्ण के पात्र में जलाया गया है। इसमें कपूर के साथ बत्ती रखी है। यह भारी से भारी अन्धकार का भी नाश करने वाला है।

जातीसौरभनिर्भरं रुचिकरं शाल्योदनं निर्मलं युक्तं हिङ्गुमरीचजीरसुरभि द्रव्यान्वितैर्व्यञ्जनैः ।
पक्वान्नेन सपायसेन मधुना दध्याज्यसम्मिश्रितं नैवेद्यं सुरकामिनीविरचितं श्रीचण्डिके त्वन्मुदे ॥१३॥

अर्थ –श्रीचण्डिका देवि ! हे श्रीसदाशिववनिता! देववधुओं ने तुम्हारी प्रसन्नता के लिए यह दिव्य नैवेद्य तैयार किया है, इसमें अगहनी के चावल का स्वच्छ भात है, जो बहुत ही रुचिकर और चमेली की सुगन्ध से वासित है। साथ ही हींग, मिर्च और जीरा आदि सुगन्धित द्रव्यों से छौंक बघारकर बनाए हुए नाना प्रकार के व्यंजन भी हैं, इसमें भाँति–भाँति के पकवान, खीर, मधु, दही और घी का भी मेल है।

लवङ्गकलिकोज्ज्वलं बहुलनागवल्लीदलं सजातिफलकोमलं सघनसारपूगीफलम्।
सुधामधुरिमाकुलं रुचिररत्नपात्रस्थितं गृहाण मुखपङ्कजे स्फुरितमम्ब ताम्बूलकम् ॥१४॥

अर्थ – माँ ! सुन्दर रत्नमय पात्र में सजाकर रखा हुआ यह दिव्य ताम्बूल अपने मुख में ग्रहण करो। लवंग की कली चुभोकर इसके बीड़े लगाए गए हैं, अतः बहुत सुन्दर जान पड़ते हैं, इसमें बहुत से पान के पत्तों का उपयोग किया गया है। इन सब बीड़ों में कोमल जावित्री, कपूर और सुपारी पड़ी हैं। यह ताम्बूल सुधा के माधुर्य से परिपूर्ण है।

शरत्प्रभवचन्द्रमः स्फुरितचन्द्रिकासुन्दरं गलत्सुरतरङ्गिणीललितमौक्तिकाडम्बरम्।
गृहाण नवकाञ्चनप्रभवदण्डखण्डोज्ज्वलं महात्रिपुरसुन्दरि प्रकटमातपत्रं महत्॥१५॥

अर्थ –महात्रिपुरसुन्दरि माता पार्वती ! तुम्हारे सामने यह विशाल एवं दिव्य छत्र प्रकट हुआ है, इसे ग्रहण करो। यह शरत्काल के चन्द्रमा की चटकीली चाँदनी के समान सुन्दर है, इसमें लगे हुए सुन्दर मोतियों की झालर ऐसी जान पड़ती है मानो देवनदी गंगा का स्रोत ऊपर से नीचे गिर रहा हो। यह छत्र सुवर्णमय दण्ड के कारण बहुत ही शोभा पा रहा है।

मातस्त्वन्मुदमातनोतु सुभगस्त्रीभिः सदाऽऽन्दोलितं शुभ्रं चामरमिन्दुकुन्दसदृशं प्रस्वेददुःखापहम्।
सद्योऽगस्त्यवसिष्ठनारदशुक–व्यासादिवाल्मीकिभिः स्वे चित्ते क्रियमाण एव कुरुतां शर्माणि वेदध्वनिः ॥ १६॥

अर्थ – माँ ! सुन्दर स्त्रियों के हाथों से निरन्तर डुलाया जाने वाला यह श्वेत चँवर, जो चन्द्रमा और कुन्द के समान उज्जवल तथा पसीने के कष्ट को दूर करने वाला है, तुम्हारे हर्ष को बढ़ावे। इसके सिवा महर्षि अगस्त्य, वसिष्ठ, नारद, शुक, व्यास आदि तथा वाल्मीकि मुनि अपने–अपने चित्त में जो वेदमन्त्रों के उच्चारण का विचार करते हैं, उनकी वह मनः संकल्पित वेदध्वनि तुम्हारे आनन्द की वृद्धि करें।

22. तीन महान स्तोत्र

1 श्री दुर्गाद्वात्रिंशन्नाम माला अर्थात् बत्तीस नामों की महामाला का चमत्कार–

अभिचारिक भय हो या शत्रु भय, मृत्यु का डर हो अथवा कामविकार रूपी शत्रु चाहे जैसा भी भय अथवा भयंकर से भी भयंकर विकार हो मनुष्य मात्र देवी के इन नामों का आश्रय ले तो वह देवी के नामों की कृपा से संकटों और भय से मुक्त हो जाता है।

दुर्गाद्वात्रिंशन्नाममाला के जप की महिमा अतुलनीय है।

भगवति दुर्गा जी ने स्वयं कहा है कि–" हे देवों! जो भी मनुष्य (नर नारी) मुझ दुर्गाकी इस नाममाला का पाठ मात्र 100 बार ही पाठ करता है, वह निःसन्देह सब प्रकारके भयसे मुक्त हो जायगा।'

विस्तार से सुनें–

1. विशेष कार्य सिद्ध करने के मूर्ति की स्थापना करे अथवा जो मनुष्य दरिद्र हो वह दुर्गा मंदिर में भी यह पाठ अनुष्ठान के रूप में कर सकता है ,पहाड़ी पर जो देवी विराजमान होती हैं उस पहाड़ी के मंदिर पर अनेक गुना फल होता है ऐसा भी साधना पद्धति और साधनात्मक शास्त्र कहते हैं ।
2. अतः अक्षयरुद्र इस कारण बार बार कहता है कि जगत के सामने दुखड़ा मत सुनाओ जगत अंदर ही अंदर हँसता ही है और संकट के समय आपके पास भी नहीं आता बस भीतर ही भीतर खुश होता है। और जब आप सुखी होते हो तो नाते रिश्तेदारों की भीड़ आने लगती है घोर संकट पर एकाध को छोडकर कोई भी नही आता। आप कोरोना समय में यह अनुभव कर ही चुके होगे। अतः संसार से औपचारिक रूप का संबंध रखो। पर हाँ आप अवश्य ही यथासंभव किसी निर्दोष पीड़ित की सहायता करना अन्यथा सात्विक पुरुष और राजसिक में अंतर ही क्या रह जायेगा। खैर –
3. जो संकट में पड़ जाए (प्रारब्ध वश या कोई जानबूझकर फंसा रहा हो जबकि आप निर्दोष हो) तो देवी इन नामों से पुकारने पर निश्चित ही तत्काल रक्षा करती हैं। वैसे रक्षा हेतु इसके लिए हम इस महाग्रंथ में चार श्लोकी रक्षा कवच भी बता चुके हैं वह आप अनजान स्थान पर फंसने पर बिना शुद्धि अशुद्धि देखे (मात्र श्री माहेश्वरी चरण पादुका के तीन बार स्मरण से शुद्धि पाकर) आरंभ कर दो। या....... हे भुवनेशि! माम् पाहि या हे श्रीबगलामुखी! माम् पाही (कोई एक आरंभ कर दें) तो भी तत्काल रक्षा हो जाएगी। अथवा यह 32 नाम याद हो तो यह आरंभ कर दो।
4. किशोरी बालिकाओं को अपनी सुरक्षा के लिए ये 32 नाम याद होना ही चाहिए अथवा हर नारि वर्ग यदि इस कलियुग मे पापियों या वासनात्मक पशुवत लोगों से बचना चाहे तो उसे चण्डी विद्या को अपने गुरु से या किसी जितेन्द्रिय संत से ले लेना चाहिए। गर्ग मुनि से यशोदा ने भी देवी की एक विद्या गुरुदीक्षा के रूप में ली थी। छायासीता ने भी एक देवीय विद्या से अपने आपको अशोक वाटिका में सुरक्षित कर रखा था। पर आजकल की लड़कियाँ बस इन्स्टाग्राम को इन्स्टाल करना जानती है या अर्ध वस्त्र पहनकर फैशनेबल होना चाहती है उनको ईश्वर या परा विद्या से कोई वास्ता ही नहीं। समझदार पुरुष भी उनको यही उपदेश देते हैं कि अपनी सुरक्षा कर लो अन्यथा पापियों के हत्थे चढ़ गई तो हमसे मत कहना । शुद्ध और सात्विक पहनावा पहने और देवी के रक्षा मंत्र (विद्या) से अपने शरीर को अभिमंत्रित कर लें यही सर्वोत्कृष्ट है।

5. अतः इन 32 नामों का जप संकट काल में जपने पर रक्षा अवश्य होगी....... अवश्य होगी ......अवश्य होगी पर यदि आप चण्डी विद्या से अपने आपको सुरक्षित करके बाहर निकलोगे तो संकट आयेगा ही नहीं। से चण्डी विद्या देवी का कवच ही है जो हमने इस पावन महाग्रंथ के अध्याय 32 में वर्णित किया है जो भगवान ब्रह्मा जी की वाणी ही है और मार्कण्डेय जी के पूछने पर बताया गया था। अब सुनें । देवताओं को उनकी रक्षा का उपाय विस्तार से जो भी बताया पराशक्ति ने ।
6. हे देवों! हे देवों! कोई शत्रुओंसे पीड़ित हो अथवा दुर्भेद्य बन्धनमें पड़ा हो, इन बत्तीस नामोंके पाठमात्रसे संकटसे छुटकारा पा जाता है।
7. इसमें तनिक भी संदेहके लिये स्थान नहीं है (मेरा वचन कभी भी मिथ्या नहीं होगा बस घर में हो तो स्नान करके धुले वस्त्र पहनकर देवी के चरणों में लगा चंदन का टीका लगाकर या त्रिपुण्ड्र लगाकर पाठ आरंभ कर देना और बाहर हो तो मात्र स्मरण ही पर्याप्त है)
8. यदि राजा क्रोधमें भरकर वधके लिये अथवा और किसी कठोर दण्ड के लिये आज्ञा दे दे या युद्धमें शत्रुओंद्वारा मनुष्य घिर जाय अथवा वनमें व्याघ्र आदि हिंसक जन्तुओंके चंगुलमें फँस जाय, तो इन बत्तीस नामोंका एक सौ आठ (108) बार पाठ मात्र करनेसे वह सम्पूर्ण भयोंसे मुक्त हो जाता है।
9. हे देवताओं ! (त्रिदेव आदि और समस्त देवगणों) सब सुन लें – विपत्तिके समय इसके समान भयनाशक उपाय दूसरा नहीं है। (अतः अक्षयरुद्र के अनुसार हे बालिकाओं, हे नर नारियों ! तथा हे बच्चों) विद्यालय अथवा कालेज में गणित के 32 सूत्र रटो या 32 प्रश्न याद करो अथवा 32 केमिकल रिएक्शन । तो ये 32 नाम भी रट लेना या याद न हो तो डैली पढ़ना पढ़ पढ़के ही याद हो जायेंगे अन्यथा आप संकट से गंभीर भी हो गई तो ये मत सोचना कि अक्षयरुद्र आपके दुख को देखकर रोयेगा..... .यह रोयेगा नहीं अपितु हँसेगा.... आपकी ठस बुद्धि पर या आपके फैशनपने पर ....आगे सुनें जो पराशक्ति ने कहा –)
10. देवगण! इस नाममालाका पाठ नित्य करनेवाले मनुष्यों की कभी कोई हानि नहीं होती।
11. अभक्त, नास्तिक और शठ मनुष्यको इसका उपदेश नहीं देना चाहिये।
12. (जो आपसे कोई रक्षासूत्र पूछे तो यही सरल उपाय बतायें । आप इन 32 नामों के साथ दुर्गनाशन स्तोत्र को भी शामिल कर सकते हो पर वह कुछ बड़ा है तो उसको एक बार पाठ करें तथा इसका नित्य 5 बार दोनों समय । ब्राह्मण या बहन यदि लाल या पीला धागा अथवा राखी भी किसी को बांधे तो पहले धागे पर गंगाजल छिड़ककर उसे इन 32 नामों से अभिमंत्रित कर लेना चाहिए इससे वह धागा भी आपके यजमान या भाई की ढाल बन जाता है यह भी एक सरल टोटका कहा जाता है । पर भारी संकट हो तो पाठ की संख्या बढ़ा दें और हजार या अधिक पाठ ब्राह्मण से भी करा सकते हैं।)
13. यह देवी ने ही कहा था कि – जो भारी विपत्तिमें पड़नेपर भी इस नामावली का हजार, दस हजार अथवा लाख बार पाठ स्वयं करता या ब्राह्मणोंसे कराता है, वह सब प्रकारकी आपत्तियोंसे मुक्त हो जाता है।

●●●●●●●● सफेद तिल प्रयोग–●●●●●●●●●●

●सिद्ध अग्नि में मधुमिश्रित (अर्थात् शहद मिलाकर) सफेद तिलों से इन नामोंद्वारा लाख बार हवन करे तो मनुष्य सब विपत्तियोंसे छूट जाता है। तथा आजीवन कोई भी संकट नहीं आता।

● इस नाममालाका पुरश्चरण तीस हजार (30,000) का है।

●पुरश्चरणपूर्वक पाठ करनेसे मनुष्य इसके द्वारा सम्पूर्ण कार्य सिद्ध कर सकता है।

●जो जो कामना लेकर मनुष्य (चारों वर्ण और चारों आश्रमों के मनुष्य) 30हजार बार इन 32 नामों को जपेगा और हवन करेगा (या दशांश अतिरिक्त 3000 और अतिरिक्त 300 व अतिरिक्त 30) वह देवी का पुत्र रूप होकर सदा के लिए सुरक्षित होगा।

●मात्र मैं आपका पुत्र हूँ ऐसा कहने से कोई सदा के लिए सुरक्षा नहीं पा लेता कार्तिकेय और हनुमान जी ने भी तपस्या की है ध्रुव भी जंगल में भागकर तप कर चुका है और आप डनलप की शीट पर पड़े पड़े बार बार हर दिन रतिसुख में मस्त हो और सुबह अपने आपको

दुर्गा पुत्र कहो तो यह पाखंड ही है।

●●●●●●● देवी की आज्ञा कि ऐसी मूर्ति हो ●●●●●●●●

1. बड़ा कार्य सिद्ध करने के लिए स्थापना– मेरी सुन्दर मिट्टीकी अष्टभुजा मूर्ति बनावे, आठों भुजाओंमें क्रमशः ● गदा, ● खड्ग, ● त्रिशूल, ● बाण, ● धनुष, ● कमल, ● खेट (ढाल) और ● मुद्गर धारण करावे।
2. ध्यान रहे देवी के हाथों में इन आयुधों को ही बनायें या नवदुर्गाओं में ऐसी ही मूर्ति का आर्डर करें। वैसे आठ भुजाओं वाली देवी का एक रूप कौशिकी भी हैं जिनका संक्षिप्त वर्णन अध्याय 9 में हम कर चुके हैं तथा सप्तशती में उत्तर चरित्र की देवी कौशिकी ही हैं। वे ही पार्वती की देह से प्रकट होने से कौशिकी कहलाईं। पर हैं साक्षात् 3 महादेवियों में से एक जिनका रहस्य तीनों रहस्यों (प्राधानिक, वैकृतिक, व मूर्तिरहस्य) में बताया है जो महासरस्वती ही हैं।
3. मूर्तिके मस्तकमें चन्द्रमाका चिह्न हो,
4. उसके तीन नेत्र हों,
5. उसे लाल वस्त्र पहनाया गया हो, नीला काला न पहनाएं
6. वह सिंहके कंधेपर सवार हो और
7. त्रिशूल से महिषासुरका वध कर रही हो,
8. इस प्रकारकी प्रतिमा बनाकर नाना प्रकारकी सामग्रियोंसे भक्तिपूर्वक मेरा पूजन करे।

<u>पुरश्चरण काल में –</u>

६.मेरे उक्त नामोंसे लाल कनेरके फूल चढ़ाते हुए सौ बार पूजा करे

७. और मन्त्र जप करते हुए पूएसे हवन करे।

८..भाँति– भाँतिके उत्तम पदार्थ भोग लगावे। इस प्रकार करनेसे मनुष्य असाध्य कार्यको भी सिद्ध कर लेता है। जो मानव प्रतिदिन मेरा भजन करता है, वह कभी विपत्ति

में नहीं पड़ता।'

ऐसा कहकर जगदम्बा वहीं अन्तर्धान हो गयीं।

(चार चार नामों के क्रम से नाम दे रहे है ताकि याद करने में आसानी हो)

अथ श्री दुर्गाद्वात्रिंशन्नाम माला

दुर्गा, दुर्गार्तिशमनी, दुर्गापद्विनिवारिणी, दुर्गमच्छेदिनी,
दुर्गसाधिनी, दुर्गनाशिनी, दुर्गतोद्धारिणी, दुर्गनिहन्त्री,
दुर्गमापहा, दुर्गमज्ञानदा, दुर्गदैत्यलोकदवानला, दुर्गमा,
दुर्गमालोका, दुर्गमात्मस्वरूपिणी, दुर्गमार्गप्रदा, दुर्गमविद्या,
दुर्गमाश्रिता, दुर्गमज्ञानसंस्थाना, दुर्गमध्यानभासिनी, दुर्गमोहा,
दुर्गमगा, दुर्गमार्थस्वरूपिणी, दुर्गमासुरसंहन्त्री, दुर्गमायुधधारिणी,
दुर्गमाङ्गी, दुर्गमता, दुर्गम्या, दुर्गमेश्वरी,
दुर्गभीमा, दुर्गभामा, दुर्गभा, दुर्गदारिणी।

देवताओंसे ऐसा कहकर जगदम्बा वहीं अन्तर्धान हो गयीं। दुर्गाजीके इस उपाख्यानको जो सुनते हैं, उनपर कोई विपत्ति नहीं आती। काम, वासना, स्त्रीलम्पटता जब अति हो जाए तो वह गृहस्थ के लिए भी विकार रूपी मधु कैटभ बन जाते है अतः इनके नाश के लिए महामाया अर्थात महाकाली का सहारा आप काम बीज "क्लीं " से ले सकते हो।

2. दुर्गनाशन स्तोत्र

देवी दुर्गा के भक्तों के लिए तथा प्राणिमात्र के लिए दुर्गनाशन स्तोत्र की महानतम महिमा है। यह स्तोत्र ब्रह्मवैवर्त पुराण के प्रकृतिखण्ड से संकलित है। जिसके माहात्म्य का वर्णन सप्तऋषि , सनत्कुमार सनक आदि तो क्या त्रिदेव भी नहीं कर सकते। दुर्गा जी प्रत्यक्ष चतुर्भुजी महालक्ष्मी ही हैं। ये ही 18 भुजा धारण करके महिषासुर का नाश कर चुकी हैं।

1. इस दुर्गनाशन स्तोत्र की अनंत महिमा है।
2. इसके मात्र एक माह अर्थात् 30 दिन तक त्रिकाल पाठ से ही परिवार के कलह दूर हो जाते है। बंधन से मुक्ति मिलती है घोर संकट नष्ट हो जाते हैं।
3. दसों दिशाओं से रक्षा होने लगती है।
4. 1 वर्ष तक अर्थात् 365 दिन तक त्रिकाल पाठ से मृतवत्सा या प्रसवहीन नारी भी उत्तम संतान को प्राप्त कर लेती है साथ ही जो आजीवन दोनों समय इसका पाठ करता है वह स्त्री या पुरुष मणिद्वीप को प्राप्त कर सदा के लिये भवरोग से मुक्त हो जाता है।........इसके साथ 108 नाम भी जपें तों महान से भी महान कल्याण हो। तथा महानतर कल्याण के लिए प्रकृति कवच का भी उच्चारण पूर्वक जप करें।

नोट– शुक्लपक्ष की दोज, पंचमी, सप्तमी, दशमी या त्रयोदशी को यह आरम्भ करना चाहिये।

पर दोज को सोमवार और शुक्रवार न हो।
पंचमी को मंगलवार और शनि न हो।
सप्तमी को सोमवार, शुक्रवार और शनिवार न हो।
दशमी को शनि और मंगलवार न हो।
त्रयोदशी को बुधवार और गुरुवार न हो।

तथा एक बात याद रहे जो गरुडमहापुराण में लिखी है वह यह कि 4,9,14 (चतुर्थी, नवमीं और चतुर्दशी) को कभी भी शुभ कार्य आरंभ न करें अन्यथा लाभ नहीं होता।

और साधना के लिए तो विस्तृत देखा जाये तो 6,8,12 अमावस्या और पूर्णिमा भी ठीक नहीं।

शनैश्चरी अमावस्या और शनिश्चरी पूर्णिमा पर तो भूलकर भी आरंभ न करें पर कभी शनिवार के शनि ग्रह की अनुकूलता हेतु या अन्य मंत्र जो शनि से करना हो तो शनि की चौथ व शनि की चतुर्दशी पर कर सकते है हालाँकि ऊपर 4,9 का इन्कार किया था पर शनि की चौथ और शनि की चौदस लाभदायक होती है। तथा शनि पर रोहिणी और स्वाती नक्षत्र भी सर्वोच्च फल देते हैं पर शनि का रेवती नक्षत्र घातक है। और कभी गुरुवार को साधना आरंभ करना हो तो पुष्य, पुनर्वसु तथा तिथियों में गुरुवार की पंचमी और दशमी सर्वोत्तम हैं (पर पंचमी और दशमी का मंगल व शनि घातक है) और गुरु को पंचमी व दशमी पर अति मजबूरी के कारण साधना आरंभ न कर पाओ तो गुरु की अमावस्या और पूर्णिमा पर भी आरंभ कर सकते हैं। गुरुवार की अमास और पूर्णिमा दोषकारी नहीं।

अथ दुर्गनाशन स्तोत्रम्

श्रीकृष्ण उवाच

त्वमेव सर्वजननी मूलप्रकृतिरीश्वरी।
त्वमेवाद्या सृष्टिविधौ स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका॥

कार्यार्थे सगुणा त्वं च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम्।
परब्रह्मस्वरूपा त्वं सत्या नित्या सनातनी॥

तेजःस्वरूपा परमा भक्तानुग्रहविग्रहा।
सर्वस्वरूपा सर्वेशा सर्वाधारा परात्परा॥

सर्वबीजस्वरूपा च सर्वपूज्या निराश्रया।
सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा सर्वमङ्गलमङ्गला॥

सर्वबुद्धिस्वरूपा च सर्वशक्तिस्वरूपिणी।
सर्वज्ञानप्रदा देवी सर्वज्ञा सर्वभाविनी॥

त्वं स्वाहा देवदाने च पितृदाने स्वधा स्वयम्।
दक्षिणा सर्वदाने च सर्वशक्तिस्वरूपिणी॥

निद्रा त्वं च दया त्वं च तृष्णा त्वं चात्मनः प्रिया।
क्षुत्क्षान्तिः शान्तिरीशा च कान्तिः सृष्टिश्च शाश्वती॥

श्रद्धा पुष्टिश्च तन्द्रा च लज्जा शोभा दया तथा।
पूजा सतां सम्पत्स्वरूपा च विपत्तिरसतामिह ।।

प्रीतिरूपा पुण्यवतां पापिनां कलहाङ्कुरा।
शश्वत्कर्ममयी शक्तिः सर्वदा सर्वजीविनाम् ॥

देवेभ्यः स्वपदोदात्री धातुर्धात्री कृपामयी।
हिताय सर्वदेवानां सर्वासुरविनाशिनी॥

योगनिद्रा योगरूपा योगदात्री च योगिनाम्।
सिद्धिस्वरूपा सिद्धानां सिद्धिदा सिद्धयोगिनी॥

ब्रह्माणी माहेश्वरी च विष्णुमाया च वैष्णवी।
भद्रदा भद्रकाली च सर्वलोकभयङ्करी।।

ग्रामे ग्रामे ग्रामदेवी गृहदेवी गृहे गृहे।
सतां कीर्तिः प्रतिष्ठा च निन्दा त्वमसतां सदा॥

महायुद्धे महामारी दुष्टसंहाररूपिणी।
रक्षास्वरूपा शिष्टानां मातेव हितकारिणी॥

वन्द्या पूज्या स्तुता त्वं च ब्रह्मादीनां च सर्वदा।
ब्राह्मण्यरूपा विप्राणां तपस्या च तपस्विनाम्॥

विद्या विद्यावतां त्वं च बुद्धिर्बुद्धिमतां सताम्।
मेधास्मृतिस्वरूपा च प्रतिभा प्रतिभावताम्॥

राज्ञां प्रतापरूपा च विशां वाणिज्यरूपिणी।
सृष्टौ सृष्टिस्वरूपा त्वं रक्षारूपा च पालने॥

तथान्ते त्वं महामारी विश्वस्य विश्वपूजिते।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च मोहिनी॥

दुरत्यया मे माया त्वं यया सम्मोहितं जगत्।
यया मुग्धो हि विद्वांश्च मोक्षमार्गं न पश्यति॥

इत्यात्मना कृतं स्तोत्रं दुर्गाया दुर्गनाशनम्।
पूजाकाले पठेद्यो हि सिद्धिर्भवति वाञ्छिता॥

3. प्रकृति कवच –

देवी कवच का नाम आप सबने सुना ही होगा पर प्रकृति कवच को विरले ही जानते हैं। दोनों का माहात्म्य अतुलनीय है पर कभी कभी भक्तों के पास अति अल्प समय होता है तो वे कवच को ही नहीं पढते ऐसे में उनको प्रारब्धवश उस दिन संकट का सामना भी करना पड सकता है अतः इस कारण भी हम देवी की प्रेरणा से यह कवच आपको प्रदान कर रहे हैं। इसके अलावा एक महत्वपूर्ण बात भी है वह यह कि– इस विद्या का पाठ करने वाला देवी का भक्त इस लोक में साक्षात् भगवान विष्णु के समान दर्शनीय और सेवनीय होता है। यह विद्या ब्रह्म वैवर्त पुराण में है जिसे प्रकृति कवच की संज्ञा दी गई है। अतः सुनें । पर बिना श्रृद्धालुओं को या बिना शिष्यों को इसका उपदेश नही देना चाहिए । इसे मात्र साहित्य में स्थान अवश्य दे सकते हैं ताकि जिसका पुण्य उदय हो उसे कालान्तर में मिल जाये।

जो इस कवच के पाठ से अपने आपको सुरक्षित कर लेता है त्रिलोक तो क्या, शेष सभी भुवनों अर्थात् सभी 112 दिव्य लोकों में उसका कोई कुछ भी अहित नहीं कर सकता। जो कवचदाता गुरु की पूजा करके इस विद्या को अपने कंठ पर धारण करता है वह साक्षात् विष्णु ही है ऐसा इस पुराण की वाणी है वह सर्वपूज्यनीय और परम कृपा का अधिकारी ही है। देवता भी उसे देखकर ही प्रणाम करते हैं। वह देव ऋण, पितृ ऋण और ऋषि ऋण से मुक्त कर दिया जाता है पर धर्माचरण और अहिंसा का त्याग न करें। देवी पराशक्ति का कोई भी मंत्र साधना के पश्चात् भी बिना कवच के सिद्ध नहीं होता ऐसा भी शास्त्रों का वचन है। अतः भक्तजन हर मंत्र के पुरश्चरण के समय एक ही कवच का पाठ अनिवार्य करें।

अथ श्रीप्रकृति कवचं

ऊँ दुर्गेति चतुर्थ्यन्तं स्वाहान्तो (ऊँ दुर्गायै स्वाहा) मे शिरोऽवतु।।

मन्त्रः षडक्षरोऽयं च भक्तानां कल्पपादपः।
विचारो नास्ति वेदेषु ग्रहणे च मनोर्मुने।।

मंत्रग्रहण मात्रेन **विष्णुतुल्यो** भवेन्नरः।
मम वक्त्रं सदा पातु ऊँ दुर्गायै नमोऽन्ततः (ऊँ दुर्गायै नमः)।।

ऊँ दुर्गे रक्ष इति च कण्ठं पातु सदा मम्।
ऊँ ह्रीं श्रीं इति मन्त्रोऽयं स्कन्धं पातु निरंतरम्।।

ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं इति पृष्ठं च पातु मे सर्वतः सदा।
ह्रीं मे वक्षःस्थलं पातु हस्तं श्रीमिति संततम्।।

ऊँ श्रीं ह्रीं क्लीं पातु सर्वांगं स्वप्ने जागरणे तथा।
प्राच्यां मां पातु प्रकृतिः पातु वह्नौ च चण्डिका।।

दक्षिणे भद्रकाली च नैर्ऋते च महेश्वरी।
वारुणे पातु वाराही वायव्यां सर्वमंगला।।

उत्तरे वैष्णवी पातु तथैशान्यां शिवप्रिया।
जले स्थले चान्तरिक्षे पातु मां जगदम्बिका।।

इति श्री प्रकृति कवचं सम्पूर्णम्।

इतना ही मूल पाठ है पर यदि आपको 11 या 21 पाठ करना हो तो इति वाली लाईन अर्थात् **इति श्री प्रकृति कवचं सम्पूर्णम् ।** सबसे अंतिम के पाठ के दौरान बोलें ।

इति ते कथितं वत्स कवचं च सुदुर्लभम्।
यस्मै कस्मै न दातव्यं प्रवक्तव्यं न कस्यचित्।।

गुरुमभ्यर्च्य विधिवद्वस्त्रालङ्कारचन्दनैः।
कवचं धारयेद्यस्तु सोऽपि विष्णुर्न संशयः।।

भ्रमणे सर्वतीर्थानां पृथिव्याश्च प्रदक्षिणे।
यत् फलं लभते लोकस्तदेतद्धारणे मुने।।

पञ्चलक्षजपेनैव सिद्धमेतद्भवेद् ध्रुवम्।।

23. संग्रामविजय विद्या

अब हम एक ऐसी विद्या का वर्णन करते हैं जो परम दुर्लभ है। यह विद्या परमात्मा महेश्वर ने पूर्वकाल में देवी पार्वती से कही थी। यह संग्राममें विजय दिलानेवाली विद्या है जो पदमालाके रूप में है॥

यह 'जया' नामक पदमाला है, जो समस्त कर्मोको सिद्ध करनेवाली है। इसके द्वारा होम करनेसे तथा इसका मात्र जप एवं पाठ आदि करनेसे सदा ही युद्धमें विजय प्राप्त होती है तथा रक्षा होती है। कुशासन या कंबल पर बैठकर ही पाठ करें। मंदिर में भूमि या पत्थर हो तो उसके ऊपर अपना ही स्वयं का आसन बिछाएं दूसरे के आसन पर बैठकर इस पाठ को न करें। लाल कंबल का आसन अधिक उत्तम है। अथवा ऊन का आसन भी प्रयोग कर सकते हैं। पर वस्त्र, लकडी या पत्तों पर न बैठे। 108 बार पाठ करना हो तो कमलगट्टे की माला का प्रयोग करें, कमलगट्टे की माला ही श्शत्रुनाशक होती है। रुद्राक्ष की माला पर सभी प्रयोग किए जा सकते हैं। देवी काली को बिल्वपत्र भी अतिप्रिय हैं। मध्यमा अनामिका और अंगूठे से ही फूल अर्पित करना चाहिए। नैवेद्य के लिए इस ग्रंथ में एक अध्याय अलग ही दिया गया है।अतः वहीं देखें।

1. इसके लिए अट्ठाईस भुजाओंसे युक्त चामुण्डा देवीका ध्यान करना चाहिये।
2. उनके दो हाथोंमें तलवार और खेटक हैं।
3. दूसरे दो हाथोंमें गदा और दण्ड हैं।
4. अन्य दो हाथ धनुष और बाण धारण करते हैं।
5. अन्य दो हाथ मुष्टि और मुद्गरसे युक्त हैं।
6. दूसरे दो हाथोंमें शङ्ख और खड्ग हैं।
7. अन्य दो हाथोंमें ध्वज और वज्र हैं।
8. दूसरे दो हाथ चक्र और परशु धारण करते हैं।
9. अन्य दो हाथ डमरू और दर्पणसे सम्पन्न हैं।
10. दूसरे दो हाथ शक्ति और कुन्द धारण करते हैं।
11. अन्य दो हाथोंमें हल और मूसल हैं।
12. दूसरे दो हाथ, पाश और तोमरसे युक्त हैं।
13. अन्य दो हाथोंमें ढक्का और पणव हैं।
14. दूसरे दो हाथ अभयकी मुद्रा धारण करते हैं
15. तथा शेष दो हाथोंमें मुष्टिक शोभा पाते हैं।
16. वे महिषासुरको डाँटती और उसका वध करती हैं।
17. इस प्रकार ध्यान करके हवन करने से या मात्र पाठ से भी साधक शत्रुओंपर विजय पाता है।
18. **हवन के लिए–** घी, शहद और चीनीमिश्रित तिलसे हवन करना चाहिये। इस संग्रामविजय–विद्याका उपदेश जिस– किसीको नहीं देना चाहिये (अधिकारी पुरुषको ही देना चाहिये) ॥

श्रीकालरात्रि की तस्वीर पर तिलक लगाकर पुष्प अर्पित करें अब एक दीपक प्रज्वलित कर लें और प्रसाद का भोग लगाऐं अथवा कुछ न हो तो 28 भुजाओं वाली देवी का ध्यान करें फिर मानसिक पूजा करना चाहिए। पूजा के बाद पाठ।

ॐ ह्रीं चामुण्डे श्मशानवासिनि खट्वाङ्गकपालहस्ते महाप्रेतसमारूढे महाविमानसमाकुले कालरात्रि महागणपरिवृते महामुखे बहुभुजे घण्टा–डमरु–किङ्किणि (हस्ते), अट्टाट्टहासे किलि किलि, ॐ हूं फट्,

दंष्ट्राघोरान्धकारिणि नादशब्दबहुले गजचर्मप्रावृतशरीरे मांसदिग्धे लेलिहानोग्रजिह्वे महाराक्षसि रौद्रदंष्ट्राकराले भीमाट्टाट्टहासे स्फुरद्विद्युत्प्रभे चल चल, ॐ चकोरनेत्रे चिलि चिलि, ॐ ललज्जिह्वे, ॐ भीं भ्रुकुटीमुखि हुंकारभयत्रासनि कपालमालावेष्टितजटा– मुकुटशशाङ्कधारिणि, अट्टाट्टहासे किलि किलि,

ॐ ह्रूं दंष्ट्राघोरान्धकारिणि, सर्वविघ्नविनाशिनि, इदं कर्म साधय साधय,

ॐ शीघ्रं कुरु कुरु, ॐ फट्, ओमङ्कुशेन शमय, प्रवेशय,

ॐ रङ्ग रङ्ग, कम्पय कम्पय,

ॐ चालय,

ॐ रुधिरमांसमद्यप्रिये हन हन,

ॐ कुट्ट कुट्ट, ॐ छिन्द,

ॐ मारय, ओमनुक्रमय,

ॐ वज्रशरीरं पातय,

ॐ त्रैलोक्यगतं दुष्टमदुष्टं वा गृहीतमगृहीतं वाऽऽवेशय,

ॐ नृत्य,

ॐ वन्द कोटराक्ष्यूर्ध्वकेश्युलूकवदने , करङ्किणि,

ॐ करङ्कमालाधारिणि दह,

ॐ पच पच,

ॐ गृह्ण,

ॐ मण्डलमध्ये प्रवेशय,

ॐ किं विलम्बसि ब्रह्मसत्येन विष्णुसत्येन रुद्रसत्येनर्षिसत्येनावेशय,

ॐ किलि किलि,

ॐ खिलि खिलि, विलि विलि,

ॐ विकृतरूपधारिणि कृष्णभुजंगवेष्टितशरीरे सर्वग्रहावेशिनि प्रलम्बौष्ठिनि भ्रूभङ्गलग्ननासिके विकटमुखि कपिलजटे ब्राह्मि भञ्ज,

ॐ ज्वालामुखि स्वन,

ॐ पातय,

ॐ रक्ताक्षि घूर्णय, भूमिं पातय,

ॐ शिरो गृह्ण, चक्षुर्मीलय,

ॐ हस्तपादौ गृह्ण, मुद्रां स्फोटय,

ॐ फट्,

ॐ विदारय,

ॐ त्रिशूलेन च्छेदय,

ॐ वज्रेण हन,

ॐ दण्डेन ताडय ताडय,

ॐ चक्रेण च्छेदय च्छेदय,

ॐ शक्त्या भेदय, दंष्ट्रया कीलय,

ॐ कर्णिकया पाटय,
ओमङ्कुशेन गृह्ण,

ॐ शिरोऽक्षिज्वरमेकाहिकं द्वयाहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं डाकिनिस्कन्दग्रहान् मुञ्च मुञ्च,

ॐ पच,
ओमुत्सादय,

ॐ भूमिं पातय,

ॐ गृह्ण

ॐ ब्रह्माण्येहि,

ॐ माहेश्वर्येहि,

(ॐ) कौमार्येहि,

ॐ वैष्णव्येहि,

ॐ वाराह्येहि,
ओमैन्द्रयेहि,

ॐ चामुण्ड एहि

ॐ रेवत्येहि,
ओमाकाशरेवत्येहि,

ॐ हिमवच्चारिण्येहि,

ॐ रुरुमर्दिन्यसुरक्षयंकर्याकाशगामिनि पाशेन बन्ध बन्ध, अङ्कुशेन कट कट, समये तिष्ठ,

ॐ मण्डलं प्रवेशय,

ॐ गृह्ण, मुखं बन्ध,

ॐ चक्षुर्बन्ध हस्तपादौ च बन्ध, दुष्टग्रहान् सर्वान् बन्ध,

ॐ दिशो बन्ध,

ॐ विदिशो बन्ध, अधस्ताद्बन्ध,

ॐ सर्वं बन्ध,

ॐ भस्मना पानीयेन वा मृत्तिकया सर्षपैर्वा सर्वानावेशय,

ॐ पातय,

ॐ चामुण्डे किलि किलि,

ॐ विच्चे हुं फट् स्वाहा ॥

हिन्दी में ...

जो भक्त संस्कृत में पाठ न कर सके वह
हिन्दी में ही पाठ करके निश्चित ही
देवी कालिका और इन मातृकाओं की कृपा से
शत्रुओं के समूह से मुक्त हो जाता है

इसके सभी शत्रु नष्ट हो जाते हैं वह सदा सतत् और सर्वदा सुखी हो जाता है । किसी पवित्र दिन व शुभ मुहूर्त से इसका मात्र एक एक पाठ भी किया जा सकता है।

देश और धर्म का नाश करने वाले शत्रुओं के नाश के लिए भी यह पाठ आप निश्चित ही कर सकते हैं। आप इस पाठ को करके चाहें तो महादेव को अत्यधिक प्रसन्न करने वाला एक काली पाठ भी निष्काम भाव से कर सकते हो (काली दक्षिणकाली च कृष्णरूपा परात्मिका...) या महादेव से कहें कि हे देव ! मेरी रक्षा के लिए कृपया आप भी कालरात्रि से प्रार्थना करें।
आईए हम देवी भद्रकाली अर्थात कालरात्रि से हिन्दी में रक्षा के लिए प्रार्थना करते हैं)

ॐ ह्रीं चामुण्डे देवि ! आप श्मशानमें वास करनेवाली हैं। आपके हाथमें खट्वाङ्ग और कपाल शोभा पाते हैं। आप महान् प्रेतपर आरूढ़ हैं। आप बड़े–बड़े विमानोंसे घिरी हुई हैं। आप ही कालरात्रि हैं। बड़े–बड़े पार्षदगण आपको घेरकर खड़े हैं। आपका मुख विशाल है। भुजाएँ बहुत हैं। घण्टा, डमरू और घुँघुरू बजाकर विकट अट्टहास करनेवाली देवि ! क्रीड़ा कीजिये, क्रीड़ा कीजिये। ॐ हूं फट् ।

आप अपनी दाढ़ोंसे घोर अन्धकार प्रकट करनेवाली हैं। आपका गम्भीर घोष और शब्द अधिक मात्रामें अभिव्यक्त होता है। आपका विग्रह हाथीके चमड़ेसे ढका हुआ है। शत्रुओंके मांससे परिपुष्ट हुई देवि ! आपकी भयानक जिह्वा लपलपा रही है। महाराक्षसि ! भयंकर दाढ़ोंके कारण आपकी आकृति बड़ी विकराल दिखायी देती है। आपका अट्टहास बड़ा भयानक है। आपकी कान्ति चमकती हुई बिजलीके समान है। आप संग्राममें विजय दिलानेके लिये चलिये, चलिये। ॐ चकोरनेत्रे (चकोरके समान नेत्रोंवाली)! चिलि, चिलि । ॐ ललज्जिह्वे (लपलपाती हुई जीभवाली)!

ॐ भीं टेढ़ी भौंहोंसे युक्त मुखवाली ! आप हुंकारमात्रसे ही भय और त्रास उत्पन्न करनेवाली हैं। आप नरमुण्डोंकी मालासे वेष्टित जटा–मुकुटमें चन्द्रमा को धारण करती हैं। विकट अट्टहासवाली देवि !किलि, किलि (रणभूमिमें क्रीड़ा करो, क्रीड़ा करो)।

ॐ ह्रूं दाढ़ोंसे घोर अन्धकार प्रकट करनेवाली और सम्पूर्ण विघ्नोंका नाश करनेवाली देवि ! आप मेरे इस कार्यको सिद्ध करें, सिद्ध करें। ॐ शीघ्र कीजिये, कीजिये। ॐ फट् ।

ॐ अङ्कुशसे शान्त कीजिये, प्रवेश कराइये।

ॐ रक्तसे रंगिये, रंगिये; कंपाइये, कंपाइये।

ॐ विचलित कीजिये। ॐ रुधिर–मांस–मद्यप्रिये ! शत्रुओंका हनन कीजिये, हनन कीजिये। ॐ विपक्षी योद्धाओंको कूटिये, कूटिये। ॐ काटिये। ॐ मारिये। ॐ उनका पीछा कीजिये। ॐ वज्रतुल्य शरीरवालेको भी मार गिराइये। ॐ त्रिलोकीमें विद्यमान जो शत्रु है, वह दुष्ट हो या अदुष्ट, पकड़ा गया हो या नहीं, आप उसे आविष्ट कीजिये। ॐ नृत्य कीजिये। ॐ वन्द। ॐ कोटराक्षि (खोंखलेके समान नेत्रवाली) ! ऊर्ध्वकेशि (लीलावश ऊपर उठे हुए केशोंवाली) ! उलूकवदने ! खोपड़ी धारण करनेवाली! खोपड़ीकी माला धारण करनेवाली चामुण्डे ! आप शत्रुओंको जलाइये। ॐ पकाइये, पकाइये। ॐ पकड़िये। ॐ मण्डलके भीतर प्रवेश कराइये। ॐ आप क्यों विलम्ब करती हैं?

ब्रह्माके सत्यसे, विष्णुके सत्यसे, रुद्रके सत्यसे तथा ऋषियोंके सत्यसे आविष्ट कीजिये। ॐ किलि किलि । ॐ खिलि खिलि। विलि विलि । ॐ लीलावश विकृत रूप धारण करनेवाली देवि ! आपके शरीरमें काले सर्प लिपटे हुए हैं। आप सम्पूर्ण ग्रहोंको आविष्ट करनेवाली हैं। आपके लंबे–लंबे ओठ लटक रहे हैं। आपकी टेढ़ी भौंहें नासिकासे लगी हैं। आपका मुख विकट है। आपकी जटा कपिलवर्णकी है। आप ब्रह्माकी शक्ति हैं। आप शत्रुओंको भङ्ग कीजिये । ॐ ज्वालामुखि ! गर्जना कीजिये। ॐ

शत्रुओंको मार गिराइये। ॐ लाल–लाल आँखोंवाली देवि ! शत्रुओंको चक्कर कटाइये, उन्हें धराशायी कीजिये। ॐ शत्रुओंके सिर उतार लीजिये। उनकी आँखें बंद कर दीजिये। ॐ उनके हाथ–पैर ले लीजिये, अङ्ग–मुद्रा फोड़िये । ॐ फट् । ॐ विदीर्ण कीजिये। ॐ त्रिशूलसे छेदिये। ॐ वज्रसे हनन कीजिये। ॐ डंडेसे पीटिये, पीटिये।

ॐ चक्रसे छिन्न–भिन्न कीजिये, छिन्न–भिन्न कीजिये।

ॐ शक्तिसे भेदन कीजिये। दाढ़से कीलन कीजिये।

ॐ कतरनीसे चीरिये।

ॐ अङ्कुशसे ग्रहण कीजिये।

ॐ सिरके रोग और नेत्रकी पीड़ाको, प्रतिदिन होनेवाले ज्वरको, दो दिनपर होनेवाले ज्वरको, तीन दिनपर होनेवाले ज्वरको, चौथे दिन होनेवाले ज्वरको, डाकिनियोंको तथा कुमारग्रहोंको शत्रुसेनापर छोड़िये, छोड़िये।

ॐ उन्हें पकाइये।

ॐ शत्रुओंका उन्मूलन कीजिये।

ॐ उन्हें भूमिपर गिराइये।

ॐ उन्हें पकड़िये।

ॐ ब्रह्माणि!

आइये। ॐ माहेश्वरि ! आइये।

ॐ कौमारि ! आइये।

ॐ वैष्णवि ! आइये।

ॐ वाराहि ! आइये।

ॐ ऐन्द्रि ! आइये ।

ॐ चामुण्डे ! आइये।

ॐ रेवति ! आइये।

ॐ आकाश–रेवति ! आइये।

ॐ हिमालयपर विचरनेवाली देवि ! आइये।

ॐ रुरुमर्दिनि ! असुरक्षयंकरि (असुरविनाशिनि) ! आकाशगामिनि देवि ! विरोधियोंको पाशसे बाँधिये, बाँधिये । अङ्कुशसे आच्छादित कीजिये, आच्छादित कीजिये। अपनी प्रतिज्ञापर स्थिर रहिये।

ॐ मण्डलमें प्रवेश कराइये। ॐ शत्रुको पकड़िये और उसका मुँह बाँध दीजिये। ॐ नेत्र बाँध दीजिये। हाथ–पैर भी बाँध दीजिये ।
हमें सतानेवाले समस्त दुष्ट
ग्रहोंको बाँध दीजिये।

ॐ दिशाओंको बाँधिये।

ॐ विदिशाओंको बाँधिये।

नीचे बाँधिये। ॐ सब ओरसे बाँधिये।

ॐ भस्मसे, जलसे, मिट्टीसे अथवा सरसोंसे सबको आविष्ट कीजिये।

ॐ नीचे गिराइये।

ॐ चामुण्डे! किलि किलि।

ॐ विच्चे हुं फट् स्वाहा ॥

(●●●●●●●●●●●●●●)

अब पाठ के दौरान उच्चारण आदि में कोई गलती हो गई हो तो क्षमा मांगे।
और कहें– हे महाकाली! माम् पाही........हे महाकाली! माम् पाही हे महाकाली! माम् पाही

24. कन्याओं का पूजन

■पूजा में कन्याओं का महान महत्व है। पर विधि में एक वर्षकी अवस्थावाली कन्या नहीं लेनी चाहिये; क्योंकि वह कन्या गन्ध और भोग आदि पदार्थोंके स्वादसे बिलकुल अनभिज्ञ रहती है।

■ कुमारी कन्या वह कही गयी है, जो दो वर्षकी हो चुकी हो।
■ तीन वर्षकी कन्या, त्रिमूर्ति,
■ चार वर्षकी कन्या कल्याणी,
■ पाँच वर्षकी रोहिणी,
■ छः वर्षकी कालिका,
■ सात वर्षकी चण्डिका,
■ आठ वर्षकी शाम्भवी,
■ नौ वर्षकी दुर्गा और
■ दस वर्षकी कन्या सुभद्रा कहलाती है।

नोट 001–

(इससे ऊपरकी अवस्थावाली कन्याका पूजन नहीं करना चाहिये; क्योंकि वह सभी कार्योंमें निन्द्य मानी जाती है। इन नामोंसे कुमारीका विधिवत् पूजन सदा करना चाहिये।)

■■'कुमारी' नामकी कन्या पूजित होकर दुःख तथा दरिद्रताका नाश करती है; वह शत्रुओंका क्षय और धन, आयु तथा बलकी वृद्धि करती है ।

■■'त्रिमूर्ति' नामकी कन्याका पूजन करनेसे धर्म– अर्थ–कामकी पूर्ति होती है, धन–धान्यका आगम होता है और पुत्र–पौत्र आदिकी वृद्धि होती है।

■■जो राजा विद्या, विजय, राज्य तथा सुखकी कामना करता हो, उसे सभी कामनाएँ प्रदान करने– वाली 'कल्याणी' नामक कन्याका नित्य पूजन करना चाहिये।

■■शत्रुओंका नाश करनेके लिये भक्तिपूर्वक 'कालिका' कन्याका पूजन करना चाहिये।

■■धन तथा ऐश्वर्यकी अभिलाषा रखनेवालेको 'चण्डिका' कन्याकी सम्यक् अर्चना करनी चाहिये ■■सम्मोहन, दुःख–दारिद्रयके नाश तथा संग्राममें विजयके लिये 'शाम्भवी' कन्याकी नित्य पूजा करनी चाहिये ।

■■ क्रूर शत्रुके विनाश एवं उग्र कर्मकी साधनाके निमित्त और परलोकमें सुख पानेके लिये 'दुर्गा' नामक कन्याकी भक्तिपूर्वक आराधना करनी चाहिये।

■■ मनुष्य अपने मनोरथकी सिद्धिके लिये 'सुभद्रा' की सदा पूजा करे और

■■ रोगनाशके निमित्त 'रोहिणी' की विधिवत् आराधना करे।

नोट–

अंगहीन कन्या, रजस्वला, 11 वर्ष से अधिक आयु की तथा कोढ़ से युक्त कन्या, विधवा से परपुरुष ने जो कन्या उत्पन्न की हो वह कन्या भी निषिद्ध है।

विजय के लिए क्षत्रिय या सैनिक वर्ग की कन्या प्रशस्त हैं।

धनलाभ के लिए वैश्य वर्ण की कन्या , सेवा भाव की वृद्धि के लिए शूद्र वर्ण की कन्या अधिक श्रेष्ठ है। तथा समस्त कार्य सिद्ध हेतु श्रोत्रिय ब्राह्मण की कन्या श्रेष्ठ है ।

को पूजा में निषिद्ध माना जाये ऐसा श्रीमद्देवीभागवत में वर्णित है। क्योंकि उसके कारण अन्य कन्याओं का मन विचलित होता है तथा अशुद्धि ठीक नहीं।

'श्रीरस्तु' इस मन्त्रसे अथवा किन्हीं भी श्रीयुक्त देवीमन्त्रसे अथवा बीजमन्त्रसे भक्तिपूर्वक भगवती की पूजा करनी चाहिये । जो भगवती कुमारके रहस्यमय तत्त्वों और ब्रह्मादि देवताओंकी भी लीलापूर्वक रचना करती हैं, उन 'कुमारी' का मैं पूजन करता हूँ।

जो सत्त्व आदि तीनों गुणोंसे तीन रूप धारण करती हैं, जिनके अनेक रूप हैं तथा जो तीनों कालोंमें सर्वत्र व्याप्त रहती हैं, उन भगवती 'त्रिमूर्ति' की मैं पूजा करता हूँ। निरन्तर पूजित होनेपर जो भक्तोंका नित्य कल्याण करती हैं, सब प्रकारकी कामनाओंको पूर्ण करनेवाली उन भगवती 'कल्याणी' का मैं भक्तिपूर्वक पूजन करता हूँ।

25. श्रीरक्तदंतिका की आराधना

संपूर्ण भयों और सभी संकटों का नाश सहज ही करना हो तो सदैव भक्तों को माँ भुवनेश्वरी जगदम्बा दुर्गा जी के श्रीरक्तदंतिका रूप का ध्यान करना चाहिए।

ये महादेवी! शत्रुओं के नाश के लिए भयानक रूप में प्रकट होती हैं पर भक्तों के प्रेम के कारण अत्यधिक सौम्य रूप में ही दर्शन देती हैं।

वैप्रचलित दैत्य के नाश के लिए इन्होनें विकराल रूप धारण किया था। बड़ी ही करुणामयी व रक्षक स्वरूप है माँ की मूर्ति, ये भक्तों का दुःख नहीं देख सकतीं। माँ अपनी चार भुजाओं में खड्ग, पानपात्र, मूसल और हल धारण करती हैं।

देवी रक्तदन्तिका का (बड़े रूप में) आकार वसुधा की भांति अत्यधिक विशाल लाल रंग वाला है, दंतकांति भी मनोहर लाल है उनके दोनों स्तन सुमेरु पर्वत के समान हैं, वे लंबे, चौड़े, अत्यंत स्थूल एवं बहुत ही मनोहर हैं (दीर्घौ लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ)

कठोर होते हुये भी अत्यंत कमनीय हैं तथा पूर्ण आनंद के सागर हैं, संपूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाले ये दोनों स्तन देवी अपने बालभावी भक्तों को वात्सल्य स्वरूपा होकर दुग्धामृत का पान कराती हैं। (भक्तान् सम्पाययेद्देवी सर्वकामदुघौ स्तनौ)

ऊँ रं रक्तदन्तिकायै नमः

कुछ शाक्तभक्त जो लम्बे समय से वनों और पहाड़ो के आसपास या गुफाओं में एकांत रूप से विचरण करते हुये रहते हैं जिनकी भूख प्यास ही प्रबल शत्रु थी उन भक्तों को ये देवी नित्य दोनों समय (भूख काल में) अपना स्तनपान कराती हैं जिससे वो भक्त बड़े ही सुख पूर्वक स्वतंत्र और बंधन मुक्त होकर संसार रूपी भयंकर संघर्ष और चिंताओं से मुक्त रहते हैं व इन माँ की कृपा से उनको इस जगत में स्वर्ग से भी कोटी गुनी शांति और आनंद प्राप्त होता है। माँ पराशक्ति के इस रूप के सभी भक्त धन्य हैं, धन्य हैं धन्य हैं।

इन परात्परा को, इनके सभी अनन्य भक्तों और इन सातों श्लोकों की ध्यान धारा और माहात्म्य को लाल पुष्प, गूगल की धूप, चमेली के तेल से प्रज्वलित दीप और लाल मावे की मिठाई अर्पित है। हे माँ कृपा करो कृपा करो कृ पा करो।

माँ भुवनेश्वरी की 10 महाविभूतियों की उपासना से मनुष्य में देवत्व का उदय हो जाता है जिससे वह भूदेव हो जाता है। 10 महाविद्याओं के रूप में ही माँ जगदम्बा महिषासुर मर्दिनी (मणिद्वीप की परादेवी जिनका बीज ह्रीं है वे आद्याशक्ति, पराशक्ति, पराविद्या, अष्टादशभुजा धारी महालक्ष्मी मैया ही एकमात्र कल्याण का आधार है सब उनके ही स्वरूप हैं) साक्षात् पंचक प्रकृति की मूल आधार भुवनेश्वरी ही हैं वही श्री विष्णु जी पर कृपा करने वाली उनको पालन का सामर्थ्य देने वाली उनकी योगनिद्रा और योगमाया कही जाती हैं वे दशभुजी महाकाली (10मुखी, 10चरण,30 नेत्रधारी महाकाली जिनका स्तवन सप्तशती के प्रथम अध्याय में मेधा मुनि ने बड़े ही मनोहर रूप से व्यक्त किया है जिनकी शक्ति के कारण ही ब्रह्मा विष्णु और रुद्र देव की महिमा है वे पराविद्या महाकाली) भी साक्षात् महालक्ष्मी भुवनेश्वरी ही हैं और वही अष्टभुजी महासरस्वती कौशिकी (पार्वती पुत्री) त्रिपुरसुन्दरी श्रीविद्या रूप में और वही सभी रूपों (काली माँ, तारा माँ, छिन्नमस्ता मैया, त्रिपुरभैरवी माँ, धूमावती माँ, शत्रुनाशक माँ बगलामुखी, वही माँ तोते की मधुर आवाज सुनने वाली मातंगी मैया और वही धनवर्षा की मूल अधिष्ठात्री श्री कमला हैं और हे माँ आप ही नवदुर्गाओं में प्रथम शैलपुत्री, द्वितीय ब्रह्मचारिणी, तृतीय चंद्रघंटा और कूष्माण्डा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि और महागौरी और वही छः प्रधान देवियाँ है।

1. नंदा देवी (पाश, अंकुश कमल और शंख धारी चतुर्भुजी नंदजा)
2. माँ रक्तवर्णी रक्तदन्तिका (पानपात्र, खड्ग, हल और मूसल धारी दुग्धधारा से बालभावी भक्तों को वात्सल्य सुख देने वाली सुमेरु युगल स्तनी) वही
3. शाकम्भरी नीलवर्णा (ऊँ ह्रीं कमलवासिन्यै नमः से प्रसन्न होने वाली हाथों में कमल, बाणों का संग्रह, शाक समूह और धनुषधारी)
4. वही नीले रंग से युक्त भीमादेवी (जिन्हें कालरात्रि, एकवीरा, कामदा भी कहते हैं) जिनके हाथ में चंद्रहास नामक खड्ग डमरू, मस्तक और पानपात्र हैं।
5. भ्रामरी देवी के रूप में साक्षात् हे माँ परमदयालु पराशक्ति महालक्ष्मी आप ही हो जिनकी कांति अनेक रंग की है और आपके अन्य नाम हे देवी भ्रामरी! चित्रभ्रमरपाणि और महामारी भी हैं जो भी भक्त आपका कीर्तन करता है वो कभी भी महामारी से ग्रसित नहीं होता और सदा कामधेनु के समान ये देवी उसके लिए सिद्धिदायी सिद्ध होती हैं।

तथा दुर्गमासुर संहन्त्री दुर्गा साक्षात् आप ही हो हे जगदंबा आपके 32नामों से युक्त जो दुर्गाद्वात्रिंशन्नाम माला है उसके सतत् सुमिरन मात्र से भयंकर संकट और त्रिविध ताप, विकार आदि का नाश हो जाता है और आप उस साधक को प्रकृति कवच से आच्छादित कर सारे ब्रह्माण्डों का अधिपति भी बना देती हो... इन सभी रूपों में विराजमान होकर सदा ही भक्तों पर अनुग्रह करने वाली वरदाता परात्परा सर्वेश्वरेश्वरी हम आपको कोटी कोटी वंदन करते हैं हमें आपके श्रीचरणों में स्थान देकर अनुग्रहित करें भवरोग से मुक्ति प्रदान करें।

26. नवदुर्गा व्रत माहात्म्य

●इस पृथ्वीलोक में जितने भी प्रकारके व्रत और दान हैं, वे नवरात्रव्रत के तुल्य नहीं ।

●नवरात्र के व्रत से देवी पराशक्ति, उनके पंचक प्रकृति रूप (गौरी, राधा, श्री लक्ष्मी, वेदमाता और ज्ञान की देवी सरस्वती), नवदुर्गा, दस महाविद्या, नवशक्ति, 32 नरसिंह मातृकाएं, अष्ट व 197 से अधिक रुद्र मातृकाएं, स्वधा, स्वाहा, दक्षिणा, मंगल चण्डिका, यमुना, तुलसी सहित सभी देवियाँ तृप्त हो जाती हैं ।

●यह व्रत सदा धन–धान्य प्रदान करनेवाला, सुख तथा सन्तानकी वृद्धि करनेवाला, आयु तथा आरोग्य प्रदान करनेवाला और स्वर्ग तथा मोन देनेवाला है अतएव विद्या, धन अथवा पुत्र–इनमेंसे मनुष्य किसीकी भी कामना करता हो, उसे इस सौभाग्यदायक तथा कल्याणकारी व्रतका विधिपूर्वक अनुष्ठान करना चाहिये।

●इस व्रतका अनुष्ठान करनेसे विद्या चाहनेवाला मनुष्य समस्त विद्या प्राप्त कर लेता है और अपने राज्यसे वंचित राजा फिरसे अपना राज्य प्राप्त कर लेता है ।

●जो नौ दिन व्रत करने में सक्षम न हो तो वह अंतिम तीन दिन भी व्रत करे तो भी वह देवी की कृपा प्राप्त कर कृ तकृत्य हो जाता है ।

नाराधिता येन शिवा सनातनी दुःखार्तिहा सिद्धिकरी जगद्वरा ।

दुःखावृतः शत्रुयुतश्च भूतले नूनं दरिद्रो भवतीह मानवः ॥

रक्तचन्दनसंमिश्रैः कोमलैर्बिल्वपत्रकैः ।
भवानी पूजिता येन स भवेन्नृपतिः क्षितौ।

(श्रीमद्देवीभागवत तृतीय स्कन्ध अध्याय २७)

●देवी ही पराशक्ति है अन्य 33 कोटी देव और इनको उत्पन्न करने वाले कश्यप आदि, नारद, सनत्कुमार आदि और यहाँ तक कि तीनों महादेव अर्थात् सभी ब्रह्माण्डों के अनगिनत ब्रह्मा, विष्णु और कैलासपति भी इन भुवनेश्वरी जी की ही कृपा से पदस्थ हुए हैं और जब इन सबके बीच संकट उपस्थित होता है तब ये पराशक्ति ही उस संकट का नाश करती हैं । शाकम्भरी,शताक्षी व दुर्गा नाम इनको दुर्गमासुर पर विजय के कारण पड़ा। इससे पूर्व भी देवी भुवनेश्वरी मणिद्वीप में निवास करती थी । वे ही चतुर्भुजी महालक्ष्मी हैं। जो मूर्ति रहस्य में घोषित हैं। सब लोग जानते हैं कि किस प्रकार एक मात्र पराम्बा ने अनेक बार अकाल , आपदाएं और अन्य संकट दूर किए और महान महान भयंकर दैत्यों से जब ब्रह्मा , विष्णु और महारुद्र भी परेशान हो गये तब त्रिदेव ने देवी को पुकारा तो वे श्री मंगल चण्डिका रूप में प्रकट हुईं। और तब ही ये त्रिदेव विजय हुए।

● ब्रह्मा जी का संकट विष्णु और रुद्र दूर करते हैं और ये दोनों भी एक दूसरे के संकट का नाश करते हैं (सुदर्शन चक्र प्राप्ति की कथा या भस्मासुर कथा अथवा श्री नृसिंह से 32 मातृकाओं के प्राकट्य या वृषभेश्वर अवतार पाताल का जब विष्णु जी अनेक समुद्र मंथन से प्रकट कन्याओं के पीछे चलने गये थे आदि आदि ..

....से अनुमान लगा लीजिए) पर जब इन दोनों पर अति घोर आपत्ति आती है तो ये दोनों भी देवी जगदम्बा को ही पुकारते हैं । 23 वीं चतुर्युगी के राम अवतार के समय श्रीराम जी ने नारद जी के माध्यम से देवी की स्थापना कर नौ दिन पूजा की तब विजय प्राप्त हुई और नंदबाबा ने भी देवी के नवदुर्गा व्रत से व श्रीमद्देवीभागवत महापुराण से कल्याण पाया।

(बर्बरीक भी देवी की कृपा का पात्र था तो सोचो यदि वह कौरवों (हारी हुई सभा) का साथ देता तो क्या होता इसी कारण उसको लाईन से हटाने के लिए भेदनीति का प्रयोग हुआ बात धर्म की थी इस कारण बात आगे नहीं बड़ी अन्यथा देवी सब कुछ नष्ट कर डालती.....)

●संसार के भोग या पद तो तुच्छ हैं देवी को मल्लिका पुष्प (अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक 1,5,10 करोड़) अर्पित करने से साधक इन तीनों देवताओं का पद भी प्राप्त कर लेता है और इनके स्वामी सर्वेश्वर सदाशिव के पंचाक्षरी के 20000000 से तथा 30000000 से कोई भी मनुष्य आगामी समय में विष्णु और रुद्र ही हो जाता है।

●वर्तमान विष्णु जी ने इसी उपाय से यह पद पाया है इसका वर्णन श्रीमद्देवीभागवत महापुराण में वेदव्यास जी ने किया है ।

● अतः कौन ऐसा मनुष्य है जो भगवती की सेवा न करे । अतः शैव और वैष्णव जितना भी हो ...... अधिक से अधिक इनका भुवनेश्वरी दुर्गा रूप या राधा अथवा जो भी रूप भा जाये उसी को इष्ट मानकर देवी को भजे।

● बस देवी आद्यशक्ति ही इस जन्म में मुक्त कर सकती हैं। और जो श्रीकृष्ण के भक्त हैं वे भी ब्रह्म वैवर्त पुराण की बात सुनें –

श्रीकृष्ण उवाच – जो भी श्री राधा को इष्ट मानेगा वही मरने पर तत्काल गोलोक जा पायेगा पर जिसने राधा जी को जीवन अर्पित नहीं किया और मेरे ही भजन में लगे हैं वे 99जन्मों तक परम धाम (जहाँ नित्य साक्षात् गोलोक में मेरी लीला देखने को मिलती है) नहीं जा पायेगा और 100वें जन्म में मुक्त होगा । अतः सुनों –

पूर्वजन्ममें जिन लोगोंद्वारा यह नवदुर्गा का उत्तम व्रत नहीं किया वे इस जन्ममें रोगग्रस्त, दरिद्र तथा सन्तानरहित होते हैं ।

अथवा अंतिम तीन दिन व्रत–उपवास रखकर शक्तिपीठमयी अष्टोत्तरशत नाम से भी आप अपना मंगल कर सकते हैं। या अन्य शतनाम भी कल्याणप्रद हैं जो आप जानते है (सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचिनी. ....) अथवा दुर्गनाशन स्तोत्र जो ब्रह्म वैवर्त पुराण व स्तोत्र निधिवन में है उसका पाठ 30 दिन त्रिकाल समय ही मंगल कर देता है यह अक्षयरुद्र का अनुभव है।

● एक पुराण के अनुसार जो स्त्री वन्ध्या, विधवा अथवा धनहीन है; उसके विषयमें यह अनुमान कर लेना चाहिये कि उसने (अवश्य ही पूर्वजन्ममें) यह व्रत नहीं किया था। न ही देवी के किसी भी एक स्तोत्र का पाठ किया।

●इस पृथ्वीलोकमें जिस प्राणीने उक्त नवरात्रव्रतका अनुष्ठान नहीं किया, वह इस लोकमें वैभव प्राप्त करके स्वर्गमें आनन्द कैसे प्राप्त कर सकता है ?

●जिसने लाल चन्दनमिश्रित कोमल बिल्वपत्रोंसे भवानी जगदम्बाकी पूजा की है, वह इस पृथ्वीपर राजा होता है। (हर पत्ते पर ह्रीं लिखे और ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः कहकर उनके चरणों में यह बिल्वपत्र अर्पित कर अद्भुत कृपा पायें यह हम हमारी 2014 में प्रकाशित एक पुस्तक ग्रंथ रहस्य में बता चुके हैं।

●जिस मनुष्यने दुःख तथा सन्तापका नाश करनेवाली, सिद्धियाँ देनेवाली, जगत्में सर्वश्रेष्ठ, शाश्वत तथा कल्याणस्वरूपिणी भगवतीकी उपासना नहीं की; वह इस पृथ्वीतलपर सदा ही अनेक प्रकारके कष्टोंसे ग्रस्त, दरिद्र तथा शत्रुओंसे पीड़ित रहता है।

विष्णु, इन्द्र, शिव, ब्रह्मा, अग्नि, कुबेर, वरुण तथा सूर्य समस्त कामनाओंसे परिपूर्ण होकर हर्षके साथ जिन भगवतीका ध्यान करते हैं, उन देवी चण्डिकाका ध्यान मनुष्य क्यों नहीं करते ?

देवगण इनके 'स्वाहा' नाममन्त्रके प्रभावसे तथा पितृगण 'स्वधा' नाममन्त्रके प्रभावसे तृप्त होते हैं। इसीलिये महान् मुनिजन प्रसन्नतापूर्वक सभी यज्ञों तथा श्राद्धकार्यों में मन्त्रोंके साथ 'स्वाहा' एवं 'स्वधा' नामोंका उच्चारण करते हैं ।

जिनकी इच्छासे ब्रह्मा इस विश्वका सृजन करते हैं, भगवान् विष्णु अनेकविध अवतार लेते हैं और शंकरजी जगत्को भस्मसात् करते हैं, उन कल्याणकारिणी भगवतीको मनुष्य क्यों नहीं भजता ? सभी भुवनोंमें कोई भी ऐसा देवता, मनुष्य, पक्षी, सर्प, गन्धर्व, राक्षस, पिशाच एवं पर्वत नहीं है; जो उन भगवतीकी शक्तिके बिना अपनी इच्छासे शक्तिसम्पन्न होकर स्पन्दित होनेमें समर्थ हो।सभी कामनाओंको पूर्ण करनेवाली उन कल्याणदायिनी चण्डिकाकी सेवा भला कौन नहीं करेगा ? चारों प्रकारके पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) को चाहनेवाला कौन प्राणी उन भगवतीके नवरात्रव्रतका अनुष्ठान नहीं करेगा ?
यदि कोई महापापी भी नवरात्रव्रत करे तो वह समस्त पापोंसे मुक्ति पा लेता है, इसमें लेशमात्र भी विचार नहीं करना चाहिये ।

हे नृपश्रेष्ठ ! पूर्वकालमें कोसलदेशमें दीन, धनहीन, अत्यन्त दुःखी एवं विशाल कुटुम्बवाला एक वैश्य रहता था। उसकी अनेक सन्तानें थीं, जो धनाभावके कारण क्षुधासे पीड़ित रहा करती थीं; सायंकालमें उसके लड़कोंको खानेके लिये कुछ मिल जाता था तथा वह भी कुछ खा लेता था। इस प्रकार वह वणिक् भूखा रहते हुए सर्वदा दूसरोंका काम करके धैर्यपूर्वक परिवारका पालन–पोषण कर रहा था। वह सर्वदा धर्मपरायण, शान्त, सदाचारी, सत्यवादी, क्रोध न करनेवाला, धैर्यवान्, अभिमानरहित तथा ईर्ष्याहीन था।

प्रतिदिन देवताओं, पितरों तथा अतिथियोंकी पूजा करके वह अपने परिवारजनोंके भोजन कर लेनेके उपरान्त स्वयं भोजन करता था। देवी अम्बे का भक्त अन्य किसी भी सामान्य देव के भक्त के सामने न झुके पर केवल शाक्त भक्त (दुर्गा, षोडशी, राधा, लक्ष्मी, गायत्री, नील सरस्वती या शारदा, काली आदि या अन्य रूप के अनन्य दास) के ही चरणों में झुके ।

झुकाव केवल श्रेष्ठ के चरणों में होता है । देवी के भक्तों को तो देवता भी शीश झुकाते हैं।

●तत्वतः सब कुछ समान है पर परम धाम के इच्छुक या द्वैतपथ पर आरूढ होने वालों को पात्रता का ज्ञान तथा मूर्ति रहस्य ज्ञात होना ही चाहिए।

● जो नौ दिन व्रत न रख पाये वह अंतिम तीन दिन व्रत–उपवास से भी संपूर्ण फल पा लेता है।

●हे देवी के भक्तों ! भौमवती अमावास्याकी आधी रातमें, जब चन्द्रमा शतभिषा नक्षत्रपर हों, उस समय इस स्तोत्रको लिखकर जो इसका पाठ करता है, वह सम्पत्तिशाली होता है। पाठ आप जानते ही हो।

नियम–

1. वेदीपर रेशमी वस्त्रसे आच्छादित सिंहासन स्थापित करे।
2. उसके ऊपर चार भुजाओं तथा उनमें आयुधोंसे युक्त देवीकी प्रतिमा स्थापित करे।
3. भगवतीकी प्रतिमा रत्नमय भूषणोंसे युक्त, मोतियोंक हारसे अलंकृत, दिव्य वस्त्रोंसे सुसज्जित, शुभलक्षणसम्पन्न और सौम्य आकृतिकी हो।
4. वे कल्याणमयी भगवती शंख–चक्र– गदा–पद्म धारण किये हुए हों और सिंहपर सवार हों;

अथवा

अठारह भुजाओंसे सुशोभित सनातनी देवी (महिषासुर मर्दिनी इनका ही नाम है। ये ही कौशिकी जी के रूप में लीलारत हैं बाद में दुर्गम असुर के वध के कारण दुर्गा हुआ व शाकम्भरी शताक्षी, रक्तदंतिका व भ्रामरी भी)को प्रतिष्ठित करे।

नोट–

भगवतीकी प्रतिमाके अभावमें नवार्णमन्त्रयुक्त यन्त्रको पीठपर स्थापित करे और पीठपूजाके लिये पासमें कलश भी स्थापित कर ले ।

वह कलश पंचपल्लवयुक्त, वैदिक मन्त्रोंसे भलीभाँति संस्कृत, उत्तम तीर्थके जलसे पूर्ण और सुवर्ण तथा पंचरत्नमय होना चाहिये ।

पासमें पूजाकी सब सामग्रियाँ रखकर उत्सवके निमित्त गीत तथा वाद्योंकी ध्वनि भी करानी चाहिये ।

●हस्तनक्षत्रयुक्त नन्दा (प्रतिपदा) तिथिमें पूजन सबसे श्रेष्ठ माना जाता है।

पहले दिन विधिवत् किया हुआ पूजन मनुष्योंका मनोरथ पूर्ण करनेवाला होता है ।

●सबसे पहले उपवासव्रत, एकभुक्तव्रत अथवा नक्तव्रत–इनमेंसे किसी एक व्रतके द्वारा नियम करनेके पश्चात् ही पूजा करनी चाहिये ।

●(पूजनके पहले प्रार्थना करते हुए कहे–) हे माता! मैं सर्वश्रेष्ठ नवरात्रव्रत करूँगा। हे देवि ! हे जगदम्बे ! (इस पवित्र कार्यमें) आप मेरी सम्पूर्ण सहायता करें ।

●इस व्रतके लिये यथाशक्ति नियम रखे। उसके बाद मन्त्रोच्चारणपूर्वक विधिवत् भगवतीका पूजन करे।

चन्दन,
अगरु,
कपूर तथा
मन्दार, करंज, अशोक, चम्पा, कनैल, मालती, ब्राह्मी आदि
सुगन्धित पुष्पों,
सुन्दर बिल्वपत्रों
और धूप–दीपसे विधिवत् भगवती जगदम्बाका पूजन करना चाहिये ।

उस अवसरपर अर्घ्य भी प्रदान करे।

1. नारियल,
2. बिजौरा नीबू,
3. केला,
4. नारंगी,
5. कटहल तथा
6. बिल्वफल आदि अनेक प्रकारके सुन्दर फलों के साथ
7. भक्तिपूर्वक अन्नका नैवेद्य एवं
8. पवित्र बलि अर्पित करे ।

●●●●●होमके लिये ●●●●●

त्रिकोण कुण्ड
बनाना चाहिये
अथवा त्रिकोणके मानके अनुरूप
उत्तम वेदी बनानी चाहिये।

●विविध प्रकारके सुन्दर द्रव्योंसे प्रतिदिन भगवतीका त्रिकाल (प्रातः–सायं–मध्याह्न) पूजन करना चाहिये और गायन, वादन तथा नृत्यके द्वारा महान् उत्सव मनाना चाहिये ।

●(व्रती) नित्य भूमिपर सोये और वस्त्र, आभूषण तथा अमृतके सदृश दिव्य भोजन आदिसे कुमारी कन्याओंका पूजन करे ।

नोट –

●नित्य एक ही कुमारीका पूजन करे अथवा प्रतिदिन एक–एक कुमारीकी संख्याके वृद्धिक्रमसे पूजन करे अथवा प्रतिदिन दुगुने–तिगुनेके वृद्धिक्रमसे और धनाढ्य पुरुष प्रत्येक दिन नौ कुमारी कन्याओंका विशेष पूजन करे ।

●अपने धन–सामर्थ्यके अनुसार भगवतीकी पूजा करे, किंतु देवीके यज्ञमें धनकी कृपणता न करे ॥

●●जो नवरात्रव्रत लगातार नौ दिन न कर सके वह अंतिम तीन दिन व्रत–उपवास व तीन दिन के पाठ पूजा आदि से भी संपूर्ण फल प्राप्त कर कृतकृत्य हो जाता है। पर एक तंत्रोक्त ग्रंथ के अनुसार नवमी को ही कन्याभोज, ब्राह्मण भोज के बाद व्रत खोल लेना चाहिए।

27. देवी पराशक्ति का नैवेद्य –

(देवी को कब कब क्या क्या अर्पण करें यह सब कुछ इस अध्याय में बताया जा रहा है)

इस अनादि संसार में सम्यरूपसे पूजित होनेपर वे देवी घोर संकटों में स्वयं रक्षा करती हैं। देवी के भक्त सदा सुरक्षित रहते हैं फिर भी भक्तों को प्रार्थना अवश्य ही करनी चाहिए। वे भगवती जिस प्रकार लोकमें पूजी जाती हैं, अब वह विधि सुनें अर्थात् प्रतिपदा से पूर्णिमा और अमावस्या तक तथा नक्षत्र आदि पर जो सेवा की जाना चाहिए वह देखिए–

1. रोग नष्ट– शुक्लपक्षकी प्रतिपदा तिथि में घृतसे देवीकी पूजा करनी चाहिये और उस प्रसाद को जितेन्द्रिय व संध्यापूत ब्राह्मण (अथवा ऐसा न मिले तो धर्मात्मा ब्राह्मण या देवी के परम संयमी भक्त) को घृतका दान करना चाहिये; ऐसा करनेवाला सदा निरोग रहता है।
2. आयुवर्धन– द्वितीया तिथिको शर्करासे जगदम्बाका पूजन करना चाहिये और वेदपाठी व धर्मपरायण विप्र को शर्कराका ही दान करना चाहिये; ऐसा करनेवाला मनुष्य दीर्घजीवी होता है।
3. दुखों का नाश – तृतीया तिथिको भगवतीके पूजनकर्ममें उन्हें दुग्ध अर्पण करना चाहिये और श्रेष्ठ ब्राह्मणको दुग्धका दान करना चाहिये; ऐसा करनेसे मनुष्य सभी प्रकारके दुःखोंसे मुक्त हो जाता है।
4. विघ्न दूर – चतुर्थीके दिन पूआ अर्पण करके देवीका पूजन करना चाहिये और ब्राह्मणको पूआ ही दान करना चाहिये; ऐसा करनेसे मनुष्य विघ्न–बाधाओंसे आक्रान्त नहीं होता।
5. बुद्धिमान– पंचमी तिथिको भगवतीका पूजन करके उन्हें केला अर्पण करे और ब्राह्मणको केलेका ही दान करे ऐसा करनेसे मनुष्य बुद्धिमान् होता है।
6. कान्ति–षष्ठी तिथि को पराम्बा भगवती के पूजन में श्शहद अर्थात् मधु को प्रधान बताया गया है। ब्राह्मणको मधु ही देना चाहिये; ऐसा करनेसे मनुष्य दिव्य कान्तिवाला हो जाता है।
7. शोक नष्ट–सप्तमी तिथिको भगवती को गुड का नैवेद्य अर्पण करके ब्राह्मणको गुड़ का दान करनेसे मनुष्य सभी प्रकारके शोकोंसे मुक्त हो जाता है।
8. सन्ताप दूर–अष्टमीको भगवती को नारियल का नैवेद्य (नारिकेलमथाष्टम्यां देव्यै नैवेद्यम्– अर्पयेत्) अर्पित करना चाहिये और ब्राह्मणको भी नारियलका दान करना चाहिये; ऐसा करनेवाला मनुष्य सभी सन्तापोंसे रहित हो जाता है।(ब्रह्म वैवर्त पुराण में अष्टमी को नारियल न खाने का विधान है पर यह प्रसाद रूप है और उसी पुराण में लिखा है कि प्रसाद में अन्न बुद्धि या दोष बुद्धि नहीं करना चाहिए अति विचार करो तो नारियल का बूरा अर्पण करें जिससे अष्टमी को नारियल की बलि का विचार नहीं पनपेगा)
9. सुख–नवमीके दिन भगवती को लाजा अर्पण करनेके बाद ब्राह्मणको भी वही लाजा का दान करनेसे मनुष्य इस लोकमें तथा परलोकमें परम सुखी रहता है।
10. यम का भय खत्म – नवदुर्गा के 9 दिनों का समय पूर्ण होने पर दशमी को तथा किसी भी माह की अन्य दशमी तिथि को भी देवी भगवती को काले तिल अर्पित करने और ब्राह्मणको उसी तिलका दान करनेसे मनुष्यको यमलोकका भय नहीं रह जाता। (अर्थात् मनुष्य यदि हर दशमी को काले तिल का देवी को भोग लगाये तथा उसे धर्मपरायण विप्र को दे तो वह किसी भी परिस्थिति में नरक नहीं जा सकता)
11. प्रसन्नता के लिए– जो मनुष्य एकादशी तिथिको भगवतीको दधि अर्पित करता है और वही दही ब्राह्मण को भी प्रदान करता है, वह देवीका परम प्रिय (पुत्र समान लाड–प्यार पाने का अधिकारी) हो जाता है। पूजन के पश्चात देवी को पुष्पों की सुगन्धित माला अर्पित करें तदोपरान्त नमः पुष्करनेत्रायै का पाठ करने से वह ब्रह्मा, विष्णु रुद्र पद तक पा सकता है।

12. प्रसन्नता हेतु – जो द्वादशीके दिन भगवतीको चिउड़े का भोग लगाकर आचार्यको भी चिउड़ेका दान करता है, वह भगवतीका प्रियपात्र बन जाता है।
13. प्रजा का प्रेम मिले व पुत्र लाभ – जो त्रयोदशीको भगवतीको चना अर्पित करता है और ब्राह्मण को चनेका दान करता है, वह प्रजाओं तथा सन्तानोंसे सदा सम्पन्न रहता है ॥
14. जो मनुष्य चतुर्दशीके दिन भगवतीको सत्तू अर्पण करता है और ब्राह्मणको भी सत्तू प्रदान करता है, वह शिवा व शिव दोनों का परम प्रिय कार्तिकेय के समान हो जाता है।
15. जो पूर्णिमा (तथा अमावस्या) तिथिको भगवती शिवा दुर्गा और अपर्णा गौरी को खीर का भोग लगाता है और श्रेष्ठ ब्राह्मणको खीर प्रदान करता है, वह अपने सभी पितरोंका उद्धार कर देता है।

●●●●●●●●●●●●

हवन –

देवीकी प्रसन्नताके लिये उसी तिथिको हवन भी बताया गया है। जिस तिथिमें नैवेद्यके लिये जो वस्तु ऊपर बतायी गयी है, उसी वस्तुसे उन–उन तिथियोंमें हवन करनेसे सभी विपत्तियोंका नाश हो जाता है।

●●●●●●●●●●●

वार के अनुसार नैवेद्य–

●●●●●●●●●●●

1. रविवार को खीर (गौदुग्ध पायस) का नैवेद्य अर्पण करना चाहिये।
2. सोमवार को गौ दूध
3. मंगलवारको केले का भोग लगाना बताया गया है। (हर मंगलवार को केले का नियम ग्रहणकर मनुष्य शोक से मुक्त हो जाता है अतः अक्षयरुद्र तो यह कहता है कि देवी मंगल चण्डिका रूपी दुर्गा को हर मंगलवार को लाल रंग की मिठाई और केला अर्पण करके नमः पुष्करनेत्रायै का एक पाठ तदोपरान्त मंगलचण्डिका जी के 21 पाठ करे तो वह परम सौभाग्य प्राप्त कर लेता है ।
4. बुधको ताजा मक्खन भोगके लिये कहा गया है।
5. गुरुवारको रक्त शर्करा,
6. शुक्रवारको श्वेत शर्करा
7. शनिवारको गाय का घृत नैवेद्यके रूपमें बताया गया है (हर शनिवार को देवी के निमित्त गाय के गोबर के कंडे पर गोघृत से होम का नियम बनाने वाला शनि को भी अनुकूल कर लेता है अथवा कंडे की समस्या हो तो मात्र घी को अर्पण कर सकते हैं)

●●●●●●●●●●●

नक्षत्र पर पूजा

●●●●●●●●●●●

सत्ताईस नक्षत्रोंमें दिये जानेवाले नैवेद्यके विषयमें सुनिये।

अश्विनी भरणी से लेकर रेवती तक सुनें ।

1. घी (अश्विनी नक्षत्र पर नैवेद्य)
2. तिल (भरणी नक्षत्र पर नैवेद्य)
3. शकर (कृतिका)
4. दही (रोहिणी)
5. दूध (मृगशिरा नक्षत्र पर देवी को गाय का दूध ; पर एक बात सुनें इस अक्षयरुद्र की वह यह कि एक दिन पहले ही गोप या ग्वाले या दूध दोहन करने वाले को कह दें कि कल मृगशिरा नक्षत्र है अतः नहाकर ही मेरे लिए 500 ग्राम या 250ग्राम गाय का दूध दोह कर लाने की कृपा करे और वह दूध रजोवति नारी न निकाले)
6. मलाई (आर्द्रा नक्षत्र पर दूध की मलाई)
7. लस्सी (पुनर्वसु पर)
8. लड्डू (पुष्य नक्षत्र पर परंतु घर पर लड्डू बनायें बाजार में 90 प्रतिशत लोग बिना नहाये ही बनाते हैं जो अशुद्ध माना जाता है)
9. फेणिका (आश्लेषा के समय पर)
10. घृतमण्ड (शक्करपारा),
11. कसार (गेहूँके आटे तथा गुड़से निर्मित पदार्थ विशेष)–(यह पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र पर करें।)
12. वटपत्र (पापड़) –(यह उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र को नैवेद्य अर्पण करें ।)
13. घेवर (हस्त नक्षत्र)
14. वटक (बड़ा) – चित्रा नक्षत्र पर नैवेद्य
15. कोकरस (खजूरका रस)– स्वाती नक्षत्र पर
16. घृतमिश्रित चनेका चूर्ण (बेसन में घी मिलाकर सेककर)
17. मधु (अनुराधा)
18. सूरन (ज्येष्ठा)
19. गुड़ (मूल नक्षत्र में)
20. चिउड़ा (पूर्वाषाढ़ा)
21. दाख (उत्तराषाढ़ा में)
22. खजूर (श्रावण नक्षत्र पर)
23. चारक (धनिष्ठा)
24. पूआ (शतभिषा नक्षत्रपर)
25. मक्खन (पूर्वा भाद्रपद)
26. मूँगका लड्डू (उत्तराभाद्रपद)
27. विजौरा नींबू (यह पराशक्ति के एक हाथ की शोभा भी होता है चतुर्भुजी महा लक्ष्मी जो 18 भुजाओं से युक्त अथवा सहस्र भुजाओं वाली महिषासुर मर्दिनी बनी उनको यह प्रिय है यह रेवती नक्षत्र पर अर्पण मात्र करें इसे काटे नहीं ।

●●●●●●●●●●●●●●

योग के आधार पर –

अब विष्कम्भ आदि योगोंमें नैवेद्य अर्पणके विषयमें कहूँगा।

●●●●●●●●●●●●●

योगों पर इन पदार्थोंको अर्पित करनेसे जगदम्बिका प्रसन्न होती हैं।

1. गुड़,
2. मधु,
3. घी,
4. दूध,
5. दही,
6. मट्ठा,
7. पूआ,
8. मक्खन,
9. ककड़ी,
10. कॉहड़ा,
11. लड्डू,
12. कटहल,
13. केला,
14. जामुन,
15. आम,
16. तिल,
17. संतरा,
18. अनार,
19. बेरका फल,
20. आमला,
21. खीर,
22. चिउड़ा,
23. चना,
24. नारियल,
25. जम्भफल (जम्भीरा),
26. कसेरू और
27. सूरन

ये शुभ नैवेद्य क्रमशः विष्कम्भ आदि योगोंमें (भगवती को) अर्पण करनेके लिये विद्वानोंके द्वारा निश्चित किये गये हैं।

अब भिन्न–भिन्न करणों के नैवेद्य के बारे में श्रवण करें।

1. कसार,
2. मण्डक,
3. फेनी,
4. मोदक,
5. वटपत्र,
6. लड्डू,
7. घृतपूर,
8. तिल,
9. दही,
10. घी और
11. मधु–

ये करणोंके नैवेद्य बताये गये हैं, जिन्हें आदरपूर्वक भगवतीको अर्पण करना चाहिये।

●●●●●●●●●●

<u>तृतीया तिथि को भोग प्रसाद</u> –

● चैत्रमास के शुक्ल– पक्षमें तृतीया तिथिको महुएके वृक्षमें भगवतीको भावना करके उनका पूजन करे और नैवेद्यमें पाँच प्रकारके भोज्य पदार्थ अर्पित करे। इसी प्रकार बारहों महीनोंके शुक्लपक्षकी तृतीया तिथिको पूजन–विधानके साथ क्रमशः नैवेद्य अर्पित करे।

(अतः चैत्र में महुए के पास जाकर पंचोपचार से पूजा करें)

● वैशाख– मास के शुक्ल–पक्ष में तृतीया तिथि को गुड़मिश्रित पदार्थ निवेदित करना चाहिये।

●ज्येष्ठ महीने में भगवतीकी प्रसन्नताके लिये मधु अर्पित करना चाहिये।

●आषाढ़ महीनेमें नवनीत और महुएके रससे बना हुआ पदार्थ अर्पित करना चाहिये ॥

● श्रावण–मासमें दही,

●भाद्रपद–मासमें शर्करा,

● आश्विन–मास में खीर

●तथा कार्तिक–मासमें दूधका नैवेद्य उत्तम कहा गया है।

●मार्गशीर्ष–महीने में फेनी

एवं

●पौष माहमें दधिकूर्चिका (लस्सी) का नैवेद्य उत्तम कहा गया है।

●माघके महीनेमें गायके घीका नैवेद्य अर्पण करना चाहिये;

●फाल्गुनके महीने में नारियलका नैवेद्य बताया गया है। इस प्रकार बारह महीनोंमें बारह नैवेद्योंसे क्रमशः भगवतीकी पूजा करनी चाहिये ॥

1. मंगला,
2. वैष्णवी,
3. माया,
4. कालरात्रि,
5. दुरत्यया,
6. महामाया,
7. मतंगी,
8. काली,
9. कमलवासिनी,
10. शिवा,
11. सहस्त्रचरणा और
12 .सर्वमंगलरूपिणी–इन 12 नामों ंका उच्चारण करते हुए महुएके वृक्षमें भगवतीकी पुजा करनी चाहिये।

तत्पश्चात् सभी कामनाओंकी सिद्धि तथा व्रतकी पूर्णताके लिये महुएके वृक्षमें स्थित देवेशी महेश्वरीकी इस प्रकार स्तुति करनी चाहिये ॥

स्तुति –

कमलके समान नेत्रोंवाली आप जगद्धात्रीको नमस्कार है।
आप महामंगलमूर्तिस्वरूपा महेश्वरी महादेवीको नमस्कार है।

(हे देवि !) परमा, पापहन्त्री, परमार्गप्रदायिनी, परमेश्वरी, प्रजोत्पत्ति, परब्रह्मस्वरूपिणी, मददात्री, मदोन्मत्ता, मानगम्या, महोन्नता, मनस्विनी, मुनिध्येया, मार्तण्डसहचारिणी–ये आपके नाम हैं।

हे लोकेश्वरि।
हे प्राज्ञे।
आपकी जय हो।

हे प्रलयकालीन मेघके समान प्रतीत होनेवाली ! देवता और दानव महामोहके विनाशके लिये आपकी उपासना करते हैं ॥

आप यमलोक मिटानेवाली, यमराजपूज्या, यमकी अग्रजा और यमनिग्रहस्वरूपिणी हैं।

हे परमाराध्ये ! आपको बार–बार नमस्कार है।

आप समस्वभावा, सर्वेशी, सर्वसंगविवर्जिता, संगनाशकरी, काम्यरूपा, कारुण्यविग्रहा, कंकालक्रूरा, कामाक्षी, मीनाक्षी, मर्मभेदिनी, माधुर्यरूपशीला, मधुरस्वरपूजिता, महामन्त्रवती, मन्त्रगम्या, मन्त्रप्रियंकरी, मनुष्य– मानसगमा और मन्मथारिप्रियंकरी–

इन नामोंसे विख्यात हैं ॥ पीपल, वट, नीम, आम, कैथ एवं बेरमें निवास करनेवाली आप कटहल, मदार, करील, जामुन आदि क्षीरवृक्षस्वरूपिणी हैं। दुग्धवल्लीमें निवास करनेवाली, दयनीय, महान् दयालु, कृपालुता एवं करुणाकी साक्षात् मूर्तिस्वरूपा एवं सर्वज्ञजनोंकी प्रियस्वरूपिणि ! आपकी जय हो ॥

●●●●●●●●●●●●●●

इस प्रकार पूजनके पश्चात् इस स्तोत्रसे उन देवेश्वरीकी स्तुति करनी चाहिये। ऐसा करनेवाला मनुष्य व्रतका सम्पूर्ण पुण्य प्राप्त कर लेता है ॥

जो मनुष्य भगवतीको प्रसन्न करनेवाले इस स्तोत्रका नित्य पाठ करता है,

1. उसे किसी प्रकारके शारीरिक या मानसिक रोगका भय नहीं होता
2. और उसे शत्रुओंका भी कोई भय नहीं रहता।
3. इस स्तोत्रके प्रभावसे अर्थ चाहनेवाला अर्थ प्राप्त कर लेता है,
4. धर्मके अभिलाषीको धर्मकी प्राप्ति हो जाती है,
5. कामीको काम सुलभ हो जाते हैं
6. और मोक्षकी इच्छा रखनेवालेको मोक्ष प्राप्त हो जाता है।
7. इस स्तोत्रके पाठसे ब्राह्मण वेदसम्पन्न, क्षत्रिय विजयी, वैश्य धनधान्यसे परिपूर्ण और दास परम सुखी हो जाता है।
8. जो मनुष्य श्राद्धके समय मनको एकाग्र करके इस स्तोत्रका पाठ करता है, उसके पितरोंकी एक कल्पतक स्थायी रहनेवाली अक्षय तृप्ति ही जाती है ॥

●●●●●●●●●●●●●●●

इस प्रकार मैंने देवताओंके द्वारा देवीकी की गयी आराधना तथा पूजाके विषयों आपको भलीभाँति बता दिया। जो मनुष्य भक्तिपूर्वक भगवतीकी उपासना करता है, वह देवीलोकका अधिकारी हो जाता है ॥ भगवतीके पूजनसे मनुष्यकी सभी कामनाएँ सिद्ध हो जाती हैं और अन्तमें उसकी बुद्धि सभी पापोंसे रहित होकर निर्मल हो जाती है ॥ भगवतीके अनुग्रहसे मनुष्य जहाँ–तहाँ पूजित होता है और मानको ही धन माननेवाले पुरुषोंमें सम्माननीय हो जाता है। उसे स्वप्नमें भी नरकोंका भय नहीं रहता। महामाया भगवतीकी कृपासे देवीका भक्त पुत्र तथा पौत्रोंसे सदा सम्पन्न रहता है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं करना चाहिये ॥ यह जो मैंने आपसे महादेवीके पूजनका वर्णन किया है, वह नरकसे उद्धार करनेवाला तथा सम्पूर्ण रूपसे मंगलकारी है।

चैत्र आदि महीनोंमें क्रमसे
महुए के वृक्षमें भगवतीकी पूजा करनी चाहिये।
जो मनुष्य मधूक नामक वृक्षमें सम्यरूपसे पूजन करता है;
उसे रोग, बाधा आदिका कोई भय उत्पन्न नहीं होता ॥

देवी महिषासुर मर्दिन (सहस्र, अठारह या चार भुजा धारी महालक्ष्मी), दुर्गा (दुर्गम असुर व शुम्भ निशुम्भ का वध करने वाली शताक्षी शाकंभरी व मंगल चण्डिका) तथा महामाया महाकाली की पूजा विधि –

(यह संस्कृत भाषा में है जो श्रीमद्देवीभागवत महापुराण से संकलित है। इसके मूलपाठ का भी अत्यधिक महत्व है जो देवी की सम्यक् प्रकार से पूजा करने में समर्थ न हो वह मूल पाठ से ही संपूर्ण फल पा सकता है।

देवीपूजन विधि–निरूपण–

नारद उवाच

धर्मश्च कीदृशस्तात देव्याराधनलक्षणः ।
कथमाराधिता देवी सा ददाति परं पदम् ॥ १ ॥

आराधनविधिः को वा कथमाराधिता कदा ।
केन सा दुर्गनरकाद्दुर्गा त्राणप्रदा भवेत् ॥ २ ॥

श्रीनारायण उवाच

देवर्षे शृणु चित्तैकाग्र्येण मे विदुषां वर ।
यथा प्रसीदते देवी धर्माराधनतः स्वयम् ॥ ३ ॥

स्वधर्मो यादृशः प्रोक्तस्तं च मे शृणु नारद ।
अनादाविह संसारे देवी सशृजिता स्वयम् ॥ ४ ॥

परिपालयते घोरसङ्कटादिषु सा मुने ।
सा देवी पूज्यते लोकैर्यथावत्तद्विधिं शृणु ॥ ५ ॥

प्रतिपत्तिथिमासाद्य देवीमाज्येन पूजयेत् ।
घृतं दद्याद् ब्राह्मणाय रोगहीनो भवेत्सदा ॥ ६ ॥

द्वितीयायां शर्करया पूजयेज्जगदम्बिकाम् ।
शर्करां प्रददेद्विप्रे दीर्घायुर्जायते नरः ॥ ७ ॥

तृतीयादिवसे देव्यै दुग्धं पूजनकर्मणि ।
क्षीरं दत्त्वा द्विजाग्र्याय सर्वदुःखातिगो भवेत् ॥ ८ ॥

चतुर्थ्यां पूजनेऽपूपा देया देव्यै द्विजाय च ।
अपूपा एव दातव्या न विघ्नैरभिभूयते ॥ ९ ॥

पञ्चम्यां कदलीजातं फलं देव्यै निवेदयेत् ।
तदेव ब्राह्मणे देयं मेधावान्पुरुषो भवेत् ॥ १० ॥

षष्ठीतिथौ मधु प्रोक्तं देवीपूजनकर्मणि ।
ब्राह्मणाय च दातव्यं मधु कान्तिर्यतो भवेत् ॥ ११ ॥

सप्तम्यां गुडनैवेद्यं देव्यै दत्त्वा द्विजाय च ।
गुडं दत्त्वा शोकहीनो जायते द्विजसत्तम ॥ १२ ॥

नारिकेलमथाष्टम्यां देव्यै नैवेद्यमर्पयेत् ।
ब्राह्मणाय प्रदातव्यं तापहीनो भवेन्नरः ॥ १३ ॥

नवम्यां लाजमम्बायै चार्पयित्वा द्विजाय च ।
दत्त्वा सुखाधिको भूयादिह लोके परत्र च ॥ १४ ॥

दशम्यामर्पयित्वा तु देव्यै कृष्णतिलान्मुने ।
ब्राह्मणाय प्रदत्त्वा तु यमलोकाद्भयं न हि ॥ १५ ॥

एकादश्यां दधि तथा देव्यै चार्पयते तु यः ।
ददाति ब्राह्मणायैतद्देवीप्रियतमो भवेत् ॥ १६ ॥

द्वादश्यां पृथुकान्देव्यै दत्त्वाचार्याय यो ददेत् ।
तानेव च मुनिश्रेष्ठ स देवीप्रियतां व्रजेत् ॥ १७ ॥

त्रयोदश्यां च दुर्गायै चणकान्प्रददाति च ।
तानेव दत्त्वा विप्राय प्रजासन्ततिमान्भवेत् ॥ १८ ॥

चतुर्दश्यां च देवर्षे देव्यै सक्तून्प्रयच्छति ।
तानेव दद्याद्विप्राय शिवस्य दयितो भवेत् ॥ १९ ॥

पायसं पूर्णिमातिथ्यामपर्णायै प्रयच्छति ।
ददाति च द्विजाग्र्याय पितृनुद्धरतेऽखिलान् ॥ २० ॥

तत्तिथौ हवनं प्रोक्तं देवीप्रीत्यै महामुने ।
तत्तत्तिथ्युक्तवस्तूनामशेषारिष्टनाशनम् ॥ २१ ॥

रविवारे पायसं च नैवेद्यं परिकीर्तितम् ।
सोमवारे पयः प्रोक्तं भौमे च कदलीफलम् ॥ २२ ॥

बुधवारे च सम्प्रोक्तं नवनीतं नवं द्विज ।
गुरुवारे शर्करां च सितां भार्गववासरे ॥ २३ ॥

शनिवारे घृतं गव्यं नैवेद्यं परिकीर्तितम् ।
सप्तविंशतिनक्षत्रनैवेद्यं श्रूयतां मुने ॥ २४ ॥

घृतं तिलं शर्करां च दधि दुग्धं किलाटकम् ।
दथिकूर्ची मोदकं च फेणिकां घृतमण्डकम् ॥ २५ ॥

कंसारं वटपत्रं च घृतपूरमतः परम् ।
वटकं कोकरसकं पूरणं मधु सूरणम् ॥ २६ ॥

गुडं पृथुकद्राक्षे च खर्जूरं चैव चारकम् ।
अपूपं नवनीतं च मुद्गं मोदक एव च ॥ २७ ॥

मातुलिङ्गमिति प्रोक्तं भनैवेद्यं च नारद ।
विष्कम्भादिषु योगेषु प्रवक्ष्यामि निवेदनम् ॥ २८ ॥

पदार्थानां कृतेष्वेषु प्रीणाति जगदम्बिका ।
गुडं मधु घृतं दुग्धं दधि तक्रं त्वपूपकम् ॥ २६ ॥

नवनीतं कर्कटीं च कूष्माण्डं चापि मोदकम् ।
पनसं कदलं जम्बुफलमाम्रफलं तिलम् ॥ ३० ॥

नारङ्गं दाडिमं चैव बदरीफलमेव च ।
धात्रीफलं पायसञ्च पृथुकं चणकं तथा ॥ ३१ ॥

नारिकेलं जम्भफलं कसेरुं सूरणं तथा ।
एतानि क्रमशो विप्र नैवेद्यानि शुभानि च ॥ ३२ ॥

विष्कम्भादिषु योगेषु निर्णीतानि मनीषिभिः ।
अथ नैवेद्यमाख्यास्ये करणानां पृथङ्मुने ॥ ३३ ॥

कंसारं मण्डकं फेणी मोदकं वटपत्रकम् ।
लड्डुकं घृतपूरं च तिलं दधि घृतं मधु ॥ ३४ ॥

करणानामिदं प्रोक्तं देवीनैवेद्यमादरात् ।
अथान्यत्सम्प्रवक्ष्यामि देवीप्रीतिकरं परम् ॥ ३५ ॥

विधानं नारदमुने शृणु तत्सर्वमादृतः ।
चैत्रशुद्धतृतीयायां नरो मधुकवृक्षकम् ॥ ३६ ॥

पूजयेत्पञ्च खाद्यं च नैवेद्यमुपकल्पयेत् ।
एवं द्वादशमासेषु तृतीयातिथिषु क्रमात् ॥ ३७ ॥

शुक्लपक्षे विधानेन नैवेद्यमभिदध्महे ।
वैशाखमासे नैवेद्यं गुडयुक्तं च नारद ॥ ३८ ॥

ज्येष्ठमासे मधु प्रोक्तं देवीप्रीत्यर्थमेव तु ।
आषाढे नवनीतं च मधुकस्य निवेदनम् ॥ ३९ ॥

श्रावणे दधि नैवेद्यं भाद्रमासे च शर्करा ।
आश्विने पायसं प्रोक्तं कार्तिके पय उत्तमम् ॥ ४० ॥

मार्गे फेण्युत्तमा प्रोक्ता पौषे च दधिकूर्चिका ।
माघे मासि च नैवेद्यं मृतं गव्यं समाहरेत् ॥ ४१ ॥

नारिकेलं च नैवेद्यं फाल्गुने परिकीर्तितम् ।
एवं द्वादशनैवेद्यैर्मासे च क्रमतोऽर्चयेत् ॥ ४२ ॥

मङ्गला वैष्णवी माया कालरात्रिर्दुरत्यया ।
महामाया मतङ्गी च काली कमलवासिनी ॥ ४३ ॥

शिवा सहस्रचरणा सर्वमङ्गलरूपिणी ।
एभिर्नामपदैर्देवीं मधूके परिपूजयेत् ॥ ४४ ॥

ततः स्तुवीत देवेशीं मधूकस्थां महेश्वरीम् ।
सर्वकामसमृद्ध्यर्थं व्रतपूर्णत्वसिद्धये ॥ ४५ ॥

नमः पुष्करनेत्रायै जगद्धात्र्यै नमोऽस्तु ते ।
माहेश्वर्यं महादेव्यै महामङ्गलमूर्तये ॥ ४६ ॥

परमा पापहन्त्री च परमार्गप्रदायिनी ।
परमेश्वरी प्रजोत्पत्तिः परब्रह्मस्वरूपिणी ॥ ४७ ॥

मददात्री मदोन्मत्ता मानगम्या महोन्नता ।
मनस्विनी मुनिध्येया मार्तण्डसहचारिणी ॥ ४८ ॥

जय लोकेश्वरि प्राज्ञे प्रलयाम्बुदसन्निभे ।
महामोहविनाशार्थं पूजितासि सुरासुरैः ॥ ४९ ॥

यमलोकाभावकर्त्री यमपूज्या यमाग्रजा ।
यमनिग्रहरूपा च यजनीये नमो नमः ॥ ५० ॥

समस्वभावा सर्वेशी सर्वसङ्गविवर्जिता ।
सङ्गनाशकरी काम्यरूपा कारुण्यविग्रहा ॥ ५१ ॥

कङ्कालक्रूरा कामाक्षी मीनाक्षी मर्मभेदिनी ।
माधुर्यरूपशीला च मधुरस्वरपूजिता ॥ ५२ ॥

महामन्त्रवती मन्त्रगम्या मन्त्रप्रियङ्करी ।
मनुष्यमानसगमा मन्मथारिप्रियङ्करी ॥ ५३ ॥

अश्वत्थवटनिम्बाम्रकपित्थबदरीगते ।
पनसार्ककरीरादिक्षीरवृक्षस्वरूपिणी ॥ ५४ ॥

दुग्धवल्लीनिवासार्हे दयनीये दयाधिके ।
दाक्षिण्यकरुणारूपे जय सर्वज्ञवल्लभे ॥ ५५ ॥

एवं स्तवेन देवेशीं पूजनान्ते स्तुवीत ताम् ।
व्रतस्य सकलं पुण्यं लभते सर्वदा नरः ॥ ५६ ॥

नित्यं यः पठते स्तोत्रं देवीप्रीतिकरं नरः ।
आधिव्याधिभयं नास्ति रिपुभीतिर्न तस्य हि ॥ ५७ ॥

अर्थार्थी चार्थमाप्नोति धर्मार्थी धर्ममाप्नुयात् ।
कामानवाप्नुयात्कामी मोक्षार्थी मोक्षमाजप्नुयात् ॥ ५८ ॥

ब्राह्मणो वेदसम्पनो विजयी क्षत्रियो भवेत् ।
वैश्यश्च धनधान्याढ्यो भवेच्छूद्रः सुखाधिकः ॥ ५६ ॥

स्तोत्रमेतच्छ्राद्धकाले यः पठेत्प्रयतो नरः ।
पितृ मामक्षया तृप्तिर्जायते कल्पवर्तिनी ॥ ६० ॥

एवमाराधनं देव्याः समुक्तं सुरपूजितम् ।
यः करोति नरो भक्त्या स देवीलोकभाग्भवेत् ॥ ६१ ॥

देवीपूजनतो विप्र सर्वे कामा भवन्ति हि ।
सर्वपापहतिः शुद्धा मतिरन्ते प्रजायते ॥ ६२ ॥

यत्र तत्र भवेत्पूज्यो मान्यो मानधनेषु च ।
जायते जगदम्बायाः प्रसादेन विरञ्चिज ॥ ६३ ॥

नरकाणां न तस्यास्ति भयं स्वप्नेऽपि कुत्रचित् ।
महामायाप्रसादेन पुत्रपौत्रादिवर्धनः ॥ ६४ ॥

देवीभक्तो भवत्येव नात्र कार्या विचारणा ।
इत्येवं ते समाख्यातं नरकोद्धारलक्षणम् ॥ ६५ ॥

पूजनं हि महादेव्याः सर्वमङ्गलकारकम् ।
मधूकपूजनं तद्वन्मासानां क्रमतो मुने ॥ ६६ ॥

सर्वं समाचरेद्यस्तु पूजनं मधुकाह्वयम् ।
न तस्य रोगबाधादिभयमुद्भवतेऽनघ ॥ ६७ ॥

अथान्यदपि वक्ष्यामि प्रकृतेः पञ्चकं परम् ।
नाम्ना रूपेण चोत्पत्त्या जगदानन्ददायकम् ॥ ६८ ॥

साख्यानं च समाहात्म्यं प्रकृतेः पञ्चकं मुने ।
कुतूहलकर चैव शृणु मुक्तिविधायकम् ॥ ६६ ॥

28. शत्रुओं का मर्दन करने वाली महामारी विद्या व अनेक सरल प्रयोग

यह भी भगवान महेश्वर द्वारा प्रदाय गुप्त विद्या ही है जो देवी पार्वती के द्वारा बार बार प्रार्थना करने पर ही कैलास पर्वत के शिखर पर कही गई थी।

महादेव ने कहा – देवि ! मैं जिस महामारी–विद्या का वर्णन करूँगा, वह गुप्त से भी गुप्त है पर तुम्हारे द्वारा बार बार प्रार्थना करने के कारण मैं कह रहा हूं अतः सुनों यह महामारी–विद्या शत्रुओं का मर्दन करनेवाली है और तत्काल प्रभावी है तथा कम शब्दों वाली होकर भी महान से भी महानतर है।

पर शुद्ध आसन व शुद्ध स्थान पर बैठकर पहले अंगन्यास कर लें।

अङ्गन्यास

●**'ॐ मारि हृदयाय नमः।'**
इस वाक्यको बोलकर दाहिने हाथकी (मध्यमा, अनामिका और तर्जनी) अँगुलियोंसे हृदयका स्पर्श करे।

●**'ॐ महामारि शिरसे स्वाहा।'**
इस वाक्यको बोलकर दाहिने हाथसे सिरका स्पर्श करे।

●**'ॐ कालरात्रि शिखायै वौषट् ।'**
इस वाक्यको बोलकर दाहिने हाथके अँगूठेसे शिखाका स्पर्श करे।

●**'ॐ कृष्णवर्णे खः कवचाय हुम्।'** –
इस वाक्यको बोलकर दाहिने हाथकी पाँचों अँगुलियोंसे बायीं भुजाका और बायें हाथकी पाँचों अँगुलियोंसे दाहिनी भुजाका स्पर्श करे।

●**'ॐ तारकाक्षि विद्युज्जिह्वे सर्वसत्त्वभयंकरि रक्ष रक्ष**

सर्वकार्येषु ह्रं त्रिनेत्राय वषट्।'–

इस वाक्यको बोलकर दाहिने हाथकी अँगुलियोंके अग्रभागसे दोनों नेत्रों और ललाटके मध्यभागका स्पर्श करे।

● **'ॐ महामारि सर्वभूतदमनि**

महाकालि अस्त्राय हुं फट् ।'

इस वाक्यको बोलकर दाहिने हाथको सिरके ऊपर एवं बायीं ओरसे पीछेकी ओर ले जाकर दाहिनी ओरसे आगेकी ओर ले आये और तर्जनी तथा मध्यमा) अँगुलियोंसे बायें हाथकी हथेलीपर ताली बजाये ॥

महादेवि ! साधकको यह अङ्गन्यास अवश्य करना चाहिये।
अब वह अमोघ विद्या सुनों जिसे शत्रु नाशक महामारी विद्या कहा जाता है।
●●●●●●●●●●●विद्या ●●●●●●●●●●

ॐ ह्रीं महामारि रक्ताक्षि कृष्णवर्णे यमस्याज्ञाकारिणि
सर्वभूतसंहारकारिणि अमुकं हन हन,

ॐ दह दह, ॐ पच पच, ॐ च्छिन्द च्छिन्द,

ॐ मारय मारय, ओमुत्सादयोत्सादय,

ॐ सर्वसत्त्ववशंकरि

सर्वकामिके हुं फट् स्वाहा ॥

●●●●●●●●●●अर्थ ●●●●●●●●●●

(ॐ ह्रीं लाल नेत्रों तथा काले रंगवाली महामारि ! तुम यमराजकी आज्ञाकारिणी हो,समस्त भूतोंका संहार करनेवाली हो, मेरे अमुक शत्रु (बेरी का नाम लें उसकी जाति सहित या संकेतक शत्रु) का हनन करो, हनन करो। ॐ उसे जलाओ, जलाओ। ॐ पकाओ, पकाओ। ॐ काटो, काटो। ॐ मारो, मारो। ॐ उखाड़ फेंको, उखाड़ फेंको। ॐ समस्त प्राणियोंको वशमें करनेवाली और सम्पूर्ण कामनाओंको देनेवाली ! हुं फट् स्वाहा ।)

प्रयोग –

● वह मुर्दे पर का (उस पर रखा हुआ) वस्त्र (कपड़ा) लाकर

●उसे चौकोर □ फाड़ ले।

●उसकी लंबाई–चौड़ाई तीन– तीन हाथकी होनी चाहिये। ●उसी वस्त्रपर अनेक प्रकारके रंगोंसे देवीकी एक आकृति बनावे जिसका रंग काला हो।

●वह आकृति तीन मुख●●● और चार भुजाओं से युक्त होनी चाहिये।

● देवीक यह मूर्ति अपने हाथोंमें धनुष, शूल, कतरनी और खट्वाङ्ग (खाटका पाया) धारण किये हुए हो।

●उस देवीका पहला मुख पूर्व दिशाकी ओर हो और अपनी काली आभासे प्रकाशित हो रहा हो तथा ऐसा जान पड़ता हो कि दृष्टि पड़ते ही वह अपने सामने पड़े हुए मनुष्यको खा जायगी।

● दूसरा मुख दक्षिण भागमें होना चाहिये।

● उसकी जीभ लाल हो और वह देखनेमें भयानक जान पड़ता हो।

●वह विकराल मुख अपनी दाढ़ोंके कारण अत्यन्त उत्कट और भयंकर हो और जीभसे दो गलफर चाट रहा हो। साथ ही ऐसा जान पड़ता हो कि दृष्टि पड़ते ही यह घोड़े आदिको खा जायगा।

●देवीका तीसरा मुख पश्चिमाभिमुख हो। उसका रंग सफेद होना चाहिये। वह ऐसा जान पड़ता हो कि सामने पड़नेपर हाथी आदिको भी खा जायगा।

अब

●●●●●●●●●●●●●●●●●

गन्ध–पुष्प आदि उपचारों तथा घी–मधु आदि नैवेद्योंद्वारा उसका पूजन करे ॥ ८३ ॥

●●●●●●●●●●●●●●●●●

1. पाठ मात्र की महिमा, प्रयोग तो अलग ही बात है। पूर्वोक्त मन्त्रका स्मरण करने मात्र से नेत्र और मस्तक आदि के रोग नष्ट हो जाता है।
2. अभिमंत्रित जल पान करने से विष का भय दूर।
3. पाठ करने से यक्ष और राक्षस भी वशमें हो जाते हैं।
4. पाठक के समस्त शत्रुओंका नाश हो जाता है।
5. यदि मनुष्य क्रोधयुक्त होकर, निम्ब–वृक्षकी समिधाओंको होम करे तो उस होमसे ही वह अपने शत्रुको मार सकता है, इसमें संशय नहीं है।
6. यदि शत्रुकी सेनाकी ओर मुँह करके एक सप्ताहतक इन समिधाओंका हवन किया जाय तो शत्रुकी सेना नाना प्रकारके रोगोंसे ग्रस्त हो जाती है और उसमें भगदड़ मच जाती है।
7. जिसके नाम से 8000 अर्थात् आठ हजार उक्त निम्ब–वृक्ष की समिधाओं का होम कर दिया जाय, वह यदि ब्रह्माजीके द्वारा सुरक्षित हो तो भी शीघ्र ही मर जाता है। अमुकं के स्थान पर शत्रु का नाम लें।
8. यदि धतूरेकी 1000 अर्थात् एक सहस्र समिधाओं को रक्त और विष से संयुक्त करके तीन दिनतक उनका होम किया जाय तो शत्रु अपनी सेनाके साथ ही नष्ट हो जाता है।
9. राई और नमकसे होम करनेपर तीन दिनमें ही शत्रुकी सेनामें भगदड़ पड़ जायगी – शत्रु भाग खड़ा होगा।
10. यदि उसे गदहेके रक्तसे मिश्रित करके होम किया जाय तो साधक अपने शत्रुका उच्चाटन कर सकता है – वहाँसे भागनेके लिये उसके मनमें उचाट पैदा कर सकता है।
11. कौएके रक्तसे संयुक्त करके हवन करनेपर शत्रुको उखाड़ फेंका जा सकता है। साधक उसके वध में समर्थ हो सकता है ।
12. तथा साधकके मनमें जो–जो इच्छा होती है, उन सब इच्छाओंको वह पूर्ण कर लेता है।

युद्धकालमें साधक हाथीपर आरूढ़ हो, दो कुमारियोंके साथ रहकर, पूर्वोक्त मन्त्रद्वारा शरीरको सुरक्षित कर ले; फिर दूरके शङ्ख आदि वाद्योंको पूर्वोक्त महामारी–विद्यासे अभिमन्त्रित करे।

●●●●●ध्वज ●●●●

तदनन्तर महामायाकी प्रतिमासे युक्त वस्त्रको लेकर समराङ्गणमें ऊँचाईपर फहराये और शत्रुसेनाकी ओर मुँह करके उस महान् पटको उसे दिखाये।

●●●●●●●●●

तत्पश्चात् वहाँ कुमारी कन्याओंको भोजन करावे। फिर पिण्डी को घुमाये। उस समय साधक यह चिन्तन करे कि शत्रुकी सेना पाषाणकी भाँति निश्चल हो गयी है ॥

●वह यह भी भावना करे कि शत्रुकी सेनामें लड़नेका उत्साह नहीं रह गया है,

●उसके पाँव उखड़ गये हैं और

●वह बड़ी घबराहटमें पड़ गयी है।

इस प्रकार करनेसे शत्रुकी सेनाका स्तम्भन हो जाता है। (वह चित्रलिखितकी भाँति खड़ी रह जाती है, कुछ कर नहीं पाती।)

यह मैंने स्तम्भनका प्रयोग बताया है। इसका जिस–किसी भी व्यक्तिको उपदेश नहीं देना चाहिये। यह तीनों लोकोंपर विजय दिलानेवाली देवी 'माया' कही गयी है और इसकी आकृतिसे अङ्कित वस्त्रको 'मायापट' ' कहा गया है।

नोट –

इसी तरह दुर्गा, भैरवी, कुब्जिका, रुद्रदेव तथा भगवान् नृसिंहकी आकृतिका भी वस्त्रपर अङ्कन किया जा सकता है। इस तरहकी आकृतियोंसे अङ्कित पट आदिके द्वारा भी यह स्तम्भनका प्रयोग सिद्ध हो सकता है ।

29. श्री छिन्नमस्ता (वज्रवैरोचनी)
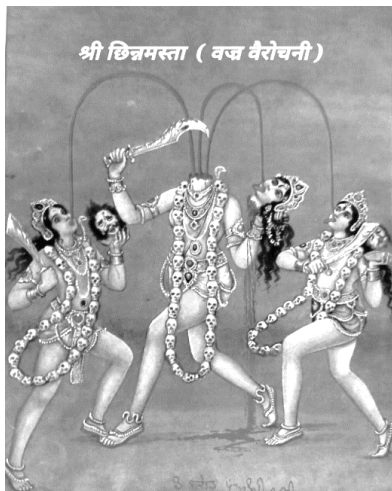
इन देवी का प्राकाट्य वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को हुआ था अतः मनुष्य यदि नित्य इनका स्मरण न भी कर पाये तो इस जयंती दिवस को इनके सुमिरन से भी अतुलनीय कृपा पा लेता है।

ध्यान–जो शत्रुओंपर प्रहार हेतु तत्पर चरणोंवाली हैं, जिन्होंने अपने हाथोंमें कटा हुआ सिर तथा खड्ग धारण कर रखा है, दिशाएँ ही जिनके वस्त्र हैं, अपने कबन्धसे प्रवाहित रक्तकी अमृतधाराका जो निरन्तर प्रसन्नतापूर्वक पान करती हैं, अपने शिरोभागमें रत्नके रूपमें जो नाग लपेटे हुई हैं, जो तीन नेत्रोंवाली हैं, जिनका वक्षःस्थल नीलकमलकी मालासे अलंकृत है, रति और कामके मूलमें (मूलाधारचक्रमें) जो विराजमान हैं और जो जपाकुसुमके सदृश आभावाली हैं – उन भगवती छिन्नमस्ताका ध्यान करना चाहिये।

ये देवी पराम्बा पार्वती का ही एक स्वरूप है जो

महाविद्याओं में भुवनेश्वरी की ही भांति अनुग्रह करने वाली और शत्रुओं का दमन करने वाली बगलामुखी के समान कृपा की समुद्र हैं। ये पापियों के लिए काली के समान ही उग्र और शरणागतों के लिए अति सौम्य हैं।

परिवर्तनशील जगत्का अधिपति कबन्ध है और उसकी शक्ति ही छिन्नमस्ता है। अतः इनको कबन्धेश्वरी भी कहा जाता है ।

विश्वकी वृद्धि–ह्रास तो सदैव होती रहती है। जब ह्रासकी मात्रा कम और विकासकी मात्रा अधिक होती है, तब भुवनेश्वरीका प्राकट्य होता है। इसके विपरीत जब निर्गम अधिक और आगम कम होता है, तब छिन्नमस्ताका प्राधान्य होता है। भगवती छिन्नमस्ताका स्वरूप अत्यन्त ही गोपनीय है। इसे कोई अधिकारी साधक ही जान सकता है। महाविद्याओंमें इनका तीसरा स्थान है। इनके प्रादुर्भावकी कथा इस प्रकार है–एक बार भगवती भवानी अपनी सहचरी जया और विजयाके साथ मन्दाकिनीमें स्नान करनेके लिये गयीं। स्नान के बाद क्षुधाग्निसे पीड़ित होकर वे कृष्णवर्णकी हो गयीं। उस समय उनकी सहचरियोंने भी उनसे कुछ भोजन करनेके लिये माँगा। देवीने उनसे कुछ समय प्रतीक्षा करनेके लिये कहा। थोड़ी देर प्रतीक्षा करनेके बाद सहचरियोंने जब पुनः भोजनके लिये निवेदन किया, तब देवीने उनसे कुछ देर और प्रतीक्षा करनेके लिये कहा। इसपर सहचरियोंने देवीसे विनम्र स्वरमें कहा कि 'माँ तो अपने शिशुओंको भूख लगनेपर अविलम्ब भोजन प्रदान करती है। आप हमारी उपेक्षा क्यों कर रही हैं? अतः हे मातृ स्वरूपिणी आप तत्काल ही हमारी क्षुदा शान्त करें दया करें आप जो भी कुछ भोजन या पेय प्रदान करो हम सहर्ष स्वीकार कर लेंगी।

अपने सहचरियोंके मधुर वचन सुनकर कृपामयी देवीने अपने खड्गसे अपना सिर काट दिया। कटा हुआ सिर देवीके बायें हाथमें आ गिरा और उनके कबन्धसे रक्तकी तीन धाराएँ प्रवाहित हुई। वे दो धाराओंको अपनी दोनों सहचरियोंकी और प्रवाहित कर दीं, जिसे पीती हुई दोनों प्रसन्न होने लगीं और तीसरी धाराको देवी स्वयं पान करने लगीं। तभीसे देवी मस्तक के छिन्न होने से छिन्नमस्ता कहलाई। अर्थात छिन्नमस्ताके नामसे प्रसिद्ध हुई।

ऐसा विधान है कि आधी रात अर्थात चतुर्थ संध्याकालमें छिन्नमस्ताकी उपासनासे साधक को सरस्वती सिद्ध हो जाती हैं। वाक् सिद्ध होकर साधक जो भी कहता है वह होकर ही रहता है इससे साधक भी सुपूजित होने लगता है पर स्थितप्रज्ञ ही वाक् सिद्ध के परम अधिकारी हैं अन्यथा साधारण मनुष्य वाणी के शाप आदि से पतित होने लगता है।

शत्रु–विजय, समूह–स्तम्भन, राज्य–प्राप्ति और दुर्लभ मोक्ष–प्राप्तिके लिये छिन्नमस्ताकी उपासना अमोघ है। छिन्नमस्ताका आध्यात्मिक स्वरूप अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। छिन्त्र यज्ञशीर्षकी प्रतीक ये देवी श्वेतकमल–पीठपर खड़ी हैं। दिशाएँ ही इनके वस्त्र हैं। इनकी नाभिमें योनिचक्र है। कृष्ण (तम अर्थात काला) और रक्त (रज अर्थात लाल) गुणोंकी देवियाँ इनकी सहचरियाँ हैं। ये अपना शीश काटकर भी जीवित हैं। यह अपने–आपमें पूर्ण अन्तर्मुखी साधनाका संकेत है।

विद्वानोंने इस कथामें सिद्धिकी चरम सीमाका निर्देश माना है। योगशास्त्रमें तीन ग्रन्थियाँ बतायी गयी हैं, जिनके भेदनके बाद योगीको पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है। इन्हें ब्रह्मग्रन्थि, विष्णु ग्रन्थि तथा रुद्र ग्रन्थि कहा गया है। मूलाधारमें ब्रह्मग्रन्थि, मणिपूरमें विष्णुग्रन्थि तथा

आज्ञाचक्रमें रुद्रग्रन्थि का स्थान है। इन ग्रन्थियोंके भेदनसे ही अद्वैतानन्दकी प्राप्ति होती है। यह अद्वैत ही कैवल्यापद और परम विज्ञान है शेष मार्ग मात्र।

योगियोंका ऐसा अनुभव है कि मणिपूर चक्रके नीचेकी नाड़ियोंमें ही काम और रतिका मूल है, उसीपर छिन्ना महाशक्ति आरूढ़ है, इसका ऊर्ध्व प्रवाह होनेपर रुद्रग्रन्थिका भेदन होता है।

छिन्नमस्ताका वज्र वैरोचनी नाम शाक्तों, बौद्धों तथा जैनोंमें समान रूपसे प्रचलित है। देवीकी दोनों सहचरियाँ रजोगुण तथा तमोगुणकी प्रतीक हैं, कमल विश्वप्रपञ्च है और कामरति चिदानन्दकी स्थूलवृत्ति है।

- बृहदारण्यककी अश्वशिर–विद्या
- शाक्तोंकी हयग्रीव विद्या तथा

गाणपत्योंके छिन्न शीर्ष गणपतिका रहस्य भी छिन्नमस्तासे ही सम्बन्धित है।

हिरण्यकशिपु, वैरोचन आदि छिन्नमस्ताके ही उपासक थे। इसीलिये इन्हें वज्र वैरोचनीया कहा गया है। वैरोचन अग्निको कहते हैं। अग्निके स्थान मणिपूरमें छिन्नमस्ताका ध्यान किया जाता है और वज्रानाड़ीमें इनका प्रवाह होनेसे इन्हें वज्र वैरोचनीया कहते हैं। श्रीभैरवतन्त्रमें कहा गया है कि इनकी आराधनासे साधक जीवभावसे मुक्त होकर शिवभावको प्राप्त कर लेता है। यह शिव भाव द्वैतहीन ब्रह्म भाव का द्योतक है जहाँ ब्रह्मानंद के सिवाय कुछ भी शेष नहीं रहता। यहाँ उपासना और कर्म का भी तिरोधान हो जाता है। श्रीमद्देवीभागवत महापुराण की देवी गीता में जिस ब्रह्मज्ञान की चर्चा है वही अपरोक्ष रूप में ये देवी सिद्ध करके साधक को इस विश्व का एक दूसरा ईश्वर ही बना डालती हैं। जो इन देवी का आश्रय ग्रहण करता है वह देवी का रूप हो जाता है। इसके अतिरिक्त जो अन्य महाविद्याओं में से किसी एक का भी भक्त है वह अपनी इष्ट की प्रसन्नता के लिए भी इनका भजन करके अपने इष्ट को परम प्रसन्न ही करता है।

इनका अष्टोत्तरशतनाम अतिशीघ्र प्रभावी है जो इस प्रकार है।
देवी छिन्नमस्ता के ये अति गुह्यतम 108 नाम हैं जो पार्वती के द्वारा पूछने पर सदाशिव जी ने कहे थे। ये नाम

छिन्नमस्ता जी के सहस्र नाम के समान फलदायक हैं ऐसा शम्भु ने कहा है। देवी के मंदिर या घर में देवी की पूजा करके जो मनुष्य वैशाख मास की शुक्ल चतुर्दशी को यह पाठ करता है वह सौभाग्य प्राप्त कर कृतकृत्य हो जाता है

॥ श्रीछिन्नमस्तायै नमः ॥

ध्यान–,

प्रत्यालीढपदां सदैव दधतीं छिन्नं शिरः कर्त्रिका दिग्वस्त्रां स्वकबन्धशोणितसुधाधारां पिबन्तीं मुदा।
नागाबद्धशिरोमणिं त्रिनयनां हृद्युत्पलालङ्कृतां रत्यासक्तमनोभवोपरिदृढां ध्यायेज्जवासंनिभाम् ॥

(जो शत्रुओंपर प्रहार हेतु तत्पर चरणोंवाली हैं, जिन्होंने अपने हाथोंमें कटा हुआ सिर तथा खड्ग धारण कर रखा है, दिशाएँ ही जिनके वस्त्र हैं, अपने कबन्धसे प्रवाहित रक्तकी अमृतधाराका जो निरन्तर प्रसन्नतापूर्वक पान करती हैं, अपने शिरोभागमें रत्नके रूपमें जो नाग लपेटे हुई हैं, जो तीन नेत्रोंवाली हैं, जिनका वक्षःस्थल नीलकमलकी मालासे अलंकृत है, रति और कामके मूलमें (मूलाधारचक्रमें) जो विराजमान हैं और जो जपाकुसुमके सदृश आभावाली हैं – उन भगवती छिन्नमस्ताका ध्यान करना चाहिये।)

विनियोग ॐ अस्य श्रीछिन्नमस्ताष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य सदाशिव ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीछिन्नमस्ता देवता मम सकलसिद्धिप्राप्तये जपे विनियोगः।

श्रीपार्वत्युवाच

नाम्नां सहस्त्रं परमं छिन्नमस्ताप्रियं शुभम् ।
कथितं भवता शम्भो सद्यः शत्रुनिकृन्तनम् ॥ १ ॥

पुनः पृच्छाम्यहं देव कृपां कुरु ममोपरि।
सहस्त्रनामपाठे च अशक्तो यः पुमान् भवेत् ॥ २ ॥

तेन किं पठ्यते नाथ तन्मे ब्रूहि कृपामय ।

श्रीसदाशिव उवाच
अष्टोत्तरशतनाम्नां पठ्यते तेन सर्वदा ॥ ३ ॥

सहस्रनामपाठस्य फलं प्राप्नोति निश्चितम् ।

● अथ श्री श्रीछिन्नमस्ता–अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ●

ॐ छिन्नमस्ता महाविद्या महाभीमा महोदरी।
चण्डेश्वरी चण्डमाता चण्डमुण्डप्रभञ्जिनी ॥ ४ ॥

महाचण्डा चण्डरूपा चण्डिका चण्डखण्डिनी।
क्रोधिनी क्रोधजननी क्रोधरूपा कुहूः कला ॥ ५ ॥

कोपातुरा कोपयुता कोपसंहारकारिणी।
वज्रवैरोचनी वज्रा वज्रकल्पा च डाकिनी ॥ ६ ॥

डाकिनीकर्मनिरता डाकिनीकर्मपूजिता ।
डाकिनीसङ्गनिरता डाकिनीप्रेमपूरिता ॥ ७ ॥

खट्वाङ्गधारिणी खर्वा खड्गखप्परधारिणी।
प्रेताशना प्रेतयुता प्रेतसङ्गविहारिणी ॥ ८ ॥

छिन्नमुण्डधरा छिन्नचण्डविद्या च चित्रिणी।
घोररूपा घोरदृष्टिर्घोररावा घनोदरी ॥ ६ ॥

योगिनी योगनिरता जपयज्ञपरायणा ।
योनिचक्रमयी योनिर्योनिचक्रप्रवर्तिनी ॥ १० ॥

योनिमुद्रा योनिगम्या योनियन्त्रनिवासिनी ।
यन्त्ररूपा यन्त्रमयी यन्त्रेशी यन्त्रपूजिता ॥ ११ ॥

कीर्त्या कपर्दिनी काली कङ्काली कलकारिणी।
आरक्ता रक्तनयना रक्तपानपरायणा ॥ १२॥

भवानी भूतिदा भूतिर्भूतिदात्री च भैरवी ।
भैरवाचारनिरता भूतभैरवसेविता ॥ १३ ॥

भीमा भीमेश्वरी देवी भीमनादपरायणा ।
भवाराध्या भवनुता भवसागरतारिणी ॥ १४॥

भद्रकाली भद्रतनुर्भद्ररूपा च भद्रिका।
भद्ररूपा महाभद्रा सुभद्रा भद्रपालिनी ॥ १५ ॥

सुभव्या भव्यवदना सुमुखी सिद्धसेविता ।
सिद्धिदा सिद्धिनिवहा सिद्धा सिद्धनिषेविता ॥ १६ ॥

शुभदा शुभगा शुद्धा शुद्धसत्त्वा शुभावहा।
श्रेष्ठा दृष्टिमयी देवी दृष्टिसंहारकारिणी ॥ १७॥

शर्वाणी सर्वगा सर्वा सर्वमङ्गलकारिणी।
शिवा शान्ता शान्तिरूपा मृडानी मदनातुरा ॥ १८ ॥

इति ते कथितं देवि स्तोत्रं परमदुर्लभम् ।
गुह्याद् गुह्यतरं गोप्यं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ १६ ॥

इति शाक्तप्रमोदे श्रीछिन्नमस्ताष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

30. तंत्रोक्त रात्रिसूक्त से तत्काल भयों का नाश

तंत्रोक्त रात्रिसूक्त और कुछ नहीं मात्र श्री दुर्गा सप्तशती के पहले अध्याय का एक अंश है जो देवी महाकाली की स्तुति है जिसमें ब्रह्मा जी भय से ग्रसित हैं और रक्षा के लिए 10 मुख, 10 भुजा व 10 चरणों को धारण करने वाली पराशक्ति के एक रूप महाकाली को पुकारते हुए दिखाई दे रहे हैं इस स्तुति के श्लोक क्रमांक 84 (अर्थात तंत्रोक्त रात्रिसूक्त में श्लोक नम्बर 13) में स्पष्ट कहा है कि–

1. हे देवी ! आपने ही तीनों देवों को शरीर दिया है अतः आपकी स्तुति करने में फिर कौन समर्थ हो सकता है।
2. जब विष्णु को ही तुमने निद्रा के अधीन कर रखा है तो दूसरा कौन आपकी स्तुति कर सकेगा।
3. आगे कहा कि मैं ब्रह्मा केवल आपको जानता हूँ अतः हे पराम्बा ! रक्षा करो....... रक्षा करो...... रक्षा करो। और विष्णु जी पर से अपना शासन हटा कर उनकी निद्रा दूर करो उनको जगा दो या स्वयं मधु कैटभ का नाश करो।

इनको योगनिद्रा अर्थात महामाया भी कहा जाता है। समस्त ब्रह्माण्डों में पराशक्ति के ये तीन रूप ही सबसे अधिक सामर्थ्यवान हैं।

1. महिषासुर मर्दिनी 18 भुजी महालक्ष्मी जो सहस्रभुजी भी कही गई हैं ये ही मूर्ति रहस्य की मूलतः परादेवी चतुर्भुजी महालक्ष्मी हैं पर ये ही भुवनेश्वरी रूप में भी विराजमान हैं। इनका बीज ह्रीं है । ललिता देवी, कामेश्वरी व त्रिपुर सुन्दरी के रूप में भी ये ही हैं तथा सदाशिव ही लीलावश कामेश्वर हैं। अतः कामेश्वर जी तथा सदाशिव में भेद करना त्याग दें।
2. महासरस्वती– इनके मूल रूप में 4 भुजाएं है। (जो ऐं बीज में समाविष्ट हैं पर ब्रह्मा की सरस्वती इनका अंश है) ये ही आठ भुजा धारण करके देवताओं की रक्षा के लिए कौशिकी बनी अर्थात पार्वती जी के शरीर से प्रकट हुई, शुम्भ और निशुंभ का वध किया । ये ही दुर्गा सप्तशती के उत्तर चरित्र की देवी हैं। मूर्ति रहस्य में इनकी चार भुजाएं बताई गई हैं जो कौशिकी बनकर 8 भुजा धारी बनी । इनकी आठ भुजाओं के आयुधों का वर्णन पंचम अध्याय के ध्यान में किया गया है। साक्षात् महालक्ष्मी को भी दुर्गा और शिवा कहा जाता है तथा पाँचवे अध्याय के नवें श्लोक में इन कौशिकी को भी शिवा कहा है (नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः) , 12 वें श्लोक में इनको दुर्गा कहा है तथा 14 से 76 श्लोक में "या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण या लक्ष्मीरूपेण, बुद्धिरूपेण आदि कहा है वह भी इनके लिए ही समर्पित श्लोक है इससे यह भी सिद्ध होता है कि महिषासुर मर्दिनी महालक्ष्मी (ह्रीं) ही एक रूप से महासरस्वती (कौशिकी ऐं) ही हैं मात्र नाम व बीज मंत्र का भेद है ।
3. महाकाली – उपर्युक्त दोनों देवी के समान अथाह बल व पराक्रम इन महाकाली में है। प्रथम अध्याय में इनको ही परमेश्वरी, परमा और महादेवी की संज्ञा दी है। ये ही शंकर , विष्णु और ब्रह्मा को देह देती हैं ऐसा तंत्रोक्त रात्रिसूक्त में वर्णित है। अतः जो भी इन तीन महादेवियों को ध्याता है (अथवा किसी एक को भी)वह ईश्वर का पद भी प्राप्त कर लेता है ऐसा षोडशी व भुवनेश्वरी माहात्म्य में भी वर्णित है।

इस तन्त्रोक्त रात्रिसूक्त (मार्कण्डेय पुराण की सप्तशती के प्रथम अध्याय की महामाया स्तुति) की देवी अर्थात महाकाली जी (क्लीं बीज मंत्र में समाविष्ट परा शक्ति महामाया)की महिमा लिखने के लिए करोड़ो लेखक भी थक जायेंगे । तो भी अंत में नेति नेति ही कहेंगे।

यह तंत्रोक्त रात्रिसूक्त नामक स्तुति ही मधु कैटभ के संकट व भय के नाश के लिए तत्काल भगवान ब्रह्मा जी ने गायी थी अर्थात उच्चारण किया था अतः इसका सहारा भी देवी के भक्त लेते हैं और तत्काल भय का नाश कर कृत कृत्य हो जाते हैं।

जो महिषासुर मर्दिनी के भक्त हैं वे भी इन महाकाली को साक्षात वही समझें मात्र रूप व भुजाओं का भेद है।

परंतु

संकट के समय

किसी एक रूप को

पुकारें।

महिषासुर मर्दिनी को पुकारना हो तो चतुर्थ अध्याय के चार श्लोक (रक्षा कवच) ही लगातार जपें और जो महाकाली (मधु कैटभ के नाश का कारण) से रक्षा चाहें वे तंत्रोक्त रात्रिसूक्त के 17 श्लोक जपें बार बार । या प्रथम अध्याय के श्लोक 70 से 87

इतना न हो सके तो मात्र श्लोक 83 से 87 का बार बार उच्चारण (11 बार) ही आपकी महा रक्षा करेगा। घोर संकट पर आप इसे ही दोहराते रहें । वन या एकान्त प्रान्त में शुद्धि और अशुद्धि की देखने की आवश्यकता नहीं होती बस देवी को पुकारा जाता है। अतः तत्काल शुद्धि के लिए श्री पुण्डरीकाक्ष का स्मरण करें और रक्षक श्लोक आरंभ कर दें।

इसके पाठ से संपूर्ण भय दूर हो जाते हैं यह महाकाली माता की अमोघ और परा–स्तुति है।

1. इससे सभी प्रकार के उपद्रव दूर
2. सभी डर दूर
3. शत्रु का नाश
4. कलह का समूल क्षय
5. घबराहट दूर
6. दुःख नष्ट
7. दुःस्वप्न दूर होकर शुभ फल प्राप्त
8. कमजोर हृदय भी बलिष्ठ
9. परिवार में कोई भी एक भक्त भी इस ब्रह्माकृत स्तोत्र का पाठ करे (श्रीकृष्ण कृत दुर्गनाशन स्तोत्र का निष्काम सेवन के बाद) तो सारा घर आनंद और सुख समृद्धिसम्पन हो जाता है।

कम से कम हर नवदुर्गा में इन दोनों पाठ को अवश्य ही करना चाहिए। और जो द्विज हैं उनको 8 श्लोकी **वेदोक्त रात्रिसूक्त** को पहले पढ़कर ही इन दोनों पाठों का उच्चारण करना चाहिए।

यह दुर्गनाशन स्तोत्र ब्रह्म वैवर्त पुराण में हमारी पुस्तक स्तोत्र निधिवन में तथा तन्त्रोक्त रात्रिसूक्त दुर्गासप्तशती के प्रथम अध्याय के श्लोक 73 से 87 के श्लोक हैं जो ब्रह्मा जी ने देवी महामाया (महाकाली अर्थात योगनिद्रा

पराम्बा) से रक्षा के लिए प्रार्थना की थी कि वे विष्णु भगवान को जगा दें। और हमारी रक्षा करें। ब्रह्मोवाच वाक्य प्रथम अध्याय का श्लोक क्रमांक 72 है जो स्तुति नहीं मात्र वक्ता का संकेतक है चाहो तो पढ लें। मूल स्तोत्र 73 से 87 तक है (कुल 15 श्लोक) चाहें तो 91 श्लोक तक (70 से 91) भी नित्य पाठ कर सकते हैं या मात्र 73 से 87 अथवा 72 से 87 परंतु गीताप्रेस से प्रकाशित और मूल पाठ को श्लोक 70 (विश्वेश्वरीं.....) से 87 (महासुरौ)तक ही घोषित किया है।

●●●●योगनिद्रास्तुतिः●●●●

अथ श्री तन्त्रोक्त रात्रिसूक्तम्

ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्।

निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः।।1।।

अर्थ – जो इस विश्व की अधीश्वरी, जगत को धारण करने वाली, संसार का पालन और संहार करने वाली तथा तेजःस्वरुप भगवान विष्णु की अनुपम शक्ति हैं, उन्हीं भगवती निद्रा देवी की भगवान ब्रह्मा स्तुति करने लगे।

ब्रह्मोवाच

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।।2।।

अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा।।3।।

अर्थ– देवि! तुम्हीं स्वाहा, तुम्ही स्वधा और तुम्ही वषटकार हो. स्वर भी तुम्हारे ही स्वरुप हैं. तुम्हीं जीवनदायिनी सुधा हो. नित्य अक्षर प्रणव में अकार, उकार, मकार दृ इन तीन मात्राओं के रूप में तुम्हीं स्थित हो तथा इन मात्राओं के अतिरिक्त जो विन्दुरुपा नित्य अर्धमात्रा है, जिसका विशेष रुप से उच्चारण नहीं किया जा सकता, वह भी तुम्हीं हो. देवि! तुम्ही संध्या, सावित्री तथा परम जननी हो.

त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्।
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा।।4।।

अर्थ– देवि! तुम्हीं इस विश्व–ब्रह्माण्ड को धारण करती हो. तुमसे ही इस जगत की सृष्टि होती है. तुम्हीं से इसका पालन होता है और सदा तुम्हीं कल्प के अन्त में सबको अपना ग्रास बना लेती हो.

विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने।
तथा संहृतिरुपान्ते जगतोस्य जगन्मये।।5।।

अर्थ– जगन्मयी देवि! इस जगत की उत्पत्ति के समय तुम सृष्टिरूपा हो, पालनकाल में स्थितिरूपा हो तथा कल्पान्त के समय संहाररूप धारण करने वाली हो.

महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी।।6।।

अर्थ– तुम्हीं महाविद्या, महामाया, महामेधा, महास्मृति, महामोहरूपा, महादेवी और महासुरी हो.

प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा।।7।।

अर्थ– तुम्हीं तीनो गुणों को उत्पन्न करने वाली सबकी प्रकृति हो. भयंकर कालरात्रि, महारात्रि और मोहरात्रि भी तुम्हीं हो.

त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च।।8।।

अर्थ– तुम्हीं श्री, तुम्ही ईश्वरी, तुम्ही ह्री और तुम्ही बोधस्वरुपा बुद्धि हो. लज्जा, पुष्टि, तुष्टि, शान्ति और क्षमा भी तुम्हीं हो.

खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणि तथा।
शंखिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा।।9।।

अर्थ–

1. तुम खड्गधारिणी,
2. शूलधारिणी,
3. घोररुपा तथा
4. गदा, चक्र, शंख और धनुष धारण करने वाली हो.
5. बाण, भुशुण्डी और परिघ ये भी तुम्हारे अस्त्र हैं.

सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।।10।।

अर्थ – तुम सौम्य और सौम्यतर हो इतना ही नहीं, जितने भी सौम्य एवं सुन्दर पदार्थ हैं, उन सबकी अपेक्षा तुम अत्यधिक सुन्दरी हो. पर और अपर सबसे परे रहने वाली परमेश्वरी तुम्ही हो.

यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा।।11।।

अर्थ – सर्वस्वरुपे देवि! कहीं भी सत्–असत् रूप जो कुछ वस्तुएँ हैं और उन सबकी जो शक्ति है, वह तुम्हीं हो. ऐसी अवस्था में तुम्हारी स्तुति क्या हो सकती है?

यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्।
सोपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।।12।।

अर्थ –

जो इस जगत की सृष्टि, पालन और संहार करते हैं,
उन भगवान रमापति
को भी जब तुमने
निद्रा के अधीन कर दिया है,
तब तुम्हारी स्तुति करने में
यहाँ कौन समर्थ हो सकता है?

विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च।
कारितास्ते यतोतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्।।13।।

अर्थ – मुझको, भगवान शंकर को तथा भगवान विष्णु को भी तुमने ही शरीर धारण कराया है. अतः तुम्हारी स्तुति करने की शक्ति किसमें है?

सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ।।14।।

प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ।।15।।

।।इति तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तं सम्पूर्णम्।।

अर्थ– देवि! तुम तो अपने इन उदार प्रभावों से ही प्रशंसित हो. ये जो दोनों दुर्धर्ष असुर मधु और कैटभ हैं, इन को मोह में डाल दो और जगदीश्वर भगवान विष्णु को शीघ्र ही जगा दो. साथ ही इनके भीतर इन दोनो महान असुरों को मार डालने की बुद्धि उत्पन्न कर दो.

।। इस प्रकार तन्त्रोक्त रात्रिसूक्त सम्पूर्ण हुआ।।

31. देवी की महाकृपा के लिए अक्षय फल की तिथि–

1. मोहरात्रि (जन्माष्टमी),
2. कालरात्रि (नरक चतुर्दशी),
3. दारूण रात्रि (होली) और
4. अहोरात्रि (शिवरात्रि)
5. नवरात्रि (चारों)
6. इन 5 पर्वों के दिन किया गया ध्यान–भजन, जप–तप अनंत गुना फल देता है। तथा वर्ष प्रतिपदा (चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा या गुड़ी पड़वा),
7. अक्षय तृतीया (वैशाख शुक्ल तृतिया)
8. विजयादशमी (आश्विन शुक्ल दशमी या दशहरा) ये पूरे तीन महा मुहूर्त तथा
9. कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा (बलि प्रतिपदा) का आधा इस प्रकार साढ़े तीन मुहूर्त स्वयं सिद्ध हैं (अर्थात् इन दिनों में कोई भी शुभ कर्म करने के लिए पंचांग–शुद्धि या शुभ मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं रहती)। ये साढ़े तीन मुहूर्त सर्वकार्य सिद्ध करने वाले हैं।(बालबोधज्योतिषसारसमुच्चयः 7.79.80
10. सोमवती अमावस्या,
11. रविवारी सप्तमी,
12. मंगलवारी चतुर्थी,
13. बुधवारी अष्टमी ये चार तिथियाँ सूर्यग्रहण के बराबर कही गयी हैं। इनमें किया गया जप–ध्यान, स्नान , दान व श्राद्ध अक्षय होता है। अतः देवी या भगवान के भक्त इन तिथियों का भरपूर उपयोग कर अपना कल्याण कर लें। अक्षय तृतीया को दिये गये दान, किये गये स्नान, जप–तप व हवन आदि शुभ कर्मों का अनंत फल मिलता है। भविष्य पुराण' के अनुसार इन सबब तिथियों को किये गये सभी कर्मों का फल अक्षय हो जाता है, इसलिए इसका नाम 'अक्षय' पड़ा है।
14. 'मत्स्य पुराण' के अनुसार इस तिथि का उपवास भी अक्षय फल देता है। त्रेतायुग का प्रारम्भ इसी तिथि से हुआ है। इसलिए यह समस्त पापनाशक तथा सर्वसौभाग्य–प्रदायक है।
15. यदि चतुर्दशी के दिन आर्द्रा नक्षत्र का योग हो तो उस समय किया गया प्रणव (ॐ) का जप अक्षय फलदायी होता है।(शिव पुराण, विद्येश्वर संहिताः अध्याय 10 'सर्वसिद्धिकरः पुष्यः।' इस शास्त्रवचन के अनुसार पुष्य नक्षत्र सर्वसिद्धिकर है।
16. शुभ, मांगलिक कर्मों के सम्पादनार्थ गुरूपुष्यामृ योग वरदान सिद्ध होता है। इस योग में किया गया जप–ध्यान, दान–पुण्य महाफलदायी होता है परंतु पुष्य में विवाह व उससे संबंधित सभी मांगलिक कार्य वर्जित हैं।
17. निष्काम भाव से किया गया कोई भी कार्य कल्याण का हेतु होने से अनंतफल ही कहा जाता है।
18. ब्रह्मज्ञानी गुरु या 1 पुरश्चरण करके 3 साल तक अखंड ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले महात्मा का संगकाल भी अक्षयफल दायक है।

32. श्रीचण्डी कवच (देवी कवच या दुर्गा कवच)

यह कवच चिरंजीवी मार्कण्डेय जी के द्वारा पूछने पर भगवान ब्रह्मा ने बताया था जो अति गुप्त है लोगो ने इसका नाम तो सुना है पर माहात्म्य पता नहीं इसी कारण वे तीन काल या दो काल इसका पाठ नहीं करते जो भी तीन काल पाठ करते हुये दुर्गा सप्तशती के संपूर्ण या मध्यम चरित्र का पाठ करता है उस भक्त के दर्शन से ही 51 शक्तिपीठों के दर्शन का फल मिल जाता है और उस भक्त के नाम के स्मरण से विष्ण ब्रह्मा व रुद्र स्मरण का फल भी मिलने लगता है वह भक्त इस धरती पर साक्षात् ब्रह्म का ही एक विग्रह मानने योग्य है। तो आइए हम श्री चण्डी (पराम्बा) कवच का पाठ करते हैं इस कवच के पाठ से पहले तीन महादेवियों (श्रीमहालक्ष्मी, श्रीमहासरस्वती और श्री महाकाली) तथा 10 महाविद्याओं , मातृकाओं ,नवदुर्गाओं और पंचक प्रकृति भैरवियाँ तथा योगिनियों की मानसिक या प्रत्यक्ष पूजा अवश्य करें अथवा शंकराचार्य कृत 17 श्लोक मानसिक पूजा स्तोत्र से सबका पूजन मान्य हो जाता है वह भी पढ़ सकते हैं । इन सबकी पूजा के बाद कवच पाठ से 100 गुना लाभ होगा।

श्रीगुरु व श्री गणपति पूजा के बाद इन सभी देवियों की पूजा करें तदोपरान्त विनियोग और मूल कवच।

भाषा की कोई भी चिन्ता न करें तेलगू और तमिल कन्नड असमिया आदि लोग अपनी मूल मातृ भाषा में ही पाठ करके देवी के दर्शन तक पा जाते हैं पर आप भारतीय व संस्कृत को जानते हो तो संस्कृत में ही पढ़े क्योंकि इसका एक एक शब्द (ऐसा ही ब्रह्मा जी की वाणी से निकला है तो विशेष प्रभाव डालेगा ही इन संस्कृत के श्लोकों में ब्रह्मा की शाक्त भक्ति का तेज भी मिला है और ब्राह्मी मातृका की परम कृपा ही है । हम पहले हिन्दी में पाठ दे रहे हैं तदोपरान्त मूल भाषा में।

विनियोग–

ॐ इस श्रीचण्डीकवच के ब्रह्मा ऋषि, अनुष्टुप् छन्द, चामुण्डा देवता, अङ्गन्यासमें कही गयी माताएँ बीज, दिग्बन्ध देवता तत्त्व हैं, श्रीजगदम्बाकी प्रीतिके लिये (सप्तशतीके पाठाङ्गभूत जपमें) इसका विनियोग किया जाता है।

ॐ चण्डिकादेवीको नमस्कार है।

(कवच आरम्भ करनेके पहले इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिये – महान् रौद्ररूप, अत्यन्त घोर पराक्रम, महान् बल और महान् उत्साहवाली देवि ! तुम महान् भयका नाश करनेवाली हो, तुम्हें नमस्कार है ॥ १६ ॥ तुम्हारी ओर देखना भी कठिन है। शत्रुओंका भय बढ़ानेवाली जगदम्बिके ! मेरी रक्षा करो। ।।१७।।)

अथ श्री चण्डिका कवचम् –

मार्कण्डेयजीने कहा– पितामह ! जो इस संसारमें परम गोपनीय तथा मनुष्योंकी सब प्रकारसे रक्षा करनेवाला है और जो अबतक आपने दूसरे किसीके सामने प्रकट नहीं किया हो, ऐसा कोई साधन मुझे बताइये ॥ १ ॥

ब्रह्माजी बोले– ब्रह्मन् ! ऐसा साधन तो एक देवीका कवच ही है, जो गोपनीयसे भी परम गोपनीय, पवित्र तथा सम्पूर्ण प्राणियोंका उपकार करनेवाला है। महामुने ! उसे श्रवण करो ॥ २॥

देवीकी नौ मूर्तियाँ हैं, जिन्हें 'नवदुर्गा' कहते हैं। उनके पृथक् – पृथक् नाम बतलाये जाते हैं।

प्रथम नाम शैलपुत्री है। दूसरी मूर्ति का नाम ब्रह्मचारिणी है। तीसरा स्वरूप चन्द्रघण्टा के नामसे प्रसिद्ध है। चौथी मूर्तिको कूष्माण्डा कहते हैं। पाँचवीं दुर्गा का नाम स्कन्दमाता है। देवी के छठे रूप को कात्यायनी कहते हैं। अर्थात छठवीं दुर्गा का नाम कात्यायनी ही है ।

सातवाँ दुर्गा कालरात्रि हैं और आठवाँ स्वरूप महागौरी के नामसे प्रसिद्ध है। नवीं दुर्गाका नाम सिद्धिदात्री है। ये सब नाम सर्वज्ञ महात्मा वेदभगवान्के द्वारा ही प्रतिपादित हुए हैं ॥ ३–५ ॥

जो मनुष्य अग्निमें जल रहा हो, रणभूमिमें शत्रुओंसे घिर गया हो, विषम संकटमें फँस गया हो तथा इस प्रकार भयसे आतुर होकर जो भगवती दुर्गा की शरणमें प्राप्त हुए हों, (अर्थात दुर्गा जी का स्मरण आरंभ कर दे या इन नवदुर्गाओं के नाम सतत् आरंभ कर दे तो) उनका कभी कोई अमङ्गल नहीं होता(फिर चाहे उसका प्रारब्ध कैसा ही क्यों न हो देवी चण्डी तत्काल उसका संरक्षण करती है जो इनका सुमिरन करता है) युद्धके समय संकटमें पड़नेपर भी उनके ऊपर कोई विपत्ति नहीं दिखायी देती। उन्हें शोक, दुःख और भयकी प्राप्ति नहीं होती ॥

जिन्होंने भक्तिपूर्वक (नाम या स्तोत्र के द्वारा) देवीका स्मरण किया है, उनका निश्चय ही अभ्युदय होता है। देवेश्वरि ! जो तुम्हारा चिन्तन करते हैं, उनकी तुम निःसन्देह रक्षा करती हो ॥ ८ ॥

●चामुण्डा देवी (श्री काली) प्रेतपर आरूढ़ होती हैं।

●वाराही भैंसेपर सवारी करती हैं।

●ऐन्द्रीका वाहन ऐरावत हाथी है।

●वैष्णवी देवी गरुडपर ही आसन जमाती हैं ॥ ९ ॥

●माहेश्वरी वृषभपर आरूढ़ होती हैं।

●कौमारीका वाहन मयूर है।

●भगवान् विष्णुकी प्रियतमा लक्ष्मीदेवी कमलके आसनपर विराजमान हैं और हाथोंमें कमल धारण किये हुए हैं ॥ १०॥

●वृषभपर आरूढ़ ईश्वरी देवीने श्वेत रूप धारण कर रखा है।

●ब्राह्मीदेवी हंसपर बैठी हुई हैं और सब प्रकारके आभूषणोंसे विभूषित हैं। ॥११ ॥

● इस प्रकार ये सभी माताएँ सब प्रकारकी योगशक्तियोंसे सम्पन्न हैं। इनके सिवा और भी बहुत–सी–देवियाँ हैं, जो अनेक प्रकारके आभूषणों की शोभासे युक्त तथा नाना प्रकारके रत्नोंसे सुशोभित हैं ॥ १२ ॥

● ये सम्पूर्ण देवियाँ (शत्रु व पापियों के नाश के लिये) क्रोधमें भरी हुई हैं और भक्तों की रक्षाके लिये सौम्य होकर रथपर बैठी दिखायी देती हैं।

●ये शङ्ख, चक्र, गदा, शक्ति, हल और मुसल, खेटक और तोमर, परशु तथा पाश, कुन्त और त्रिशूल एवं उत्तम शाङ्र्गधनुष आदि अस्त्र–शस्त्र अपने हाथोंमें धारण करती हैं।

●दैत्योंके शरीरका नाश करना, भक्तोंको अभयदान देना और देवताओंका कल्याण करना – यही उनके शस्त्र–धारणका उद्देश्य है ॥ १३–१५ ॥

●महान् रौद्ररूप, अत्यन्त घोर पराक्रम, महान् बल और महान् उत्साहवाली देवि ! तुम महान् भयका नाश करनेवाली हो, तुम्हें नमस्कार है ॥ १६ ॥ तुम्हारी ओर देखना भी कठिन है। शत्रुओंका भय बढ़ानेवाली जगदम्बिके ! मेरी रक्षा करो।

●पूर्व दिशामें ऐन्द्री (इन्द्रशक्ति) मेरी रक्षा करे।

●अग्निकोणमें अग्निशक्ति,

●दक्षिण दिशामें वाराही तथा

●नैऋत्यकोणमें खड्गधारिणी मेरी रक्षा करे।
●पश्चिम दिशामें वारुणी और
●वायव्यकोणमें मृगपर सवारी करनेवाली देवी मेरी रक्षा करे ॥ १७–१८॥
●उत्तर दिशामें कौमारी और
●ईशानकोणमें शूलधारिणीदेवी रक्षा करे।
●ब्रह्माणि (ब्राह्मी) तुम ऊपरकी ओरसे मेरी रक्षा करो और
●वैष्णवीदेवी नीचेकी ओरसे मेरी रक्षा करे ॥ १९ ॥
● इसी प्रकार शव को अपना वाहन बनानेवाली चामुण्डादेवी दसों दिशाओंमें मेरी रक्षा करे।
●जया आगेसे और विजया पीछेकी ओरसे मेरी रक्षा करे ॥ २० ॥
●वामभागमें अजिता और
●दक्षिणभागमें अपराजिता रक्षा करे।
●उद्योतिनी शिखाकी रक्षा करे।
●उमा मेरे मस्तकपर विराजमान होकर रक्षा करे ॥ २१ ॥
●ललाटमें मालाधरी रक्षा करे और
●यशस्विनीदेवी मेरी भौंहोंका संरक्षण करे।
●भौंहोंके मध्यभागमें त्रिनेत्रा और
●नथुनोंकी यमघण्टादेवी रक्षा करे ॥ २२ ॥
●दोनों नेत्रोंके मध्यभागमें शङ्खिनी और
●कानोंमें द्वारवासिनी रक्षा करे।
●कालिकादेवी कपोलोंकी तथा
●भगवती शांकरी कानोंके मूलभागकी रक्षा करे ॥ २३ ॥
●नासिकामें सुगन्धा देवी और
●ऊपरके ओठमें चर्चिका देवी रक्षा करे।
●नीचेके ओठमें अमृतकला तथा
●जिह्वामें सरस्वतीदेवी रक्षा करे ॥ २४ ॥
●कौमारी दाँतोंकी और
●चण्डिका कण्ठप्रदेशकी रक्षा करे।
● चित्रघण्टा गलेकी घाँटीकी और
● महामाया (10 भुजा धारण करने वाली प्रथम चरित्र की महाकाली) तालुमें रहकर रक्षा करे ॥ २५ ॥
●कामाक्षी ठोढ़ीकी और
●सर्वमङ्गला मेरी वाणीकी रक्षा करे।
●भद्रकाली ग्रीवामें और
●धनुर्धरी पृष्ठवंश (मेरुदण्ड–) में रहकर रक्षा करे ॥ २६ ॥

●कण्ठके बाहरी भागमें नीलग्रीवा और

●कण्ठकी नलीमें नलकूबरी रक्षा करे।

●दोनों कंधोंमें खड्गिनी औ मेरी दोनों भुजाओंकी वज्रधारिणी रक्षा करे ॥२७॥

●दोनों हाथोंमें दण्डिनी और

●अंगुलियोंमें अम्बिका रक्षा करे।

●शूलेश्वरी नखोंकी रक्षा करे।

●कुलेश्वरी कुक्षि (पेट) में रहकर रक्षा करे ॥ २८ ॥

● महादेवी दोनों स्तनोंकी और

●शोकविनाशिनी देवी मनकी रक्षा करे।

●ललितादेवी हृदयमें और

●शूलधारिणी उदरमें रहकर रक्षा करे ॥ २९ ॥

● नाभिमें कामिनी और

●गुह्यभागकी गुह्येश्वरी रक्षा करे।

●पूतना और कामिका लिङ्गकी और

●महिषवाहिनी गुदाकी रक्षा करे ॥ ३० ॥

●भगवती कटिभागमें और

●विन्ध्यवासिनी घुटनोंकी रक्षा करे।

●सम्पूर्ण कामनाओंको देनेवाली महाबला देवी दोनों पिण्डलियोंकी रक्षा करे ॥ ३१ ॥

●नारसिंही दोनों घुट्टियोंकी और

●तैजसीदेवी दोनों चरणोंके पृष्ठभागकी रक्षा करे।

●श्रीदेवी पैरोंकी अङ्गुलियोंमें और

●तलवासिनी पैरोंके तलुओंमें रहकर रक्षा करे ॥ ३२ ॥

●अपनी दाढ़ोंके कारण भयंकर दिखायी देनेवाली दंष्ट्राकरालीदेवी नखोंकी और ●ऊर्ध्वकेशिनीदेवी केशोंकी रक्षा करे।

● रोमावलियोंके छिद्रोंमें कौबेरी और

●त्वचाकी वागीश्वरीदेवी रक्षा करे ॥ ३३ ॥

●पार्वतीदेवी रक्त, मज्जा, वसा, मांस, हड्डी और मेदकी रक्षा करे।

●आँतोंकी कालरात्रि और

●पित्तकी मुकुटेश्वरी रक्षा करे ॥ ३४ ॥

●मूलाधार आदि कमल– कोशोंमें पद्मावतीदेवी और

●कफमें चूडामणिदेवी स्थित होकर रक्षा करे।

●नखके तेजकी ज्वालामुखी रक्षा करे।

●जिसका किसी भी अस्त्रसे भेदन नहीं हो सकता, वह अभेद्यादेवी शरीरकी समस्त संधियोंमें रहकर रक्षा करे ॥ ३५ ॥

●ब्रह्माणि! आप मेरे वीर्यकी रक्षा करें।

●छत्रेश्वरी छायाकी तथा

●धर्मधारिणीदेवी मेरे अहंकार, मन और बुद्धिकी रक्षा करे ॥ ३६ ॥

●हाथमें वज्र धारण करनेवाली वज्रहस्तादेवी मेरे प्राण, अपान, व्यान,उदान और समान वायुकी रक्षा करे।

●कल्याणसे शोभित होनेवाली भगवती कल्याणशोभना मेरे प्राणकी रक्षा करे ॥ ३७ ॥

●रस, रूप, गन्ध, शब्द और स्पर्श–इन विषयोंका अनुभव करते समय योगिनीदेवी रक्षा करे तथा ●सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुणकी रक्षा सदा नारायणीदेवी करे ॥ ३८ ॥

●वाराही आयुकी रक्षा करे।

●वैष्णवी धर्मकी रक्षा करे तथा

●चक्रिणी (चक्र धारण करनेवाली) देवी यश, कीर्ति, लक्ष्मी, धन तथा विद्याकी रक्षा करे ॥ ३६ ॥ ●इन्द्राणि! आप मेरे गोत्रकी रक्षा करें।

●चण्डिके ! तुम मेरे पशुओंकी रक्षा करो।

●महालक्ष्मी पुत्रोंकी रक्षा करे और

●भैरवी पत्नीकी रक्षा करे ॥ ४० ॥

●मेरे पथकी सुपथा तथा

●मार्गकी क्षेमकरी रक्षा करे।

●राजाके दरबारमें महालक्ष्मी रक्षा करे तथा

●सब ओर व्याप्त रहनेवाली विजयादेवी सम्पूर्ण भयोंसे मेरी रक्षा करे ॥ ४१ ॥

●देवि ! जो स्थान कवचमें नहीं कहा गया है, अतएव रक्षासे रहित है, वह सब तुम्हारे द्वारा सुरक्षित हो; क्योंकि तुम विजयशालिनी और पापनाशिनी हो ॥ ४२ ॥

(हे मार्कण्डेय जी ! अब तुम इस परम पावन देवी कवच के पाठ की महिमा को सुनें)

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

■यदि अपने शरीरका भला चाहे तो मनुष्य बिना कवचके कहीं एक पग भी न जाय–कवचका पाठ करके ही यात्रा करे।

■ कवचके द्वारा सब ओरसे सुरक्षित मनुष्य जहाँ–जहाँ भी जाता है, वहाँ–वहाँ उसे धन लाभ होता है तथा

■सम्पूर्ण कामनाओंकी सिद्धि करनेवाली विजयकी प्राप्ति होती है।

■वह जिस–जिस अभीष्ट वस्तुका चिन्तन करता है, उस–उसको निश्चय ही प्राप्त कर लेता है।

■वह पुरुष इस पृथ्वीपर तुलनारहित महान् ऐश्वर्यका भागी होता है ॥ ४३–४४ ॥

■कवचसे सुरक्षित मनुष्य निर्भय हो जाता है।

■युद्धमें उसकी पराजय नहीं होती तथा

■ वह तीनों लोकोंमें पूजनीय होता है ॥ ४५ ॥

■ देवीका यह कवच देवताओंके लिये भी दुर्लभ है।■ जो प्रतिदिन नियमपूर्वक
●●●तीनों संध्याओंके समय ●●●

श्रद्धाके साथ इसका पाठ करता है, उसे दैवी कला प्राप्त होती है तथा वह तीनों लोकोंमें कहीं भी पराजित नहीं होता। इतना ही नहीं, वह अपमृत्युसे रहित हो, सौसे भी अधिक वर्षोंतक जीवित रहता है ॥ ४६–४७॥

■ त्रिकाल पाठ करने से बिना औषधि के ही मकरी, चेचक और कोढ़ आदि उसकी सम्पूर्ण व्याधियाँ नष्ट हो जाती हैं। रोगों के नाश की महान औषधि यह चण्डी कवच ही है।

■इसके पाठ करने से कनेर, भाँग, अफीम, धतूरे आदिका स्थावर विष, साँप और बिच्छू आदिके काटनेसे चढ़ा हुआ जङ्गम विष तथा अहिफेन और तेलके संयोग आदिसे बननेवाला कृत्रिम विष– ये सभी प्रकारके विष दूर हो जाते हैं, उनका कोई प्रभाव नहीं होता ॥ ४८ ॥

■इस पृथ्वीपर मारण–मोहन आदि जितने आभिचारिक प्रयोग होते हैं तथा इस प्रकारके जितने मन्त्र–यन्त्र होते हैं, वे सब इस

■कवचको हृदयमें धारण कर लेनेपर उस मनुष्यको देखते ही नष्ट हो जाते हैं।

■ये ही नहीं, पृथ्वीपर विचरनेवाले ग्रामदेवता, आकाशचारी देवविशेष, जलके सम्बन्धसे प्रकट होनेवाले गण, उपदेशमात्रसे सिद्ध होनेवाले निम्नकोटिके देवता, अपने जन्मके साथ प्रकट होनेवाले देवता, कुलदेवता, माला (कण्ठमाला आदि), डाकिनी, शाकिनी, अन्तरिक्षमें विचरनेवाली अत्यन्त बलवती भयानक डाकिनियाँ, ग्रह, भूत, पिशाच, यक्ष, गन्धर्व, राक्षस, ब्रह्मराक्षस, बेताल, कूष्माण्ड और भैरव आदि अनिष्टकारक देवता भी हृदयमें कवच धारण किये रहनेपर उस मनुष्यको देखते ही भाग जाते हैं।

■ कवचधारी पुरुष को शीघ्र ही राजा (शासन करने वाला , भौतिक स्तर के महापदी) से सम्मान व वृद्धि प्राप्त होती है।

■यह कवच मनुष्यके तेजकी वृद्धि करनेवाला और उत्तम है ॥ ४६ – ५२ ॥

■कवचका पाठ करनेवाला पुरुष अपनी महान कीर्तिसे विभूषित होता है और इस भूतलपर अपने सुयशके साथ–साथ महावृद्धि को प्राप्त होता है।

■ वंश रक्षा– हे मार्कण्डेय जी !

जो पहले कवचका पाठ करके उसके बाद आपके द्वारा रचित पावन शास्त्र (मार्कण्डेय पुराण) का दिव्य सारभूत सप्तशती चण्डी अर्थात दुर्गा सप्तशती का पाठ करता है, उसकी जबतक वन, पर्वत और काननोंसहित यह पृथ्वी टिकी रहती है, तबतक यहाँ पुत्र–पौत्र आदि संतानपरम्परा बनी रहती है ॥५३–५४ ॥

■फिर देहका अन्त होनेपर वह पुरुष भगवती महामायाके प्रसादसे उस नित्य परमपदको प्राप्त होता है, जो देवताओंके लिये भी दुर्लभ है ॥ ५५ ॥ वह सुन्दर दिव्य रूप धारण करता और कल्याणमय शिवके साथ आनन्दका भागी होता है ॥ ५६

●●●●●●●● देवी–कवच सम्पूर्ण●●●●●●●

जो भक्त संस्कृत में ही पाठ करने का इच्छुक हो वह कृपया अग्र वर्णित मूलभाषा में पाठ करें।....................

ॐ नमः शिवायै

श्री चण्डी कवच (देवी कवच/दुर्गा कवच)

●●●●●●●●●●●●●●

कवच के पाठ से पहले यह प्रार्थना अवश्य करें –
नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि॥
त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि।

●●●●●●●●●●●●●●

विनियोग –

ॐ अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, चामुण्डा देवता, अङ्गन्यासोक्तमातरो बीजम्, दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम्, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः।

●●●●●●●●●●●●●●●

॥अथ श्री देव्याः कवचम्॥

ॐ नमश्चण्डिकायै॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम्।
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह॥१॥

ब्रह्मोवाच

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम्।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने॥२॥

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥३॥

पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्॥४॥

नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना॥५॥

अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः॥६॥

न तेषां जायते किंचिदशुभं रणसंकटे।
नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि॥७॥

यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः॥८॥

प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना।
ऐन्द्री गजसमारुढा वैष्णवी गरुडासना॥९॥

माहेश्वरी वृषारुढा कौमारी शिखिवाहना।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया॥१०॥

श्वेतरुपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना।
ब्राह्मी हंससमारुढा सर्वाभरणभूषिता॥११॥

इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः।
नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः॥१२॥

दृश्यन्ते रथमारुढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः।
शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम्॥१३॥

खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च।
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शाङ्र्गमायुधमुत्तमम्॥१४॥

दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च।
धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै॥१५॥

नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि॥१६॥

त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता॥१७॥

दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी॥१८॥

उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा॥१६॥

एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना।
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः॥२०॥

अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता।
शिखामुद्योतिनि रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता॥२१॥

मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी।
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके॥२२॥

शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी।
कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शांकरी॥२३॥

नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका।
अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती॥२४॥

दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका।
घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ॥२५॥

कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमङ्गला।
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी॥२६॥

नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी।
स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी॥२७॥

हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च।
नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी॥२८॥

स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनः शोकविनाशिनी।
हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी॥२६॥

नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी ॥३०॥

कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी।
जङ्घे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी ॥३१॥

गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी।
पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत्पादाधस्तलवासिनी॥३२

नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी।
रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा॥३३॥

रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी॥३४॥

पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा।
ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसंधिषु॥३५॥

शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा।
अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी॥३६॥

प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम्।
वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना॥३७॥

रसे रुपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी।
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा॥३८॥

आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी।
यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी॥३९॥

गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके।
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी॥४०॥

पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा।
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता॥४१॥

रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु।
तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी॥४२॥

●●●●●●●●●●●●●●●

ॐ 卐 ॐफलश्रुति ॐ 卐 ॐ

पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः।
कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति॥४३॥

तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः।

यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान॥४४॥

निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः।
त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान॥४५॥

इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम् ।
यः पठेत्प्रयतो नित्यं ●त्रिसन्ध्यं● श्रद्धयान्वितः॥४६॥

दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः।
जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः। ४७॥

नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः।
स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम॥४८॥

अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले।
भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः॥४९॥

सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा।
अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः॥५०॥

ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः।
ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ॥५१॥

नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते।
मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम॥५२॥

यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले।
जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा॥५३॥

यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम्।
तावत्तिष्ठति मेदिन्यां संततिः पुत्रपौत्रिकी॥५४॥

देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम्।
प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः॥५५॥

लभते परमं रुपं शिवेन सह मोदते॥ॐ॥५६॥
इति देव्याः कवचं सम्पूर्णम्।

33. आठ आठ के क्रम से बत्तीस और सात मातृकाएं

श्री माहेश्वरी मातृका के कारण भगवान शंकर की शक्ति का अस्तित्व है, श्रीवैष्णवी मातृका विष्णु जी के समस्त चमत्कारों की कारणभूत देवी हैं। व श्रीकाली मातृका काल की भी काल है । श्री नारसिंही प्रभु नरसिंह की शक्ति का मूल है। अतः विस्तार से देखते हैं। हम सभी को नमन करते हैं।–

मातृकाएं और उनकी कृपा –

मातृकाएं महान शक्तियों का एक पर्याय है भगवती भुवनेश्वरी ने आठ देवताओं को अपनी आठ शक्तियाँ प्रदान की इनको ही अष्ट मातृकाओं के रूप में जाना जाता है। इन शक्तियों के बिना इन देवों का कोई विशेष अस्तित्व नहीं रह जाता। हर एक मन्वन्तर में हर इन्द्र के पास जो अतुलनीय पॉवर आता है वह ऐन्द्री मातृका की कृपा से ही आता है। प्रत्येक ब्रह्माण्ड के विष्णु जी का अतुलनीय साहस व बल पराक्रम वैष्णवी शक्ति के कारण आता है। और कुछ ग्रंथों में 108 सिद्ध पीठ के नामों में मातृकाओं में वैष्णवी की प्रधानता का महत्व है और कहीं कहीं शांकरी तथा नारसिंही आदि का परम महत्व है।
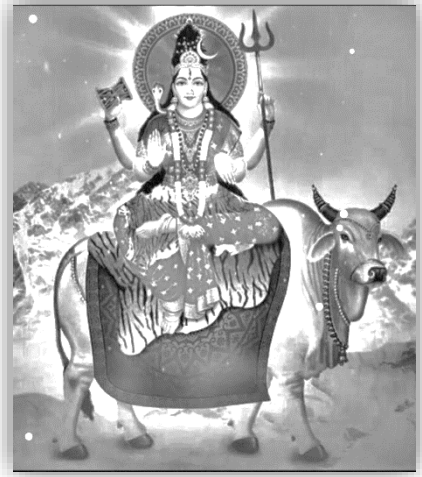
1. हिन्दू धर्म में यह आठ मातृ शक्तियाँ महामाताओं का एक सुप्रसिद्ध समूह है जिनकी उत्पत्ति आदिशक्ति भुवनेश्वरी के ललाट से उत्पन्न गौरी (पार्वती)से हुई है।
2. अष्ट मातृकाओं में इन देवियों की गिनती की जाती है जिनकी पूजा व्यापक रूप से होती है। संपूर्ण भारत में इनकी पूजा विशेष रूप से होती है।
3. अष्टमातृकाओं की पूजा मुख्यतः नेपाल में भी की जाती है जो आठ महादेवियों का रक्षक समूह है। इनमे से हर देवी किसी न किसी देवता की शक्ति को प्रदर्शित करती है।
4. इन सभी मातृकाओं का त्रिकाल समय सुमिरन का भी महान महात्म्य है। 'मातृका' का मूल शब्द 'मातृ' है जिसका अर्थ है 'माँ' इनमें वह शक्ति है जो पराशक्ति के पास **है।**
5. **ये आठों ही इस ब्रह्मांड की सभी शक्तियों की रक्षक हैं पालनकर्ता भी है। जैसे वसुन्धरा का कण कण सूर्य से ऊर्जा प्राप्त करता है, उसी प्रकार इस ब्रह्माण्डीय ऊर्जा अपनी शक्ति मातृकाओं से प्राप्त करता है**
6. **मातृकाओं का स्थान तंत्र–विद्या में भी अत्यधिक है शिवा या शिव पूजा में इनकी सेवा अनिवार्य मानी जाती है।**
7. **इनकी एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका है इनमें अतुलनीय क्षमता व अथाह बल पराक्रम है।**
8. **वह स्वयं ही अपनी ही लीला से अनेक ब्रह्माण्डीय कार्यों का संचालन भी करती हैं। भिन्न भिन्न स्वरूप धारण कर भक्तों के कल्याण में ये तत्पर रहती हैं। और शिवा तक अपने भक्तों को पहुंचाती हैं। यह देवीय संपदा पूर्व पश्चिम सहित दसो दिशाओं पर शासन करती है**

उत्पति कथा –

मार्कण्डेय पुराण में वर्णित है कि युद्ध में चण्डिका (कौशिकी) की सहायता के लिए सप्त मातृकाएं उत्पन्न हुईं थीं। ये सप्तमातृकाएं चण्डिका में ही समाविष्ट हो गई। इन्हीं सप्तमातृकाओं की सहायता से देवी ने रक्तबीज का वध किया था। ये सात देवियां अपने वाहन तथा आयुध के साथ प्रकट होती हैं। ये सात उन सात देवों की शक्तियों को ही कहते है। सप्तशती नामकदेवी महात्म्यम में प्रकाट्य कथा (जो कि मार्कण्डेय पुराण का ही अंश है)देवी श्रीकाली को यदि मातृका भी माना जाए तो सप्तशती में ये 8 मातृकाएं हो जाती हैं।

दुर्गा सप्तशती के आठवें अध्याय में आठ मातृगणों का वर्णन है। ये मातृगण यही हैं न कि अन्य बस पुरुष रूप के कारण इनको यहाँ मातृगण कहा गया है।

असुर रक्तबीज पर इन्होनें घात किया और देवी चण्डिका को प्रसन्न किया। विष्णु की शक्ति वैष्णवी हो या महेश की शक्ति माहेश्वरी अथवा नरसिंह जी की शक्ति प्रत्यंगिरा

ये महासरस्वती (ऐं) की आज्ञा से कभी बाहर नहीं जाती।

जब दैत्य (शुम्भ) कौशिकी नामक महा सरस्वती को युद्ध में ललकार रहा था, तब महाकौशिकी जी ने लीलावश इनकी सहायता ली थी। श्रीदुर्गासप्तशती के इस अष्टम पाठ में इनके बल पराक्रम का वर्णन हुआ है।

देवी काली तो सुभद्र हैं ही वे शूलके प्रहारसे विदीर्ण करने लगी और खट्वाङ्गसे उनका कचूम निकालती हुई रणभूमिमें विचरने लगी।

●● ब्रह्माणी भी जिस जिस ओर दौड़ती, उसी–उसी ओर अपने कमण्डलुका जल छिड़ककर शत्रुओंके ओज और पराक्रमको नष्ट कर देती थी। ये ब्रह्मा जी की शक्ति बड़ी ही दयालु और सौम्य हैं।

●●माहेश्वरी त्रिशूलसे शत्रु को नष्ट करती हैं तथा

●●वैष्णवी चक्र से और

●●अत्यन्त क्रोधमें भरी हुई कुमार कार्तिकेय की शक्ति शक्तिसे दैत्योंका संहार करती हैं।

●●इन्द्रशक्तिके वज्रप्रहारसे विदीर्ण हो सैकड़ों दैत्य–दानव रक्तकी धारा बहाते हुए पृथ्वीपर सो जाते हैं जय जय एन्द्री।

●● वाराही शक्ति अनगिनत को अपनी थूथुनकी मारसे नष्ट कर डालती हैं, दाढ़ोंके अग्रभागसे कितनोंकी छाती छेद डालती हैं तथा कितने ही दैत्य उनके चक्रकी चोटसे विदीर्ण होकर गिर पड़ते ।

●●नारसिंही भी दूसरे दूसरे महादैत्योंको अपने नखोंसे विदीर्ण करके खाती और सिंहनादसे दिशाओं एवं आकाशको गुँजाती हुई युद्ध–क्षेत्रमें विचरने लगी। कितने ही असुर शिवदूतीके प्रचण्ड अट्टहाससे अत्यन्त भयभीत हो पृथ्वीपर गिर पड़े और गिरनेपर उन्हें शिवदूतीने उस समय अपना ग्रास बना लिया ।

इस प्रकार क्रोधमें भरे हुए मातृगणोंको नाना प्रकारके उपायोंसे बड़े–बड़े असुरोंका मर्दन करते देख दैत्यसैनिक भाग खड़े हो जाते हैं। मातृगणोंसे पीड़ित दैत्योंको युद्धसे भागते देख रक्तबीज नामक महादैत्य क्रोधमें भरकर युद्ध करनेके लिये आया । उसके शरीरसे जब रक्तकी बूँद पृथ्वीपर गिरती, तब उसीके समान शक्तिशाली एक दूसरा महादैत्य पृथ्वीपर पैदा हो जाता ।

●महासुर रक्तबीज हाथमें गदा लेकर इन्द्रशक्तिके साथ युद्ध करने लगा।तब ऐन्द्रीने अपने वज्रसे रक्तबीजको मारा ॥

वज्र से घायल होनेपर उसके शरीरसे बहुत–सा रक्त बहने लगा और ससे उसीके समान रूप तथा पराक्रमवाले योद्धा उत्पन्न होने लगे । उसके शरीरसे रक्तकी जितनी बूँदें गिरीं, उतने ही पुरुष उत्पन्न हो गये। वे सब

रक्तबीजके समान ही वीर्यवान्, बलवान् तथा पराक्रमी थे । वे रक्तसे उत्पन्न होनेवाले पुरुष भी अत्यन्त प्रयंकर अस्त्र–शस्त्रोंका प्रहार करते हुए वहाँ मातृगणोंके साथ घोर बुद्ध करने लगे । पुनः वज्रके प्रहारसे जब उसका मस्तक घायल हुआ, तब रक्त बहने लगा और उससे हजारों पुरुष उत्पन्न हो गये ।

● वैष्णवीने युद्धमें रक्तबीजपर चक्रका प्रहार किया तथा

●ऐन्द्रीने उस दैत्यसेनापतिको गदासे चोट पहुँचायी ॥ वैष्णवीके चक्रसे घायल होनेपर उसके शरीरसे जो रक्त बहा और उससे जो उसीके बराबर आकारवाले सहस्रों महादैत्य प्रकट हए, उनके द्वारा सम्पूर्ण जगत् व्याप्त हो गया ।

●●कौमारी ने शक्ति से,

●●वाराही ने खड्गसे और

●● माहेश्वरीने त्रिशूल से महादैत्य को घायल किया ॥

क्रोधमें भरे हुए उस महादैत्य रक्तबीज ने भी गदासे सभी मातृ–शक्तियोंपर पृथक् पृथक् प्रहार या शक्ति और शूल आदिसे अनेक बार घायल होनेपर जो उसके शरीरसे रक्तकी धारा पृथ्वीपर गिरी, उससे भी निश्चय ही सैकड़ों असुर उत्पन्न हुए।

इस प्रकार उस महादैत्यके रक्तसे प्रकट हुए असुरोंद्वारा सम्पूर्ण जगत् व्याप्त हो गया । इससे उन देवताओंको बड़ा भय हुआ । पर मातृ–शक्तियों के माध्यम से पराशक्ति ने विश्व का संरक्षण किया।

श्री मातृका रक्षा कवच –

●हे भद्रकाली ! आप दक्षिण दिशा से हमारी रक्षा करो।
● हे माहेश्वरी! आप नैऋत्य कोण से हमारी रक्षा करो।
● हे वाराही ! पश्चिम दिशा से आप हमारा संरक्षण करें।
● वायव्य कोण में सर्वमंगला रुपी कौमारी हमारी रक्षा करें।
● उत्तर दिशा में वैष्णवी सदा ही हमारी रक्षा करें
● ईशान कोण में शिव प्रिया भुवनेश्वरी हमारी रक्षा करें।
● पूर्व में एन्द्री रक्षा करें।
● अग्निकोण में ब्रह्मा की शक्ति ब्राह्मी सदैव रक्षण में लगी रहें।
● जल स्थल और अंतरिक्ष में नारसिंही रक्षा करें।
● ऊपर नीचे तथा सभी अंगों की रक्षा नृसिंह भगवान से प्रकट सभी बत्तीस मातृकाएं करें ।
● शत्रुओं का नाश श्रीमहारुद्र से उत्पन्न मातृकायें करें।
● अंतःकरण की रक्षा आपका मूल तत्व पराशक्ति सदा करें।
● और मेरा नित्य अभ्युदय मेरे अवगुण देखे बिना ही आपकी कृपा और अनुग्रह सदा ही चिरकाल तक करें ।

देखिए अति संक्षेप में एक कथा जो मातृकाओं पर आधारितहै। –

देवताओंको उदास देख चण्डिकाने काली से शीघ्रतापूर्वक कहा –

'चामुण्डे ! तुम अपना मुख और भी फैलाओ ॥

तथा मेरे शस्त्रपातसे गिरनेवाले रक्तबिन्दुओं से
उत्पन्न होनेवाले महादैत्योंको तुम क्षणभर में समाप्त करो।

यहाँ काली को एक मातृका के रूप में वर्णित किया गया हैं। चंड–मुंड का संहार करने के लिये काली को चामुंडा भी कहा गया है। ये भी लीलावश मातृका रूप ही हैं

मत्स्य पुराण के अनुसार–

इस पुराण में वास्तु शान्ति, सौम्य शान्ति , याम्या शान्ति और वैष्णवी शान्ति का उपाय अद्‌भुत तरीके से बताया है। इस मत्स्य पुराण में मातृकाओं के प्राकट्य की कथा विस्तृत रुप में दी गयी है।इसी मन्वंतर में हिरण्याक्ष राक्षस का पुत्र अंधक शिव का परमभक्त था । शिव ने उसे वर प्रदान किया था 'रणभूमि में तुम्हारे रक्त की एक एक बूँद से नया अंधकासुर उत्पन्न होगा, जिसे कारण तुम युद्ध में अजेय होंगे । शिव के इस आशीर्वाद के कारण, सारी पृथ्वी अंधकासुरों से पीड़ित व त्रस्त होने लगी।

फिर इन अंधकासुरों के रक्त का भक्षण करने के लिए शिवजी ने 200 से अधिक मातृकाओं का निर्माण किया । इन्होने अंधकासुर का सारा रक्त पान कर लिया तदोपरान्त शिव ने अंधकासुर का वध किया । अंधकासुर का वध होने के पश्चात्, शिव के द्वारा उत्पन्न 200 के लगभग मातृकाएं पृथ्वी के समस्त प्राणियों का रक्त पीने को उत्सुक हुई। ये अति क्रोध को शांत न कर पायी और सबको भक्षण की ओर अग्रसर हुई। चूंकि शिव जी ने इनका निर्माण किया था अतः शिव इनको नहीं मार सकते थे।

फिर उनका नियंत्रण करने के लिए, शिवजी ने नृसिंहजी का आवाहन किया,

●●उनका विनाशपात

रुद्रद्वारा इस प्रकार कहे जानेपर नरसिंह–विग्रहधारी भगवान् श्रीहरिने –

1. अपनी जीभसे वागीश्वरी को प्रकट किया। ये वागीश्वरी 8 मातृकाओं के समूह पर नियंत्रण करती हैं।
2. हृदयसे मायाको, ये देवी माया भी अन्य 8 मातृकाओं के समूह पर नियंत्रण करती हैं।
3. गुह्यप्रदेशसे भवमालिनी को प्रकट किया। यह देवी भी 32 में से अन्य 8 मातृकाओं के समूह पर नियंत्रण करती हैं। और
4. हड्डियों से काली महाशक्ति को प्रकट किया। ये देवी भी अन्य 8 मातृकाओं के समूह पर नियंत्रण करती हैं।

उन महात्माने इस कालीकी सृष्टि पहले भी की थी, जिसने महान् आत्मबलसे सम्पन्न अन्धकोंके रुधिरका पान किया था और जो इस लोकमें शुष्करेवती नामसे प्रसिद्ध है।

इसी प्रकार सुदर्शन चक्रधारी भगवान्ने अपने अङ्गोंसे बत्तीस अन्य मातृकाओंकी सृष्टि की, वे सभी महान् भाग्यशालिनी थीं। मैं उनके नामोंका वर्णन कर रहा हूँ, तुम उन्हें मुझसे श्रवण करो। उनके नाम हैं–

●घण्टाकर्णी,

●त्रैलोक्यमोहिनी,

●पुण्यमयी

●सर्वसत्त्ववशंकरी,

●चक्रहृदया,●

व्योमचारिणी,

●शङि्खनी,●

लेखिनी और ●

काल–संकर्षणी।

! ये वागीश्वरीके पीछे चलनेवाली उनकी अनुचरी कही गयी हैं।

● संकर्षणी,● अश्वत्था, ●बीजभावा, ●अपराजिता, ●कल्याणी, ●मधुदंष्ट्री, ●कमला और ●उत्पलहस्तिका– ये आठों देवियाँ मायाकी अनुचरी कहलाती हैं।

●अजिता, ●सूक्ष्महृदया, ●वृद्धा, ●वेशाश्मदर्शना, ●नृसिंहभैरवा,● बिल्वा, ●गरुत्महृदया और ●जया–ये आठों मातृकाएँ भवमालिनीकी अनुचरी हैं।

अब देवी शुष्करेवति (श्रीकाली नामक देवी जो श्रीनरसिंह जी की हड्डियों से प्रकट हुई इस कथा में और ये ही काली पहले दक्ष यज्ञ में सती के देहांत के बाद दक्ष को मारने गई थी) की आठ अनुचरी सुनों –

●आकर्णनी, यह काली माता अर्थात् शुष्करेवति की अनुचरी हैं

●सम्भटा, यह भी काली माता अर्थात् शुष्करेवति की अनुचरी हैं

●उत्तरमालिका, यह काली माता अर्थात् शुष्करेवति की अनुचरी हैं

●ज्वालामुखी, यह भी काली माता अर्थात् शुष्करेवति की अनुचरी हैं

●भीषणिका, ...''..............''......................''................''................

●कामधेनु, ...''..............''......................''................''................

●बालिका ....''..............''......................''................''................

तथा

● पद्मकरा– ये भी श्री शुष्करेवती अर्थात श्री कालीकी अनुचरी कही जाती हैं। आठ–आठ के विभागसे भगवान् नरसिंह के शरीरसे उद्भूत हुई ये सभी 32 देवियाँ महान् बलवती तथा त्रिलोकीके सृजन और संहारमें समर्थ थीं। ये महा मातृकाएं हैं।

●●●●●●●

इन बतीस मातृकाओं ने सभी 200 के लगभग मातृकाओं को शांत किया। नरसिंह ने इन शिवजनित मातृकाओं के क्रोध को नष्ट किया और माता के रूप में पूजित किया । इस प्रकार ये मातृकायें सदा से ही देव व मानव के अनुकूल होकर उनकी रक्षा करने लगी। **ये**

देवताओं की युद्ध में सहायता करने वाली शक्तियाँ हैं, जो शत्रु–संहारक हैं तथा पालनकर्ता वाला रूप भी ।

●●

वैष्णवी –

ये भगवान विष्णु की शक्ति को प्रदर्शित करती हैं। इनकी भी चार भुजाएँ हैं जिनमे ये भगवान विष्णु की भांति शंख, चक्र, गदा एवं शार्गधनुष व खड्ग भी धारण करती है। नारायण की भांति ये विविध आभूषणों से ऐश्वर्य का प्रदर्शन करती हैं तथा इनका वाहन भी गरुड़ है।

खण्ड खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः।
वज्रेण चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथापरे ।

वैष्णवी ने भी अपने चक्र से दानवों के टुकड़े–टुकड़े कर डाले। ऐन्द्री के हाथ से छूटे हुए वज्र से भी कितने ही प्राणों से हाथ धो बैठे।

●●नारसिंही–

नारसिंही अपने शत्रु को नाखूनों से विदीर्ण करती हैं ।इनको नरसिंहिका भी कहते हैं।

विष्णु अवतार श्री नृसिंह की प्रतीक इन देवी का स्वरुप भी उन नरसिंह जी से मिलता है। इन्हे नरसिंहिका एवं प्रत्यंगिरा भी कहा जाता है।

●●ब्रह्माणी–

ये परमपिता ब्रह्मा की शक्ति कही गई हैं ये हंसारूढ हैं अक्षसूत्र और कमण्डलु से सुशोभित है यह सप्तशती के आठवें अध्याय के 15 वें श्लोक में वर्णन हैं।

ये पीत वर्ण की है तथा इनकी चार भुजाएँ हैं। ब्रह्मदेव की तरह इनका आसन कमल एवं वाहन हंस है।

माहेश्वरी– 16वें श्लोक में माहेश्वरी जी का वर्णन हुआ है।

चार भुजाओं वाली ये देवी वृषभ पर विराजमान रहती हैं। इनका दूसरा नाम रुद्राणी या रुद्र शक्ति भी है जो महारुद्र की संपूर्ण शक्ति का परिचय देती है। श्री शंकर महादेव की भांति ये भी त्रिनेत्रधारी एवं त्रिशूलधारी हैं। इनके हाथों में त्रिशूल, डमरू, रुद्राक्ष माला एवं कपाल स्थित रहते हैं। यज्ञ वाराही–

ये भगवान विष्णु के अवतार यज्ञवाराह अवतार की शक्ति का नाम है। ये अपने चार हाथों में दंड, हल, खड्ग एवं पानपत्र धारण करती हैं । इनके आयुध भगवान वराह के आयुधों की भांति हैं । ये शत्रुओं को अपनी थूथुन से मार भगाती हैं। हालांकि इस सप्तशती में यह शक्ति पुरुष रूप में है इस कारण मातृगण की उपमा दी गई ।

माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे।
वाराहीतुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृता भुवि ।।

अर्थात

कितने ही दैत्य माहेश्वरी के त्रिशूल सेछिन्न–भिन्न हो धराशायी हो गये। वाराही के थूथुन के आघात से कितनों का पृथ्वी पर कचूमर निकल गया । अतः इनका पराक्रम अतुलनीय है।

ऐन्द्री–

ये देवराज इंद्र की शक्ति को प्रदर्शित करती हैं जिन्हे ऐन्द्री, महेन्द्री एवं वज्री भी कहा जाता है। इनकी चार भुजाएं एवं हजार नेत्र बताये गए हैं। इंद्र की भांति ही ये वज्र धारण करती हैं और ऐरावत पर विराजमान रहती हैं।

कौमारी –

कौमारि कार्तिकेय की शक्ति स्वरूपा ये देवी कुमारी, कार्तिकी और सप्तशती के अनुसार जगदम्बिका या अम्बिका नाम से भी कही गई हैं ये अपने चारो हाथों में परशु, भाला, धनुष एवं रजत मुद्रा धारण करती हैं। कभी–कभी इन्हे स्कन्द की भांति छः हाथों के साथ भी दिखाया जाता है।

कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः ।
ब्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः ।।

कौमारी की शक्ति से विदीर्ण होकर कितने ही महादैत्य नष्ट हो गये ब्रह्माणी के मन्त्रपूत जल से निस्तेज होकर कितने ही भाग खड़े हुए।

है।

चामुण्डा– ये वैकृतिक रहस्य के अनुसार नवशक्तियों में से एक है। एक नवशक्ति का नाम शिवदूती है। अन्य 7 ये नारसिंही व कुमारी आदि ।

ये देवी चण्डिका के आधे अंश से प्रकट हुई हैं ऐसा श्रीमद्देवीभागवत महापुराण कहती है। और उन्ही की शक्तियों का प्रतिनिधित्व करती हैं । सति के देहांत के तत्काल बाद वीरभद्र के साथ ये ही दक्ष नाश के लिए गई थी । इनको चर्चिकाई भी कहा जाता है। इनका रंग महामाया (10 भुजी महाकाली) के समान श्यामवर्ण है नरमुंडों से घिरी कृष्ण वर्ण की ये देवी अपने चारों भुजाओं में डमरू, खड्ग, त्रिशूल एवं पानपत्र लिए रहती हैं। त्रिनेत्रधारी ये देवी सियार पर सवार शवों के बीच में अत्यंत भयानक प्रतीत होती हैं।पर भक्तों के लिए सौभाग्यदायक और सौम्य हैं माता के समान ही हैं।

34. त्रिशक्ति माहात्म्य अतुलनीय ऐश्वर्यदायक

1. यह संपूर्ण कथा वराह पुराण पर आधारित है जो यदि लाल चंदन या केसर से अथवा अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखी जाए तो सारे संसार का वशीकरण तक कर देती है।
2. इस कथा की पुस्तक की पूजा की जाए तो हे देवी! चराचर जगत और सभी लोकों की पूजा तत्काल हो जाती है अर्थात् इस प्रसंग को लिखकर जो प्रसंग की पूजा करेगा उसके द्वारा एक ही बार की पूजा से चर और अचर तीनों लोको की पूजा हो जायेगी ।ऐसा वराह पुराण में लिखा है।
3. प्रभु वराह ने कहा कि–'हे देवी पृथ्वी! जो देवी पराम्बा की नित्य आराधना करने में समर्थ न हो यदि वह मात्र हर माह की नवमी को इन तीनों देवी (त्रिशक्ति) के इस प्रसंग का पाठ करेगा वह अतुल राज्य और ऐश्वर्य प्राप्त कर लेगा तथा सभी भयों व संकट से मुक्त हो जायेगा । यह मेरा वचन सत्य है बार बार सत्य है।
4. जिसके घर पर यह त्रिशक्ति माहात्म्य लिखा हुआ होगा उसे अग्निभय, चोर भय, सर्प भय और राजा से या मंत्री आदि से कभी भी भय नहीं होगा।
5. उस भक्त का जो अनिष्ट करने की इच्छामात्र करेगा वह इन त्रिशक्ति के कोप से अतिशीघ्र नष्ट हो जायेगा । वह शत्रु राजा भी हो तो वह श्रीहीन होकर पदच्युत हो जायेगा। (तथा समय हो तो अक्षयरुद्र एक बात और कहना चाहता है वह यह कि देवी दुर्गा के शक्तिपीठमयी 108 नामों को भी साथ में लिख लें। वे 108 नाम इसी महाग्रंथ में हैं।) इस त्रिशक्ति प्रसंग के माहात्म्य का भलीभांति वर्णन मैं भी नहीं कर सकता।
6. जो इस प्रसंग का पाठ हर नवमी को करेगा उसके यहाँ इसी जीवन में मृत्यु से पहले ही सब कुछ सहज ही प्राप्त हो जायेगा और
7. इन तीनों देवियों की स्वरूपा ये 18 करोड़ कन्याएं (देवियाँ)भी उस पर विशेष अनुग्रह करेंगी उस भक्त को वे सभी अपना पुत्र मानकर हर पल संरक्षण करेंगी।
8. इस कारण उसे अतुलनीय धन धान्य, सहस्रो गाय, अनेक पशु, पुत्र, सेवक, दास, दासियाँ आदि तथा वह जो जो कामना करेगा उसे सब कुछ देकर इस पृथ्वीपर एक दूसरा देवता ही बना देंगी।

हे पृथ्वी ! इन सभी देवियों के अध्यक्ष कैलासपति महारुद्र है।

जिस घर में त्रिदेवों की पावन दृष्टिकोण से उत्पन्न त्रिकला देवी का नाम उच्चारित होगा वह घर पावन हो जायेगा। इन त्रिकला महादेवी ने ही अपने आपको तीन रूपों में विभक्त कर लिया तो वे त्रिकला के तीन स्वरूप ही त्रिशक्ति कहलाए। इन त्रिशक्ति में एक वैष्णवी थी इन वैष्णवी से अनेक महान सौन्दर्य से परिपूर्ण व सिद्धियों से युक्त कन्याओं का प्रकाट्य हुआ। (आगे सुनें) इनका माहात्म्य अतुलनीय है।

1. यह त्रिशक्ति और इन 22 कन्याओं सहित अनेक कन्याओं का माहात्म्य जिस गृह में शोभायमान होता है (लाल अक्षरों में या केसर अथवा चंदन आदि से लिखकर रखा होता है) उस घर के सदस्यों का अभ्युदय निश्चित ही होता है।
2. (इसका पुस्तक रूप बनाकर अपने गृह में सदा रखें । यह सब आपको विस्तार से वराह पुराण के अध्याय 90–91 के आसपास मिल जायेगा
3. उस पुस्तक पर मात्र एक पुष्प अर्पित करने से ही चराचर जगत के समस्त देवी देवताओं और भगवत् कोटी के प्रभु की पूजा हो जाती है।

4. यह माहात्म्य जिस गृह में रखा हुआ होता है उस घर में अग्नि और विष से किसी की भी मृत्यु नहीं होती।
5. और देवता भी उस गृहस्थ को नमन करते हैं। सिद्धपीठ मयी अष्टोत्तरशतनाम की भी यही महिमा है जो मत्स्य पुराण में व श्रीमद्देवीभागवत महापुराण में है पर यह त्रिशक्ति माहात्म्य भी लिखा जा सकता है। आईये हम इस माहात्म्य के दर्शन करते हैं।)

भगवान् वराह कहते हैं – सुन्दर अङ्गोंसे शोभा पानेवाली वसुंधरे ! उस 'सृष्टिदेवी 'का विधान भी बहुत विस्तृत है, उसे बताता हूँ, सुनो–परमेष्ठी रुद्र के द्वारा जो वह तीन शक्तिवाली देवी बतायी गयी है, उसके प्रकरणमें सर्वप्रथम शारदा माहात्म्य सुनें ।

● विभावरी देवी –

यह श्वेत वर्णवाली सृष्टिदेवी का प्रसङ्ग है। वह देवी सम्पूर्ण अक्षरोंसे युक्त होनेपर भी 'एकाक्षरा' कहलाती है। यह देवी कहीं तो 'वागीशा' और कहीं 'सरस्वती' कही जाती है और कहीं वह 'विश्वेश्वरी' और 'अमिताक्षरा' नामसे भी प्रसिद्ध है। कुछ स्थलोंमें उसीको'ज्ञाननिधि' अथवा 'विभावरी' देवी भी कहते हैं। अथवा वरानने! जितने भी स्त्रीवाची नाम हैं, वे सभी उसके नाम हैं, ऐसा समझना चाहिये।

● वैष्णवी –

विष्णुके अंशवाली 'वैष्णवी' देवी● का वर्ण लाल है। उनकी आँखें बड़ी–बड़ी हैं तथा उनका रूप अत्यन्त मनोहर है। (ध्यान दें कि विष्णु जी के पास जो अतुलनीय शक्ति है वह एक मातृका शक्ति के कारण है उनका नाम भी वैष्णवी मातृका है)

●रौद्री–

ये दोनों शक्तियाँ तथा तीसरी जो रुद्रके अंशसे अभिव्यक्त रौद्रीशक्ति है, भगवान् रुद्रको जानने वाले के लिये एक साथ सिद्ध हो जाती है। देवी वसुंधरे !

यह सर्वरूपमयी देवी त्रिकला एक ही है, परंतु (वह एक ही यहाँ इस प्रकार) तीन भेदोंसे निर्दिष्ट है। मूल पराशक्ति का त्रिकला रूप ही इन तीन रूपों में हैं इनमें भी तत्वतः भेद नहीं ;मात्र व्यवहारिक लीला से ही भेद प्रतीत होता है।

सुन्दरि ! मैंने तुम्हारे सामने इसी सनातनी सृष्टि देवीका वर्णन किया है। स्थावर–जङ्गममय यह अखिल जगत् उस सृष्टि देवीसे ओतप्रोत है। जो यह सृष्टि देवी है, जिससे आदिकालमें अव्यक्तजन्मा ब्रह्माकी सृष्टिका सम्बन्ध हुआ था, उसकी (महिमाको जानकर) पितामह ब्रह्माने उचित शब्दोंमें (इस प्रकार) स्तुति की थी।

(अर्थात सरस्वती स्तोत्र ही है यह)

ब्रह्माजी बोले – देवि ! तुम सत्यस्वरूपा, सदा अचल रहनेवाली, सबको आश्रय देनेमें कुशल, अविनाशी, सर्वव्यापी, सबको जन्म देनेवाली, अखिल प्राणियोंपर शासन करनेमें परम समर्थ, सर्वज्ञ, सिद्धि–बुद्धिरूपा तथा सम्पूर्ण सिद्धियोंको प्रदान करनेवाली हो। सुन्दरि ! तुम्हारी जय हो ! देवि ! ओंकार तुम्हारा स्वरूप है, तुम उसमें सदा विराजती हो, वेदोंकी उत्पत्ति भी तुमसे ही हुई है। मनोहर मुखवाली देवि ! देवता, दानव, यक्ष, गन्धर्व, राक्षस, पशु और वीरुध (वृक्ष–लता आदि)–इन सबका जन्म तुम्हारी ही कृपासे होता है। तुम्हीं विद्या, विद्येश्वरी, सिद्धा और सुरेश्वरी हो।'

भगवान् वराह कहते हैं – वसुंधरे ! जो वैष्णवी देवी तपस्या करनेके लिये मन्दराचल पर्वतपर गयी थी, अब उसका वर्णन सुनो–उस देवीने कौमारव्रत धारणकर विशाल–क्षेत्रमें एकाकी रहकर कठोर तप आरम्भ किया। बहुत दिनोंतक तपस्या करनेके पश्चात् उस देवीके मनमें विक्षोभ उत्पन्न हुआ, जिससे अन्य बहुत–सी कुमारियाँ उत्पन्न हो गयीं; उनके नेत्र बड़े सुन्दर एवं बाल काले और घुँघराले थे। उनके होठ बिम्बाफलके समान लाल थे और आँखें बड़ी–बड़ी थीं और उन कन्याओंके शरीरसे दिव्य प्रकाश फैल रहा था। ऐसी करोड़ों कुमारियाँ उस वैष्णवी देवीके शरीरसे प्रकट हुई थीं, फिर उस देवीने उन कुमारियोंके लिये सैकड़ों नगर और ऊँचे महलोंका निर्माण किया। उन भवनों के भीतर मणियों की सीढ़ियाँ, अनेक जलाशय एवं छोटे–छोटे सुन्दर उपवन थे। उस मन्दराचलपर स्थित उन असंख्य भवनोंमें अब वे कन्याएँ निवास करने लगीं।

(जो आज भी हैं जो भी मनुष्य इन वैष्णवी देवी का सुमिरन करता है वह विष्णु जी की कृपा तो पाता ही है साथ में उन कन्याओं की सहज सहायता भी पा लेता है)

शोभने ! उनमेंसे प्रधान–प्रधान 22 कन्याओंके नाम इस प्रकार हैं–

- विद्युत्प्रभा,
- चन्द्रकान्ति,
- सूर्यकान्ति,
- गम्भीरा,
- चारुकेशी,
- सुजाता,
- मुञ्जकेशिनी,
- उर्वशी,
- शशिनी,
- शीलमण्डिता,
- चारुकन्या,
- विशालाक्षी,
- धन्या,
- चन्द्रप्रभा,
- स्वयम्प्रभा,
- चारुमुखी,
- शिवदूती,
- विभावरी,
- जया,
- विजया,
- जयन्ती और
- अपराजिता।

इन देवियोंने भगवती वैष्णवीके अनुचरियोंका स्थान ग्रहण कर लिया। इन 22 कन्याओं का स्मरण सिद्धियों की प्राप्ति में परम सहायक हैं क्योंकि ये बाईस कन्याओं समस्त सिद्धियों से युक्त और वैष्णवी की भक्त हैं इनकी कृपा के लिए शुद्ध आहार विहार अनिवार्य है इनको माँस मदिरा अप्रिय है ये पत्ते फूल और हविष्यान्न की सात्विक देवियों का समूह है ये वैष्णवों (या शाकाहारी शैवों) से शीघ्र सिद्ध होती हैं

इतनेमें ब्रह्माके पुत्र तपोधन नारदजी एक दिन वहाँ अचानक आ गये। उन्हें देखकर वैष्णवीदेवीने विद्युत्प्रभासे कहा– तुम इन्हें यह आसन दो तथा पैर धोने और आचमन करनेके लिये जल भी बहुत शीघ्र इनके पास उपस्थित कर दो।

इस प्रकार वैष्णवी देवीके कहनेपर विद्युत्प्रभा नामक कन्या ने मुनिवर नारदको आसन, पाद्य और अर्घ्य निवेदन किया और वे भी देवीको नमस्कारकर आसनपर बैठ गये। अब वैष्णवीने उनसे कहा– 'मुनिवर! इस समय आप किस लोकसे यहाँ पधारे हैं और आपका क्या कार्य है ? नारदमुनिने कहा–'कल्याणि ! मैं पहले ब्रह्मलोकमें गया था, फिर वहाँसे इन्द्रलोकमें और फिर कैलासपर्वतपर पहुँचा। देवेश्वरि ! पुनः मेरे मनमें आपके दर्शनकी इच्छा हुई, अतः यहाँ आ गया। इस प्रकार कहकर श्रीमान् नारद मुनि वैष्णवी देवीकी ओर देखने लगे। नारद आश्चर्यसे चकित हो गये ! उन्होंने मनमें सोचा। 'अहो ! इनका रूप तो बड़ा विचित्र है। इनकी सुन्दरता, धीरता एवं कान्ति कैसी आश्चर्यकारिणी है। फिर इतनेपर भी इनकी उपरति – निष्कामता तो और ही आश्चर्यदायिनी है। यह सब देख नारदजी फिर कुछ खिन्न–से हो गये तथा सोचने लगे– 'देवता.....गन्धर्व, सिद्ध, यक्ष, किंनर और राक्षसोंकी स्त्रियोंमें भी कोई इतना सुन्दर नहीं है। विश्वकी अन्य स्त्रियोंमें भी कहीं ऐसा रूप नहीं दीखता।

फिर नारदजी सहसा उठे और वैष्णवीदेवीको प्रणामकर आकाश मार्गद्वारा समुद्रमें स्थित महिषासुरकी राजधानीमें पहुँच गये। उसने ब्रह्माजीके वरप्रसादसे सारी देव–सेनाको पराजित कर दिया था। महिषासुरने सभी लोकोंमें विचरण करनेवाले नारदमुनिको आये देखकर बड़ी श्रद्धा–भक्तिसे पूजा की।

(नोट – यह महिषासुर रम्भ दानव का बेटा था और रम्भ के माता पिता का नाम दनु और कश्यप था जो इसी मन्वन्तर की संपूर्ण घटना है इसी मन्वन्तर में दनु नामक दक्ष की पुत्री का जन्म हुआ था दक्ष पूर्व जन्म में जिन 24 कन्याओं का पिता था उनमें दनु या दिति अदिति आदि बेटियों का समूह नही था। ये तो दक्ष के पुनर्जन्म में ही 60 पुत्रियों के अंतर्गत ही सब कुछ हुआ।इस वैवस्वत मन्वन्तर में ही इन साठ में दनु व कश्यप जी से अनेक दानव उत्पन्न हुए। इन दानवों में रम्भ और करम्भ दो मुख्य थे पर कश्यप की ही संतान (इन्द्र) ने अपने ही पिता के (अन्य माँ से जन्में) पुत्र करम्भ को तपस्या के बीच ही मार डाला इसका विस्तार हम यहाँ नहीं करेंगे आप श्रीमद्देवीभागवत महापुराण में महिषासुर के जन्म का रहस्य पढ़े)

नारदमुनिने उस असुरसे कहा – असुरेन्द्र !

सावधान होकर सुनो। विश्व में परम रत्नके समान एक कन्या प्रकट हुई है। तुमने तो वरदानके प्रभावसे चर–अचर तीनों लोकोंको अपने वशमें कर लिया है। दैत्य ! मैं ब्रह्मलोकसे मन्दराचलपर गया, वहाँ मैंने देवीकी वह पुरी देखी, जोसैकड़ों कन्याओंसे व्याप्त है। उनमें जो सबसे प्रधान है वैसी देवताओं, दैत्यों और यक्षोंके यहाँ भी कोई सुन्दरी कन्या नहीं दिखायी देती। कहाँ तक कहूँ, मैंने ●उसकी जैसी सुन्दरता● देखी है तथा उसमें जितना सतीत्वका प्रभाव है, ऐसी कन्या समस्त ब्रह्माण्डमें भी कभी कहीं नहीं देखी। देवता, गन्धर्व, ऋषि, सिद्ध, चारण तथा सब अन्य दैत्योंके अधिपति भी उसी कन्याकी उपासना करते हैं। पर देवताओं और गन्धर्वोपर जो विजय प्राप्त करनेमें समर्थ न हो, ऐसा कोई भी व्यक्ति उस कन्याको जीतनेमें समर्थ नहीं है।

वसुंधरे ! इस प्रकार कहकर नारद मुनि क्षणभर वहाँ ठहरकर फिर महिषासुरसे आज्ञा लेकर तुरंत वहाँसे प्रस्थित हो गये और वे जिधरसे आये थे, उधर ही आकाशकी ओर चले गये।भगवान् वराह बोले – नारदजीके चले जानेपर

महिषासुर सदा चकितचित्तसे उसी कन्याका ध्यान करने लगा।

अतः उसे तनिक भी कहीं चैन न था। वह रात दिन उसी सौन्दर्य से परिपूर्ण कन्या के दर्शन की कामना करने लगा।

अब उसने अपने मन्त्रिमण्डलको बुलाया। उसके आठ मन्त्री थे, जो सभी शूरवीर, नीतिमान् एवं बहुश्रुत थे। वे थे–

●प्रघस,

●विघस,

●शङ्कुकर्ण,

●विभावसु,

●विद्युन्माली,

●सुमाली,

●पर्जन्य और

●क्रूर।

वे महिषासुरके पास आकर बोले कि 'हम– लोगोंके लिये जो सेवाकार्य हो, आप उसकी तुरंत आज्ञा कीजिये।' उनकी बात सुनकर दैत्योंका शासक पराक्रमी महिषासुर बोला– 'नारदजीके कथनानुसार मैंने एक कन्या को पानेके लिये तुमलोगोंको यहाँ बुलाया है। मन्त्रियो ! देवर्षि नारदने मुझे एक सुन्दरी की बात बतायी है; किंतु देवताओंके स्वामी इन्द्रको जीते बिना उसकी प्राप्ति सम्भव नहीं है। अब आप सब लोग विचारकर शीघ्र बतायें कि वह कन्या किस प्रकार सुलभ होगी और देवता कैसे पराजित होंगे ?'

महिषासुरके ऐसा कहनेपर सभी मन्त्री अपना– अपना मत बतलाने लगे।

प्रघस बोला – 'दैत्यवर ! आपसे नारदमुनिने जिस कन्याकी बात कही है, वह महान् सती है। उसका नाम 'वैष्णवी 'देवी है। उस सुन्दर रूप धारण करनेवाली देवी को वैष्णव जन पराशक्ति का एक स्वरूप कहते हैं ।

●जो गुरुकी पत्नी, ●राजाकी रानी● तथा सामन्त, मन्त्री या ●सेनापतिकी स्त्रियोंके अपहरणकी इच्छा करता है, वह राजा शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

प्रघसके इस प्रकार कहनेपर विघसने कहा– 'राजन् ! उस देवीके विषयमें प्रघसने सत्य बात ही बतलायी है। यदि सब लोगोंका एक मत हो जाय और बुद्धि इस बातका समर्थन करे तो सर्वप्रथम हमें उस कन्याका वरण ही करना चाहिये। परंतु स्वच्छन्दतापूर्वक उसका बलात् अपहरण या अपकर्षण कदापि ठीक नहीं है। मन्त्रिवरो ! यदि मेरी बात आपलोगोंको रुचे तो हम सभी मन्त्री उस देवीके पास चलकर प्रार्थना करें।

1. पहले साम– नीतिसे ही काम लेना चाहिये।
2..यदि इससे काम न बने तो हमलोगों को दान (दाम) का आश्रय लेना चाहिये।
3. इतनेपर भी काम न बने तो भेद–नीतिका सहारा लिया जाय।
4. और यदि इतनेपर भी काम न बने, तो अन्तमें दण्डका प्रयोग करना चाहिये।

इस क्रमसे नीतियोंका प्रयोग करनेपर भी यदि वह कन्या न मिल सके तो हम सभी लोग अपने अस्त्र–शस्त्रोंसे सुसज्जित होकर चलें और फिर बलपूर्वक उसे देवताओंसे छीन लें।

विघस के इस प्रकार कहनेपर अन्य मन्त्री बोले, उस सुन्दरी कन्याके विषयमें विघसने जो बात कही है, वह बहुत ही युक्त है। हमलोग यथाशीघ्र वही करें। अब शास्त्रोंके जानकार, नीतिज्ञ, पवित्र और शक्तिसम्पन्न एक दूतको वहाँ भेज दिया जाय। दूतके द्वारा उसके रूप, पराक्रम, शौर्य–गर्व, बल, बन्धुओंके सहयोग, सामग्री, रहनेके साधन आदिकी जानकारी प्राप्तकर उस देवीको प्राप्त करनेके लिये प्रयत्न करना चाहिये। जब विघसने सभामें यह बात कही तो सब लोग उसे 'साधु–साधु' (बहुत ठीक) कहने लगे। सुन्दरि ! तदनन्तर सभी मन्त्रियों ने मन्त्रि श्रेष्ठ विघसकी प्रशंसा की और साथ ही उस देवीको देखनेके लिये सभी लक्षणोंसे युक्त 'विद्युत्प्रभनामक' दूतको भेजा। इधर महिषासुरके मन्त्रियोंने मन्त्रिमण्डलकी पुनः बैठक बुलायी और परस्पर परामर्शकर उसे उस कन्याको शीघ्र प्राप्त करनेके लिये देवताओंपर आक्रमणकर विजय प्राप्त करनेकी सलाह दी। महिषकी सेनामें उस समय 9 पद्म की संख्या में असुर योद्धा थे । उसने अपने सेनापति विरुपाक्ष को ससैन्य युद्ध के लिए प्रस्थान करने की आज्ञा दी।

●●●●

भगवान वराह कहते हैं कि हे वसुन्धरा! इस सारी सेनाके साथ इच्छानुसार रूप धारण करने वाला महान् पराक्रमी महिषासुर हाथीपर सवार होकर मन्दराचल पर्वतपर पहुँचा। उसके वहाँ पहुँचते ही देवसमुदायमें भगदड़ मच गयी। सभी असुरसैनिकोंने अपने–अपने शस्त्रों और वाहनोंके से साथ गम्भीर गर्जना करते हुए देवताओंपर आक्रमण न कर दिया।

उनका तुमुल युद्ध देखकर रोंगटे से खड़े हो जाते थे। अञ्जनके समान काले नीलकुक्षि, मेघवर्ण, बलाहक, उदाराक्ष, ललाटाक्ष, सभीम भीमविक्रम और स्वर्भानु – इन आठ दैत्यों ने मोर्चे पर वसुओंको मारना आरम्भ किया। इधर ध्वस्तकर्ण, शङ्कुकर्ण, वज्रके समान कठोर अङ्गों– वाला ज्योतिवीर्य, विद्युन्माली, रक्ताक्ष, भीमदंष्ट्र, – विद्युज्जिह्व, अतिकाय, महाकाय, दीर्घबाहु और कृतकान्त – ये प्रधान गिने जानेवाले ●बारह दैत्य● युद्ध–भूमिमें 12 आदित्योंकी ओर दौड़े। काल, कृतान्त, रक्ताक्ष, हरण, मृगहा, नल, यज्ञहा, ब्रह्महा, गोघ्न, स्त्रीघ्न और संवर्तक– इन ग्यारह दैत्योंने 11 रुद्रोंपर चढ़ाई कर दी।

महिषासुर भी उन देवताओंकी ओर बड़े वेगसे दौड़ा। इस प्रकार आदित्यों, वसुओं और रुद्रोंके साथ अगणित संख्यामें असुर और राक्षस लड़ने लगे। उस युद्धभूमिमें असुरोंके द्वारा देवताओंके सैनिक बड़े परिमाणमें नष्ट हो गये। अन्तमें देवताओंकी सेना भग्न हो गयी और इन्द्र तथा सम्पूर्ण देवता उस युद्ध–भूमिमें ठहर न सके। दानवोंने उन्हें अनेक प्रकारके शस्त्रों, शूलों, पट्टिशों और मुद्गरोंसे अर्दित कर दिया था। अन्तमें दानवोंसे पीड़ित होकर ये सभी देवता ब्रह्माजीके लोकमें गये।

भगवान् वराह बोले– वसुधे ! अब इधर विद्युत्प्रभ नामक दैत्य भी महिषासुरको प्रणामकर चला और उसके दूतके रूपमें भगवती वैष्णवीके पास पहुँचा, जहाँ वे सैकड़ों अन्य कुमारियोंके साथ बैठी थीं। फिर बिना किसी शिष्टाचारके ही उसने उनसे इस प्रकार कहना आरम्भ किया।

(एक कन्या को शाप उसकी उद्दण्डता के कारण –)

विद्युत्प्रभ बोला – "देवि ! पूर्व समयकी बात है–सृष्टिके प्रारम्भमें सुपार्श्व नामक एक अत्यन्त ज्ञानी ऋषि थे। उनका जन्म सरस्वती नदीके तटवर्ती देशमें हुआ था। सिन्धुद्वीप नामसे प्रसिद्ध उनके मित्र भी उन्हींके समान तेजस्वी एवं प्रतापी थे। माहिष्मती नामकी उत्तम पुरीमें उन्होंने निराहारका नियम लेकर कठिन तपस्या प्रारम्भ कर दी। विप्रचित्ति नामक दैत्य की माहिष्मती नाम की कन्या बड़ी ही सुन्दरी थी। एक बार वह सखियोंके साथ घूमती हुई पर्वतकी उपत्यकामें गयी; जहाँ उसे एक तपोवन दिखायी पड़ा। उस तपोवनके स्वामी एक ऋषि थे। जो मौनव्रत धारणकर

तपस्या कर रहे थे। उन महात्माका वह पवित्र आश्रम रम्य वनखण्डोंके कारण अत्यन्त मनोहर जान पड़ता था। जब विप्रचित्तिकुमारी माहिष्मतीने उसे देखा तो वह सोचने लगी– 'मैं इस तपस्वीको भयभीत कर क्यों न स्वयं इस आश्रममें रहूँ और सखियोंके साथ आनन्दसे विहार करूँ।'

"ऐसा सोचकर उस दानवकन्या माहिष्मतीने अपना रूप एक भैंसका बनाया। उसके सिरपर अत्यन्त तीक्ष्ण सींग सुशोभित हो रहे थे। विश्वेश्वरि ! वह राक्षसी अपनी सखियोंको साथ लेकर सुपार्श्व ऋषिके पास पहुँची। फिर तो सुन्दर मुखवाली उस दैत्यकन्याने सखियोंसहित वहाँ पहुँचकर ऋषिको डराना आरम्भ कर दिया। एक बार तो वे ऋषि अवश्य डर गये, पर पीछे उन्होंने

ज्ञाननेत्रसे देखा तो बात उनकी समझमें आ गयी के यह सुन्दर नेत्रवाली (भैंस नहीं) कोई राक्षसी है। अतः मुनिने क्रोधमें आकर उसे शाप दे बिदया–'दुष्टे ! तू भैंसका वेष बनाकर जो मुझे डरानेका प्रयास कर रही है, इसके फलस्वरूप तुझे सौ वर्षां (100 साल) तक भैंस के रूपमें ही रहना पड़ेगा।'

"ऋषिके इस प्रकार कहनेपर दानवकन्या माहिष्मती काँप उठी और उनके पैरोंपर गिरकर रोती हुई कहने लगी– 'मुने ! आप कृपया अपने इस शापको समाप्त कर दें। माहिष्मतीकी प्रार्थनापर दयालु मुनिने उसके शापके अन्तका समय बता दिया और उससे कहा– 'भद्रे ! इस भैंसके रूपसे ही तुम एक पुत्र उत्पन्नकर शापसे मुक्त हो जाओसी मेरी बात सर्वथा असत्य नहीं हो सकती।'

"ऋषिके यों कहनेपर माहिष्मती नर्मदानदीके तटपर गयी, जहाँ तपस्वी सिन्धुद्वीप तपस्या कर रहे थे। वहीं कुछ समय पूर्व एक दैत्यकन्या ●इन्दुमती● जलमें नंगे स्नान कर रही थी। उसका रूप अत्यन्त मनोहर था। उसपर दृ ष्टि पड़ते ही मुनिका रेत शिलाखण्डपर स्खलित हो गया, जो एक सोते–से होकर नर्मदामें आया। अब माहिष्मतीकी दृष्टि उसपर पड़ी। उसने अपनी सखियोंसे कहा– 'मैं यह स्वादिष्ठ जल पीना चाहती हूँ।' और ऐसा कहकर वह उस रेतको पी गयी, जिससे उसे गर्भ रह गया। समयानुसार उससे एक पुत्रकी उत्पत्ति हुई, जो बड़ा पराक्रमी, प्रतापी और बुद्धिमान् हुआ और वही 'महिषासुर' नामसे प्रसिद्ध हुआ है। वही

(कथा सुनकर आश्चर्य न करें श्रीमद्देवीभागवत महापुराण में महिषासुर की उत्पत्ति की कथा अलग है वह रम्भ के वीर्य से हुआ था यह रम्भ दनु व कश्यप पुत्र था। और मार्कण्डेय पुराण के अनुसार अर्थात मणिद्वीप की पराम्बा की दुर्गा सप्तशती के अनुसार महिषासुर का वध मणिद्वीप की सदाशिव प्रिया ह्रीं बीज की अधिष्ठात्री महालक्ष्मी ने 18 भुजा धारण कर किया था। अब आप इन दोनों कथाओं को दो कल्पों की अलग अलग कथा भी मान सकते हो । हो सकता है कि किसी अन्य कल्प में एक महिषासुर नामक दानव वैष्णवी से और एक कल्प में रम्भजना महिषासुर भुवनेश्वरी जी से मारा गया हो आप तो फलश्रुति से मतलब रखो अधिकांश पुराणों में कथाओं को सुनकर यह भ्रम होता ही है वैष्णव ग्रंथों में वैष्णवीय देवी द्वारा ही असुरों का वध बताया है और शाक्त शास्त्रों में दुर्गा , काली आदि द्वारा।) आगे कथा सुनें जो वराह पुराण से ली गई है।) वही

हे देवि वैष्णवी !

देवताओंके सैनिकोंको रौंदनेवाला वही महिष आपका वरण कर रहा है। अनघे ! वह महान् असुर युद्धभूमिमें देवसमुदायको भी परास्त कर चुका है। अब वह सारी त्रिलोकीको जीतकर आपको सौंप देगा।अतः आप भी उसका वरण करें।"

दूतके ऐसा कहनेपर भगवती वैष्णवीदेवी बड़े जोरोंसे हँस पड़ीं। उनके हँसते समय उस दूतको देवीके उदरमें चर और अचरसहित तीनों लोक दीखने लगे। वह उसी क्षण आश्चर्यसे घबराकर मानो चक्कर खाने लगा। अब उस दूतके उत्तरमें देवीकी प्रतिहारिणी (द्वारपालिका)–ने, जिसका नाम जया था, भगवती वैष्णवीके हृदयकी बात कहना प्रारम्भ किया।

जया बोली – 'कन्याको प्राप्त करनेकी इच्छा करनेवाले महिषने तुझसे जैसा कहा है, तुमने वैसी ही बात यहाँ आकर कही है। किंतु समस्या यह है कि इस वैष्णवीदेवीने सदाके लिये 'कौमार– व्रत' धारण कर रखा है।

यहाँ इस देवीकी अनुगामिनी अन्य भी बहुत–सी वैसी ही कुमारियाँ हैं। उनमेंसे एक भी कुमारी तुम्हें लभ्य नहीं है। फिर स्वयं भगवती वैष्णवीके पानेकी तो कल्पना ही व्यर्थ है। दूत ! तुम बहुत शीघ्र यहाँसे चले जाओ। तुम्हारी दूसरी कोई बात यहाँ नहीं हो सकेगी।'

इस प्रकार प्रतिहारिणीके कहनेपर विद्युत्प्रभ वहाँसे चला गया। इतनेमें ही परम तपस्वी मुनिवर नारदजी उच्च स्वरसे वीणाकी तान छेड़ते हुए आकाशमार्गसे वहाँ पहुँचे। उन मुनिने 'अहोभाग्य ! अहोभाग्य !' कहते हुए उन कुमारीको प्रणाम किया और देवीद्वारा पूजित होकर वे सुन्दर आसनपर बैठ गये। फिर सम्पूर्ण देवियोंको प्रणामकर वे कहने लगे– 'देवि ! देवसमुदायने बड़े आदरसे मुझे आपके पास भेजा है; क्योंकि महिषासुर ने संग्राम में उन्हें परास्त कर दिया है। देवि! यही नहीं, वह दैत्यराज आपको पानेके लिये भी प्रयत्नशील है। वरानने ! देवताओंकी यह बात आपको बताने आया हूँ। देवेश्वरि ! आपडटकर उस दैत्यसे युद्ध करें तथा उसे मार डालें।' भगवती वैष्णवीसे यों कहकर नारदजी तुरंत अन्तर्धान हो गये। वे इच्छानुसार वहाँसे कहीं अन्यत्र चले गये। अब देवीने सभी कन्याओंसे कहा–'तुम सभी अस्त्र–शस्त्रसे सुसज्जित हो जाओ'।

●●कन्याओं का पराक्रम ●●

तब वे समस्त परम पराक्रमी कन्याएँ देवीकी आज्ञासे भयंकर आकार धारणकर ढाल, तलवार और धनुष आदि शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्ज हो दैत्योंका संहार करने तथा युद्ध करनेके विचारसे डट गयीं। इतनेमें ही महिषासुरकी सेना भी देवसेनाको छोड़कर वहीं आ गयी। फिर क्या था, उन स्वाभिमानिनी कन्याओं तथा दानवोंमें युद्ध छिड़ गया। उन कन्याओंके प्रयाससे असुरोंकी वह चतुरङ्गिणी सेना क्षणभरमें समाप्त हो गयी। कितनोंके सिर कटकर पृथ्वीपर गिर पड़े। अन्य बहुत–से दैत्योंकी छाती चीरकर क्रव्यादगण रक्त पीने लगे। अनेक प्रधान दानवोंके मस्तक कट गये और वे कबन्धरूपमें नृत्य करने लग गये। इस प्रकार एक ही क्षणमें पापबुद्धिवाले वे असुर युद्धभूमिसे भाग चले। कुछ दूसरे दैत्य भागते हुए महिषासुरके पास पहुँचे। निशाचरोंकी उस विशाल सेनामें हाहाकार मच गया उनकी ऐसी देखकर महिषासुरने सेनापतिसे कहा–'सभापत यह क्या ? मेरे सामने ही सेनाका ऐसा संहार ?' तब हाथीके समान आकृतिवाले 'यज्ञहनु' (विरुपाक्ष)–ने महिषासुरसे कहा– 'स्वामिन् ! इन कुमारियोंने ही चारों ओरसे हमारे सैनिकोंको भगा दिया है।'

अब क्या था? महिषासुर हाथमें गदा लेकर उधर दौड़ पड़ा, जहाँ देवताओं एवं गन्धर्वांसे सुपूजित भगवती वैष्णवी विराजमान थीं। उसे आते देखकर भगवती वैष्णवीने अपनी बीस भुजाएँ बना लीं (श्रीमद्देवीभागवत में महिषासुर मर्दिनी मणिद्वीप निवासिनी की 18भुजाएं थी आगे सुनें ')

और उनके बीसों हाथोंमें क्रमशः

धनुष, ढाल, तलवार, शक्ति, वाण, फरसा, वज्र, शङ्ख, त्रिशूल, गदा, मूसल, चक्र, बरछा, दण्ड, पाश, ध्वज, घण्टा, पानपात्र, अक्षमाला एवं कमल–ये आयुध विराजमान हो गये। उन देवी वैष्णवी ने कवच भी धारण कर लिया और सिंहपर सवार हो गयीं। फिर उन्होंने देवाधिदेव, प्रलयंकर भगवान् रुद्रको स्मरण किया। स्मरण करते ही साक्षात् वृषध्वज वहाँ तत्क्षण पहुँच गये। उन्हें प्रणामकर देवीने सूचित किया– 'देवेश्वर ! मैं सम्पूर्ण दैत्योंपर विजय प्राप्त करना चाहती हूँ। सनातन प्रभो ! बस, आप केवल यहाँ उपस्थित रहकर (रण–क्रीडा) देखते रहें।'

यों कहकर भगवती परमेश्वरी सारी आसुरी सेनाका संहारकर महिषकी ओर दौड़ीं। महिष भी अब उनपर बड़े वेगसे टूट पड़ा। वह दानवराज कभी लड़ता, कभी भामता और कभी पुनः मोर्चेपर डट जाता। शोभने ! उस दानवका देवीके साथ देवताओंके वर्षसे दस हजार वर्षोंतक यह संग्राम चलता रहा। अन्तमें वह डरकर सारे ब्रह्माण्डमें भागने

लगा। फिर देवीने शतशृङ्गपर्वतपर उसे पैरोंसे दबाकर शूलद्वारा मार डाला और तलवारद्वारा उसका सिर काटकर धड़से अलग कर दिया। महिषासुरका जीव शरीरसे निकलकर देवीके शस्त्र–निपातके प्रभावसे स्वर्गमें चला गया। उस अजेय असुरको पराजित देखकर ब्रह्माजीसहित सम्पूर्ण देवता देवीकी इस प्रकार स्तुति करने लगे।

देवताओंने स्तुति की –

1. महान् ऐश्वर्योंसे सुसम्पन्न देवि !
2. गम्भीरा,
3. भीमदर्शना,
4. जयस्था,
5. स्थितिसिद्धान्ता,
6. त्रिनेत्रा,
7. विश्वतोमुखी,
8. जया,
9. जाप्या,
10. महिषासुरमर्दिनी,
11. सर्वगा,
12. सर्वा,
13. देवेशी,
14. विश्वरूपिणी,
15. वैष्णवी,
16. वीतशोका,
17. ध्रुवा,
18. पद्मपत्रशुभेक्षणा,
19. शुद्ध– सत्त्व–व्रतस्था,
20. चण्डरूपा,
21. विभावरी,
22. ऋद्धि– सिद्धिप्रदा,
23. विद्या,
24. अविद्या,
25. अमृता,
26. शिवा,
27. शाङ्करी,
28. वैष्णवी,
29. ब्राह्मी,
30. सर्वदेवनमस्कृता,
31. घण्टाहस्ता,
32. त्रिशूलास्त्रा,
33. उग्ररूपा,

34. विरूपाक्षी,
35. महामाया और
36. अमृतस्त्रवा–इन विशिष्ट नामोंसे युक्त हम आपकी उपासना करते हैं।
37. आप परम पुण्यमयी देवीके लिये हमारा निरन्तर नमस्कार है। ध्रुवस्वरूपा देवि ! आप सम्पूर्ण प्राणियोंकी हितचिन्तिका हैं। अखिल प्राणी आपके ही रूप हैं। विद्याओं, पुराणों और शिल्पशास्त्रोंकी आप ही जननी हैं। समस्त संसार आपपर ही अवलम्बित है। अम्बिके ! सम्पूर्ण वेदोंके रहस्यों और सभी देहधारियोंके केवल आप ही शरण हैं। शुभे! आपको सामान्य जनता विद्या एवं अविद्या नामसे पुकारती है। आपके लिये हमारा निरन्तर शतशः नमस्कार है। परमेश्वरि ! आप विरूपाक्षी, क्षान्ति, क्षोभितान्तर्जला और अमला नामसे भी विख्यात हैं। महादेवि ! हम आपको बारंबार नमस्कार करते हैं। भगवती परमेश्वरि ! रणसंकटके उपस्थित होनेपर जो आपकी शरण लेते हैं, उन भक्तोंके सामने किसी प्रकारक अशुभ नहीं आता। (और भी आगे स्तोत्र संपन्न हुआ तब देवी ने वरदान मांगा तो देवताओं ने कहा ।)

देवि ! सिंह–व्याघ्रके भय, चोर–भय, राज–भय, या अन्य घोर भयके उपस्थित होनेपर जो पुरुष मनको सावधानकर इस स्तोत्रका सदा पाठ करे, वह इन सभी संकटोंसे छूट जाये। देवि ! कारागारमें पड़ा हुआ मानव भी यदि इस स्तुति से आपका स्मरण करे तो बन्धनोंसे उसकी मुक्ति हो जाये और वह आनन्दपूर्वक सुखसे स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करे ।

देवता बोले – पुण्यस्वरूपिणी देवि ! आपके इस स्तोत्रका जो पुरुष पाठ करेंगे, उनकी आप सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण करनेकी कृपा करें। यहीहमारा अभिलषित वर है। इसपर सर्वदेवमयी देवीने उन देवताओंसे 'एवमस्तु' कहकर वहाँये

उनको विदा कर दिया और स्वयं वहीं विराजमान
रहीं। धराधरे! यह देवीके दूसरे स्वरूपका वर्णन
हुआ। जो इसे जान लेता है, वह शोक–दुःख एवं
दोषोंसे मुक्त होकर भगवतीके अनामयपदको प्राप्त कर कृतकृत्य हो जाता है।

अब महारुद्र जी की रोद्री शक्ति (कालरात्रि) का माहात्म्य सुनें –

नोट – यह वराह पुराण के अनुसार है अतः भ्रमित न हो । मार्कण्डेय पुराणोक्त वचन से देवी भुवनेश्वरी ने ही 18 भुजा धारण करके महिषासुर का वध किया था। इस पुराण में वैष्णवीय शक्ति वैष्णवी देवी ने 20 भुजा धारण करके महिषासुर को मारा ।

श्री रोद्री माहात्म्य–

भगवान् वराह कहते हैं– वसुंधरे ! जो रौद्रीशक्ति मन में तपस्याका निश्चयकर 'नीलगिरि' पर गयी थीं और जिनका प्राकट्य रुद्रकी तमः शक्तिसे हुआ था, अब उनके व्रतकी बात सुनो। अखिल जगत्की रक्षाके निश्चयसे वे दीर्घकालतक तपस्याके साधनमें लगी रहीं और पञ्चाग्नि–सेवनका नियम बना लिया। इस प्रकार उन देवीके तपस्या करते हुए कुछ समय बीत जानेपर 'रुरु' नामक एक असुर उत्पन्न हुआ। जो महान् तेजस्वी था। उसे ब्रह्माजीका वर भी प्राप्त था। समुद्रके मध्यमें वनोंसे घिरी 'रत्नपुरी' उसकी राजधानी थी। सम्पूर्ण देवताओंको आतङ्कितकर वह दानवराज वहीं रहकर राज्य करता था। करोड़ों असुर उसके सहचर थे, जो एक–से–एक बढ़–चढ़कर थे। उस समय ऐश्वर्यसे युक्त वह 'रुरु' ऐसा जान पड़ता था, मानो दूसरा इन्द्र ही हो। बहुत समय व्यतीत हो जानेके पश्चात् उसके मनमें लोकपालों पर विजय प्राप्त करनेकी इच्छा उत्पन्न हुई। देवताओंके साथ युद्ध करनेमें उसकी स्वाभाविक

रुचि थी, अतः एक विशाल सेनाका संग्रहकर जब वह महान् असुर रुरु युद्ध करनेके विचारसे समुद्रसे बाहर निकला, तब उसका जल बहुत जोरोंसे ऊपर उछलने लगा और उसमें रहनेवाले नक्र, घड़ियाल तथा मत्स्य घबड़ा गये। वेलाचल के

पार्श्ववर्ती सभी देश उस जलसे आप्लावित हो उठे। समुद्रका अगाध जल चारों ओर फैल गया और सहसा उसके भीतरसे अनेक असुर विचित्र कवच तथा आयुधसे सुसज्जित होकर बाहर निकल पड़े एवं युद्धके लिये आगे बढ़े। ऊँचे हाथियों तथा अश्व–रथ आदिपर सवार होकर वे असुर–सैनिक युद्धके लिये आगे बढ़े। उनके लाखों एवं करोड़ोंकी संख्यामें पदाति सैनिक भी युद्धके लिये निकल पड़े।

शोभने ! रुरुकी सेनाके रथ सूर्यके रथके समान थे और उनपर यन्त्रयुक्त शस्त्र सुसज्ज थे। ऐसे असंख्य रथोंपर उसके अनुगामी दैत्य हस्तत्राणसे सुरक्षित होकर चल पड़े। इन असुर–सैनिकोंने देवताओंके सैनिकोंकी शक्ति कुण्ठित कर दी और वह अपनी चतुरङ्गिणी सेना लेकर इन्द्रकी नगरी अमरावतीपुरीके लिये चल पड़ा। वहाँ पहुँचकर दानवराजने देवताओंके साथ युद्ध आरम्भ कर दिया और वह उनपर मुद्गरों, मुसलों, भयंकर वाणों और दण्ड आदि आयुधोंसे प्रहार करने लगा। इस युद्धमें इन्द्रसहित सभी देवता उस समय अधिक देरतक टिक न सके और वे आहत हो मुँह पीछेकर भाग चले। उनका सारा उत्साह समाप्त हो गया तथा हृदय आतङ्कसे भर गया। अब वे भागते हुए उसी नीलगिरि पर्वतलपर पहुँचे, जहाँ भगवती रौद्री तपस्यामें संलग्न होकर स्थित थीं। देवीने देवताओंको देखकर उच्च स्वरसे कहा– 'भय मत करो।

देवी बोलीं– देवतागण ! आपलोग इस प्रकार भीत एवं व्याकुल क्यों हैं? यह मुझे तुरंत बतलाएँ।

देवताओंने कहा – 'परमेश्वरि ! इधर देखिये ! यह 'रुरु' नामक महान् पराक्रमी दैत्यराज चला आ रहा है। इससे हम सभी देवता त्रस्त हो गये हैं, आप हमारी रक्षा कीजिये।' यह देखकर देवी अट्टहासके साथ हँस पड़ीं। देवीके हँसते ही उनके मुखसे बहुत–सी अन्य देवियाँ प्रकट हो गयीं, जिनसे मानो सारा विश्व भर गया। वे विकृत रूप एवं अस्त्र–शस्त्रसे सुसज्जित थीं और अपने हाथोंमें पाश, अङ्कुश, त्रिशूल तथा धनुष धारण किये हुए थीं। वे सभी देवियाँ करोड़ोंकी संख्यामें थीं तथा भगवती तामसीको चारों ओरसे घेरकर खड़ी हो गयीं। वे सब दानवोंके साथ युद्ध करने लगीं और तत्काल असुरोंके सभी सैनिकोंका क्षणभरमें सफाया कर दिया। देवता अब पुनः लड़ने लग गये थे। कालरात्रिकी सेना तथा देवताओंकी सेना अब नयी शक्तिसे सम्पन्न होकर दैत्योंसे लड़ने लगी और उन सभीने समस्त दानवोंके सैनिकोंको यमलोक भेज दिया। बस, अब उस महान् युद्धभूमिमें केवल महादैत्य 'रुरु' ही बच रहा था। वह बड़ा मायावी था। अब उसने 'रौरवी' नामक भयंकर मायाकी रचना की, जिससे सम्पूर्ण देवता मोहित होकर नींदमें सो गये। अन्तमें देवीने उस युद्ध–स्थलपर त्रिशूलसे दानवको मार डाला। शुभलोचने ! देवीके द्वारा आहत हो जानेपर 'रुरु'– दैत्यके चर्म (धड़) और मुण्ड– अलग–अलग हो गये। दानवराज 'रुरु' के चर्म और मुण्ड जिस समय पृथक् हुए, उसी क्षण देवीने उन्हें उठा लिया, अतः वे 'चामुण्डा कहलाने लगीं। **वे ही भगवती महारौद्री, परमेश्वरी, संहारिणी और 'कालरात्रि' कही जाती हैं। उनकी अनुचरी देवियाँ करोड़ोंकी संख्यामें बहुत– सी हैं। युद्धके अन्तमें उन अनुगामिनी देवियोंने इन महान् ऐश्वर्यशालिनी देवीको – सब ओरसे घेर लिया और वे भगवती रौद्रीसे कहने लगीं – 'हम भूखसे घबड़ा गयी हैं। कल्याणस्वरूपिणि देवि ! आप हमें भोजन देनेकी कृपा कीजिये।'**

इस प्रकार उन देवियोंके प्रार्थना करनेपर जब रौद्री देवीके ध्यानमें कोई बात न आयी, तब उन्होंने देवाधिदेव पशुपति भगवान् रुद्रका स्मरण किया। उनके ध्यान करते ही पिनाकपाणि परमात्मा रुद्र वहाँ प्रकट हो गये। वे बोले– 'देवि ! कहो ! तुम्हारा क्या कार्य है?'

देवीने कहा– देवेश! आप इन उपस्थित देवियोंके लिये भोजनकी कुछ सामग्री देनेकी कृपा करें; अन्यथा ये बलपूर्वक मुझे ही खा जायँगी।

रुद्रने कहा– देवेश्वरि!

●महाप्रभे! इनके खानेयोग्य वस्तु वह है– जो गर्भवती स्त्री दूसरी स्त्रीके पहने हुए वस्त्रको पहनकर अथवा विशेष करके दूसरे पुरुषका स्पर्शकर पाकका निर्माण करती है, वह इन देवियोंके लिये भोजनकी सामग्री है। ●अज्ञानी व्यक्तियोंद्वारा दिया हुआ बलिभाग भी ये देवियाँ ग्रहण करें और उसे पाकर सौ वर्षोंके लिये सर्वथा तृप्त हो जायें

●अन्य कुछ देवियाँ प्रसव–गृहमें छिद्रका अन्वेषण करें। वहाँ लोग उनकी पूजा करेंगे। देवेशि ! उस स्थानपर उनका निवास होगा। गृह, क्षेत्र, तडागों, वापियों और उद्यानोंमें जाकर निरन्तर रोती हुई जो स्त्रियाँ मनमारे बैठी रहेंगी, उनके शरीरमें प्रवेशकर कुछ देवियाँ तृप्ति लाभ कर सकेंगी।

फिर भगवान् शंकरने इधर जब रुरुको मरा हुआ देखा, तब वे देवीकी इस प्रकार स्तुति करने लगेभगवान् रुद्र बोले–

देवि ! आपकी जय हो चामुण्डे ! भगवती भूतापहारिणि

एवं सर्वगते परमेश्वरि ! आपकी जय हो ।

देवि ! आप त्रिलोचना, भीमरूपा, वेद्या, महामाया,

महोदया, मनोजवा, जया, जृम्भा,

भीमाक्षी, क्षुभिताशया, महामारी, विचित्राङ्गा,

नृत्यप्रिया, विकराला, महाकाली, कालिका,

पापहारिणी, पाशहस्ता, दण्डहस्ता, भयानका,

चामुण्डा, ज्वलमानास्या, तीक्ष्णदंष्ट्रा,

महाबला, शतयानस्थिता,

प्रेतासनगता, भीषणा, सर्वभूतभयंकरी,

कराला, विकराला, महाकाला, करालिनी,

काली, काराली, विक्रान्ता और कालरात्रि–

इन नामोंसे प्रसिद्ध हैं; आपके लिये मेरा बारंबार नमस्कार है। परमेष्ठी रुद्रने जब इस प्रकार देवीकी स्तुति की तब वे भगवती परम संतुष्ट हो गयीं। साथ ही ।

उन्होंने कहा– 'देवेश ! जो आपके मनमें हो, वह वर माँग लें।'

रुद्र बोले – "वराननें! यदि आप प्रसन्न हैं तो इस स्तुतिके द्वारा जो व्यक्ति आपका स्तवन करें, देवि ! आप उन्हें वर देनेकी कृपा करें। इस स्तुतिका नाम' 'त्रिप्रकार' होगा। जो भक्तिके साथ इसका पाठ करेगा, वह पुत्र, पौत्र, पशु और स संमृद्धसे सम्पन्न हो जायगा। तीन शक्तियोंसे तु सम्बद्ध इस स्तुतिको जो श्रद्धा भक्तिके साथ सुने, स उसके सम्पूर्ण पाप विलीन हो जायँ और वह व्यक्ति अविनाशी पदका अधिकारी हो जाय।" ऐसा कहकर भगवान् रुद्र अन्तर्धान हो गये। क देवता भी स्वर्गको पधारे। वसुंधरे ! देवीकी तीन भेट प्रकारकी उत्पत्ति युक्त 'त्रिशक्ति–माहात्म्य'का यह अ प्रसङ्ग बहुत श्रेष्ठ है। अपने राज्यसे च्युत राजा रुद्र यदि पवित्रतापूर्वक इन्द्रियोंको वशमें करके अष्टमी, हैं। नवमी

और चतुर्दशीके दिन उपवासकर इसका है, श्रवण करेगा तो उसे एक वर्षमें अपना निष्कण्टक साथ राज्य पुनः प्राप्त हो जायगा।

ज्ञात होनेवाली पृथ्वी देवि ! यह मैंने तुमसे 'त्रिशक्ति–सिद्धान्त 'की बात बतलायी। इनमें चना, सात्त्विकी एवं श्वेत वर्णवाली 'सृष्टि' देवीका जवा, सम्बन्ध ब्रह्मासे है। ऐसे ही वैष्णवी शक्तिका नारी, सम्बन्ध भगवान् विष्णुसे है। रौद्रीदेवी कृष्ण– ली, वर्णसे युक्त एवं तमः सम्पन्न शिवकी शक्ति हैं। जो स्ता, पुरुष स्वस्थचित्त होकर नवमी तिथिके दिन इष्ट्रा, इसका श्रवण करेगा, उसे अतुल राज्यकी प्राप्ति णा, होगी तथा वह सभी भयोंसे छूट जायगा। जिसके ला, घरपर लिखा हुआ यह प्रसङ्ग रहता है, उसके चौर घरमें भयंकर अग्निभय, सर्पभय, चोरभय और नये राज्य आदिसे उत्पन्न भय नहीं होते। जो विद्वान् इस पुरुष पुस्तकरूपमें इस प्रसङ्गको लिखकर भक्तिके हम साथ इसकी पूजा करेगा, उसके द्वारा चर और ग! अचर तीनों लोक सुपूजित हो जायँगे। उसके यहाँ बहुत–से पशु, पुत्र, धन–धान्य एवं उत्तम स्त्रियाँ प्राप्त हैं हो जायेंगी। **यह स्तुति जिसके घरपर रहती है, उसके न यहाँ प्रचुर रत्न, घोड़े, गौएँ, दास ईऔर दासियाँ– म आदि सम्पत्तियाँ अवश्य प्राप्त हो**

यह रुद्र माहात्म्य कहा गया है। मैंने पूर्णरूपसे – तुम्हारे सामने इसका वर्णन कर दिया। चामुण्डाकी समग्र शक्तियोंकी संख्या नौ करोड़ है। वे पृथक्– पृथक् रूपसे स्थित हैं। इस प्रकार जो रुद्रसे सम्बन्ध रखनेवाली यह 'तामसी शक्ति चामुण्डा' कही गयी उसका तथा वैष्णवी शक्तिके सम्मिलित भेद अठारह करोड़ है। इन सभी शक्तियोंके अध्यक्ष सर्वत्र विचरण करनेवाले भगवान् परमात्मा रुद्र ही हैं। जितनी ये शक्तियाँ हैं, रुद्र भी उतने ही हैं। महाभाग ! जो इन शक्तियोंकी आराधना करता है, उसपर भगवान् रुद्र संतुष्ट होते हैं और वे साधकको मनःकल्पित सारी कामनाएँ सिद्ध कर देते हैं।

35. शक्ति के 76 नामों से नवग्रह अनुकूल –

सूत जी ने कहा कि – हे ऋषियों ! देवी पराम्बा के इन नामों का स्मरण कभी भी कैसे भी मनुष्य करे तो उनकी रक्षा निश्चित ही होती है।

जो लोग इनका पाठ करते हैं, उनका पाप शेष नहीं रह जाता है। जंगलमें, पर्वतपर, नगरमें, घरमें, जल अथवा स्थल कहीं भी रक्षाके लिये इनका प्रयोग करना चाहिये। विशेष रूपसे बाघ, हाथी तथा चोरोंसे भयके स्थानमें और सभी प्रकारकी विपत्तियोंमें देवीके नामोंको पढ़ना चाहिये। दुर्गा जी के 32 नामों के समान इनका प्रभाव है। दुर्गनाशन स्तोत्र के समान इनका प्रभाव है। शिवचरित मानस में हमने जो 68 नाम बताये हैं वह भी देवी शिवा और शम्भु की कृपा से इनके समान ही रक्षा करते हैं।
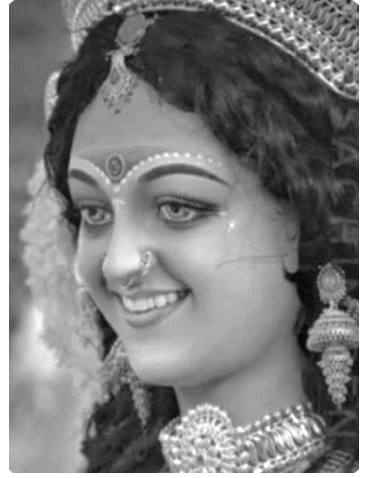
●बुरे ग्रहों,● भूतों, ●पूतना तथा ●मातृगणोंसे पीड़ित शिशुओंकी रक्षाके लिये इन नामोंका प्रयोग करना चाहिये

ये नाम लिंग पुराण पूर्व भाग अध्याय 70 से लिए गए हैं पर गृहस्थों की सुविधा के लिए इस महाग्रंथ में संनिहित किए हैं आजकल गृहस्थों को इतना अधिक समय नहीं कि वे हजारों मोटे मोटे शास्त्रों को पढ सके। इस कारण देवी पराम्बा नें ही आप सबके लिए अक्षयरुद्र से यह कार्य कराकर अक्षयरुद्र का जीवन भी पावन ही कर दिया।

नाम श्रवण करें–

1. स्वाहा,
2. स्वधा,
3. महाविद्या,
4. मेधा,
5. लक्ष्मी,
6. सरस्वती,
7. सती,
8. दाक्षायणी,
9. विद्या,
10. इच्छा,
11. शक्ति,
12. क्रियात्मिका,
13. अपर्णा,
14. एकपर्णा,
15. एकपाटला,
16. उमा,
17. हैमवती,
18. कल्याणी,

19. एकमातृका,
20. ख्याति,
21. प्रज्ञा,
22. महाभागा,
23. लोकप्रसिद्ध गौरी,
24. गणाम्बिका,
25. महादेवी,
26. नन्दिनी तथा
27. जातवेदसी– पृथक् देह धारण करनेसे पहले इनका एक ही रूप था
28. सावित्री,
29. वरदा,
30. पुण्या,
31. पावनी,
32. लोकविश्रुता,
33. आज्ञा,
34. आवेशनी,
35. कृष्णा,
36. तामसी,
37. सात्त्विकी,
38. शिवा,
39. प्रकृति,
40. विकृता,
41. रौद्री,
42. दुर्गा,
43. भद्रा,
44. प्रमाथिनी,
45. कालरात्रि,
46. महामाया,
47. रेवती,
48. भूतनायिका– हे सुव्रतो! द्वापरयुगके अन्तमें ये उनके नाम हुए। इसी प्रकार
49. गौतमी,
50. कौशिकी,
51. आर्या,
52. चण्डी,
53. कात्यायनी,
54. सती,
55. कुमारी,
56. यादवी,

57. देवी,
58. वरदा,
59. कृष्णपिंगला,
60. बर्हिध्वजा,
61. शूलधरा,
62. परमा,
63. ब्रह्मचारिणी,
64. महेन्द्रोपेन्द्रभगिनी,
65. दृषद्वती,
66. एकशूलधृक्,
67. अपराजिता,
68. बहुभुजा,
69. प्रगल्भा,
70. सिंहवाहिनी,
71. शुम्भादिदैत्यहन्त्री,
72. महामहिषमर्दिनी,
73. अमोघा,
74. विन्ध्यनिलया,
75. विक्रान्ता,
76. गणनायिका

मैंने देवी भद्रकालीके इन नामविकारोंको यथाक्रम बता दिया, जो सम्यक् फल प्रदान करनेवाले हैं। 'प्रज्ञा' तथा 'श्री'– ये महादेवीकी दो कलाएँ कही गयी हैं। इन दोनोंसे हजारों देवियाँ उत्पन्न हुई हैं, जिनके द्वारा सम्पूर्ण जगत् व्याप्त है। मूल देववाणी में सुनें–

●●●●●●●●●●●●●●●●●

स्वाहा स्वधा महाविद्या मेधा लक्ष्मीः सरस्वती ।
सती दाक्षायणी विद्या इच्छा शक्तिः क्रियात्मिका।
अपर्णा चैकपर्णा च तथा चैवैकपाटला।
उमा हैमवती चैव कल्याणी चैकमातृका ।
ख्यातिः प्रज्ञा महाभागा लोके गौरीति विश्रुता।
गणाम्बिका महादेवी नन्दिनी जातवेदसी ।।
एकरूपमथैतस्याः पृथग्देहविभावनात् ।
सावित्री वरदा पुण्या पावनी लोकविश्रुता ।।
आज्ञा आवेशनी कृष्णा तामसी सात्त्विकी शिवा।
प्रकृतिर्विकृता रौद्री दुर्गा भद्रा प्रमाथिनी ।।
कालरात्रिर्महामाया रेवती भूतनायिका।
द्वापरान्तविभागे च नामानीमानि सुव्रताः ॥
गौतमी कौशिकी चार्या चण्डी कात्यायनी सती।

कुमारी यादवी देवी वरदा कृष्णपिङ्गला ॥
बर्हिध्वजा शूलधरा परमा ब्रह्मचारिणी।
महेन्द्रोपेन्द्रभगिनी दृषद्वत्येकशूलधृक् ॥
अपराजिता बहुभुजा प्रगल्भा सिंहवाहिनी।
शुम्भादिदैत्यहन्त्री च महामहिषमर्दिनी ॥
अमोघा विन्ध्यनिलया विक्रान्ता गणनायिका।
देव्या नामविकाराणि इत्येतानि यथाक्रमम् ॥
भद्रकाल्या मयोक्तानि सम्यक्फलप्रदानि च।
ये पठन्ति नरास्तेषां विद्यते न च पातकम् ॥
अरण्ये पर्वते वापि पुरे वाप्यथवा गृहे।
रक्षामेतां प्रयुञ्जीत जले वाथ स्थलेऽपि वा ॥
व्याघ्रकुम्भीनचोरेभ्यो भयस्थाने विशेषतः ।
आपत्स्वपि च सर्वासु देव्या नामानि कीर्तयेत् ॥
आर्यकग्रहभूतैश्च पूतनामातृभिस्तथा ।
अभ्यर्दितानां बालानां रक्षामेतां प्रयोजयेत् ॥

36. मातंगी, श्रीकमला व श्री धूमावती सहित शिव जी के दस अवतारों की दस शक्तियां तथा मुण्डमाला तंत्रोक्त स्तोत्र

शिव जी के दस अवतारों की शक्तियाँ

साम्बसदाशिव नामक युगल जोड़ा ही समय समय पर अनेक लीला करता है। यह युगल परम युगल ही सभी प्रकार के अवतारों का मूल है ।

भगवान् श्री शिव के श्री महाकाल आदि 10 अवतार हुए।

उन अवतारों में जो उनकी शक्ति थी वही उनके नाम के अनुरूप हुई। इसी कारण शैव और विद्वान लोग यह कहते हैं कि शिव और शक्ति ही मूल रूप हैं इनकी इच्छा से ही ये शिव कभी षोडश बनते है तो कभी तार आदि तो उनकी शक्ति भी नाम बदल लेती हैं। ऐसा मानना मूर्खतापूर्ण है कि दस महाविद्याओं में से कोई एक भी छोटी या बड़ी है। पर हाँ इष्ट देव एक ही मानना चाहिए।

शक्ति व महेश्वरके सर्वप्रथम होनेवाले महाकाल आदि दस प्रमुख अवतारोंको भक्तिपूर्वक सुनिये –

ये 10 अवतार ही तंत्र शास्त्रों का आत्मा है ऐसा जानिए।

ये 10 शक्तियाँ एक ही हैं मात्र नाम से ही भेद है। एक ही पुरुष के ये 10 अवतार हैं और एक ही आदि शक्ति के ही ये 10 नाम हुये। चूँकि हर अवतार में शिव जी के नाम भिन्न भिन्न हैं उसी प्रकार ये शिवा (एक ही) 10 बार अवतार लेने से 10 नाम और 10 रूप को प्राप्त हुई।

अतः बुद्धिमान लोग इन सब विद्याओं को भिन्न भिन्न शक्ति न मानें और न ही किसी की सामर्थ्य कम या अधिक जानें।

जो सामर्थ्य षोडशी जी अर्थात श्रीविद्या की है (षोडश नामक विद्येश अवतार की अभिन्न शक्ति) वही सामर्थ्य कमला और तारा की है अतः जो भी मन चाहे उस एक रूप की सेवा करें (इन दसों की आत्मा 100 प्रतिशत केवल एक ही है दो नहीं और वही एक का ही दस बार लीलाभेद हुआ है ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि वेदवती, छायासीता और द्रोपदी की आत्मा पूर्ण रूप से एक ही है।

●काली –

शिव जी के अवतारों के साथ उनकी शक्ति भी प्रकट होती है उनमें प्रथम महाकाल नामक अवतार हैं , जो सज्जनोंको भोग एवं मोक्ष प्रदान करनेवाला है। इस अवतारमें उनकी शक्ति महाकाली हैं, जो भक्तोंको अभीष्ट फल प्रदान करती हैं। अध्याय 35 में 76 नाम इनके ही हैं। अध्याय 34 में इनका ही महास्तोत्र है तथा इसी ग्रंथ के अध्याय 33 में श्री नरसिंह जी से प्रकट भी ही हैं। दुर्गा सप्तशती में उत्तर चरित्र में कौशिकी देवी की सहायक देवी जिन्होनें चण्ड मुण्ड का वध किया और चामुण्डा संज्ञा को पाया वे यही हैं। इनका बीज मंत्र क्रीं है। पर मूल प्रकृति रूप में ये देवी महाकाली ही हैं जो 10 भुजा धारण करती हैं उस मूल रूप का बीज क्लीं है। स्वामी विवेकानंद के गुरु श्रीरामकृष्ण परमहंस की इष्ट यही हैं। हमारी सिद्धेश्वरी काली भी यही हैं जो मध्य प्रदेश के गुना जिले की राघोगढ तहसील में ग्राम पाडरखेडी में अक्षयरुद्रस्य मंदिर में स्थित हैं। इस ग्रंथ के 23 व 28वें पाठ की गुप्तविद्या की देवी भी ये ही हैं ये काली– जो कृष्ण व रक्त भेद से क्रमशः दक्षिणाऔर सुन्दरी नाम से भी विख्यात हैं, अतः इनको व सभी महाशक्तियों को नमस्कार बार बार नमस्कार।

● श्रीतारा –

शिव जी ने दूसरा अवतार तार नाम से लिया था इस नाम के कारण ही उनकी शक्ति की संज्ञा तारा हुई। श्री तारा जिनको तारने वाली महादेवी कहा है– जो नील सरस्वती भी कहलाती हैं, और अतिशीघ्र वाक् को सिद्ध करती हैं– इनकी कृपा भी सभी देवियों की भाँति धन्य है, कैंची और खड्ग से ये भक्तों के शत्रु समूह को छिन्न–भिन्न कर डालती हैं, चैत्र शुक्ल नवमी तारा रात्रि कहलाती है। दूसरे अवतार तार नाम से शिव जी ने धर्म की स्थापना की। तथा मुमुक्षुजनों को तारा। इस अवतार में इनकी शक्ति तारा करुणा और ममता का विग्रह थी ।

ये दोनों ही अपने भक्तोंको सुख प्रदान करनेवाले एवं भोग तथा मोक्ष देनेवाले हैं।

○○○○○○○○○○○○○○○

तारनामा द्वितीयश्च ताराशक्तिस्तथैव सा।

भुक्तिमुक्तिप्रदौ चोभौ स्वसेवकसुखप्रदौ ॥

○○○○○○○○○○○○○○○

● श्रीबाल भुवनेश्वरी –

तीसरा अवतार बाल भुवनेश्वरके नामसे पुकारा जाता है।

उनकी शक्ति बाला भुवनेश्वरी कही जाती हैं, ये सत्पुरुषोंको सुख प्रदान करती हैं।

○○○○○○○○○○○○○○○○

भुवनेशो हि बालाह्वस्तृतीयः परिकीर्तितः भुवनेशी शिवा तत्र बालाह्वा सुखदा सताम् ॥

○○○○○○○○○○○○○○○○

● । श्री षोडशी – शिव जी ही षोडश नाम से अवतार लिए यह उनका चौथा अवतार षोडश नामक विद्येश के रूपमें हुआ है। षोडशी श्रीविद्या उनकी महाशक्ति हैं। यह अवतार भक्तोंको सुख प्रदान करनेवाला तथा भोग एवं मोक्ष देनेवाला है।

○○○○○○○○○○○○○○○○○

श्रीविद्येशः षोडशाह्वः श्रीर्विद्या षोडशी शिवा।

चतुर्थो भक्तसुखदो भुक्तिमुक्तिफलप्रदः ॥

○○○○○○○○○○○○○○○○○

● । श्री भैरवी –

शिव जी का पाँचवाँ अवतार भैरव नामसे प्रसिद्ध है, जो भक्तोंकी कामनाओंको निरन्तर पूर्ण करनेवाला है। इस कारण इनकी महाशक्ति गौरी (गिरिजा) ही भैरवी नामसे प्रसिद्ध हुई । ये सज्जनों एवं उपासकोंकी कामनाएँ पूर्ण करती हैं।॥६॥

● । श्री छिन्नमस्ता –

श्री शिवका छठा अवतार छिन्नमस्तक नामक कहा गया है और उनकी महाशक्ति छिन्नमस्तका गिरिजा ही हैं अन्य नही । जो अपने भक्तोंका मनोरथ पूर्ण करनेवाली हैं

● । श्री धूमावती–

शिवके सातवें अवतारका नाम धूमवान् जो सम्पूर्ण कामनाओंका फल प्रदान करनेवाला है। उनकी शक्ति धूमावती हैं, जो सज्जन उपासकोंको फल देनेवाली हैं। सातवीं श्रीमहाविद्या श्री धूम्रा या श्रीधूमावती अर्थात– उग्रतारा हैं, इन्होनें ही उग्र चण्डिका को प्रकट किया था। स्वतंत्र तंत्र के अनुसार जब सति योगाग्नि से देहान्त को प्राप्त हुई तब हवन कुण्ड से धुँआ निकला, उसी धुएं से उनका प्रकट हुआ। इन धूमावती की कृपा से रोग नष्ट होते हैं, लोग मारण प्रयोग के लिए भी इनको पुकारते हैं। वैसे ये देवी शान्त और स्थितप्रज्ञ हैं।

● । श्री बगलामुखी –

शिवजीका आठवाँ अवतार बगलामुख है, जो सुख देनेवाला है। उनकी शक्ति ही बगलामुखी नाम से प्रसिद्ध हुई और वे शत्रु नष्ट करती है । जो परम आनन्दस्वरूपिणी हैं। इस पावन शास्त्र में अध्याय 7 में इनका विशेष माहात्म्य है तथा 108 नाम भी। इनको पीताम्बरा भी कहते हैं।

● श्री मातङ्गी महाविद्या – शिवजीका नौवाँ अवतार मातंग नाम से विख्यात है और इनकी शक्ति ही मातंगी हैं, जो (अपने भक्तोंकी) समस्त कामनाओंका फल प्रदान करती हैं।

शिव महापुराण के अनुसार श्रीशिव जी के अनगिनत अवतारों में 10 अवतार महाविद्याओं पर आधारित है। इन दस में से एक अवतार का

नाम मतङ्ग भी था अतः उनकी ही शक्ति को मातंगी कहा गया। मातङ्गी देवी श्यामवर्ण की होते हुए भी अद्‌भुत सौन्दर्य से परिपूर्ण हैं ये देवी कृपा करने पर ह्रीं बीज का उपदेश देती हैं और अपने भक्त को विश्व का महानायक बना देती हैं सभी देवता भी इनके भक्त के आगे मस्तक झुकाता है। ये देवी चन्द्रमाको मस्तकपर धारण किये हुए हैं।

भगवती मातङ्गी त्रिनेत्रा, रत्नमय सिंहासनपर आसीन, नीलकमलके समान कान्तिवाली तथा राक्षस–समूहरूप अरण्यको भस्म करनेमें दावानलके समान हैं।

इन्होंने अपनी चार भुजाओंमें पाश, अङ्कुश, खेटक और खड्ग (तलवार) धारण किया है। ये असुरोंको मोहित करनेवाली एवं भक्तोंको अभीष्ट फल देनेवाली हैं। गृहस्थ जीवन के मनुष्य इनकी कृपा को अतिशीघ्र पाते हैं क्योंकि इनका मानना है कि संसार भी देवीय है अतः उसे गतिमान होना ही चाहिए और उस गति के लिए गृहस्थ जीवन अनिवार्य है परंतु इस जीवन को भी गौरीशंकर जैसा योगमय करना चाहिए न कि अतिभोग तब ही उन दंपति पर मैं परम सहायक सिद्ध हुआ करती हूँ।

अतः घर गृहस्थी को सुखी बनाने, पुरुषार्थ सिद्धि और वाग्विलासमें पारंगत होनेके लिये मातङ्गीकी साधना श्रेयस्कर है। महाविद्याओंमें ये नवें स्थानपर परिगणित हैं।

नारदपाञ्चरात्रके बारहवें अध्यायमें शिवको लीला विशेष से चाण्डाल तथा शिवा लीला विशेष से उच्छिष्ट चाण्डाली कहा गया है। इनका ही नाम मातङ्गी है। पुराकालमें मतङ्ग नामक मुनिने नाना वृक्षोंसे परिपूर्ण कदम्ब–वनमें सभी जीवोंको वशमें करनेके लिये भगवती त्रिपुराकी प्रसन्नताहेतु कठोर तपस्या की थी, उस समय त्रिपुराके नेत्रसे उत्पन्न तेजने एक श्यामल नारी–विग्रहका रूप धारण कर लिया। वे देवी यही हैं श्री मातंगी।

इन्हें राजमातंगिनी भी कहा गया। यह दक्षिण तथा पश्चिमाम्नायकी देवी हैं। ये सदा अपने शुक से ह्रीं बीज को सुनती हैं और ब्रह्मभाव में रमण करती हैं। इनके तन पर मधु का अंश व हल्का हल्का प्रभाव समाहित है जो इनके तेज में वृद्धि ही करता है वैसे ये स्वयं तेज को भी उत्पन्न करने वाली महातेज हैं पर लौकिक लीला में तो सब कुछ संभव ही है। ये अपने ललाट में रत्नों से निर्मित बेंदी धारण करती हैं इनके पास समूचा ऐश्वर्य , वैभव और सौन्दर्य होते हुए भी ये वीतरागी हैं इनका सिद्धांत है कि ऐश्वर्य या स्त्री से दूर रहने पर वैराग्य सिद्ध नहीं होता अपितु सब कुछ समीप हो और फिर भी शम दम युक्त रह सके तो ही वह पुरुष परम जितेन्द्रिय है। लेकिन इनके मत से यह भी पुष्ट होता है कि गृहस्थ जीवन के लिए जितेन्द्रिय स्त्री ही सुख और यश की वृद्धि करती है अतः मेरा कार्य (सृष्टि आदि) सिद्ध करने की इच्छा वाले भी कुलीन स्त्री का ही संग करे और दंपति शक्तिबीज (ह्रीं) से ही युक्त रहें।

●राजमातङ्गी,

●सुमुखी,

●धराधीशमाता

●कोशपूर्णा

●भूतियुक्ता

●सिद्धिरूपा

●क्षीरपूषा

●जयन्ती

●वश्यमातङ्गी

●षडंगा

●महामंगला

●महाचण्डवेगा तथा

●कर्णमातङ्गी इनके नामान्तर हैं।

मातङ्गीके भैरवका नाम मतङ्ग है। ब्रह्मयामल इन्हें मतङ्ग मुनिकी कन्या बताता है। इनको अपना एक नाम कदम्ब प्रिया तथा एक चलत्कुण्डला नाम भी बहुत प्रिय है।

अतः ह्रीं चलत्कुण्डलायै नमः

ह्रीं कदम्बप्रियायै नमः मंगलमय मंत्र से भी इनको पुकारा जा सकता है।

दशमहाविद्याओंमें मातङ्गीकी उपासना विशेषरूपसे वाक् सिद्ध के लिये की जाती है। देवी तारा भी वाक् सिद्धि देती हैं।

पुरश्चर्यार्णवमें इनको वाक् सिद्धि की अधीश्वरी कहा गया है ठीक वैसे ही जैसे दुर्गा जी ऐश्वर्य व बुद्धि की देवी है ये दुर्गा अपने भक्तों को त्रिदेव पद भी दे सकती हैं और राधा सौन्दर्य की अधिष्ठात्री है उसी प्रकार ये मातंगी वाक् सिद्ध करती हैं।

अक्षवक्ष्ये महादेवीं मातङ्गीं सर्वसिद्धिदाम् ।

अस्याः सेवनमात्रेण वाक्सिद्धिं लभते ध्रुवम् ॥

●मातङ्गीके स्थूलरूपात्मक प्रतीक विधानको देखनेसे यह भलीभाँति ज्ञात हो जाता है कि ये पूर्णतया वाग्देवताकी ही मूर्ति हैं।

● मातङ्गीका श्यामवर्ण परावाक् बिन्दु है।

● उनके तीन नेत्र ही सूर्य, चंद्र और अग्नि है।

● उनकी चार भुजाएँ चार वेद हैं।

● पाश अविद्या है, अंकुश विद्या है, कर्मराशि दण्ड है। शब्द स्पर्शादि गुण कृपाण है अर्थात् पञ्चभूतात्मक सृष्टिके प्रतीक हैं। कदम्बवन ब्रह्माण्डका प्रतीक है। ●योगराज उपनिषद् में ब्रह्मलोकको कदम्बगोलाकार कहा गया है–' कदम्बगोलाकारं ब्रह्मलोकं व्रजन्ति ते'। भगवती मातङ्गीका सिंहासन शिवात्मक महामञ्च या त्रिकोण है। उनकी मूर्ति सूक्ष्मरूपमें यन्त्र तथा पररूपमें भावनामात्र है।

● मार्कण्डेय पुराण की दुर्गासप्तशती के सातवें अध्यायमें भगवती मातङ्गीके ध्यानका वर्णन करते हुए कहा गया है कि वे रत्नमय सिंहासनपर बैठकर पढ़ते हुए तोतेका मधुर शब्द सुन रही हैं। उनके शरीरका वर्ण श्याम है। वे अपना एक पैर कमलपर रखी हुई हैं। अपने मस्तकपर अर्धचन्द्र तथा गलेमें कल्हार पुष्पोंकी माला धारण करती हैं। वीणा बजाती हुई भगवती मातङ्गीके अङ्गमें कसी हुई चोली शोभा पा रही है। वे लाल रंगकी साड़ी पहने तथा हाथमें शंखमय पात्र लिये हुए हैं। उनके वदनपर मधुका हलका–हलका प्रभाव जान पड़ता है और ललाटमें विन्दी शोभा पा रही है। इनका वल्लकी धारण करना नादका प्रतीक है।

तोतेका पढ़ना 'ह्रीं' वर्णका उच्चारण करना है, जो बीजाक्षरका प्रतीक है। कमल वर्णात्मक सृष्टिका प्रतीक है। शंखपात्र ब्रह्मरन्ध्र तथा मधु अमृतका प्रतीक है। रक्तवस्त्र अग्नि या ज्ञानका प्रतीक है। वाग्देवीके अर्थमें मातङ्गी यदि व्याकरणरूपा हैं तो शुक शिक्षाका प्रतीक है। चार भुजाएँ वेदचतुष्टय हैं। इस प्रकार तान्त्रिकोंकी भगवती मातङ्गी महाविद्या वैदिकोंकी महा सरस्वती ही हैं।

इनके अतिरिक्त आप श्रीबगलामुखी देवी का वर्णन अध्याय 7 तथा   श्रीषोडशी महाविद्या का वर्णन अध्याय 19 में करें । त्रिपुराभैरवी के दर्शन आपको अध्याय 20 में सम्यक् रूप से होंगे। और वज्रवेरोचनी नामक छिन्नमस्ता परम दयालु देवी का माहात्म्य अध्याय 29 में देखें। ये सब महाविद्याएं बड़ी ही कृपालु हैं अतः जिस रूप में मन लग जाये उसी रूप को समर्पित हो जायें। और एक के लिए ही सभी का सुमिरन करते रहें जैसे कि यह अक्षयरुद्र भी इन सबको जो नमन कर रहा है उन सबका नमन फल भी देवी भुवनेश्वरी को अर्पित है और उन पराम्बा की प्रसन्नता के लिए ही हम श्रीमातंगी माहात्म्य को यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं किसी भी एक को इष्ट मानकर ही परमगति होती है अतः जिसको भी मानें मात्र उसी के शरणागत हो जायें उनके लिए ही हर पग आगे रखे।

कमला –

● शिवजीका कल्याणकारी दसवाँ अवतार कमल नामवाला है, जो भोग और मोक्ष देनेवाला है। उनकी शक्ति पार्वतीका नाम कमला है, जो भक्तोंका पालन करती हैं।

दस महाविद्यामयी मुण्डमालातन्त्रोक्त स्तोत्रम्–

देवी पराशक्ति के 10 रूप महाविद्या नाम से प्रसिद्ध हैं वैसे तो देवी का हर रूप (महासरस्वती रूपी कौशिकी या महामाया आदि भी) सब कुछ देने में समर्थ है पर एक निश्चित विधान के अंतर्गत ही नवशक्तियाँ, नवदुर्गा, 10 महाविद्याओं, शक्तिपीठों की 51 शक्तियों, देवी की कलाएं, कलांशाएं, कलाकलांशाएं व मातृकाओं का अलग अलग माहात्म्य है। आईये हम यहाँ पराशक्ति की प्रसन्नता के लिए 20 श्लोकी मुण्डमालातन्त्रोक्त महाविद्या स्तोत्र के दर्शन करते हैं।

अथ श्री मुण्डमालातन्त्रोक्त स्तोत्रम्–

ऊँ नमस्ते चण्डिके चण्डि चण्डमुण्डविनाशिनी।
नमस्ते कालिके काल–महाभय–विनाशिनि।।1।।

शिवे रक्ष जगद्धात्रि प्रसीद हरवल्लभे।
प्रणमामि जगद्धात्रीं जगत्पालनकारिणीम्।।2।।

जगत् क्षोभकरीं विद्यां जगत्सृष्टिविधायिनीम्।
करालां विकटां घोरां मुण्डमालाविभूषिताम्।।3।।

हरार्चितां हराराध्यां नमामि हरवल्लभाम्।
गौरीं गुरुप्रियां गौरवर्णालंकारभूषिताम्।।4।।

हरिप्रियां महामायां नमामि ब्रह्मपूजिताम्।
सिद्धां सिद्धेश्वरीं सिद्धविद्याधरगणैर्युताम्।।5।।

मन्त्रसिद्धिप्रदां योनिसिद्धिदां लिंगशोभिताम्।
प्रणमामि महामायां दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम्।।6।।

उग्रामुग्रमयीमुग्रतारामुग्रगणैर्युताम्।
नीलां नीलघनश्यामां नमामि नीलसुन्दरीम्।। 7।।

श्यामांगी श्यामघटितां श्यामवर्णविभूषिताम्।
प्रणमामि जगद्धात्रीं गौरीं सर्वार्थसाधिनीम्।।8।।

विश्वेश्वरीं महाघोरां विकटां घोरनादिनीम्।
आद्यामाद्यगुरोराद्यामाद्यनाथप्रपूजिताम्।।9।।

श्री दुर्गां धनदामन्नपूर्णां पद्मां सुरेश्वरीम्।
प्रणमामि जगद्धात्रीं चन्द्रशेखरवल्लभाम्।।10।।

त्रिपुरां सुन्दरीं बालामबलागणभूषिताम्।
शिवदूतीं शिवाराध्यां शिवध्येयां सनातनीम्।।11।।

सुन्दरीं तारिणीं सर्वशिवागणविभूषिताम्।

नारायणीं विष्णुपूज्यां ब्रह्मविष्णुहरप्रियाम्।।12।।

सर्वसिद्धिप्रदां नित्यामनित्यां गुणवर्जिताम्।
सगुणां निर्गुणां ध्येयामर्चितां सर्वसिद्धिदाम्।।13।।

विद्यां सिद्धिप्रदां विद्यां महाविद्यां महेश्वरीम्।
महेशभक्तां माहेशीं महाकालप्रपूजिताम्।।14।।

प्रणमामि जगद्धात्रीं शुम्भासुरविमर्दिनीम्।
रक्तप्रियां रक्तवर्णां रक्तबीजमर्दिनीम्।।15।।

भैरवीं भुवनां देवीं लोलजिह्वां सुरेश्वरीम्।
चतुर्भुजां दशभुजामष्टादशभुजां शुभाम्।।16।।

त्रिपुरेशीं विश्वनाथप्रियां विश्वेश्वरीं शिवाम्।
अट्टहासामट्टहासप्रियां धूम्रविनाशिनीम्।।17।।

कमलां छिन्नभालांच मातंगी सुरसुन्दरीम्।
षोडशीं विजयां भीमां धूमांच वगलामुखीम्।।18।।

सर्वसिद्धिप्रदां सर्वविद्यामन्त्रविशोधिनीम्।
प्रणमामि जगत्तारां सारांच मन्त्रसिद्धये।।19।।

इत्येवंच वरारोहे, स्तोत्रं सिद्धिकरं परम्।
पठित्वा मोक्षमाप्नोति सत्यं वै गिरिनन्दिनि।।20।।

इति श्री मुण्डमालातन्त्रोक्त महाविद्यास्तोत्रम् सम्पूर्णम्

माँ महाविद्याओं को यह स्तोत्र अत्यंत प्रिय है, यह तंत्रोक्त स्तोत्र है। जो साधक इस स्तोत्र नित्य पाठ करता है, उसको महाकाली के दर्शन होते है। इसके पाठ से कई पापों का नाश होता है, शत्रु पर विजय प्राप्त होती है, हर प्रकार के तंत्र दोष से रक्षा होती है। इस स्तोत्र का प्रतिदिन पाठ करे और परिणाम स्वयं देखे कितना प्रभावशाली है। महाकाली स्तोत्र के साथ–साथ यदि काली कवच का पाठ किया जाए तो, 100 गुना लाभ आप पा सकते हो इसे यदि हर संक्राति 18 अक्षय तिथियों व जन्म नक्षत्र पर जपें इस कवच व स्तोत्र से आप त्रिलोक पर भी विजय पा सकते हो। पर देवी की खुशी के लिए आप अपनी साधना में तीनों महादेवियों '' भुवनेश्वरी– कौशिकी– महाकाली 10 भुजी व महादेव तथा मातृकाओं की सेवा या नाम सुमिरण अवश्य करना इससे आप धन्य धन्य हो जाओगे।

37. काली शब्द काल पर नियंत्रण का द्योतक

काली शब्द काल पर नियंत्रण का द्योतक है इस कारण काल पर नियंत्रण करने वाली देवी ही काली कही गई हैं। काल शब्द समय का पर्याय है इसका तात्पर्य यही है कि काली ही समय (काल) है । काली ही परिवर्तन, संरक्षण, सृजन, विनाश, निद्रा, जागरण, शक्ति संवर्धन, वृद्धि और अंत आदि का प्रतिनिधित्व करती है। भक्तों के लिए माता कालिका का स्वरूप जितना डरावना और भयानक है, उससे 1000 गुना अधिक व कहीं ज्यादा सौम्य , सुखद और आनंददायक भी है। अधिकाश देखा गया है कि माँ काली की पूजा तांत्रिक लोग अधिक करते हैं, पर ऐसा नही है, माँ काली की पूजा वही करते हैं जिस पर भगवान महारुद्र की विशेष कृपा हो। अर्जुन व प्रद्युम्न को संकट की घड़ी में भगवान श्रीकृष्ण ने देवी काली की ही स्तुति का आदेश दिया था। राम कृष्ण परमहंस को तो नित्य इन देवी के दर्शन होते थे वे अपने हाथों से देवी को साक्षात भोजन कराते थे। और श्री शिव की आज्ञा से इस अक्षयरुद्र ने स्वयं सिद्धेश्वरी काली की स्थापना का सौभाग्य प्राप्त किया है और कृपा की तो पूछो ही मत। देवी काली का नाम लेने मात्र से काल भाग जाता है । महामृत्युञ्जय मंत्र का जो प्रभाव है वही प्रभाव काल की अधीश्वरी व काल पर शासन करने वाली काली का है। दो अक्षर के नाम (श्री काली) से ही काल साधक के अधीन हो जाता है। पंच देवों के चार देवता (सूर्य, गणेश, विष्णु और शंकर) स्वयं काली के भक्त हैं और काली काली स्मरण से अपने भक्तों का योगक्षेम वहन करते हैं। गृहस्थ जीवन का मनुष्य अपने आराध्य देव की प्रसन्नता के लिए जिस प्रकार पंचदेवों की पूजा करता है उसी प्रकार वह ब्रह्म वैवर्त पुराण के अनुसार छटवां देव अग्नि और कालिका पुराण के अनुसार इन काली को अनिवार्य रूप से महत्व देता है। इन काली के अद्भुत और अद्वितीय माहात्म्य का वर्णन ब्रह्मा और ब्रह्म पुत्र भी सम्यक् रूप से करने समर्थ नहीं तो साधारण मनुष्य क्या करेगा। चाहे कोई सा भी नक्षत्र चल रहा हो चाहे कैसा भी योग हो जो मनुष्य इन काली का 108 बार नाम लेकर उस प्रतिकूल समय में भी कार्य करता है वह कार्य भी सिद्ध हो जाता है। मनुष्यों को देवी के नाम की शक्ति अभी पता नहीं कि वह नाम क्षण में ही इन नक्षत्र और ग्रहों की चाल तक बदल सकता है इस कारण ये सब देवगण काली के उपासकों के भय से उस साधक पर अपना जोर नहीं आजमाते। माँ काली भक्तों के लिए दुर्गा और राधा की भाँति अति सौम्य है। और इनकी दयालुता के विषय में यह अक्षयरुद्र एक बार तीन वर्ष पहले आपको अवगत करा भी चुका है।

जिसमें इस दास ने एक बार रक्तदंतिका के स्तनों के दूध का माहात्म्य पढ़ा (जिसमें ज्ञान रूपी अमृत भरा हुआ है दूध तो भौतिक रूप से दिखता मात्र है) तो इसने रक्तदंतिका को पुकारा और पवित्र धरा पर कुशासन की चटाई बिछाकर और रुद्राक्ष धारण कर सो गया और उषाःकाल में इसने स्वप्न में देखा कि देवी रक्तदंतिका ने देवी काली से कहा कि मेरा कार्य आप कर दीजिए जो मैं अपने वनवासी भक्तों को दुग्धामृत पान कराती हूँ वही आप बालभावी ब्रह्मचारियों को कराती हो अतः देवी काली हमारे सम्मुख उसी कुशासन पर बैठी और हमसे कहा कि – पुत्र! अपनी कामना पूर्ण करो फिर देवी की कृपा से आधी से भी आधी और उसकी भी आधी घड़ी (3 मिनट) के लगभग हमें इन देवी के अमृत का पान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हालांकि पोस्ट के बाद अनेक भक्तों ने हमसे गुप्त रहस्यों को उजागर न करने का कहा तब से हम अधिकांश अनुभव शेयर नहीं करते । बात तो लिखते हैं पर उसी अनुभव को सिद्धांत या नियम बनाकर लिखते हैं । अर्थात इन देवी ने ही हमारी आध्यात्मिक पिपासा शान्त की और उसी समय से नवदुर्गाओं की अष्टमी पर देवी का एक स्वरूप आवेश रूप में आना आरंभ हो गया था। जिसकी अलग बात है पर यहाँ हम उन काली के माहात्म्य पर पुनः आते हैं। तंत्रोक्त रात्रिसूक्त इन देवी महाकाली को ही समर्पित है ।

एक दक्षिणकाली नाम से जो स्तोत्र हमने स्तोत्र निधिवन भाग एक में संकलित किया है (जिससे शंकर तक उस पाठ को सुनकर प्रेमवश दास के दास हो जाते हैं) वह भी इनकी आराधना के लिए सरल और सहज उपाय

है। श्री कृष्ण को नजर लगने पर देवी यशोदा एक काली विद्या से ही श्रीकृष्ण की नजर उतारती थी यह ब्रह्म वैवर्त पुराण में लिखा है।

माँ कालिका का एक नाम पार्वती जी को भी मिल चुका है यह आप उत्तर चरित्र में पढ़ ही चुके होंगे वह कौशिकी जी की कथा के प्रसंग में । और एक बार दक्ष यज्ञ के समय वीरभद्र के साथ ही ये देवी शंकर जी की जटा से प्रकट होकर वीरभद्र के साथ दक्ष के नाश के लिए गई थी ये कथा आप शिव पुराण में पढ़ सकते हो। और कौशिकी (आठ भुजा धारी) के साथ सबसे अधिक सहयोग इन देवी काली का ही था यह आप दुर्गा सप्तशती के सप्तम अध्याय में पढ़ लेना। वहाँ इनके आयुध अलग अलग थे ये तो इनकी लीला मात्र है। वहाँ तलवार, पाश और विचित्र खट्वांग था और हड्डियों का ढांचागत रूप तथा नरमुण्डों की भयंकर माला थी उसी रूप का नाम चामुण्डा हुआ। ये देवी बहुत ही शांत, भय से मुक्तिप्रदायक और काल पर विजय देती हैं । इनके चारों रूप (महाकाली, महाविद्या काली , नवरात्रि की कालरात्रि और चामुण्डा नामक पाश धारिणी और खट्वांग धारिणी) अतिशीघ्र कृतकृत्य करते हैं। किसी भी रुप का स्तवन इष्ट देव की प्रसन्नता के लिए साधक कर सकता है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि कृतज्ञता के लिए हम माता पिता दादा और दादी की स्तुति करते हैं तथा सूर्य व अग्निदेव की। करे भी क्यों नहीं बिना अग्नि के रोटी की कल्पना भी भला कौन कर सकता है। ये देवी चारों पुरुषार्थ सिद्ध करती हैं ।

रुद्रयामल तंत्र अनुसार काली के कुछ मंत्र ऐसे हैं, जिनका प्रयोग आम व्यक्ति अपने रोजमर्रा के जीवन की समस्याओं को दूर करने के लिए कर सकता है। यह मन्त्र बहुत ही लाभदायक माने गये है। मुण्डमालातन्त्र का महाविद्या स्तोत्र इनको अत्यधिक प्रिय है। और भी अनेक स्तोत्र हैं इन पराम्बिका के। स्तोत्र निधिवन भाग एक में इनके चार स्तोत्र हमने दिये हैं जो वराह पुराण और ब्रह्म वैवर्त पुराण आदि के हैं। इनकी सेवा से भोग और मोक्ष दोनों ही इसी जीवन में प्राप्त होते है।

इस पाठ से मनुष्य जीवन्मुक्त हो जाता है । भवरोग नामक समस्या का हल काली जी के पास है। इनके अनुग्रह से साधक दसों दिशाओं में विजय प्राप्त करता है। ब्रह्म वैवर्त पुराण के अनुसार परशुराम जी ने भी इनके भजन से ही विजय प्राप्त की। इनका भक्त (जो गुरु आज्ञा से उपदेश पाकर देवी का रक्षक कवच कंठ पर धारण करता है) भी देवी के समान पूजनीय है। शत्रु पर विजय प्राप्त करने के लिए इनकी साधना लोग अधिकांशतः करते हैं और काम रूपी शत्रु पर विजय इनकी ही कृपा से होती है। इनके (महामाया रूप के) काम बीज क्लीं को जपकर साधक धन्य धन्य हो जाता है। इनके स्तोत्र के पाठ से तंत्र दोष या अभिचार कर्म का कुप्रभाव समाप्त हो जाता है।

माँ महाकाली, दुर्गा के उग्र रूप की शक्ति है, जो पापियों के लिए विध्वंसक है पर भक्तों के लिए सौम्य हैं।

भगवान शिव की प्रिया हैं ये देवी । इन काली का एक नाम शंकरकान्ता भी है। महाकाल रूप की जो शक्ति हैं वे महाकाली भी यही हैं।

महाकाली स्तोत्र के लाभः

1. महाकाली स्तोत्र से सभी नवग्रहों का दोष दूर,
2. कालसर्प दोष दूर,
3. पितृ दोष दूर,
4. दरिद्र दूर ,
5. मांगलिक दोष समाप्त
6. इनकी सेवा से भोग और मोक्ष दोनों ही इसी जीवन में प्राप्त होते है।
7. इनके किसी भी एक पाठ से या तंत्रोक्तमुण्डमाला स्तोत्र से सब कुछ प्राप्त होकर मनुष्य जीवन्मुक्त हो जाता है ।

8. भवरोग नामक समस्या का हल काली जी के पास है।
9. इनके अनुग्रह से साधक दसों दिशाओं में विजय प्राप्त करता है।
10. महाकाली स्तोत्र से भूत–प्रेत आदि बाधाओं से मुक्ति मिलती है,
11. नकारात्मक शक्तियां दूर होती है।
12. गृहस्थ को संतान व स्त्री लाभ होता है।
13. काल पर विजय प्राप्त करने के लिए संसार में इससें बड़ा कोई स्तोत्र नही है।
14. महाकाली स्तोत्र से मनुष्य की सभी मनोकामना सिद्ध होती है। जो जो कामना करके देवी काली की सेवा की जाती है वह वह कामना अवश्य ही पूरी हो जाती है।

आईये पहले 10 महाविद्याओं में प्रथम काली व सभी रूपों की प्रसन्नता के लिए हम इष्ट के निमित्त श्री मुण्डमालातन्त्रोक्त स्तोत्र सुनते हैं।

पहले शंकराचार्य कृत मानसिक पूजा करें जो हम सार रूप में बता रहे हैं। यह पूजा तीनों महादेवियों पर लागू होती है।

हम उन परब्रह्म स्वरूपिणी जगतजननी जगदम्बिका माँ भुवनेश्वरी का ध्यान करते हैं जिनके मुख पर सदा मुस्कान की छटा छायी रहती है, जो तीन नेत्रों से युक्त है, जिनके श्री अंगों की आभा प्रभातकालीन आदित्य के समान है जो उभरे हुये स्तनों से युक्त होकर अपने निश्छल बालभावी भक्तों के लिए वात्सल्य स्वरूपा होकर दुग्धामृत पिलाने के लिए सदैव लालायित है ,जो रक्तवसना अर्थात् लाल रंग के वस्त्र परिधान करने वाली हैं ,

अपने अनन्य भक्तों के लिए जिनके दो हाथ सदैव वरद और अभय मुद्रा से शोभा पाते हैं तथा शत्रुओं के नाश के लिए जिन करुणामयी माँ के शेष दो हाथों में पाश और अंकुश शोभायमान हैं। उन देवी अम्बिका को नमस्कार बार बार नमस्कार।

तथा कामधेनु के समान भक्तों के मनोरथ पूर्ण करने वाली हैं।

हे पराम्बा !श्रीसदाशिवप्रिया भुवनेश्वरी !हे सर्वेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी !आप ही चित्स्वरूपिणी महासरस्वती, आप ही सद्रूपिणी महालक्ष्मी और आनंदरूपिणी महाकाली परात्परा हो, ब्रह्मविद्या को अपरोक्षानुभूति रूप में देने वाली कौशिकी ! हे जगतजननी हे चण्डिके तुम्हें नमस्कार है अविद्यारूप रज्जु की दृढ़ ग्रंथि को खोलकर हमें मुक्त करो, मुक्त करो मुक्त करो।

भक्तों की मनोकामना पूर्ण करने वाली हे कल्पलता! आपको उन ब्रह्मनिष्ठ के वो षोडश पद्यों में गायी वो मानस पूजा अर्पित है जिसको उन्होनें अंशभूतत्व रूप में द्वैतमयी बुद्धि से स्वयं को शिष्य और दास रूप में स्वीकृति देकर गाकर भक्तों के लिए अमृत को ही शब्द रूप में रचा था और परम कल्याणकारी और दुख दरिद्रता का नाशक है के स्मरण मात्र से आप अपने भक्तों के हृदय में साक्षात् विराजमान होकर उसे अपना ही स्वरूप बनाकर जीवंतमुक्ती प्रदान करती हो अर्थात् हे जगत माता करुणामयी मूर्ति आपके श्रीचरणों में वो दिव्य चरण पादुका मानसिक रूप से अर्पित है जिसका निर्माण मूँगों तथा बहुमुल्य मणियों द्वारा हुआ है और जो चंदन और कुंकुम से मिश्रित जल द्वारा धोयी गयी है ,हे जगदम्बिका इसे धारण करें तथा इस मनःकल्पित विशुद्ध सिंहासन पर विराजो जो सदा ही अपनी कांति से दमकते हुये स्वर्ण से निर्मित है और अपनी मनोहर प्रभा से सदा प्रकाशमान है
तथा

1. निर्मल तेल,
2. उबटन,
3. आँवले का फल,
4. स्नान के लिए गंगधारा,
5. गंध,

6. अगुरुमयी कस्तूरी,
7. समस्त ब्रह्माण्डों की सभी देवियों द्वारा परम उज्जवल तथा विशेष निर्मल पीताम्बर या रक्ताम्बर आपको अर्पित है,
8. कुंडल,
9. अंगूठी,
10. करधनी,
11. चरणों के लिए मंजीर,
12. वक्षःस्थल पर कीमती हार जो इस जम्बूदीप के मेरु पर्वत की दसों दिशाओं में रहने वाली सभी देवियों ने बड़े ही परिश्रम से अपने अथक परिश्रम से मात्र आपके लिए ही तैयार किया है अतः इसे स्वीकार कीजिये। चित्त को विश्रांति देने वाली
13. विंध्यवासिनी! त्रिपुरा! आप आपके मुख की शोभा हेतु वही दर्पण आपको अर्पित है जो क्षीरसागर से प्रकट हुआ था,
14. हे भगवान महारुद्र प्रिया गौरी! रत्नमय सुवासित कलश जल,नाना प्रकार के कह्लार, उत्पल, नागकेसर,
15. कमल, मालती पुष्प और सुगंधित पुष्पमाला आपको अर्पित है।
16. हे चण्डिके कल्याणी! रत्नपात्र में दिव्य धूप,
17. गोघृतमयी दीप
18. जो स्वर्ण के पात्र में जलाया गया है अर्पित है,
19. हे हे जगस्वामिनी और पंचक प्रकृति में प्रधान पांचों देवियाँ (राधे, गौरी, लक्ष्मी, भारती और सावित्री),
20. दस महाविद्या,
21. नवदुर्गायें,
22. नवशक्तियाँ,
23. रिद्धि,सिद्धि,
24. नर्मदा,
25. मनसा,गोपीयाँ ,
26. कश्यपप्रिया लोकमातायें सहित सभी दक्षपुत्रियों,
27. कर्दमपुत्रियों ,
28. अष्टमातृकायें,
29. ग्राममातायें आदि नाम और नाम से परे सभी देवियाँ आपको चमेली और आपकी इच्छा के अनुरूप वाली सुगंधों से वासित दिव्य नैवेद्य अर्पित हैं
30. इसमें भांति भाँति के पकवान, खीर, मधु, दही और घी का मेल है अथवा आपकी सुरुचि के अनुरूप ही बना हुआ नैवेद्य आपको प्रेम पूर्वक अर्पित है,
31. हे सभी 112भुवनों की देवी भुवनेश्वरी, कौशिकी और महामाया ! लवंग की कली चुभोकर जिसके बीड़े लगाये हैं वो ताम्बूल स्वीकार कीजिये जिसमें कपूर, सुपाड़ी, जावित्री आदि का समावेश है जो सुधा के माधुर्य हे परिपूर्ण हैं,
32. विशाल छत्र,
33. श्वेत चँवर, और
34. सभी ऋषि, मुनियों का समूह अपने अपने चित्त में जो वेदमंत्रों का उच्चारण करते हैं वही वेदध्वनि आपके आनंद की वृद्धि करे, हे माँ सारात्मक इस (उन्हीं दिव्य भक्तराज द्वारा रचित यजन सार) अति संक्षिप्त

पूजा को स्वीकार कर हमारा जीवन सफल करें और जिस वाणी द्वारा आपके आनंद की अभिवृद्धि होती है वही वाणी और उस वाणी के हर वाक्य आपकी पूजा के आनंद को बड़ाने में सहायक सिद्ध हों और जो भी गलतियाँ हों उन गलतियों को भी एक बालक की शठता और आलस्य जानकर भी सदा तृप्त होकर अनुग्रह करें ।

आपकी जय हो बार बार जय हो।

अब

तीनों लोकों पर विजय तथा शत्रुओं के नाश के लिए शक्ति के भद्रकाली रूप का अद्‌भुत रक्षक स्तोत्र सुनःजो परशुराम जी ने जपा था।

घोर संकट दिखाई दे तो लगातार 100 बार इसका प्रयोग भी करते हैं भक्तगण या आम दिनों में
नित्य सुबह और शाम 5–5 बार पाठ करें तो महान लाभ होगा। 1–1 बार से भी रक्षा अवश्य होती है।

अथ श्री भद्रकाली स्तोत्रम्

नमः शंकरकान्तायै सारायै ते नमो नमः।

नमो दुर्गतिनाशिन्यै मायायै ते नमो नमः।

नमो नमो जगद्धात्र्यै जगत्कर्त्र्यै नमो नमः।

नमोऽस्तु ते जगन्मात्रे कारणायै नमो नमः।

प्रसीद जगतां मातः सृष्टिसंहारकारिणि।

त्वत्पादे शरणं यामि प्रतिज्ञां सार्थिका कुरु।।

त्वयि में विमुखायां च को मां रक्षितुमीश्वरः।

त्वं प्रसन्ना भव शुभे मां भक्त भक्तवत्सले ।।

युष्माभिः शिवलोके च मह्यं दत्तो वरः पुरा।

तं वरं सफलं कर्तुं त्वमर्हसि वरानने ।।

नोट – देवी चण्डिका के भक्त इसे भी कर सकते हैं।

शिव जी के प्रेम से वशीकरण हेतु दक्षिण काली स्तोत्र–

शिव जी को प्रेम से वश में करने के लिए महान श्रीकाली मैया के गुप्त नाममय स्तोत्र।

दक्षिण काली स्तोत्रकाली दक्षिण काली च कृष्णरूपा परात्मिका।मुण्डमाला विशालाक्षी सृष्टि संहारकारिका ।। स्थितिरूपा महामाया योगनिद्रा भगात्मिका। भागसर्पि पानरता भगोद्योता भागाङ्गजा ।। आद्या सदा नवा घोरा महातेजाः करालिका प्रेतवाहा सिद्धिलक्ष्मीरनिरुद्धा सरस्वती ॥एतानि नाममाल्यानि ए पठन्ति दिने दिने। तेषां दासस्य दासोऽहं सत्यं सत्यं महेश्वरि ॥ॐ काली कालहरां देवी कंकाल बीज रूपिणीम् । कालरूपां कलातीता कालिका दक्षिणा भजे।।साथ में भगवान शिव जी का एक स्तोत्र और भी उच्चारित करें जो देवी की परम प्रसन्नता में सहस्र अयुत गुना वृद्धि करेगा। यह आगे दिया है।

असित उवाच–

जगद्गुरो नमस्तुभ्यं शिवाय शिवदाय च।
योगीन्द्राणां च योगीन्द्र गुरूणां गुरवे नमः ।।1।।

मृत्योर्मृत्युस्वरूपेण मृत्युसंसारखंडन
मृत्योरीश मृत्युबीज मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते ।।2।।

कालरूपं कलयतां कालकालेश कारण।
कालादतीत कालस्य कालकाल नमोऽस्तु ते ।।3 ।।

गुणातीत गुणाधार गुणबीज गुणात्मक ।
गुणीश गुणिनां बीज गुणिनां गुरवे नमः ।। 4 ।।

ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मज्ञ ब्रह्मभावनतत्पर ।
ब्रह्मबीज स्वरूपेण ब्रह्मबीज नमोऽस्तु ते ।।5

श्रीभद्रकाली कवच–

हे शिवशक्ति माँ कालिका! हे भद्रकाली! हे लोलजिह्वा मेरी रक्षा करो।

अथ श्रीभद्रकाली कवचं

ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं कालिकायै स्वाहा मेरे मस्तक की रक्षा करें।
क्लीं कपाल की तथा ह्रीं ह्रीं ह्रीं नेत्रों की रक्षा करें।
ऊँ ह्रीं त्रिलोचने स्वाहा सदा मेरी नासिका की रक्षा करें।
क्रीं कालिके रक्ष रक्ष स्वाहा सदा मेरे दांतों की रक्षा करें।
ह्रीं भद्रकालिके स्वाहा मेरे दोनों ओठों की रक्षा करें।
ऊँ ह्रीं ह्रीं क्लीं कालिकायै स्वाहा सदा कण्ठ की रक्षा करें।
ऊँ ह्रीं कालिकायै स्वाहा सदा दोनों कानों की रक्षा करें।
ऊँ क्रीं क्रीं क्लीं काल्यै स्वाहा सदा मेरे कंधों की रक्षा करें।
ऊँ क्रीं भद्रकाल्यै स्वाहा सदा मेरे वक्षः स्थल की रक्षा करें।
ऊँ क्रीं कालिकायै स्वाहा सदा मेरी नाभि की रक्षा करें।
ऊँ ह्रीं कालिकायै स्वाहा सदा मेरे पृष्ठभाग की रक्षा करें।

रक्तबीजविनाशिन्यै स्वाहा सदा हाथों की रक्षा करें।
ऊँ ह्रीं क्लीं मुण्डमालिन्यै स्वाहा सदा पैरों की रक्षा करें।
ऊँ ह्रीं चामुण्डायै स्वाहा सदा मेरे सर्वांग की रक्षा करें।
पूर्व में महाकाली और अग्निकोण में रक्तदंतिका रक्षा करें।

दक्षिण में चामुण्डा रक्षा करें। नैर्ऋत्य कोण में कालिका रक्षा करें। पश्चिम में श्यामा रक्षा करें। वायव्य कोण में चण्डिका, उत्तर में विकटास्या और ईशान कोण में अट्टहासिनी रक्षा करें। ऊर्ध्व भाग में लोलजिह्वा रक्षा करें। अधोभाग में सदा आद्यामाया रक्षा करें। जल स्थल और अन्तरिक्ष में सदा विश्वप्रसु रक्षा करें।

अष्टभुजी कौशिकी अर्थात महासरस्वती नामक चण्डिका देवी जब पार्वती के शरीर से प्रकट हुई थी तब उन पार्वती का वर्ण काला पड़ गया था उस समय पार्वती जी का नया नाम कालिका हुआ (हालांकि वे तप से पुनः गौरवर्ण को पा चुकी हैं और गौरी कहलाई) इसी कथा में आगे युद्ध क्षेत्र में इसी हिमालय पर्वत के निकट जो युद्ध हो रहा था उसमें धूम्र लोचन को चण्डिका श्रीदुर्गा ने स्वयं मारा पर अब चण्ड और मुण्ड के नाश के लिए देवी चण्डिका ने अपने आधे अंश से भद्रकाली को प्रकट किया वे तलवार, पाश और खट्वांग लिये थी, शरीर पर माँस न होकर मात्र हड्डियों का ढांचा था, नर मुण्डों की माला भी पहनी थी उन देवी ने। इन देवी को भी दुर्गा सप्तशती के सातवें अध्याय में कालिका की संज्ञा दी गई है। तो इन चण्डिका से उत्पन्न देवी काली ने चण्ड और मुण्ड का नाश किया तब देवी दुर्गा (महासरस्वती) बोलीं कि – विश्व में तुम आज से चामुण्डा नाम से प्रसिद्ध होओगी और जो भी तुम्हारा नाम जपेगा उसको तुम्हारे नाम मात्र से ही भय से मुक्ति मिल जायेगी तुम्हारा नाम लेने वाले को कभी भी भूत प्रेत और अन्य नकारात्मक शक्तियों से कभी भी भय नहीं होगा जो तुम्हारा भक्त होगा वह वास्तव में मुझे ही प्राप्त होगा इसमें संदेह नहीं।....

शक्ति के 76 नाम और इनकी महिमा –

सूत जी ने कहा कि – हे ऋषियों ! देवी पराम्बा के इन नामों का स्मरण कभी भी कैसे भी मनुष्य करे तो उनकी रक्षा निश्चित ही होती है

जो लोग इनका पाठ करते हैं, उनका पाप शेष नहीं रह जाता है। जंगलमें, पर्वतपर, नगरमें, घरमें, जल अथवा स्थल कहीं भी रक्षाके लिये इनका प्रयोग करना चाहिये। विशेष रूपसे बाघ, हाथी तथा चोरोंसे भयके स्थानमें और सभी प्रकारकी विपत्तियोंमें देवीके नामोंको पढ़ना चाहिये।

●बुरे ग्रहों,● भूतों, ●पूतना तथा ●मातृगणोंसे पीड़ित शिशुओंकी रक्षाके लिये इन नामोंका प्रयोग करना चाहिये

लिंग पुराण पूर्व भाग अध्याय 70 से ।

1. **स्वाहा,**
2. **स्वधा,**
3. **महाविद्या,**
4. **मेधा,**
5. **लक्ष्मी,**
6. **सरस्वती,**
7. **सती,**
8. **दाक्षायणी,**

9. विद्या,
10. इच्छा,
11. शक्ति,
12. क्रियात्मिका,
13. अपर्णा,
14. एकपर्णा,
15. एकपाटला,
16. उमा,
17. हैमवती,
18. कल्याणी,
19. एकमातृका,
20. ख्याति,
21. प्रज्ञा
22. महाभागा,
23. लोकप्रसिद्ध गौरी,
24. गणाम्बिका,
25. महादेवी,
26. नन्दिनी तथा
27. जातवेदसी– ये 28 नाम हैं। पृथक् देह धारण करनेसे पहले इनका एक ही रूप था।
28. सावित्री,
29. वरदा,
30. पुण्या,
31. पावनी,
32. लोकविश्रुता,
33. आज्ञा,
34. आवेशनी,
35. कृष्णा,
36. तामसी,
37. सात्त्विकी,
38. शिवा,
39. प्रकृति,
40. विकृता,
41. रौद्री " मत्स्य पुराण में त्रिशक्ति में से एक अवतार जो त्रिकला का एक रूप है।
42. दुर्गा,
43. भद्रा,
44. प्रमाथिनी,
45. कालरात्रि,
46. महामाया,

47. रेवती,
48. भूतनायिका– हे सुव्रतो! द्वापरयुगके अन्तमें ये उनके नाम हुए। इसी प्रकार
49. गौतमी,
50. कौशिकी,
51. आर्या,
52. चण्डी,
53. कात्यायनी,
54. सती,
55. कुमारी,
56. यादवी,
57. देवी,
58. वरदा,
59. कृष्णपिंगला,
60. बर्हिध्वजा,
61. शूलधरा,
62. परमा,
63. ब्रह्मचारिणी,
64. महेन्द्रोपेन्द्रभगिनी,
65. दृषद्वती,
66. एकशूलधृक्,
67. अपराजिता,
68. बहुभुजा,
69. प्रगल्भा,
70. सिंहवाहिनी,
71. शुम्भादिदैत्यहन्त्री,
72. महामहिषमर्दिनी,
73. अमोघा,
74. विन्ध्यनिलया, विक्रान्ता, गणनायिका

मैंने देवी भद्रकालीके इन नामविकारोंको यथाक्रम बता दिया, जो सम्यक् फल प्रदान करनेवाले हैं।

'प्रज्ञा' तथा 'श्री'– ये महादेवीकी दो कलाएँ कही गयी हैं। इन दोनोंसे हजारों देवियाँ उत्पन्न हुई हैं, जिनके द्वारा सम्पूर्ण जगत् व्याप्त है।

.......इस देवी रहस्य महाग्रंथ में भगवती काली के अष्टोत्तर शतनाम को सम्यक् स्थान देकर हमें अत्यधिक आनंद की अनुभूति हो रही है इसका माहात्म्य देवी का भक्त बहुत ही अच्छी तरह से जान सकता है। अथवा वह भी जिसे देवी के स्वप्न या प्रत्यक्ष में दर्शन हो चुके हैं बिना काली के दर्शन अध्यात्म अधूरा है इसी कारण श्रीकृष्ण भक्तों को भी अपनी साधना के दौरान निश्चित ही देवी का साक्षात्कार होता ही है । श्रीकृष्ण की उपासना से पहले परशुराम जी ने भी देवी कालिका के स्तोत्र से देवी को मनाया था यह श्री ब्रह्म वैवर्त पुराण में आप देख सकते हो।

अतः यह देवी शाक्त, वैष्णव या शैव सभी का आधार स्तंभ हैं। विष्णु जी की निद्रा और जागरण का कारक यही हैं। अब अष्टोत्तरशतनाम का माहात्म्य सुनें पहले तदोपरान्त पाठ के दर्शन करें –

– स्तोत्र माहात्म्य

जो मनुष्य साधक इस काली के १०८ नाम वाले स्तोत्र का प्रतिदिन पाठ करता है
किसी भी समय) उसे त्रिलोक में कुछ असाध्य नहीं रहता द्य प्रातःकाल–मध्याह्नकाल–सायंकाल अथवा रात्रि में भी इसका पाठ कर सकते है, जो मनुष्य इसका नित्य पाठ करता है महाकाली उसके घर में निवास करती है
शून्यघर जिस घर में कोई ना रहता हो वो, श्मशान में, जल में, अग्नि के बीच, युद्धक्षेत्र में, अथवा प्राण संकट में हो उस समय अगर इसका पाठ किया जाए तो सर्वकल्याण हो जाता है जो मनुष्य महकाली की मूर्ति स्थापित करके मूर्ति के आगे इसका पाठ करते है वो साधक सभी सिद्धिया प्राप्त कर लेता है

अथ श्री काली अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम्

श्री भैरव उवाच

शतनाम प्रवक्ष्यामि कालिकाया वरानने
यस्य प्रपठानाद्वाग्मी सर्वत्र विजयी भवेत् १

काली कपालिनी कान्ता कामदा कामसुन्दरी
कालरात्रिः कालिका च कालभैरव पूजिता।। २।।

कुरुकुल्ला कामिनी च कमनीय स्वभाविनी
कुलीना कुलकर्त्री च कुलवर्त्म प्रकाशिनी ।। ३ ।।

कस्तूरीरसनीला च काम्या कामस्वरूपिणी ।
ककारवर्ण निलया कामधेनुः करालिका ।। ४

कुलकान्ता करालस्या कामार्ता च कलावती ।
कृशोदरी च कामाख्या कौमारी कुलपालिनी ।। ५।।

कुलजा कुलकन्या च कलहा कुलपूजिता ।
कामेश्वरी कामकान्ता कुञ्जेश्वरगामिनी ।। ६।।।

कामदात्री कामहर्त्री कृष्णा चैव कपर्दिनी ।।
कुमुदा कृष्ण देहा च कालिन्दी कुलपूजिता !!7।।

काश्यपी कृष्णमाता च कुलिशांगी कला तथा
क्रीं रूपा कुलगम्या च कमला कृष्णपूजिता ।।८ ।।

कृशांगी किन्नरी कर्त्री कलकण्ठी च कार्तिकी ।
कम्बुकण्ठी कौलिनी च कुमुदा कामजी ।।६।।

कुलस्त्री कीर्तिका कृत्या कीर्तिश्च कुलपालिका
कामदेवकला कल्पलता कामाङ्ग वर्धिनी १०

कुन्ता च कुमुदप्रीता कदम्बकुसुमोत्सुका ।
कादम्बिनी कमलिनी कृष्णानन्दप्रदायिनी ११

कुमारीपूजनरता कुमारीगणशोभिता
कुमारीरञ्जनरता कुमारीव्रतधारिणी ।। १२।।

कंकाली कमनीया च कामशास्त्रविशारदा
कपालखट्वाङ्गधारा कालभैरवरूपिणी ।।१३ ।।

कोटरी कोटराक्षी च काशीकैलासवासिनी ।
कात्यायनी कार्यकरी काव्यशास्त्रप्रमोदिनी १४

कामाकर्षणरूपा च कामपीठनिवासिनी
कङ्किनी काकिनी क्रीड़ा कुत्सिता कलहप्रिया ।।१५ ।।

कुण्डगोलोद्भवप्राणा कौशिकी कीर्ति वर्धिनी
कुम्भस्तनी कटाक्षा च काव्या कोकनदप्रिया
कान्तारवासि कान्तिः कठिना कृष्ण वल्लभा
इति ते कथितं देवि गुह्याद्गुह्यतरं परम्
प्रपठेद्य इदं नित्यं कालीनाम शताष्टकम् १७

त्रिषु लोकेषु देवेशि तस्पासाध्यं न विद्यते ।
प्रातःकाले च मध्याह्ने सायाह्ने च सदा निशि ।। १८

यः पठेत्परया भक्त्या कालीनाम शताष्टकम् ।
कालिका तस्य गेहे च संस्थानम् कुरुते सदा ।।

शून्यागारे श्मशाने वा प्रान्तरे जलमध्यतः ।
वह्निमध्ये च सङ्ग्रामे तथा प्राणस्य संशये ।। २०

शताष्टकं जपेन्मन्त्री लभते क्षेममुत्तमम् ।
कालीं संस्थाप्य विधिवत्सुत्वा नामशताष्टकैः ।
साधकः सिद्धिमाप्नोति कालिकायाः प्रसादतः।।

38.चमत्कारिक 108 सिद्धपीठ

●●●●अतिदुर्लभ रहस्य ●●●●

यह एक ऐसा पौराणिक रहस्य है जो सब कुछ देने में समर्थ है और देवपूजित करवाने का सामर्थ्य भी रखता है। इन 108 सिद्धपीठों में शक्तिपीठ भी सम्मिलित हैं। स्थान के साथ देवी का सुमिरण करने की महिमा अत्यधिक होती है। 108 नामों को जनमेजय को व्यासदेव ने सुनाया तथा 70 स्थलों की देवियों के नाम साक्षात् मणिद्वीप की पराशक्ति ने हिमालय को बताये जब पार्वती जी का प्राकाट्य होने वाला था। प्रेम से सुनें– बहुत बहुत .... बहुत ही अधिक महिमा है इन 108 नामों की तथा की भी महान महिमा है।

जनमेजय बोले ! हे मुने ! मुझे ऐसा रहस्य बतायें जो अत्यधिक सरल और सहज हो जिससे प्राणिमात्र को मणिद्वीप प्राप्त हो तथा वह सारे दुखों से मुक्त होकर इस लोक में भी सर्वस्व पा ले।

वेदव्यास– हे राजन् ! तुम धन्य हो जो पराशक्ति का अतुलनीय माहात्म्य श्रवण करना चाहते हो । मैं तुमको 108 सिद्धपीठ बता रहा हूँ जिनमें वे शक्तिपीठ भी हैं जिनका संबंध रुद्रदेव की प्रिया देवीसति महाशक्ति से है।

पहले तो माहात्म्य श्रवण करो।

●जो मनुष्य देवी के इन 108 नामों का (उनके स्थान सहित) नित्य स्मरण करता है वह उसे सभी देवता भी नमस्कार करते हैं क्योंकि उसे देवी की विशेष कला प्राप्त हो जाती है जिससे वह देवी का रूप होने से देवपूजित हो जाता है। फिर मनुष्यों की बात ही क्या है अर्थात वे भी परम सम्मान करने लगते हैं ।

(नमन्ति देवतास्तं वै देवीरूपो हि स स्मृतः)

● उस देवी भक्त को इहलोक में भी सब कुछ प्राप्त हो जाता है और मरने पर मणिद्वीप भी। और वह सदा के लिए भवरोग से मुक्त हो जाता है।–

●

हे राजन् ! सामान्य मनुष्य को अपने अभ्युदय के लिए न तो मंत्र की आवश्यकता है न ही तंत्र या यंत्र आदि की अन्य विधि विधान या निषेध की भी आवश्यकता नहीं । न ही ज्ञान की न ही योग की मात्र ये 108 नाम ही सब कुछ करने मे समर्थ हैं।

●इन एक सौ आठ नामोंके जपसे अनेक लोग सिद्धि प्राप्त कर चुके हैं। इसके लिए कुछ पटल पद्यति भी अनिवार्य नहीं मात्र देवी महिषासुर मर्दिनी के लिए प्रेम और श्रृद्धा की आवश्यकता है।

●हे जनमेजय! जहाँपर यह अष्टोत्तरशतनाम स्वयं लिखा हुआ अथवा किसी पुस्तक में अंकित रूप में स्थित रहता है, उस स्थानपर ग्रहों तथा महामारी आदिके उपद्रवका भय नहीं रहता ।

●और पर्वपर जैसे समुद्र बढ़ता है, वैसे ही वहाँ सौभाग्यकी नित्य वृद्धि होती है ।

(श्रीमद्देवीभागवत महापुराण ।।

●इन एक सौ आठ नामोंका जप करनेवालेके लिये कुछ भी दुर्लभ नहीं रह जाता;

●ऐसा वह देवीभक्तिपरायण निश्चय ही कृतकृत्य हो जाता है।

●देवता भी उसे नमस्कार करते हैं; क्योंकि उसे देवीका ही रूप कहा गया है।

●देवतागण सब तरहसे उसकी पूजा करते हैं, तो फिर श्रेष्ठ मनुष्योंकी बात ही क्या !

श्रीमद्देवीभागवत महापुराण।।

●जो व्यक्ति अपने पितरोंके श्राद्ध के समय (या मासिक पर्व अमावस्या को) इस उत्तम अष्टोत्तरशतनामका पाठ करता है, उसके सभी पितर तृप्त होकर परम गति प्राप्त करते हैं ॥

हे राजेन्द्र ! ये सिद्धपीठ प्रत्यक्षज्ञानस्वरूप तथा मुक्तिक्षेत्र हैं, अतः बुद्धिमान् मनुष्यको इनका आश्रय ग्रहण करना ही चाहिये ॥

●●●●●●●●

इसे लाल रंग की स्याही से लिख लेना या लाल रंग से रंगीन प्रिंन्टाउट निकलवा लेना या उत्तम फल के लिए भोजपत्र पर लिखना। यदि आपके गुरुदेव या संत लिखकर दे दे तो परम अनुग्रह होगा।

मत्स्य पुराण में भी वर्णित हैं देवी के यही 108 नाम जो सति देवी ने देह त्याग से पहले दक्ष को सुनायें (इस पुराण के अनुसार दक्ष ने सति के शाप को सुनकर क्षमा माँगी पर देवी ने कहा जो मैं शाप दे चुकी हूँ वह तो घटित होगी ही पर तुम भविष्य में इस घोर पाप से मुक्त होना चाहो तो भविष्य में इन क्षेत्रों के दर्शन करके मेरा स्मरण करना और इन क्षेत्रों में तपस्या भी ; तब पुनर्जन्म में पुनः प्रजापति पद के अधिकार को पा सकोगे, तुम अब (ब्रह्मा के पुत्र बनने के योग्य नहीं रहे, तुमने दामाद और बेटी के प्रति घोर व महापाप किया है) इस पाप को तपस्या से हो नष्ट करो तुम दस प्रचेताओं के पुत्र बनोगे तब विवाह के बाद 60 कन्याओं के पिता होकर ही उन पुत्रियों के सतीत्व से तुम्हारे जैसे पिता का उद्धार हो सकेगा।

दक्ष – मैं किन स्थानों पर जाकर आपका किन किन नामों से स्मरण करूँगा हे पराशक्ति!

कृपया यह बताने की कृपा करें।

देवी ने नाम बतायें और तीर्थ स्थल भी (जहाँ मेरे अंग विष्णु जी के सुदर्शन से कटकर गिरेंगे तथा कुछ अन्य महत्वपूर्ण स्थान हैं वे बताये)

और दक्ष को इन नामों की महिमा भी बतायी कि –

1. जो मनुष्य हर अष्टमी को या तृतीया को इन नामों का शिवालय में एक बार स्मरण करेगा वह निष्पाप भी होगा और अनेक पुत्रों का लाभ प्राप्त करेगा,
2. जो नित्य इन 108 नामों का पाठ करेगा वह परब्रह्म का स्वरूप हो जायेगा,
3. जो इन तीर्थ स्थल पर जाकर मेरे इन नामों का सुमिरन करेगा वह शिवलोक का अधिकार प्राप्त कर मुक्त हो जायेगा"

सूत जी – हे ऋषियों! इन नामों का आश्रय लेकर ही अरुन्धति ने सर्वोत्कृष्ट सर्वोत्तम योगसिद्धि प्राप्त की। पुरूरवा की विजय का कारण यही था व भृगु नंदन को अतुलनीय धन संपदा मिली। ययाति को पुत्र लाभ और ऐश्वर्य आदि मिला ।

जिस घर में यह 108 नामावली लिखकर रखी रहती है या किसी देवता के निकट रखकर इन नामों की नित्य पूजा होती है, वहाँ कभी भी शोक और दुर्गति का प्रवेश नहीं होता; नवग्रह भी उस घर में अपना कुप्रभाव नहीं डालते। उस घर पर मात्र मेरी ही विशेष कृपा रहती है अन्य किसी भी ग्रह नक्षत्र का अधिकार नहीं होता।

(यत्रैतल्लिखितं तिष्ठेत् पूज्यते देव संनिधौ।

न तत्र शोको दौर्गत्यं कदाचिदपि जायते।।) देवीगीता में देवी भुवनेश्वरी साक्षात् ने हिमालय को भी कुछ अतिरिक्त सिद्धपीठ बतायें हैं।

अथ श्रीशक्त्यष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीय नामावलिः स्तोत्रम्

वाराणस्यां विशालाक्षी नैमिषे लिङ्गधारिणी।
प्रयागे ललिता देवी कामाक्षी गन्धमादने ।। १

मानसे कुमुदा नाम विश्वकाया तथाम्बरे ।
गोमन्ते गोमती नाम मन्दरे कामचारिणी।। २

मदोत्कटा चैत्ररथे जयन्ती हस्तिनापुरे ।
कान्यकुब्जे तथा गौरी रम्भा मलयपर्वते ।। ३

एकाम्रके कीर्तिमती विश्वा विश्वेश्वरे विदुः।
पुष्करे पुरुहूतेति केदारे मार्गदायिनी।। ४

नन्दा हिमवतः पृष्ठे गोकर्णे भद्रकर्णिका।
स्थाण्वीश्वरे भवानी तु बिल्वके बिल्वपत्रिका।। ५

श्रीशैले माधवी नाम भद्रा भद्रेश्वरे तथा ।
जया वराहशैले तु कमला कमलालये।। ६

रुद्रकोट्यां च रुद्राणी काली कालंजरे गिरौ।
महालिङ्गे तु कपिला मर्कोटे मुकुटेश्वरी।। ७

शालग्रामे महादेवी शिवलिङ्गे जलप्रिया ।
मायापुर्यां कुमारी तु संताने ललिता तथा।। ८

उत्पलाक्षी सहस्त्राक्षे कमलाक्षे महोत्पला।
गङ्गायां मङ्गला नाम विमला पुरुषोत्तमे।। ९

विपाशायाममोघाक्षी पाटला पुण्ड्रवर्धने ।
नारायणी सुपार्श्वे तु विकूटे भद्रसुन्दरी।। १०

विपुले विपुला नाम कल्याणी मलयाचले।
कोटवी कोटितीर्थे तु सुगन्धा माधवे वने।। ११

गोदाश्रमे त्रिसंध्या तु गङ्गाद्वारे रतिप्रिया ।
शिवकुण्डे शिवानन्दा नन्दिनी देविकातटे ।। १२

रुक्मिणी द्वारवत्यां तु राधा वृन्दावने वने ।
देवकी मथुरायां तु पाताले परमेश्वरी।। १३

चित्रकूटे तथा सीता विन्ध्ये विन्ध्याधिवासिनी।
सह्याद्रावेकवीरा तु हरिश्चन्द्रे तु चन्द्रिका।। १४

रमणा रामतीर्थे तु यमुनायां मृगावती।
करवीरे महालक्ष्मीरुमादेवी विनायके ।। १५

अरोगा वैद्यनाथे तु महाकाले महेश्वरी।
अभयेत्युष्णतीर्थेषु चामृता विन्ध्यकन्दरे ।। १६

माण्डव्ये माण्डवी नाम स्वाहा माहेश्वरे पुरे ।
छागलाण्डे प्रचण्डा तु चण्डिका मकरन्दके।। १७

सोमेश्वरे वरारोहा प्रभासे पुष्करावती।
देवमाता सरस्वत्यां पारावारतटे मता।। १८

महालये महाभागा पयोष्ण्यां पिङ्गलेश्वरी।
सिंहिका कृतशौचे तु कार्त्तिकेये यशस्करी।। १९

उत्पलावर्तके लोला सुभद्रा शोणसंगमे ।
माता सिद्धपुरे लक्ष्मीरङ्गना भरताश्रमे।। २०

जालंधरे विश्वमुखी तारा किष्किन्धपर्वते।
देवदारुवने पुष्टिर्मेधा काश्मीरमण्डले ।। २१

भीमा देवी हिमाद्रौ तु पुष्टिर्विश्वेश्वरे तथा ।
कपालमोचने शुद्धिर्माता कायावरोहणे।। २२

शङ्खोद्धारे ध्वनिर्नाम धृतिः पिण्डारके तथा ।
काला तु चन्द्रभागायामच्छोदे शिवकारिणी।। २३

वेणायाममृता नाम बदर्यामुर्वशी तथा ।
औषधी चोत्तरकुरौ कुशद्वीपे कुशोदका।।२४

मन्मथा हेमकूटे तु मुकुटे सत्यवादिनी ।
अश्वत्थे वन्दनीया तु निधिर्वैश्रवणालये।। २५

गायत्री वेदवदने पार्वती शिवसंनिधौ।
देवलोके तथेन्द्राणी ब्रह्मास्येषु सरस्वती ।। २६

सूर्यबिम्बे प्रभा नाम मातृणां वैष्णवी मता।
अरुंधती सतीनां तु रार्मासु च तिलोत्तमा ।। २७

चित्ते ब्रह्मकला नाम शक्तिः सर्वशरीरिणाम् ॥ २७.५

यह शक्तिपीठमयी

अष्टोत्तरशतनाम हैं

जो भक्तों का

अतिशीघ्र ही अभ्युदय करते हैं।

मत्स्यपुराण व श्रीमद् देवीभागवत का अमोघ महाशक्तिशाली 108 शक्तिपीठमयी स्तोत्र नाम से भी यह सुप्रसिद्ध है जो अतिशीघ्र सफलता प्रदान करता है। अब हिन्दी में सुनें–

1. **वाराणसी में गौरी का मुख गिरा था, अतएव उस पीठ स्थान में रूप धारण करने वाली देवी का नाम विशालाक्षी है,**
2. **नैमिषारण्य क्षेत्र में विराजमान देवी लिंगधारिणी नाम से प्रसिद्ध हुईं।**
3. **देवी को प्रयाग में ललिता,**
4. **गन्धमादन पर्वत पर कामाक्षी**
5. **मानस में कुमुदा,**
6. **अम्बर में विश्वकाया**
7. **गोमन्त पर गोमती तथा**
8. **मन्दराचल पर कामचारिणी नाम से विख्यात हैं।**
9. **चैत्ररथ में देवी को मदोत्कटा,**
10. **हस्तिनापुर में जयंती,**
11. **कान्यकुब्ज में गौरी**
12. **मलयाचल पर रम्भा कहा गया है।**
13. **एकाम्रपीठ पर वे कीर्तिमती कहलाती हैं।**
14. **विश्वपीठ में वे विश्वेश्वरी**
15. **केदारपीठ में सन्मार्गदायिनी,**
16. **हिमवान् पीठ में मन्दा तथा**
17. **गोकर्ण पीठ में भद्रकर्णिका–ये नाम देवी के हुये हैं।**
18. **स्थानेश्वरी पीठ में भवानी,**
19. **बिल्वक पीठ में बिल्वपत्रिका,**
20. **श्रीशैल पर माधवी तथा**
21. **भद्रेश्वर पर भद्रा नाम से देवी की प्रसिद्धि है।**
22. **वराहपीठ में जया,**
23. **कमलालय पीठ में कमला,**
24. **रुद्रकोटी में रुद्राणी तथा**
25. **कालांजर में ये काली कहलाती हैं।**
26. **इन्हें शालग्राम पीठ में महादेवी,**
27. **शिवलिंग में जलप्रिया,**
28. **महालिंग में कपिला,**

29. माकोट में मुकुटेश्वरी,
30. मायापुरी में कुमारी,
31. संतानपीठ में ललिताम्बिका (ललिताम्बिकायाः सौभाग्यद),
32. गया में मंगला तथा
33. पुरुषोत्तम पीठ में विमला कहा गया है।
34. सहस्राक्ष में उत्पलाक्षी,
35. हिरण्याक्ष में महोत्पला,
36. विशाखा में अमोघाक्षी,
37. पुण्ड्र वर्धन पीठ में पाडला,
38. सुपार्श्व में नारायणी,
39. चित्रकूट में रुद्र सुंदरी,
40. विपुलक्षेत्र में विपुला,
41. मलयाचल पर भगवती कल्याणी,
42. सह्याद्रि पर्वत पर एकवीरा,
43. हरिश्चंद्र पीठ पर चन्द्रिका,
44. रामतीर्थ में रमणा,
45. यमुनापीठ में मृगावती,
46. कोटितीर्थ में कोटवी,
47. माधववन में सुगन्धा,
48. गोदावरी में त्रिसंध्या,
49. गंगाद्वार में रतिप्रिया,
50. शिवकुंड में शुभानन्दा,
51. देविकातट पीठ में नन्दिनी,
52. द्वारका में रुक्मणी,
53. वृंदावन में राधा,
54. मथुरा में देवकी,
55. पाताल में परमेश्वरी,
56. चित्रकूट में सीता,
57. विन्ध्याचल पर्वत पर विन्ध्यवासिनी।
58. करवीरक्षेत्र में महालक्ष्मी,
59. विनायक क्षेत्र में देवी उमा,
60. वैद्यनाथ धाम में आरोग्या,
61. महाकालपीठ में माहेश्वरी,
62. उष्णतीर्थ में अभया,
63. विन्ध्य पर्वत पर नितम्बा,
64. माण्डव्यपीठ में माण्डवी तथा
65. माहेश्वरी पुरी में ये देवी स्वाहा नाम से विख्यात हैं।
66. छगल्–अंड में प्रचण्डा,

67. अमरकंटक में चण्डिका,
68. सोमेश्वर पीठ में वरारोहा,
69. प्रभासक्षेत्र में पुष्करावती,
70. सरस्वती तीर्थ में देवमाता तथा
71. तट नामक पीठ में पारावारा नाम से इनकी प्रसिद्धि हुई।
72. महालय में महाभागा,
73. पयोष्णी में पिंगलेश्वरी,
74. कृतशौचतीर्थ में सिंहिका,
75. कार्तिक क्षेत्र में अतिशांकरी,
76. वर्तक तीर्थ में उत्पला,
77. सुभद्रा एवं शोणा के संगम पर लोला,
78. सिद्धवन में माँ लक्ष्मी,
79. भरताश्रम तीर्थ में अनंगा,
80. जालंधर पर्वत पर विश्वमुखी,
81. किष्किन्धा पर्वत पर तारा,
82. देवदारुवन में पुष्टि,
83. काश्मीर प्रदेश में मेधा नाम से विख्यात हुईं।
84. हिमाद्रि पर्वत पर देवी भीमा,
85. विश्वेश्वर क्षेत्र में तुष्टि,
86. कपालमोचन तीर्थ में शुद्धि,
87. कायावरोहन तीर्थ में माता,
88. शंखोद्धार तीर्थ में धरा तथा
89. पिण्डारक तीर्थ में धृति नाम से ये प्रसिद्ध हुईं।
90. चन्द्रभागा नदी के तट पर कला,
91. अच्छोद नामक क्षेत्र में शिवधारिणी,
92. वेणा नदी के किनारे अमृता,
93. वदरीवन में उर्वशी,
94. उत्तर कुरुप्रदेश में ओषधि,
95. कुशद्वीप में कुशोदका,
96. हेमकूट पर्वत पर मन्मथा,
97. कुमुदवन में सत्यवादिनी,
98. अश्वत्थ तीर्थ में वन्दनीया,
99. वैश्रवणालय क्षेत्र में निधि,
100. वेदवदन तीर्थ में गायत्री,
101. भगवान शिव के संनिकट पार्वती,
102. देवलोक में इंद्राणी,
103. ब्रह्मलोक में सरस्वती,
104. सूर्य के बिम्ब में प्रभा,

105. मातृकाओं में वैष्णवी,
106. सतियों में अरुन्धति तथा
107. रामा प्रभृति अप्सराओं में तिलोत्तमा नाम से देवी विख्यात हुईं।
108. चित्त में सदा विराजमान शक्ति 'ब्रह्मकला' ही हैं।

ये 108 सिद्ध और वहाँ विराजने वाली उतनी ही देवियाँ कही गयी हैं। देवी सति के अंगों से संबंधित, भूमंडल तथा इस ब्रह्माण्ड के प्रमुख स्वरूपों को मिलाकर ये 108 नामों ये युक्त नामावली है।

जहाँ इन 108 नामों से युक्त

यह अष्टोत्तर शतनाम स्वयं के द्वारा लिखा गया हो वहाँ महामारी आदि उपद्रव बिल्कुल भी भय नहीं पहुँचा सकते बल्कि, वहाँ इस प्रकार सौभाग्य में नित्य वृद्धि होती है जैसे पर्व पर समुद्र बढ़ता है। पुनः सार–

सर्वेश्वरी के 108 शक्तिपीठ–

(श्रीमद्देवीभागवत सप्तम स्कंध अध्याय 30 में) पराम्बा सर्वेश्वरी के 108 शक्तिपीठ और अतुलनीय माहात्म्य का वर्णन मिलता है । यहाँ हम उन 108 शक्तिपीठों को प्रणाम करते हैं।

माहात्म्य का सार पुनः सुनें :

1. श्रीव्यास बोले–हे राजन! देवी सति के अंगों से संबंधित तथा भूमंडल पर उनके अतिरिक्त जो देवी प्रधान तीर्थ स्थल हैं वे कुल 108 ही प्रधान हैं जो इन शक्तिपीठों का स्मरण करता है वो सभी पापों से मुक्त हो जाता है और मणिद्वीप में स्थान पाता है।

2. जिस घर में यह अष्टोत्तर शतनाम नामावलि लिखी हुई होती है वहाँ महामारी आदि उपद्रव बिल्कुल भी भय नहीं पहुँचा सकते ।

3. इस अष्टोत्तर शतनाम को जो सुंदर लाल अक्षरों में अंकित करके या करवाकर (भोजपत्र पर अष्टगंध या लाल चंदन से लिखकर) घर में रखकर नित्य प्रणाम् और गंध पुष्प आदि से पूजा करता है वो महापापी हो तो भी पुण्यात्मा हो जाता है और जैसे पर्व पर समुद्र बढ़ता वैसे ही उसके सौभाग्य में नित्य वृद्धि होती है।

4. इसके पाठ नित्य करने वाले को कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं होती।

5. इन शक्तिपीठों के क्षेत्र में रहने वाले सभी जन और चाण्डाल भी देवी का रूप माने जाते हैं अतः उनकी भी पूजा, सेवा सदा ही अहंकार हीन होकर करने में तत्पर रहना चाहिए *और जो इस अष्टोत्तर शतनाम का नित्य पाठ*

करता है वो भी उसी प्रकार माँ भगवती का ही स्वरूप मानने योग्य है।

यही नाम प्रणव सहित सुनें अब–

1. ॐ वाराणस्यां विशालाक्ष्यै नमः

2. ॐ नैमिषे लिङ्गधारिण्यै नमः

3. ॐ प्रयागे ललितादेव्यै नमः
4. ॐ गन्धमादने कामाक्ष्यै नमः
5. ॐ मानसे कुमुदायै नमः
6. ॐ अम्बरे विश्वकायायै नमः
7. ॐ गोमन्ते गोमत्यै नमः
8. ॐ मन्दरे कामचारिण्यै नमः
9. ॐ चैत्ररथे मदोत्कटायै नमः
10. ॐ हस्तिनापुरे जयन्त्यै नमः
11. ॐ कान्यकुब्जे गौर्यै नमः
12. ॐ मलयपर्वते रम्भायै नमः
13. ॐ एकाम्रके कीर्तिमत्यै नमः
14. ॐ विश्वे विश्वेश्वर्यै नमः
15. ॐ पुष्करे पुरुहूतायै नमः
16. ॐ केदारे मार्गदायिन्यै नमः
17. ॐ हिमवतः पृष्ठे नन्दायै नमः
18. ॐ गोकर्णे भद्रकर्णिकायै नमः
19. ॐ स्थानेश्वरे भवान्यै नमः
20. ॐ बिल्वके बिल्वपत्रिकायै नमः
21. ॐ श्रीशैले माधव्यै नमः
22. ॐ भद्रेश्वरे भद्रायै नमः
23. ॐ वराहशैले जयायै नमः
24. ॐ कमलालये कमलायै नमः
25. ॐ रुद्रकोट्यां रुद्राण्यै नमः
26. ॐ कालञ्जरे गिरौ काल्यै नमः
27. ॐ महालिङ्गे कपिलायै नमः
28. ॐ मर्कोटे मुकुटेश्वर्यै नमः
29. ॐ शालग्रामे महादेव्यै नमः
30. ॐ शिवलिङ्गे जलप्रियायै नमः
31. ॐ मायापुर्यां कुमार्यै नमः
32. ॐ संताने ललितायै नमः

33. ॐ सहस्राक्षे उत्पलाक्ष्यै नमः
34. ॐ कमलाक्षे महोत्पलायै नमः
35. ॐ गङ्गायां मङ्गलायै नमः
36. ॐ पुरुषोत्तमे विमलायै नमः
37. ॐ विपाशायाम् अमोघाक्ष्यै नमः
38. ॐ पुण्ड्रवर्धने पाटलायै नमः
39. ॐ सुपार्श्वे नारायण्यै नमः
40. ॐ विकूटे भद्रसुन्दर्यै नमः
41. ॐ विपुले विपुलायै नमः
42. ॐ मलयाचले कल्याण्यै नमः
43. ॐ कोटितीर्थे कोटव्यै नमः
44. ॐ माधवे वने सुगन्धायै नमः
45. ॐ कुब्जाम्रके त्रिसन्ध्यायै नमः
46. ॐ गङ्गाद्वारे रतिप्रियायै नमः
47. ॐ शिवकुण्डे सुनन्दायै नमः
48. ॐ देविकातटे नन्दिन्यै नमः
49. ॐ द्वारवत्यां रुक्मिण्यै नमः
50. ॐ वृन्दावने वने राधायै नमः
51. ॐ मथुरायां देविकायै नमः
52. ॐ पाताले परमेश्वर्यै नमः
53. ॐ चित्रकूटे सीतायै नमः
54. ॐ विन्ध्ये विन्ध्याधिवासिन्यै नमः
55. ॐ सह्याद्रौ एकवीरायै नमः
56. ॐ हरिश्चन्द्रे चन्द्रिकायै नमः
57. ॐ रामतीर्थे रमणायै नमः
58. ॐ यमुनायां मृगावत्यै नमः
59. ॐ करवीरे महालक्ष्म्यै नमः
60. ॐ विनायके उमादेव्यै नमः
61. ॐ वैद्यनाथे अरोगायै नमः
62. ॐ महाकाले महेश्वर्यै नमः

63. ॐ उष्णतीर्थेषु अभयायै नमः
64. ॐ विन्ध्यकन्दरे अमृतायै नमः
65. ॐ माण्डव्ये माण्डव्यै नमः
66. ॐ माहेश्वरे पुरे स्वाहायै नमः
67. ॐ छागलाण्डे प्रचण्डायै नमः
68. ॐ मकरन्दके चण्डिकायै नमः
69. ॐ सोमेश्वरे वरारोहायै नमः
70. ॐ प्रभासे पुष्करावत्यै नमः
71. ॐ सरस्वत्यां पारावारतटे देवमात्रे नमः
72. ॐ महालये महाभागायै नमः
73. ॐ पयोष्ण्यां पिङ्गलेश्वर्यै नमः
74. ॐ कृतशौचे सिंहिकायै नमः
75. ॐ कार्तिकेये यशस्कर्यै नमः
76. ॐ उत्पलावर्तके लोलायै नमः
77. ॐ शोणसङ्गमे सुभद्रायै नमः
78. ॐ सिद्धपुरे मात्रे लक्ष्म्यै नमः
79. ॐ भरताश्रमे अङ्गनायै नमः
80. ॐ जालन्धरे विश्वमुख्यै नमः
81. ॐ किष्किन्धपर्वते तारायै नमः
82. ॐ देवदारुवने पुष्ट्यै नमः
83. ॐ काश्मीरमण्डले मेधायै नमः
84. ॐ हिमाद्रौ भीमादेव्यै नमः
85. ॐ विश्वेश्वरे पुष्ट्यै नमः
86. ॐ कपालमोचने शुद्ध्यै नमः
87. ॐ कायावरोहणे मात्रे नमः
88. ॐ शङ्खोद्धारे ध्वन्यै नमः
89. ॐ पिण्डारके धृत्यै नमः
90. ॐ चन्द्रभागायां कालायै नमः
91. ॐ अच्छोदे शिवकारिण्यै नमः
92. ॐ वेणायाम् अमृतायै नमः

93. ॐ बदर्याम् उर्वश्यै नमः
94. ॐ उत्तरकुरौ औषध्यै नमः
95. ॐ कुशद्वीपे कुशोदकायै नमः
96. ॐ हेमकूटे मन्मथायै नमः
97. ॐ मुकुटे सत्यवादिन्यै नमः
98. ॐ अश्वत्थे वन्दनीयायै नमः
99. ॐ वैश्रवणालये निधये नमः
100. ॐ वेदवदने गायत्र्यै नमः
101. ॐ शिवसन्निधौ पार्वत्यै नमः
102. ॐ देवलोके इन्द्राण्यै नमः
103. ॐ ब्रह्मास्येषु सरस्वत्यै नमः
104. ॐ सूर्यबिम्बे प्रभायै नमः
105. ॐ मातॄणां वैष्णव्यै नमः
106. ॐ सतीनां अरुन्धत्यै नमः
107. ॐ रामासु तिलोत्तमायै नमः
108. ॐ सर्वशरीरिणां चित्ते ब्रह्मकलानामशक्त्यै नमः।

यही नाम श्रीमत्स्यमहापुराण में सती जी ने दक्ष को पापों के नाश के लिए सुनाए थे।

इति श्रीमत्स्यमहापुराणे श्रीशक्त्यष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीय नामावलिः सम्पूर्णा।।

39. चमत्कारिक सत्तर सिद्धपीठ

अब 70 सिद्धपीठों के नाम सुनें जो देवी परामा ने हिमालय को सुनाए–

.. हे नगश्रेष्ठ! ये सभी 70 क्षेत्र और मेरे रूप जो मैं बता रही हूँ काशी में भी स्थित हैं, इसलिये मुझ देवी की भक्तिमें तत्पर रहनेवाले मनुष्यको (जो अन्यत्र न जा सके उसे) निरन्तर वहाँ रहना चाहिये। वहाँ रहकर उन स्थानोंका दर्शन, मुझ भगवतीके मन्त्रोंका निरन्तर जप और मेरे चरणकमलों का नित्य ध्यान करनेवाला मनुष्य भवबन्धनसे मुक्त हो जाता है। और एक महत्वपूर्ण बात सुनों हे हिमालय! यदि काशी के अतिरिक्त अन्य स्थान पर जाना संभव हो तो मेरी आज्ञा यह है कि कामाख्या योनीमंडल ही जाया जाये। वह मुझे सबसे अधिक प्रिय है। संपूर्ण ब्रह्मांड की उत्पत्ति की शक्ति उसी मंडल में समाविष्ट है। वही सृष्टि का आधार है। हे हिमाचल!

धरातल पर कामाख्या योनीमंडल से श्रेष्ठ अन्य कोई मेरा क्षेत्र नहीं ।

श्री मत् त्रिपुर भैरवी का महान स्थान ही यह कामाख्या योनीमंडल है। यहाँ रजस्वला होने के समय सभी देवता पर्वत बन जाते हैं यहाँ भगवती प्रत्येक मास में रजस्वला होती है

(नातः परतरं स्थानं क्वचिदस्ति धरातले।
प्रतिमासं भवेद्देवी यत्र साक्षाद् रजस्वला)

हे नग ! जो मनुष्य प्रातःकाल उठकर भगवतीके इन (70) नामोंका पाठ करता है, उसके समस्त पाप उसी क्षण (एक पाठ से ही) भस्म हो जाते हैं।

जो व्यक्ति श्राद्धके समय ब्राह्मणोंके समक्ष इन पवित्र नामोंका पाठ करता है, उसके सभी पितर मुक्त होकर परम गतिको प्राप्त हो जाते हैं। पर ज्ञान के बिना चित्त शान्त नहीं हो सकता इसलिए भक्तों को ज्ञान प्राप्त करने के लिए ब्रह्मचर्य पूर्वक रहकर ब्रह्मनिष्ठ गुरु की सेवा करना ही चाहिए।

(श्रीमद्देवीभागवत महापुराण सप्तम संकन्ध अध्याय 37 के श्लोक 28 व 29 के अनुसार) हे हिमालय ! ब्रह्मचर्य पूर्वक भक्ति करते करते कालान्तर में जब भक्ति की पराकाष्ठा प्राप्त हो जाती है उसी भक्ति के मधुर फल को जो अभिन्नता रूप में दृष्टिगोचर होने लगता है वही ज्ञान कहा जाता है।

यदि भक्ति करते करते भी इस जन्म में जटिल प्रारब्ध वश (भयंकर शापवश) मेरे परम भक्त को ज्ञान न मिल पाए तो भी मेरी कृपा से वह मणिद्वीप निश्चित ही जाता है और वहीं उसे ज्ञान विज्ञान प्राप्त होकर वह मुक्त अर्थात मुझसे अभिन्न हो जाता है । पर जो मेरा भक्त नहीं परंतु वीतरागी है वह एक कल्प तक ब्रह्मलोक में सुख भोगकर पुनः धराधाम पर जन्म लेता है। जो तीव्रतम वैराग्यवान हो पर मेरी औपचारिक सेवा करता हो पर इस जन्म में अनन्य भक्तिभाव न आ पाया हो तो वह अन्य लोकों में भोगार्थ समय नष्ट न करके तत्काल किसी साधु के समीप जन्म लेता है और पूर्व जन्म के संस्कार वश सहज ही पराभक्ति की ओर बढ़कर पूर्ण हो जाता है।

जो योगी हो पर किसी सकामता के कारण अंतकाल में योगभ्रष्ट हो जाये उसका भी विनाश नहीं होता वह भी ब्रह्मलोक ही जाता है।और फिर धनाढ्य पुरुष के यहाँ जन्म लेता है। वह अपनी सुप्त इच्छा पूर्ण कर उस धन से भी राग समाप्त कर लेता है। और भक्त हो जाता है (उदाहरण– ध्रुव प्रह्लाद जैसा धनवान जो पूर्व जन्म की सकामता के कारण इस जन्म में राजपुत्र हुए)

अतः अब यह नाम सुनों जो प्रातःकाल पाठ मात्र से ही संपूर्ण पापों का नाश कर देते हैं। (हे भक्तों ! यह नामावली संस्कृत में चाहिए तो श्रीमद्देवीभागवत महापुराण सप्तम स्कन्ध के अध्याय 38 को देखें जहाँ श्लोक 5 से 30 तक सभी महा कल्याणस्वरूप नाम हैं

देवी बोलीं– दृष्टिगोचर होनेवाले सभी स्थान मेरे अपने हैं, सभी काल व्रतयोग्य हैं तथा सभी समयोंमें मेरे उत्सव मनाये जा सकते हैं; क्योंकि मैं सर्वरूपिणी हूँ। हर वार व हर नक्षत्र मेरा ही है पर मनुष्य नित्य उत्सव नहीं मना सकता उसका एक अपना सामर्थ्य होता है इस कारण मैं कतिपय कुछ नाम और कुछ महत्वपूर्ण वार मैं बताती हूँ।
आप सावधान होकर श्रवण करें।

1. कोलापुर एक अत्यन्त श्रेष्ठ स्थान है, जहाँ मूल महालक्ष्मी सदा निवास करती हैं।
2. मातृपुर दूसरा परम स्थान है, जहाँ भगवती रेणुका विराजमान हैं ।
3. तीसरा स्थान तुलजापुर है। इसी प्रकार
4. सप्तश्रृंग भी एक स्थान है।
5. हिंगुला अर्थात हिंगलाज
6. ज्वालामुखी अर्थात ज्वाला देवी
7. शाकम्भरी,
8. भ्रामरी,
9. रक्तदन्तिका और
10. दुर्गा–इन देवियोंके उत्तम स्थान इन्हींके नामोंसे विख्यात हैं अर्थात जिस जिस स्थान पर यह लीला हुई वही स्थान हैं ।
11. भगवती विन्ध्यवासिनीका स्थान (विन्ध्यपर्वत) सर्वोत्कृष्ट है।
12. देवी अन्नपूर्णाका परम स्थान श्रेष्ठ कांचीपुर है।
13. भगवती भीमा,
14. विमला,
15. श्रीचन्द्रला और
16. कौशिकीके महास्थान इन्हीं के नामोंसे प्रसिद्ध हैं ।
17. भगवती नीलाम्बाका परम स्थान नीलपर्वतके शिखरपर है और
18. देवी जाम्बूनदेश्वरीका पवित्र स्थान श्रीनगर में है।
19. भगवती गुह्यकालीका महान् स्थान है, जो नेपालमें प्रतिष्ठित है। और
20. देवी मीनाक्षी का श्रेष्ठ स्थान है, जो चिदम्बरमें स्थित बताया गया है।
21. भगवती श्रीसुन्दरी का महान् स्थान वेदारण्यमें अधिष्ठित है ,
22. .भगवती पराशक्ति का महास्थान एकाम्बरमें स्थित है।
23. भगवती महालसा और इसी प्रकार
24. देवी योगेश्वरीके महान् स्थान इन्हींके नामोंसे विख्यात हैं।
25. **भगवती नीलसरस्वतीका स्थान चीन** देशमें स्थित कहा गया है ।
26. भगवती **बगला** का सर्वोत्तम स्थान वैद्यनाथधाममें स्थित माना गया है।
27. मुझ साक्षात् मूल रूप श्रीमत् **श्रीभुवनेश्वरीका स्थान मणिद्वीप** बताया गया है।
28. कामाख्या देवी– अर्थात् श्रीमत्त्रिपुरभैरवी देवी का महान् स्थान कामाख्या योनिमण्डल है, यह भूमण्डलपर क्षेत्ररत्नस्वरूप है तथा महामायाद्वारा अधिवासित क्षेत्र है ।धरातलपर इससे बढ़कर श्रेष्ठ स्थान कहीं नहीं है, यहाँ भगवती प्रत्येक माहमें साक्षात् रजस्वला हुआ करती हैं। उस समय वहाँके सभी देवता पर्वतस्वरूप हो जाते हैं और अन्य महान् देवता भी वहाँ पर्वतोंपर निवास करते हैं। विद्वान् पुरुषोंने वहाँकी सम्पूर्ण भूमिको

देवीरूप कहा है। इस कामाख्यायोनिमण्डलसे बढ़कर श्रेष्ठ स्थान कोई नहीं है ॥ (श्रीमद्देवीभागवत महापुराण 7/38/16.17.18)

29. ऐश्वर्यमय पुष्करक्षेत्र भगवती गायत्रीका उत्तम स्थान कहा गया है।
30. अमरेशमें चण्डिका तथा प्रभासमें भगवती पुष्करेक्षिणी विराजमान हैं।
31. महास्थान नैमिषारण्य में लिंगधारिणी विराजमान है ।
32. पुष्कराक्ष में देवी पुरुहूता
33. आषाढ़ी में भगवती रति प्रतिष्ठित है।
34. चण्डमुण्डी नामक महान् स्थानमें परमेश्वरी दण्डिनी और
35. भारभूतिमें देवी भूति तथा
36. नाकुलमें देवी नकुलेश्वरी विराजमान हैं।
37. हरिश्चन्द्र नामक स्थानमें
38. भगवती चन्द्रिका और
39. श्रीगिरिपर शांकरी प्रतिष्ठित कही गयी हैं।
40. जप्येश्वर स्थानमें त्रिशूला और
41. आम्रातकेश्वरमें देवी सूक्ष्मा हैं।
42. महाकालक्षेत्रमें शांकरी,
43. मध्यम नामक स्थानमें शर्वाणी
44. केदार नामक महान् क्षेत्रमें वे भगवती मार्गदायिनी अधिष्ठित हैं।
45. भैरव नामक स्थान में भगवती भैरवी और
46. गयामें भगवती मंगला प्रतिष्ठित कही गयी हैं।
47. कुरुक्षेत्रमें देवी स्थाणु– प्रिया और
48. नाकुलमें भगवती स्वायम्भुवीका स्थान है ।
49. कनखल में भगवती उग्रा,
50. विमलेश्वरमें विश्वेशा,
51. अट्टहासमें महानन्दा और
52. महेन्द्रपर्वत पर देवी महान्तका विराजमान हैं।
53. भीमपर्वतपर भगवती भीमेश्वरी,
54. वस्त्रापथ नामक स्थानमें भवानी शांकरी
55. अर्धकोटि पर्वतपर भगवती रुद्राणी प्रतिष्ठित कही गयी हैं।
56. अविमुक्तक्षेत्र (काशी अर्थात कश्यप **वाराणसी)–में भगवती विशालाक्षी**,
57. **महालय क्षेत्रमें महाभागा**,
58. गोकर्णमें भद्रकर्णी और
59. भद्रकर्णकमें देवी भद्रा विराजमान हैं।
60. सुवर्णाक्ष नामक स्थानमें भगवती उत्पलाक्षी,
61. स्थाणुसंज्ञक स्थानमें देवी स्थाण्वीशा,
62. **कमलालयमें कमला,**
63. **छगलण्डक में प्रचण्डा**
64. कुरण्डलमें त्रिसन्ध्या,

65. **माकोटमें मुकुटेश्वरी**,
66. मण्डलेशमें शाण्डकी और
67. **कालंजर पर्वतपर काली** प्रतिष्ठित हैं।
68. शंकुकर्णपर्वतपर भगवती ध्वनि विराजमान बतायी गयी हैं।
69. स्थूलकेश्वरपर भगवती स्थूला
70. परमेश्वरी हृल्लेखा (माया बीज ह्रीं रूपा भुवनेश्वरी पराम्बा) हृदयकमलमें विराजमान हैं। रहती हैं ।

हे हिमालय!

बताये गये ये स्थान मुझे अत्यन्त प्रिय हैं।

नोट – भगवान वेदव्यास जी ने जनमेजय राजा को 108 सिद्ध पीठ बताये थे जो इस सप्तम स्कन्ध में आपको प्राप्त हो जायेगें जिसमें पहला नाम वाराणसी में विशालाक्षी और 108 वाँ नाम ब्रह्मकला है तथा इसमें 70 वाँ नाम ह्रीं। अतः इसे नाम की संज्ञा देने पर यह नाम मंत्र भी हुआ। इसे शम्भु वनिता बीज तथा मायाबीज भी कहते हैं। और हृल्लेखा भी।

●●●●●

देवी महिषासुर मर्दिनी ने कहा कि – हे हिमालय! मेरी एक शक्ति गौरी नाम की है वही रुद्रदेव की जीवन संगिनी होकर तारकासुर के नाश का कारण बनेगी तुम उसके प्रकट होने पर उसका विवाह रुद्रदेव से करवा देना। (7/31/63 सार) अब मुझे अत्यधिक प्रिय तिथि सुनों–

- मेरा व्रत तृतीया,
- कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी,
- शुक्रवार और
- भौमवार को भी किया जाता है।
- दोनों पक्षों का प्रदोष भी मेरा ही व्रत है।

इस प्रदोष काल में जो होता है वह श्रवण करो।

●मुझे सोमवार अत्यधिक प्रिय है उस दिवस पर दिन में उपवास करते हुए प्रातःकाल और प्रदोष काल में मेरी पूजा करना चाहिए तदोपरान्त रात में सात्विक भोजन करते हुए यह व्रत संपन्न करना चाहिए।

● और मुझे आश्विन मास और चैत्र मास के नौ नौ दिनों पर व्रत–उपवास करने वाले अत्यधिक प्रिय हैं और इस परम पर्व (नवदुर्गा समय)पर जो मेरे माहात्म्य (सप्तशती या श्रीमद्देवीभागवत महापुराण अथवा इस श्रीमद्देवीभागवत महापुराण के शक्तिपीठयुक्त अष्टोत्तरशतनाम तथा दुर्गमासुर वध व महिषासुर वध की कथा तथा प्रकृति विद्या) का श्रवण करता है वह अतुलनीय धन धान्य व परम गति भी पा लेता है। उसके शत्रुओं का नाश हो जाता है। व वह इन 108 नामों के पाठ से समस्त देवताओं के द्वारा भी पूजनीय हो जाता है।

और प्रकृति विद्या से वह इस पृथ्वीपर साक्षात् विष्णु के समान दर्शनीय और सेवनीय हो जाता है।

●शिवप्रिया को कुशासनपर बिठाकर उनको प्रसन्न करने के महारुद्रदेव देवताओं के सहित नृत्य करते हैं इसी समय देवी की पूजा करना चाहिए ऐसा करने से मैं अत्यंत संतुष्ट होती हूँ। रुद्र वल्लभा रूप में मैं ही हूँ मैं ही पंचक प्रकृति हूँ।

40. महाकृपामयी 18 सिद्धपीठ

.**शंकराचार्य जी ने अष्टादश महाशक्तिपीठमयी स्तोत्रम्** रचा – कुछ संतों का मानना है कि जो 51 शक्तिपीठों की यात्रा न कर पाये वह इन 18 के दर्शन मात्र से ही मणिद्वीप का अधिकार प्राप्त कर कृतकृत्य हो जाता है। कुछ लोग 52 शक्तिपीठ मानते हैं और कहीं कहीं 108 सिद्धपीठों की सूची में इन 51 में से कुछ के वर्णन हैं और कुछ के नहीं। पर जो भी हो श्रीमद्देवीभागवत महापुराण में 108 सिद्धपीठों का वर्णन किया है जो वेदव्यास जी ने जनमेजय से कहे अतः उनका पाठ नित्य ही करना चाहिए तथा शंकराचार्य जी शिव स्वरूप थे जो त्रिकालज्ञ, वाक् सिद्ध भी और परकाया प्रवेश की सिद्धि सहित 22 सिद्धियों से युक्त थे अतः उन्होनें जो जो फलश्रुति लिखी वह वाक् सिद्ध होने के कारण निश्चित ही परम फल देती ही है अतः उनके हर स्तोत्र से वही फल प्राप्त होता है जो वे लिख चुके। जैसे कि 17 श्लोकी मानस पूजा से संपूर्ण पूजा फल (जिसमें छत्र , श्रृंगार से लेकर पादुका और मधुर भोजन अर्पण भी शामिल है) तथा इस 18 शक्तिपीठमयी स्तोत्र से उपर्युक्त फल। आदि आदि।

अतः सुनें–

लङ्कायां शङ्करीदेवी कामाक्षी काञ्चिकापुरे ।
प्रद्युम्ने शृङ्खलादेवी चामुण्डी क्रौञ्चपट्टणे ॥ १ ॥

अलम्पुरे जोगुलाम्बा श्रीशैले भ्रमराम्बिका ।
कोल्हापुरे महालक्ष्मी मुहुर्ये एकवीरिका ॥ २ ॥

उज्जयिन्यां महाकाली पीठिकायां पुरुहूतिका ।
ओढ्यायां गिरिजादेवी माणिक्या दक्षवाटिके ॥ ३ ॥

हरिक्षेत्रे कामरूपी प्रयागे माधवेश्वरी ।
ज्वालायां वैष्णवीदेवी गया माङ्गल्यगौरिका ॥ ४ ॥

वारणाश्यां विशालाक्षी काश्मीरेतु सरस्वती ।
अष्टादश सुपीठानि योगिनामपि दुर्लभम् ॥ ५ ॥

सायङ्काले पठेन्नित्यं सर्वशत्रुविनाशनम् ।
सर्वरोगहरं दिव्यं सर्वसम्पत्करं शुभम् ॥ ६ ॥

41. देवी दक्षिणा

यह देवी लक्ष्मी देवी की कला हैं।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं दक्षिणायै स्वाहा।.

देवी दक्षिणा का सम्पूर्ण आख्यान श्लोक 35 से 98 तक बताया गया है जो मनुष्य मात्र 30 दिन तक इस पाठ को 1 माह तक अखंड ब्रह्मचर्य के साथ देवी के मंदिर में पढ़ता है वह विपत्ति से मुक्त हो जाता है।, वह बंधन मुक्त हो जाता है यदि भाई बन्धु गुम गया हो तो भी वह वापस आ जाता है। नित्य अपनी साधना में देवी स्वाहा के स्तोत्र के साथ दक्षिणा स्तोत्र को भी जो मनुष्य प्रतिदिन पढ़ता है उसका कोई भी कार्य अपूर्ण नहीं रह जाता ।

(अंगहीनं च तत्कर्म न भवेद्भारते भुवि)

जिसको पत्नी की इच्छा है वह तो इसका ही अनुष्ठान करे यज्ञ पुरुष ने इसी स्तोत्र से साक्षात इन्ही देवी को पत्नी रूप में पाया था। और उस कुंवारे पुरुष को सुशील और परम सौन्दर्य से परिपूर्ण युवती से महासुख प्राप्त होता है।

कथा –

श्री राधाके द्वारा गोलोकते च्युत सुशीला नामक वह गोपी ही दक्षिणा नामक महादेवी नामसे प्रसिद्ध हुई। दीर्घकालतक तपस्या करके उसने भगवती लक्ष्मीके विग्रहमें स्थान प्राप्त कर लिया। अत्यन्त दुष्कर यज्ञ करनेपर भी जब देवताओंको यज्ञफल नहीं प्राप्त हुआ, तब वे उदास होकर ब्रह्माजीके पास गये ।

देवताओंकी प्रार्थना सुनकर ब्रह्माजीने बहुत समयतक भक्तिपूर्वक जगत्पति भगवान् श्रीहरिका ध्यान किया। अन्तमें उन्हें प्रत्यादेश प्राप्त हुआ। भगवान् नारायणने महालक्ष्मीके विग्रहसे मर्त्यलक्ष्मीको प्रकट करके और उसका नाम दक्षिणा रखकर ब्रह्माजीको सौंप दिया। ब्रह्माजीने भी यज्ञकार्योंकी सम्पन्नताके लिये उन देवी दक्षिणाको यज्ञपुरुषको समर्पित कर दिया। तब यज्ञपुरुषने प्रसन्नतापूर्वक उन देवी दक्षिणाकी विधिवत् पूजा करके उनकी स्तुति की। जब ये देवी प्रकट हुई थी तब –

उन भगवती दक्षिणाका वर्ण तपाये हुए सोनेके समान था; उनके विग्रहकी कान्ति करोड़ों चन्द्रोंके तुल्य थी; वे अत्यन्त कमनीय, सुन्दर तथा मनोहर थीं; उनका मुख कमलके समान था; उनके अंग अत्यन्त कोमल थे; कमलके समान उनके विशाल नेत्र थे; कमलके आसनपर पूजित होनेवाली वे भगवती कमलाके शरीरसे प्रकट हुई थीं, उन्होंने अग्निके समान शुद्ध वस्त्र धारण कर रखे थे; उन साध्वीके ओष्ठ बिम्बाफलके समान थे; उनके दाँत अत्यन्त सुन्दर थे; उन्होंने अपने केशपाशमें मालतीके पुष्पोंकी माला धारण कर रखी थी; उनके प्रसन्नतायुक्त मुखमण्डलपर मन्द मुसकान व्याप्त थी; वे रत्नमय आभूषणोंसे अलंकृत थीं; उनका वेष अत्यन्त सुन्दर था; वे विधिवत् स्नान किये हुए थीं; वे मुनियोंके भी मनको मोह लेती थीं; कस्तूरीमिश्रित सुगन्धित चन्दनसे बिन्दीके रूपमें अर्धचन्द्राकार तिलक उनके ललाटपर सुशोभित हो रहा था; केशोंके नीचेका भाग (सीमन्त) सिन्दूरकी छोटी–छोटी बिन्दियोंसे अत्यन्त प्रकाशमान था। सुन्दर नितम्ब, बृहत् श्रोणी तथा विशाल वक्षःस्थलसे वे शोभित हो रही थी । उनका विग्रह कामदेव का आधार स्वरूप था

–ऐसी उन रमणीया दक्षिणाको देखकर यजपुरुष मूर्छित हो गये। पुनः ब्रह्माजीके कथनानुसार उन्होंने भगवती दक्षिणाको प्रसन्न करके पत्नी रूपमें स्वीकार कर लिया

तत्पश्चात् यज्ञ पुरुष उन रामेशने रमारुपिणी भगवती दक्षिणाको निर्जन स्थानमें ले जाकर उनके साथ दिव्य सौ वर्षोंतक आनन्दपूर्वक विहार व रमण किया। वे देवी दक्षिणा दिव्य बारह वर्षोंतक गर्भ धारण किये रहीं। तत्पश्चात् उन्होंने सभी कर्मों के फलरूप (फल नामक) पुत्रको जन्म दिया। आज भी कर्मके परिपूर्ण होनेपर वही पुत्र फल प्रदान करनेवाला होता है।

भगवान् यज्ञ भगवती दक्षिणा तथा अपने पुत्र फलसे युक्त होनेपर ही कर्म करनेवालोंको फल प्रदान करते हैं– ऐसा वेदवेत्ता पुरुषोंने कहा है॥ इस प्रकार देवी दक्षिणा तथा फलदायक पुत्रको प्राप्तकर यज्ञपुरुष सभी प्राणियोंको उनके कर्मोंका फल प्रदान करने लगे। तदनन्तर परिपूर्ण मनोरथवाले वे सभी देवगण प्रसन्न होकर अपने–अपने स्थानको चले गये।

कर्ताको चाहिये कि कर्म करके तुरंत दक्षिणा दे दे। ऐसा करनेसे कर्ताको उसी क्षण फल प्राप्त हो जाता है–ऐसा वेदोंने कहा है।

●कर्मके सम्पन्न हो जानेपर यदि कर्ता दैववश या अज्ञानसे उसी क्षण ब्राह्मणोंको दक्षिणा नहीं दे देता, तो एक मुहूर्त बीतनेपर वह दक्षिणा निश्चय ही दो गुनी हो जाती है

●और एक रात बीतनेपर वह सौ गुनी हो जाती है।

●वह दक्षिणा तीन रात बीतनेके बाद उसकी सौ गुनी और

●एक सप्ताह बीतनेपर उसकी दो सौ गुनी हो जाती है।

●एक माहके बाद वह लाख गुनी बतायी गयी है। इस प्रकार ब्राह्मणोंकी दक्षिणा बढ़ती जाती है और

●एक वर्ष बीत जानेपर वह तीन करोड़ गुनी हो जाती है जिसमे कर्म भी व्यर्थ ही हो जाता है।

अपवित्र, सदाचारहीन विप्र के द्वारा किया गया यज्ञ, अपवित्र व्यक्ति का पूजन और गुरु हीन मनुष्यके कर्मफलको राजा बलि अपने आहार के रूप में ग्रहण करते हैं, इसमें संशय नहीं है।

देखिए यह सब श्रीमद्देवीभागवत महापुराण की वाणी है जो सत्य ही है भय वाली बात न समझें। पूर्वसमयमें कर्मका फल प्रदान करनेमें दक्ष उन भगवती दक्षिणा के दर्शन करके करके वे यज्ञपुरुष उनके अनुपम सौन्दर्य को देखकर तथा गुण पर भी रीझकर कामपीड़ित होकर उनके स्वरूपपर मोहित हो गये और उनकी स्तुति करने लगे –

पहले सुनें –

शालग्राम में या कलश पर देवी का आवाहन करके पूजा इस मूल मंत्र से करना चाहिए । पहले ध्यान करें –

(ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं दक्षिणायै स्वाहा)

(उनका ध्यान इस प्रकार करना चाहिये–)

भगवती लक्ष्मीके दाहिने स्कन्धसे आविर्भूत होनेके कारण दक्षिणा नामसे विख्यात ये देवी साक्षात् कमलाकी कला हैं, सभी कर्मोंमें अत्यन्त प्रवीण हैं, सम्पूर्ण कर्मोंका फल प्रदान करनेवाली हैं, भगवान् विष्णुकी शक्तिस्वरूपा हैं, सबकी वन्दनीय तथा पूजनीय, मंगलमयी, शुद्धिदायिनी, शुद्धिस्वरूपिणी, शोभनशीलवाली और शुभदायिनी हैं– ऐसी देवीकी मैं आराधना करता हूँ ॥

●●●●●●●●●●●●●●●

यज्ञ उवाच

पुरा गोलोकगोपी त्वं गोपीनां प्रवरा वरा ॥ ७१

राधासमा तत्सखी च श्रीकृष्णप्रेयसी प्रिया।
कार्तिकीपूर्णिमायां तु रासे राधामहोत्सवे ॥ ७२

आविर्भूता दक्षिणांसाल्लक्ष्याश्च तेन दक्षिणा।
पुरा त्वं च सुशीलाख्या ख्याता शीलेन शोभने ॥ ७३

लक्ष्मीदक्षांसभागात्त्वं राधाशापाच्च दक्षिणा ।
गोलोकात्त्वं परिभ्रष्टा मम भाग्यादुपस्थिता ॥ ७४

कृपां कुरु महाभागे मामेव स्वामिनं कुरु ।
कर्मिणां कर्मणां देवी त्वमेव फलदा सदा ॥ ७५

त्वया विना च सर्वेषां सर्वं कर्म च निष्फलम् ।
त्वया विना तथा कर्म कर्मिणां च न शोभते ॥ ७६

ब्रह्मविष्णुमहेशाश्च दिक्पालादय एव च।
कर्मणश्च फलं दातुं न शक्ताश्च त्वया विना ।।

कर्मरूपी स्वयं ब्रह्मा फलरूपी महेश्वरः ।
यज्ञरूपी विष्णुरहं त्वमेषां साररूपिणी ॥ ७८

फलदातृपरं ब्रह्म निर्गुणा प्रकृतिः परा।
स्वयं कृष्णश्च भगवान् स च शक्तस्त्वया सह ॥ ७९

त्वमेव शक्तिः कान्ते मे शश्वज्जन्मनि जन्मनि ।
सर्वकर्मणि शक्तोऽहं त्वया सह वरानने ॥ ८८

42. दोनों देवों का अहंकार दूर

(शक्ति माहात्म्य)
पूर्व समय की बात है जब सति का जन्म नहीं हुआ था । ''रुद्राणी के 19 जन्मों के नाम इस महाग्रंथ में उपलब्ध है हीं ''अतः सुनें

एक बार शंकर जी और विष्णु जी ने अपनी पत्नियों से कहा कि हम हमारे बल पर ही शत्रुओं का नाश करते हैं आप दोनों (रुद्राणी और रमा) के बल पर नहीं तब तत्काल भुवनेश्वरी बोली कि हे देवियों ! मैं ही आपके रूप में लीलारत हूँ मेरी मातृका शक्ति (वैष्णवी और माहेश्वरी) से ही इनके लीलाविलास चलते हैं मेरी ही कृपा के बल पर असंख्य ब्रह्माण्डों के असंख्य त्रिदेव कार्य करते हैं मेरी ही कृपा से इन तीनों देवों को देह प्राप्त होता है समय आने पर इनको भी यह देह छोड़कर अन्य देह धारण करना होता है वह सब मैं ही करती हूँ मेरे एक निमिष में ही अनेक त्रिदेव आते और जाते हैं अतः इनका अहंकार नष्ट करना ही होगा। हे देवियों ! (रुद्राणी व रमा)

अतः इन दोनों का बल आप दोनों हो जो कि मेरा बल है। तीनों देवता मेरी ही शक्ति के अधीन हैं अतः इनका कर्तव्य है कि ये अपनी अपनी भार्याओं को अपने समान समझें , और सफलता का बड़ा श्रेय अपनी अर्धांगिनी को दें ।गृहस्थ पुरुष की शक्ति उसकी अपनी स्त्री ही होती है जिसकी स्त्री मृत्यु को प्राप्त हो जाये या दूर हो जाये तब ज्ञात हो जाता है कि उसके पास कितनी शक्ति है ; उस समय उसका तेज, पराक्रम, संग्रह की इच्छा, कर्म की कामना और सुख सब कुछ नष्ट हो जाता है अतः फिर पति को सुख नहीं मिल सकता इसी कारण पत्नी ही पति और पति ही पत्नी की शक्ति है यह मानना चाहिए।

अतः आप इनको छोड़कर चली जाओ यह मेरी आज्ञा है।

(तब देवी दुर्गा की इन अंशभूतात्मक देवियों ने ऐसा ही किया मात्र शिक्षा देने के निमित्त) जिससे ये विष्णु और रुद्र एक लाख वर्ष तक निस्तेज हो जायें...... और इससे कालान्तर में कोई भी पति अपनी पत्नी का अपमान न कर सके।

और फिर भी करे तो उसको अगले जन्म में वासना या रति की इच्छा होने पर भी या आसक्ति होने पर भी नारी न मिल सके।

तब एक लाख वर्ष तक अकेले ब्रह्मा जी ने इस सृष्टि को देवी सरस्वती के बल पर संभाला था।

और ये दोनों देवी (रमा और रुद्राणी) परम मूल देवी भुवनेश्वरी में विलीन हो गई।

तब कालान्तर में ब्रह्मा जी ने सनत्कुमार नामक ब्रह्मचारी पुत्र से कहा कि हे पुत्र! मुझे बहुत दुख हो रहा है कि दोनों देव शक्तिहीन होकर अचेत पड़े हैं पर मेरे पास सृष्टि का असीम कार्य है तो भुवनेश्वरी की प्रसन्नता के लिए तपस्या और बीज मंत्र का पुरश्चरण नहीं कर सकता अतः तुम देवी की साधना करो। तब

ऐसा ही हुआ तो देवी ने सनत्कुमार की तपस्या से प्रसन्न होकर कहा कि मैं तुम जैसे पुत्र के तप के कारण शंकर और विष्णु को आंशिक बल दे रही हूँ पर संपूर्ण नहीं। इससे रुद्राणी अब दक्ष के घर जन्म लेगी वे सदा सत्य (मेरी आज्ञा) में प्रतिष्ठित रहने से सती कहलायेंगी।

●●●(तस्या नाम सतीं सत्यत्वात्पर संविद्)●●●

अर्थात रुद्राणी रूप में शक्ति का विरह (रुद्र दुख) पहले भी हो चुका है और सति रूप में दूसरा विरह दुख।

और ये लक्ष्मी (पहले भृगु की पुत्री थी) अब समुद्र की बेटी बनेंगी और जब कालान्तर में समुद्र मंथन होगा तब ही इन विष्णु को प्राप्त हो जायेंगी । (ऐसा वर मिला)

इस कथा में वे सति दक्ष की पुत्री बनी पर एक रहस्य और जानना अनिवार्य है कि ब्रह्मा का पुत्र होकर भी दक्ष की दुर्बुद्धि का कारण क्या था। ध्यान रहे कि ब्रह्म पुत्र (प्रजापति पद) मुक्त आत्माओं को मिलता है ।

– दुर्वासा जी द्वारा प्रसाद दिये जाने पर दक्ष ने वह प्रसाद (माला रूप) अपनी शैय्या पर रख दिया और उसी शैय्या पर दक्ष ने अपनी पत्नी के साथ पशुकर्म (देवीभागवत सप्तम् स्कन्ध अध्याय 30 में पशु कर्म ही कहा है) अर्थात संसर्ग किया। इससे प्रसाद का अपमान होने से दक्ष का मानसिक संतुलन बिगड़ गया। और वो रुद्र देव तथा बाद में सति का भी सम्मान न कर सका। अतः माला, प्रसाद या गीता की पुस्तक उस बिस्तर पर भूलकर भी न रखें जिस पर आप रतिसुख भोगते हैं न ही उस पलंग पर रखा भोजन देवी या प्रभु को चढ़ायें। बिस्तर या पलंग पर रखते ही वह भोजन मल रूप माना जाता है फिर चढ़ाने के लायक नहीं बचता।

और सुनें इस बिस्तर पर कभी भी साधु संतों को न बिठाये। साधु संत आयें तो तत्काल (अन्य पलंग न हो तो) नवीन या धुली चादर डालें और गंगाजल छिड़काव करें।

●●●●●●●●●●●●●●

यज्ञ बोले– (हे महाभागे ।) तुम पूर्वकालमें गोलोककी एक गोपी थी और गोपियोंमें परम श्रेष्ठ थी। श्रीकृष्ण तुमसे अत्यधिक प्रेम करते थे और तुम राधाके समान ही उन श्रीकृष्णकी प्रिय सखी थी।

एक बार कार्तिकपूर्णिमाको राधामहोत्सवके अवसरपर रासलीलामें तुम भगवती लक्ष्मीके दक्षिणांशसे प्रकट हो गयी थी, उसी कारण तुम्हारा नाम दक्षिणा पड़ गया। हे शोभने! इससे भी पहले अपने उत्तम शीलके कारण तुम सुशीला नामसे प्रसिद्ध थी। तुम भगवती राधिका की किसी लीला के शापसे गोलोकसे च्युत होकर और पुनः देवी लक्ष्मीके दक्षिणांशसे आविर्भूत हो अब देवी दक्षिणाके रूपमें मेरे सौभाग्यसे मुझे प्राप्त हुई हो। हे महाभागे! मुझपर कृपा करो और मुझे ही अपना स्वामी बना लो ॥ तुम्हीं यज्ञ करनेवालोंको उनके कर्मोंका सदा फल प्रदान करनेवाली देवी हो। तुम्हारे बिना सम्पूर्ण प्राणियोंका सारा कर्म निष्फल हो जाता है और तुम्हारे बिना अनुष्ठानकर्ताओं का कर्म शोभा नहीं पाता है ॥

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, दिक्पाल आदि भी तुम्हारे बिना प्राणियोंको कर्मका फल प्रदान करनेमें समर्थ नहीं हैं ।

ब्रह्मा स्वयं कर्मरूप हैं, महेश्वर फलरूप हैं और मैं विष्णु यज्ञरूप हूँ, इन सबमें तुम ही साररूपा हो । फल प्रदान करनेवाले परब्रह्म, गुणरहित पराप्रकृति तथा स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण तुम्हारे ही सहयोगस शक्तिमान् हैं ।

हे कान्ते ! जन्म–जन्मान्तरमें तुम्हीं सदा मेरी शक्ति रही हो। हे वरानने! तुम्हारे साथ रहकर ही मैं सारा कर्म करनेमें समर्थ हूँ ।

●●●●●●●●●●●●●

ऐसा कहकर यज्ञके अधिष्ठातृदेवता भगवान् यज्ञपुरुष दक्षिणाके समक्ष स्थित हो गये। तब भगवती कमलाकी कलास्वरूपिणी देवी दक्षिणा प्रसन्न हो गयीं और उन्होंने यज्ञपुरुषका वरण कर लिया ।

फलश्रुति –

जो मनुष्य यज्ञ या विशेष पूजा के अवसरपर भगवती दक्षिणाके इस स्तोत्रका पाठ करता है, वह सम्पूर्ण यज्ञों , सम्पूर्ण जपों का संपूर्ण फल प्राप्त कर लेता है; इसमें संशय नहीं है।

●●●●●●●●●●●●

यज्ञ आरंभ में पाठ अनिवार्य–

राजसूय, वाजपेय, गोमेध, नरमेध, अश्वमेध, लांगलयज्ञ, यश बढ़ानेवाला विष्णुयज्ञ, धनदायक और भूमि देनेवाला पूर्तयज्ञ, फल प्रदान करनेवाला गजमेध, लोहयज्ञ, स्वर्णयज्ञ, रत्नयज्ञ, ताम्रयज्ञ, शिवयज्ञ, रुद्रयज्ञ, इन्द्रयज्ञ, बन्धुकयज्ञ, वृष्टिकारक वरुणयज्ञ, वैरिमर्दन कण्डकयज्ञ, शुचियज्ञ, धर्मयज्ञ, पापमोचनयज्ञ, ब्रह्माणीकर्मयज्ञ और कल्याणकारी अम्बायज्ञ–इन सभीके आरम्भमें जो व्यक्ति इस स्तोत्रका पाठ करता है, उसका सारा यज्ञकर्म निर्विघ्नरूपसे अवश्य ही सम्पन्न हो जाता है ।

43. काली माहात्म्य, राधा तत्व और शंकर का प्रेम रहस्य–

भोग और मोक्ष प्रदान करने में भगवती महाकाली की विशेष भूमिका है ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं जो महामाया के अधीन न हो। ज्ञानी भी अधिक बक बक करे या अहंकार करे तो उसको भी ये देवी मोह में डाल देती हैं इनके कारण अहंकारी का अहंकार दूर हो ही जाता है इसी कारण विद्वान मार्कण्डेय जी ने पहले ही अध्याय में क्लीं बीज की अधिष्ठात्री महाकाली को रखा है ये ही साक्षात् महालक्ष्मी का एक परिपूर्णतम रूप है। जो चाहे तो संसार को छः घण्टे न सुलाकर सदा के लिए निद्रा देने में समर्थ है। सभी ब्रह्माण्डों के ब्रह्मा विष्णु और महेश को ये ही शरीर देती हैं और उन तीनों देवताओं के भीतर जो पावर (वैष्णवी मातृका, माहेश्वरी मातृका और ब्राह्मी मातृका) होता है वह पॉवर इन महाकाली के ही तीन आंशिक रूप हैं। अतः जो इन महाकाली का सुमिरन करता है वह पुरुष इन मातृगणों की कृपा भी प्राप्त कर कृतकृत्य हो जाता है। संत कहते हैं कि –

भगवती "भोग और मोक्ष" दोनों ही प्रदान करती।
"संसार बन्ध हेतुश्च सैव सर्वेश्वरी"।

अर्थात–सर्वेश्वरी भगवती ही संसार रूपी बन्धन की हेतु है।

●●●●●●●●●●●●●●●●●

ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादा कृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।।

इस श्लोक को सबने पढ़ा है ये श्लोक इनका ही है।

इसी रूप के निमित्त है ये 10 भुजी व चार भुजाधारी भी हैं। इसका अर्थ अर्थात्–"वह देवी भगवती ही ज्ञानियों के चित्तों में बलपूर्व आकर्षण उत्पन्न करके उन्हें माया–मोह (रूप जाल) में डाल देती है। पर ये सब कुछ भाव या अहंकार को चकनाचूर करने के लिए एक कृपा ही है जब मनुष्य लौकिक जगत के लोगों को प्रेम व स्नेह देना बंद कर देता है तो ही देवी उसे बांधती हैं। अन्यथा वह माया के कुप्रभाव से मुक्त ही रहता है और सतत् अनुग्रह पाता है।

●●●●●●●●●●●●●●●●●

इसी प्रकार भगवती भक्तों को "मोक्ष" भी देने वाली हैं–

"यथा सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये।"

अर्थात् – "जब वह प्रसन्न होती हैं, तब "वर" प्रदान करने वाली होकर मोक्ष की कारण भूता बन जाती हैं।"

इसी प्रकार– "सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतु भूता सनातनी।"

अर्थात – "वह विद्या रूपी भगवती ही सनातन काल से परम मोह की हेतु भूता रही हैं।"

"सितोपनिषदकार" ने भगवती के विभिन्न क्रिया कलापों का वर्णन करते हुए निम्न मत व्यक्त किया है–

सोमात्मिका ओषधीनां प्रभवति कल्प वृक्ष पुष्पलता, गुल्मात्मिका औषध भेषजात्मिका अमृत रूपा। देवानां महस्तोम फलप्रदा अमृतेण तृप्तिं जयन्ती, देवानामन्नेन पशूनां तृणेन तप्तज्जी वानाम् ।।

अर्थात्–"वे भगवती चन्द्ररूपिणी होकर औषधियों को पुष्ट करती है। वे ही कल्पवृक्षलता, गुल्म, पुष्प, पत्र, फल और औषधि महौषधियों के स्वरूप को प्रकट करती हैं। वे अमृत स्वरूपा भगवती ही देवताओं को महस्तोम यज्ञ का फल प्रदान करती हैं। तृणों के द्वारा तृणजीवियों को तथा अन्न के द्वारा मनुष्यों आदि को तथा अमृत के द्वारा देवताओं को तृप्त करती हैं।"

●संसार "काल" का ही एक जाग्रत रूप है। यह उसी की गति के अनुसार गतिमान रहती है। काल चक्र के ही समान संसार चक्र भी परिवर्तनशील है। भगवती काली उस गति को अपने "ताण्डव" से और भी तीव्र कर देती है। विद्वानों की मान्यता है कि संहार की गति काल प्रदत्त है और काली उस गति को अपने नियंत्रण में रखती है। उसे न तो काल की मन्दगति सहनीय है और न तीव्र गति ही, क्योंकि गति की अनिश्चितता संसार की विभिन्न क्रियाओं में व्यवधान उत्पन्न कर डालती है इस कारण समानता ही उचित है। अनावृष्टि, अतिवृष्टि, बाढ़, भूकम्प आदि दैवी विपत्तियों का कारण काल की अनिश्चित गति ही है। इसलिए उस गति में एक रूपता आवश्यक होता है भगवती काली के रूप में उत्पन्न दैवी शक्ति उस गति में एक रूपता बनाए रखने में सतत प्रयत्नशील रहती है। ज्ञानियों के इस मत की पुष्टि "ऋग्वेद" के द्वारा होती है, यथा–

यद् देवा अदः सलिले सुसंरब्धा अतिष्ठा।
अत्र वो नृत्यतामिव तीव्ररेणु रपायत ।।

यद्देवा यततो यथा भुवान्य पिन्वत ।
अत्रा समुद्र आ गूलमहा सूर्यभजभतन् ।।

(ऋग्वेद १०/२/२/६/७)

अर्थात् – "देव शक्तियां इस पृथ्वी में अत्यन्त उत्साह में भरकर सलिलाकार दिखायी देने लगीं और नृत्य सा करने लगी जिसके कारण सब ओर तीव्र धूल उड़ने लगी। इस प्रकार उन शक्तियों ने समस्त विश्व को मेघ के समान आच्छादित कर लिया तथा आकाश में छिपे हुए सूर्य को भी प्रकाशित किया।" इस प्रकार देवी सर्व समर्थ हैं और परम दयालु भी। माँ के रूप को सप्त जिह्वाओं से भी दर्शाया जाता है जिनका भाव बता रहे हैं –

माता की सात जिह्वाएं और अर्थ –

काली कराली च मनोजवा च सुलोहिता या च सुधूम्रवर्णा । स्फुलिंगिनी विश्व रूचिश्च देवी लेलायमाना इति सप्त जिह्वा ।।

अर्थात्

"काली कराल रूप वाली,

मन के वेग के समान चंचल,

लालिमा युक्त,

धूम्र वर्ण वाली चिंगारियों से युक्त,

देदीप्यमान और

विश्व रुचि नाम की सात जिहवाओं से युक्त है।"

सृष्टि को नियम में रखने के लिए यह "सात जिहवाएं" आवश्यक है।

● "कराल रूप" के बिना अनुशासन का पालन नहीं हो पाता। "भय बिना होय न प्रीति" के न्यायानुसार यम नियमों के पालनार्थ– "कराल रूप" से इन्कार नहीं किया जा सकता।

●मनोजवा – वे मन के समान वेगवती हैं एवं चंचलता से भी "गतिशीलता" का बोध होता है।

गति में क्रियाशीलता है। यदि गति नहीं हो तो संसार का कोई भी कार्य नहीं चल सकता। इसलिए भगवती का "नृत्य परायण" रहना क्रियाशीलता का ही द्योतक है।

●सुलोहिता–अर्थात् – "सुन्दर व सुरेश्वरी महा लालिमा से युक्त हैं कहने का अभिप्राय "श्रृंगारात्मक शोभा" से है। लालिमा सौभाग्य की भी प्रतीक है, जिसके तीन अर्थ हैं–

1. सौभाग्यवती या सौभाग्य दायिनी
2. प्राणियों में रक्त अर्थात जीवनी शक्ति का संचार करने वाली।
3. नीललोहित शिव जी के लोहित तत्व का प्रतीक उसी के कारण वे शिव लोहित युक्त हुये ।

ये गुणधर्म संसार के लिए बहुत आवश्यक है।

●सुधूम्रवर्णा–अर्थात्–धुएं के समान गहरे रंग वाली। भक्तो ! संसार की रचना में सात रंगों का समावेश है। यदि उन सात रंगों को एकत्र मिश्रित कर दिया जाय तो धुंए के समान रंग प्रतीत होगा। इससे सिद्ध होता है कि संसार के सभी वर्ण भगवती के "कृष्ण वर्ण" में निहित है।

●स्फुलिंगिनी अर्थात् "चिंगारियों से युक्त"। चिंगारियों का अभिप्राय पराविज्ञान की किरणों से है। काली में सभी ज्ञान समाविष्ट है और साधक को उसकी साधना के अनुसार उनकी प्राप्ति होती रहती है। आपको शायद एक बात पता न हो वह आज अक्षयरुद्र अंशभूतशिव से सुन लें – आध्यात्मिक जगत की शुरुआत काली जी के दर्शन से ही होती है। स्वप्न ज्योतिष शास्त्र भी यह कहता है कि जिस मनुष्य को सपने में जिस रात काली माता के दर्शन

हुये हों समझ लो कि उसी रात (उषाकाल) से ही साधक का आध्यात्मिक नवीन जन्म हुआ है। और साक्षात्कार की बात तो निराली है ही। हालांकि यह सपना भी प्रत्यक्ष ही होता है मात्र उनकी माया से ऐसा लगता है कि स्वप्न था पर जब तक वरदान लेने की बुद्धि जाग्रत न आये तब तक वह सपना ही माना जाता है।

आगे –

●"विश्वरुचि" नामक जिह्वा का अर्थ – "संसार में शोभा प्रदान करने वाली, संसार की ओर प्रवृत्त करने वाली भी ये ही हैं । जगत के लिए प्रवृत्ति भी अत्यन्त आवश्यक है। यदि उसका अर्थ "शोभा" रहे तो भी उचित ही है, क्योंकि "शोभा" के बिना भी सर्ग (सृष्टि) रचना व्यर्थ ही सिद्ध होगी।" गृहस्थी का गृहस्थ आश्रम इनकी ही प्रेरणा से आता है पर जो मात्र काली की सेवा नैष्ठिकब्रह्मचर्य के साथ करना चाहे उसे ये बांधकर नहीं रखती उसी साधक की स्वतंत्रता पर छोड़ देती है। अब बताओ यदि साधना, अनुष्ठान, पुरश्चरण, स्वाध्याय, जनहित में ही किसी की रुचि है तो कोई देवी जबरदस्ती गृहस्थ आश्रम क्यों बांधेगी।

●"लेलायमाना" अर्थात्–लपलपाती जिह्वावों से युक्त। यह भी गति का ही द्योतक है। इसमें कुछ घोरत्व और तमोगुण की अधिकता प्रदर्शित होती है, जो दुष्कृतियों, पापियों को नष्ट करने में अधिक सहायक है पर भक्तों के लिए अति सौम्य ही हैं।

। इस प्रकार काली का यह रूप लोकोपकार ही है।

मार्कण्डेय जी अपनी साधना में शक्ति के बीज का जप भी करते थे उसी के कारण उन पर अतिशीघ्र महादेव की कृपा हुई। महादेव उन बच्चों से अत्यधिक प्रेम करते हैं जो माँ (शक्ति) को चाहते हैं और शक्ति का सुमिरन करते हैं।

क्योंकि महादेव के चित्त में भी 24 घण्टे पराशक्ति का ही बोलबाला है। और गौरी से प्रेम का प्रतिशत देखकर ही यह अनुमान लगा लेना चाहिए कि वे शक्ति को कितना चाहते हैं और कितना प्रेम करते हैं। शंकर के लिए महालक्ष्मी (भुवनेश्वरी) ,महाकाली और महासरस्वती पूजनीय हैं और पार्वती का रूप पूज्यनीय के अतिरिक्त प्रेम के भी योग्य है क्योंकि इस रूप में उनका पवित्र पतिधर्म भी जुड़ा है उसी का परिणाम कार्तिकेय हैं।

अतः शक्ति की आराधना अति अनिवार्य है। श्री कृष्ण रहस्य में भी लिखा है कि श्री राधा पूजन के बिना श्रीकृष्ण का पूजन लगातार 100 जन्मों तक करने पर ही गोलोक दे पायेगा पर राधा (आह्लादनी शक्ति) जी का भी सुमिरन (श्रीकृष्ण जी की प्रसन्नता के लिए) कर लिया जाये या राधा को ही हृदय में बसा लिया जाये तो गोलोक इसी जन्म में सुलभ हो जाता है। और प्रेम की परिभाषा एक गृहस्थ या प्रेमी ही भलीभांति समझ सकता है इसी कारण भगवान शंकर या कृष्ण को (उनके प्रेम विषयक) जानने के लिए एक आदर्श पत्नी का होना अति अनिवार्य है अन्यथा वैराग्य या योग अथवा पराविज्ञान में दक्षता तो नैष्ठिकब्रह्मचर्य से भी संभव है। पर प्रेम विषय को भी समझना हो तो एक भावुक हृदय और गृहस्थ जीवन स्वीकार करना ही पड़ता है वह भी शिवा या राधा के समान पतिव्रता युवती मिले तो ही संभव है अन्यथा बात नहीं बनती। और जीवन ही बर्बाद हो जाता है। इससे अच्छा तो (पतिव्रता युवती का अभाव हो तो) शंकराचार्यांश का ब्रह्मानंद ही सर्वोत्कृष्ट है।

44. नवाक्षर अर्थात नवार्ण मंत्र की महिमा

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे महामंत्र का माहात्म्य।

गुरुदेव वसिष्ठ जी के शाप देने पर वह शिष्य डर गया और एक संत से उस (राजकुमार त्रिशंकु) ने शाप मुक्ति के लिए नवाक्षर मंत्र (नवार्ण मंत्र) प्राप्त कर लिया पर उसे दशांश हवन की विधि का ज्ञान नहीं था । तब उसे जाते जाते मार्ग में कुछ विद्वान ब्राह्मण मिले पर विद्वान जनों ने भी इन्कार कर दिया कि गुरु से शापित की सहायता हम नहीं करेंगे तब उसने मरने के लिए चिता तैयार की।और माँ भुवनेश्वरी का नाम जपने लगा कि हे माँ मैं आपकी शरण में हूँ मेरा उद्धार कीजिए अन्यथा मैं मृत्यु का वरण कर रहा हूँ पुत्र कुपुत्र हो सकता है पर माता ही ऐसी है जो अपने पुत्र के अवगुण नहीं देखती अतः रक्षा करो रक्षा करो रक्षा करो।

वह रोने लगा तब तत्काल पराम्बा ने प्रकट होकर उसके आँसु पोंछे।

और इसी प्रकार राजा निमि को भी वसिष्ठ जी ने बिना गलती के मात्र लोभ के कारण ही शाप दिया था तब देवी ने ही निमि को वरदान दिया कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसा कोई भी शाप नहीं जो भगवति न मिटा सके आप चाहे कितने भी बड़े गुरुद्रोही या परस्त्रीगमन वाले हो पर आज के बाद पापकर्म बंद करके पराम्बा की शरण में चले जाओ आपकी रक्षा हो जायेगी।

इस नवाक्षर मंत्र की महिमा देवी अथर्वशीर्ष में भी है और श्रीमद्देवीभागवत के सप्तम स्कंध में भी। सप्तशती भी करना हो और नवार्ण मंत्र भी तो एक क्रम है। वह देखो–

1. देवी कवच
2. अर्गला,
3. कीलक ,
4. रात्रिसूक्त,
5. अथर्वशीर्ष,
6. नवार्ण 1 माला विनियोग व न्यास सहित
7. तदोपरान्त मूल पाठ,
8. अब नवार्ण " इस क्रम से ही नवार्ण का संपुटन कहेंगे।
9. और फिर देवी सूक्त
10. अब अंत में तीनों रहस्य (मूर्ति रहस्य आदि)
11. अब स्वाहा देवी के 16 नामों का पाठ
12. अब आरती,
13. दक्षिणा
14. क्षमा
15. प्रदक्षिणा।

अर्थात् सप्तशती होने के बाद पुनः तत्काल नवार्ण मन्त्र 108 बार जपें। तदोपरान्त देवी सूक्त (ऋग्वेदोक्त अद्वैत सूक्त) तथा तीनों रहस्य भी।

चिदम्बर संहिता कहती है कि सप्तशती से पहले और सप्तशती के बाद में नवार्ण मन्त्र का जप होना ही चाहिए।

कोई कोई पाठ के अंत में नवार्ण व नवार्ण के बाद रात्रिसूक्त की आज्ञा देते हैं यह ठीक नहीं । पाठ के बाद नवार्ण मन्त्र ठीक है और इसके बाद देवी सूक्त।

कुछ लोग पाठ के बाद देवीसूक्त तदोपरान्त नवार्ण मन्त्र की आज्ञा देते हैं यह भी ठीक नहीं। ठीक तो यही है कि–कवच, अर्गला, कीलक, रात्रिसूक्त, अथर्वशीर्ष, **नवार्ण तदोपरान्त मूल पाठ, अब नवार्ण** फिर देवी सूक्त और अब अंत में तीनों रहस्य (मूर्ति रहस्य आदि)

अथर्वशीर्ष के श्लोकों में नवार्ण मंत्र –

वियदिकारसंयुक्तं वीतिहोत्र समन्वितम्।
अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थ साधकम्।।

एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः।
ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः।।

वाङमाया ब्रह्मसूस्तमात् षष्ठं वक्त्र समन्वितम् ।
सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्तष्टात्तृतीयकः।

नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः।
विच्चे नवार्णकोर्णः स्यान्महदान्ददायकः।।

हृत्पुण्डरीक मध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभाम्।
पाशांकुशधरां सौम्या वरदाभयहस्तकाम्।
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुधां भजे।।

वियत्– यानि आकाश(ह)

तथा 'ई' कार से युक्त,वितिहोत्र– अग्नि (र) सहित, अर्धचंद्र, (ँ) से अलंकृत जो देवी का बीज है, वह मनोरथ पूर्ण करनेवाला है।

इस प्रकार इस एकाक्षर ब्रह्म(ह्रीं) का ऐसे यति ध्यान करते हैं,जिनका चित्त शुद्ध है,जो निरतिशयानन्दपुर्ण और ज्ञान के सागर हैं।

(मंत्र देवी प्रणव माना जाता है।ऊँकारके समान ही यह प्रणव भी व्यापक अर्थ से भरा हुआ है। संक्षेप में ईसका अर्थ इच्छा–ज्ञान–क्रियाधार, अद्वैत, अखण्ड, सच्चिदानन्द,समरसिभूत, शिवशक्तिस्फुरण है।)

वाणी (ऐं),

माया (ह्रीं),

काम (क्लीं),

इसके आगे छठा व्यंजन अर्थात च, वही वक्त्र अर्थात आकार से युक्त (चा),

सूर्य (म),'

अवाम श्रोत्र' –दक्षिण कर्ण (उ)

और विन्दु अर्थात अनुस्वार से युक्त (मुं),

टकार से तीसरा ड,वही नारायण अर्थात् ' आ से मिश्र (डा),

वायु (य) ,वही अधर अर्थात 'ऐ' से युक्त (यै)

और 'विच्चे '

यह नवार्ण मंत्र उपासकों को आनंद और ब्रह्म सायुज्य देनेवाला है।।

(इस मंत्र का अर्थ हैः हे चित्स्वरुपिणी महासरस्वती!हेसद्रूपिणी महालक्ष्मी!हे आनंदरुपिणी महाकाली! ब्रह्मविद्या पाने के लिए हम सब समय तुम्हारा ध्यान करते हैं। हे महाकाली –महालक्ष्मी–महासरस्वती –स्वरुपिणी चण्डिके ! तुम्हें नमस्कार है। अविद्यारूपी रज्जुकी दृढ़ ग्रन्थिको खोलकर मुझे मुक्त करो ।)

हृदय कमल के मध्य में रहनेवाली, प्रातः कालीन सूर्य के समान प्रभावाली ,पाश और अंकुश धारण करने वाली, मनोहर रूप वाली,वरद और अभय मुद्रा धारण किए हुए हाथों वाली,तीन नेत्रों से युक्त,रक्त वस्त्र परिधान करनेवाली और कामधेनु के समान भक्तों के मनोरथ पूर्ण करनेवाली देवी को मैं भजता हूं।

महाभय का नाश करने वाली,महासंकट को शांत करने वाली और महाकरुणा की साक्षात मूर्ति को तुम महादेवी को मैं नमस्कार करता हूँ।।

45.1 परम कल्याण का 'त्रिस्रवण स्नान' उपाय

शिवा के तीर्थ में जाकर जो भी भयंकर से भयंकर पापी भी मात्र एक बार भी त्रिस्रवण स्नान कर लेता है वह भक्त भी शिवा के सायुज्य को एक दिन निश्चित ही पा लेता है।

अर्थात उस सायुज्य के लिए पात्रता प्राप्त कर कृतकृत्य हो जाता है।

बस उस दिन स्नान के बाद कभी भी पाप (चोरी, लूट, व्याभिचार , पराई नार भोग आदि) न करें।

त्रिस्रवण का तात्पर्य तीनों काल स्नान है। पर यह कार्य अवंतिका हरसिद्धि शक्तिपीठ, काशी विशालाक्षी या कामाख्या देवी अथवा किसी भी एक शक्तिपीठ के निकट करें और उस रात, पूर्व रात भी ब्रह्मचर्य पूर्वक रहें।

मत्स्य पुराण के 108 सिद्धपीठों में वृन्दावन की राधे रानी का तथा मथुरा में देवी देवकी का नाम उच्चारित हुआ है अतः जो वैष्णव जन हैं वह भी किसी भी एक दिन या 18 पावन दिनों (युगाद्या दिन तथा 14 मन्वादि दिवस) में से एक दिन या 12 पावन दिनों (द्वादश संक्रांति में से एक दिन या जन्म नक्षत्र के दिन भी ऐसा करें अथवा वर्ष के 36 महत्वपूर्ण दिनों में से एक दिन भी कर सकते हैं।

ये 36 महादिवस चार नवरात्रियों के 9,9,9,9 अर्थात कुल 36 दिन हैं।

और जिस व्यक्ति ने उसी दिन शक्तिपीठ या सिद्धपीठ की सेवा या महुआ में देवी की पूजा करके व दुर्गा सप्तशती के केवल मध्यम चरित्र का पाठ करके एक परिक्रमा कर ली समझ लेना वह सामान्य नर नारी नहीं मणिद्वीप से आई एक पवित्र आत्मा है जिसे देवी पराम्बा का पार्षद या सखी भी कह सकते हैं ।

अतः उज्जैन, काशी या अन्य ज्योतिर्लिंग वाले सभी सुन लें और अन्य भी। एक और बात–

यदि आपकी वहाँ उसी स्थल पर कभी मृत्यु हुई तब तो कोई बात नहीं पर यदि किसी पाप से काल आपको तीर्थ स्थल से दूर ले गया और वहाँ मर गए तो यही त्रिस्रवण स्नान आपको बचा लेगा। सभी पाठक बन्धु ,

सभी भक्त , हमारे सभी मित्र , शुभचिंतक, शिष्य और अंशभूतशिव की देह को अपना मानने वाले नाते रिस्तेदार विशेष रूप से यह आध्यात्मिक ज्ञान अवश्य ही पालन करें । देवी रहस्य महाग्रंथ की अन्य बात न भी माने तो यह उपाय अवश्य करना और संभव हो तो सपरिवार ही ऐसा करना इससे सबका मंगल होगा।

यह प्रार्थना यह शंकराचार्यांश ब्रह्मानंद अक्षयरुद्र आपसे बार बार कर रहा है। हे मनुष्य गणों ! जो मुक्त हैं वे ब्रह्मनिष्ठ तो स्वयं देवी का स्वरूप हैं पर आप अपने समय का सदुपयोग अवश्य ही करते रहें। और इस प्रकार आप भी एक दिन ब्रह्मभाव को निश्चित ही पा लोगे।

45.2 पायस से कल्याण

बस देवी पराशक्ति को गाय के दूध से बनी खीर अर्पित करना है।

पूर्णिमा को जो देवी पराशक्ति को गाय के दूध से खीर (पायस) बनाकर अर्पित करता है और उस खीर को संध्यापूत– वेदपाठी व जितेन्द्रिय ब्राह्मण को (पात्र सहित) अर्पित करता है वह खीर उस ब्राह्मण के खाते ही तत्काल सभी पितरों का उद्धार हो जाता है। किसी शक्तिपीठ पर जिसने खीर का देवी पराशक्ति को भोग लगाकर उस खीर का 95 प्रतिशत भाग उस क्षेत्र के संतों व ब्राह्मणों खिला दिया तो समझ लो वह सुखी हो गया और उसके 100 प्रतिशत पितृ दोष दूर हो गए। ऐसा मान लो। हालांकि हमारी कालखंड नामक पुस्तक में हर तिथि के अनेक उपाय भी हैं।

46.पराशक्ति यथार्थ में लिंगविहीन

पराशक्ति मात्र एक ही है उसे ही परम तत्त्व, परम सत्ता, परम आनंद, कैवल्य का स्वरूप, गुणातीत और रूपातीत होने से गुरु, कालों का काल होने से महाकाल, महानारी रूप में देखे तो 30नेत्रों वाली महाकाली सर्वेश्वरेश्वरी, वही परब्रह्म, विशुद्ध, कल्याण रूप होने से शिव, चतुर्भुजी भुवनेश्वरी , चतुर्भुजी कात्यायनपुत्री, अष्टभुजी महासरस्वती कौशिकी रूप, दसभुजी और मधु कैटभ हंत्री, और 10भुजी चंद्रघंटा रूप, 18भुजी महिषासुर मर्दिनी महालक्ष्मी रूप, कभी वही पुरुष रूप धारण करके अनुग्रह कर्ता सदाशिव रूप धारण करने वाली हो जाती है (यथार्थ में यह वाला और वाली शब्द से रहित है क्योंकि निराकार परब्रह्म को स्त्रीलिंग या पुल्लिंग संज्ञा देना ही ज्ञानहीनता है, केवल जो उस पराशक्ति को माँ रूप में स्वीकार करते हैं वे उसे स्त्री रूप में वाली शब्द का औपचारिक शब्द प्रयोग करते हुए संबोधित किया जा रहा है और जो पुरुष रूप में देखना चाहते हैं वे सदाशिव या कृष्ण आवरण में उस निराकार ब्रह्म की पराशक्ति की पुरुष रूप में अनुभव करके पिता या परम पुरुष कहा जाता है पर पराशक्ति तो पराशक्ति ही है)

रूप तो मात्र जीवभावी और द्वैतात्मक विद्या वाले लोगों या अनन्य भक्तों को एक महाबल का कार्य करते हैं जो आरंभिक और मध्यम काल में विशिष्ट भूमिका ही निभाते हैं।

वही पराशक्ति पापियों के लिए दरिद्रता, पीड़ा, दुःख और वेदना रूप में और वही पुण्यात्माओं के लिए सुख और समृद्धि रूप में प्रकट होती हैं और निष्कामी जनों के लिए वही पहले वैराग्य और मुमुक्षा रूप में फिर वही पराविद्या महावाक्यों के रूप में पहले परोक्ष और फिर **अपरोक्षत भाव रूप** में प्राप्त होती है।

उस निराकार पराशक्ति का मूल, सनातन और प्रथम आवरणात्मक महानतम बाह्य रूप मणिद्वीप की अधिष्ठात्री भुवनेश्वरी पराम्बा है जो अपने ही अनुग्रहमय सदाशिव रूप के साथ सदा ही लीलारत रहती हैं, सदाशिव और शिवा मात्र नाम और रूप का भेद है वस्तुतः **दोनों रूपों के भीतर विद्यमान जो पूर्ण ब्रह्म है वह पराशक्ति ही है** शेष नहीं।

और कुछ शाक्त या द्वैतात्मक भक्तों की दृष्टि से देखा जाये तो भुवनेश्वरी रूप ही श्रीसदाशिव के सदाशिवत्व का कारण है अन्यथा वो शव मात्र है यह तर्क ठीक नहीं, क्योंकि बाह्य आवरण तो मात्र धारण किया हुआ रूप मात्र है चाहे वह देवीआवरण हो अथवा देवचोला।

इस कारण पराशक्ति को सदाशिव रूप/ आवरण के कारण शव कभी भी नहीं कहा जा सकता और भुवनेश्वरी स्वयं रूपातीत हैं जो महिमा भुवनेश्वरी रूप की है वही सदाशिव रूप की भी है, कारण वही है कि दोनों रूपों के माध्यम से साक्षात् एक ही परब्रह्म पराशक्ति ही है दूसरा और तीसरा तत्व तो कल्पना मात्र है मूलतः एक ही ब्रह्म सर्वमय है परिभाषा और संबोधन में अंतर होने से मूल नहीं बदल जाता।

अतः किसी भी वाह्य आवरण की संज्ञा कुछ भी दी जा सकती है पर वो आवरण या शव मात्र है जो सभी रूपों पर लागू होगी अन्यथा सभी रूपों में विराजमान परब्रह्म ही देखने और समझने के योग्य है

47. श्रीकमला

श्रीमद्भागवतके आठवें स्कन्धके आठवें अध्यायमें कमलाके उद्भवकी विस्तृत कथा आयी है। देवताओं एवं असुरोंके द्वारा अमृत–प्राप्तिके उद्देश्यसे किये गये समुद्र–मन्थनके फलस्वरूप इनका प्रादुर्भाव हुआ था।

जैसे कि हम इस देवी रहस्य महाग्रंथ के अध्याय 42 में बता चुके कि पूर्व काल में विष्णु जी को त्याग कर लक्ष्मी जी जा चुका थी और रुद्राणी भी शंकर जो को छोड़कर चली गई थी। ये दोनों 100000 वर्ष बाद ही दोनों को प्राप्त हुई। पहले ये रमा भृगु की पुत्री थी। अतः अब भी इन्होंने भगवान् विष्णुको पतिरूपमें वरण किया था।

श्रीमद्भागवत महापुराण के आठवें स्कन्ध के अध्याय आठ में दिव्य और मनोहर उपाख्यान है इन देवी का। समुद्र मंथन में विष निकलने पर परब्रह्म स्वरूप महादेव ने सबको भय मुक्त किया। तत्पश्चात् कल्पवृक्ष व अप्सराएं आदि निकले। ये अप्सराएं सुन्दर वस्त्रोंसे सुसज्जित एवं गलेमें स्वर्णहार पहने हुए थीं। वे अपनी मनोहर चाल और विलासभरी चितवनसे देवताओंको सुख पहुँचानेवाली हुईं । इसके बाद ये श्री शोभाकी मूर्ति स्वयं भगवती लक्ष्मीदेवी प्रकट हुईं। वे भगवान् की नित्यशक्ति हैं। उनकी बिजलीके समान चमकीली छटासे दिशाएँ जगमगा उठीं । उनके सौन्दर्य, औदार्य, यौवन, रूप–रंग और महिमासे सबका चित्त खिंच गया। देवता, असुर, मनुष्य– सभीने चाहा कि ये हमें मिल जायँ। स्वयं इन्द्र अपने हाथों उनके बैठनेके लिये बड़ा विचित्र आसन ले आये। श्रेष्ठ नदियोंने मूर्तिमान् होकर उनके अभिषेकके लिये सोनेके घड़ोंमें भर–भरकर पवित्र जल ला दिया । पृथ्वीने अभिषेकके योग्य सब ओषधियाँ दीं। गौओंने पंचगव्य और वसन्त ऋतुने चैत्र–वैशाखमें होनेवाले सब फूल–फल उपस्थित कर दिये।

इन सामग्रियोंसे ऋषियोंने विधिपूर्वक उनका अभिषेक सम्पन किया। गन्धर्वोंने मंगलमय संगीतकी तान छेड़ दी। नर्तकियाँ नाच नाचकर गाने लगीं। बादल सदेह होकर मृदंग, डमरू, ढोल, नगारे, नरसिंगे, शंख, वेणु और वीणा बड़े जोरसे बजाने लगे । तब भगवती लक्ष्मीदेवी हाथमें कमल लेकर सिंहासनपर विराजमान हो गयीं। दिग्गजोंने जलसे भरे कलशोंसे उनको स्नान कराया। उस समय ब्राह्मणगण वेदमन्त्रोंका पाठ कर रहे थे ।

समुद्रने पीले रेशमी वस्त्र उनको पहननेके लिये दिये। वरुणने ऐसी वैजयन्ती माला समर्पित की, जिसकी मधुमय सुगन्धसे भौरे मतवाले हो रहे थे। प्रजापति विश्वकर्माने भाँति–भाँतिके गहने, सरस्वतीने मोतियोंका हार, ब्रह्माजीने कमल और नागोंने दो कुण्डल समर्पित किये ।

इसके बाद लक्ष्मीजी ब्राह्मणोंके स्वस्त्ययन–पाठ कर चुकनेपर अपने हाथोंमें कमलकी माला लेकर उसे सर्वगुणसम्पन्न पुरुषके गलेमें डालने चलीं। मालाके आसपास उसकी सुगन्धसे मतवाले हुए भौरे गुंजार कर रहे थे। उस समय लक्ष्मीजीके मुखकी शोभा अवर्णनीय हो रही थी। सुन्दर कपोलोंपर कुण्डल लटक रहे थे। लक्ष्मीजी कुछ लज्जाके साथ मन्द–मन्द मुसकरा रही थीं । उनकी कमर बहुत पतली थी। दोनों स्तन बिल्कुल सटे हुए और सुन्दर थे। उनपर चन्दन और केसरका लेप किया हुआ था। जब वे इधर–उधर चलती थीं, तब उनके पायजेबसे बड़ी मधुर झनकार निकलती थी। ऐसा जान पड़ता था, मानो कोई सोनेकी लता इधर–उधर घूम–फिर रही है। यह सब आप श्रीमद्भागवत महापुराण में विस्तार से देखें । इस ग्रंथ में संक्षिप्त विवरण दे रहे हैं। उस समय वे चाहती थीं कि मुझे

कोई निर्दोष और समस्त उत्तम गुणोंसे नित्ययुक्त अविनाशी पुरुष मिले तो मैं उसे अपना आश्रय बनाऊँ, वरण करूँ। परन्तु गन्धर्व, यक्ष, असुर, सिद्ध, चारण, देवता आदिमें कोई भी वैसा पुरुष उन्हें न मिला।

(वे मन–ही–मन सोचने लगीं कि) कोई तपस्वी तो हैं, परन्तु उन्होंने क्रोधपर विजय नहीं प्राप्त की है। किन्हींमें ज्ञान तो है, परन्तु वे पूरे अनासक्त नहीं हैं। कोई–कोई हैं तो बड़े महत्त्वशाली, परन्तु वे कामको नहीं जीत सके हैं। किन्हींमें ऐश्वर्य भी बहुत है; परन्तु वह ऐश्वर्य ही किस कामका, जब उन्हें दूसरोंका आश्रय लेना पड़ता है। किन्हींमें धर्माचरण तो है; परन्तु प्राणियोंके प्रति वे प्रेमका पूरा बर्ताव नहीं करते। त्याग तो है, परन्तु केवल त्याग ही तो मुक्तिका कारण नहीं है। किन्हीं–किन्हींमें वीरता तो अवश्य है, परन्तु वे भी कालके पंजेसे बाहर नहीं हैं। अवश्य ही कुछ महात्माओंमें विषयासक्ति नहीं है, परन्तु वे तो निरन्तर अद्वैत–समाधिमें ही तल्लीन रहते हैं॥ २१॥ किसी–किसी ऋषिने आयु तो बहुत लंबी प्राप्त कर ली है, परन्तु उनका शील–मंगल भी मेरे योग्य नहीं है। किन्हींमें शील–मंगल भी है परन्तु उनकी आयुका कुछ ठिकाना नहीं। अवश्य ही किन्हींमें दोनों ही बातें हैं, परन्तु वे अमंगल–वेषमें रहते हैं। शिव जी पर एकमात्र रुद्राणी का अधिकार है । रहे एक भगवान् विष्णु–उनमें सभी मंगलमय गुण नित्य निवास करते हैं, परन्तु वे मुझे चाहते ही नहीं ।इस प्रकार सोच–विचारकर अन्तमें श्रीलक्ष्मीजीने अपने चिर अभीष्ट भगवान्को ही वरके रूपमें चुना; क्योंकि उनमें समस्त सद्‌गुण नित्य निवास करते हैं। प्राकृत गुण उनका स्पर्श नहीं कर सकते और अणिमा आदि समस्त गुण उनको चाहा करते हैं; परन्तु वे किसीकी भी अपेक्षा नहीं रखते। वास्तवमें लक्ष्मीजीके एकमात्र आश्रय भगवान् विष्णु ही हैं। पूर्व जन्म के पति भी ये विष्णु ही थे। इसीसे उन्होंने उन्हींको वरण किया। लक्ष्मीजीने भगवान्के गलेमें वह नवीन कमलोंकी सुन्दर माला पहना दी, जिसके चारों ओर झुंड–के–झुंड मतवाले मधुकर गुंजार कर रहे थे। इसके बाद लज्जापूर्ण मुसकान और प्रेमपूर्ण चितवनसे अपने निवासस्थान उनके वक्षःस्थलको देखती हुई वे उनके पास ही खडी हो गई ।

जगत्पिता भगवान्ने जगज्जननी, समस्त सम्पत्तियोंकी अधिष्ठातृदेवता श्रीलक्ष्मीजीको अपने वक्षःस्थलपर ही सर्वदा निवास करनेका स्थान दिया। लक्ष्मीजीने वहाँ विराजमान होकर अपनी करुणाभरी चितवनसे तीनों लोक, लोकपति और अपनी प्यारी प्रजाकी अभिवृद्धि की । उस समय शंख, तुरही, मृदंग आदि बाजे बजने लगे। गन्धर्व अप्सराओंके साथ नाचने–गाने लगे। इससे बड़ा भारी शब्द होने लगा । ब्रह्मा, रुद्र, अंगिरा आदि सब प्रजापति पुष्पवर्षा करते हुए भगवान्के गुण, स्वरूप और लीला आदिके यथार्थ वर्णन करनेवाले मन्त्रोंसे उनकी स्तुति करने लगे ।देवता, प्रजापति और प्रजा–सभी लक्ष्मीजीकी कृपादृष्टिसे शील आदि उत्तम गुणोंसे

सम्पन्न होकर बहुत सुखी हो गये । आगे शुकदेव ने कहा कि –हे परीक्षित लक्ष्मीजी को प्राप्त कर विष्णु जी को भी अपार हर्ष की प्राप्ति हुई क्योंकि श्रीमद्देवीभागवत महापुराण के अनुसार पूर्व काल (100000 वर्ष पहले) ये लक्ष्मी विष्णु जी को छोड़कर चली गई थी । अतः अब इनका विरह दुख भी दूर हुआ।

महाविद्याओंमें ये दसवें स्थानपर परिगणित हैं। भगवती कमला वैष्णवी शक्ति हैं तथा भगवान् विष्णुकी लीला–सहचरी हैं, अतः इनकी उपासना जगदाधार–शक्तिकी उपासना है। ये एक रूपमें समस्त भौतिक या प्राकृतिक सम्पत्तिकी अधिष्ठात्री देवी हैं और दूसरे रूपमें सच्चिदानन्दमयी लक्ष्मी हैं; जो भगवान् विष्णुसे अभिन्न हैं। देवता, मानव एवं दानव– सभी इनकी कृपाके बिना अधूरे हैं हैं। इसलिये आगम और निगम दोनोंमें इनकी उपासना समानरूपसे वर्णित है। सभी देवता, राक्षस, मनुष्य, सिद्ध और गन्धर्व इनकी कृपा प्रसादके लिये लालायित रहते हैं।

ध्यान –

महाविद्या कमलाके ध्यानमें बताया गया है कि इनकी कान्ति सुवर्णके समान है। हिमालयके सदृश श्वेत वर्णके चार हाथी अपने सूँड़में चार सुवर्ण कलश लेकर इन्हें स्नान करा रहे हैं। ये अपनी दो भुजाओंमें वर एवं अभय मुद्रा तथा दो भुजाओंमें दो कमल पुष्प धारण की हैं। इनके सिरपर सुन्दर किरीट तथा तनपर रेशमी परिधान सुशोभित है। ये कमलके सुन्दर आसनपर आसीन हैं।

समृद्धिकी प्रतीक महाविद्या कमलाकी उपासना स्थिर लक्ष्मीकी प्राप्ति तथा नारी–पुत्रादिके सौख्यके लिये की जाती है। बिल्ववृक्ष की सेवा से ये देवी अथाह धन और ऐश्वर्य देती हैं। एक बार भगवान विष्णु भी किसी कारण से इनसे दूर हो गए थे तो इन्होंने भगवान शंकर की तपस्या की और उन विष्णु जी को पुनः पाया । अतः भगवान शिव जी की सेवा करने वाले इसी कारण अति शीघ्र धनवान हो जाते है

कमलाको लक्ष्मी तथा रमा भी कहा जाता है। भार्गवोंके द्वारा पूजित होनेके कारण इनका एक नाम भार्गवी है। इनकी कृपासे पृथ्वीपतित्व तथा पुरुषोत्तमत्व दोनोंकी प्राप्ति हो जाती है। इन्द्र रचित लक्ष्मी स्तोत्र, भगवान् आंद्य शंकराचार्यके द्वारा विरचित कनकधारा स्तोत्र और श्रीसूक्तका पाठ, कमलगट्टोंकी मालापर श्रीमन्त्रका जप, बिल्वपत्र तथा बिल्वफलके हवनसे कमलाकी विशेष कृपा प्राप्त होती है। स्वतन्त्रतन्त्रमें कोलासुरके वधके लिये इनका प्रादुर्भाव होना बताया गया है। वाराहीतन्त्रके अनुसार प्राचीनकालमें ब्रह्मा, विष्णु तथा शिवद्वारा पूजित होनेके कारण कमलाका एक नाम त्रिपुरा प्रसिद्ध हुआ। कालिकापुराणमें कहा गया है कि त्रिपुर शिवकी भार्या होनेसे इन्हें त्रिपुरा कहा जाता है। शिव अपनी इच्छासे त्रिधा हो गये। उनका ऊर्ध्व भाग गौरवर्ण, चार भुजावाला, चतुर्मुख ब्रह्मरूप कहलाया। मध्य भाग नीलवर्ण, एकमुख और चतुर्भुज विष्णु कहलाया तथा अधोभाग स्फटिक वर्ण, पञ्चमुख और चतुर्भुज शिव कहलाया। इन तीनों शरीरोंके योगसे शिव त्रिपुर और उनकी शक्ति त्रिपुरा कही जाती है। चिन्तामणि गृहमें इनका निवास है। भैरवयामल तथा शक्तिलहरीमें इनके रूप तथा पूजा–विधानका विस्तृत वर्णन किया गया है। इनकी उपासनासे समस्त सिद्धियाँ सहज ही प्राप्त हो जाती हैं।

पुरुषसूक्तमें 'श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या' कहकर कमलाको परम पुरुष भगवान् विष्णुकी पत्नी बतलाया गया है। अश्व, रथ, हस्तिके साथ उनका सम्बन्ध राज्य–वैभवका सूचक है, पद्मस्थित होने तथा पद्मवर्णा होनेका भी संकेत श्रुतिमें है। भगवच्छक्ति कमलाके पाँच कार्य हैं– तिरोधाव, सृष्टि, स्थिति, संहार और अनुग्रह। भगवती कमला स्वयं कहती हैं कि नित्य निर्दोष परम नारायणके सब कार्य मैं स्वयं करती हूँ।

●भगवती लक्ष्मी ने अपने निवास के बारे में द्वापर युग में रूकमणि के पूछे गये प्रश्नों पर जो उत्तर दिये थे वो इस प्रकार हैं–

उन्होंने साक्षात होकर कहा था कि हे रुकमणि, मैं हमेशा ऐसे मानव में निवास करती हूँ जो सत्यनिष्ठ हो। जो व्यक्ति कर्मपरायण, क्रोधरहित, देवोपासनों में लिप्त, निर्भिक, कार्यकुशल और दूसरों की सेवा करता हो उनके ह्रदय में तथा उनके गृह में मेरा निवास है।

किन्तु जो मानव दुराचारी, पापी, अत्याचारी, क्रूर और गुरूजनों का अपमान करने वाला हो उनके अन्दर मैं निवास नहीं करती।

जो अपने लिए न जीकर विश्व के लिए जीता है वह मुझे।थोड़े में ही संतोष कर लेते हैं वहाँ मैं पूर्ण रूप से निवास करती हूँ। मुझे सामर्थ्य के अनुसार परोपकार अति प्रिय है।

"जो व्यक्ति धर्मपरायण है , जो माता पिता की सेवा करता है बुजुर्गों का सेवक, जितेन्द्रिय, क्षमाशील, ब्रह्मचर्य, वैष्णव, गौ, ब्राह्मणों का सेवक और जप तप ज्ञान में लीन रहता है उसके यहाँ मेरा पवित्र रूप में निवास है।"

"जो व्यक्ति आलसी, कलहप्रिय, मदिरासेवी , परायीनार का उपभोग करता हो , धैर्यहीन और अधिक नींद में सदा सोये रहने वाला होता है उसकी छाया से मैं सदैव दूर रहा करती हूँ।"

इनका बीज मंत्र ही श्रीं है।

इनको लाल गुलाल या कुंकुम मिश्रित अक्षत व पान का बीड़ा चढ़ाना चाहिए ।

इस प्रकार कालीसे लेकर कमलातक दशमहाविद्याएं सृष्टि और व्यष्टि, गति, स्थिति, विस्तार, भरण–पोषण, नियन्त्रण, जन्म–मरण, उन्नति –अवनति, बन्धन तथा मोक्षकी अवस्थाओं की प्रतीक हैं। ये अनेक होते हुए भी वस्तुतः परमात्माकी एक ही शक्ति हैं।

ये देवी दीपावली की रात में कम से कम 5 बार गोपाल सहस्र नाम सुनकर अथाह रूप से धन देती हैं। लक्ष्मी यंत्र पर इनकी पूजा महाफल देती है। लक्ष्मी स्तोत्र व ब्रह्म वैवर्त पुराण की लक्ष्मी विद्या को पढ़कर उसी शुभ दिन जो अपनी भांजी , माता , और बहन इन तीनों को वस्त्र तथा कुछ गायों को जल या चारा आदि से सेवा करता है वह कर्ज से मुक्त हो जाता है।

●●●●●●●●●●●●●●●●●

ऋद्धि–सिद्धि प्राप्ति हेतु शाबर मंत्र

ॐ क्रीं श्रीं चामुण्डा सिंह वाहिनी बीस हस्ती भगवती रत्न मंडित सोनल की माल, उत्तर पथ में आप बैठी हाथ सिद्ध वाचा, ऋद्धि–सिद्धि धन–धान्य देहि–देहि कुरु कुरु स्वाहा।

नोट – उपरोक्त मंत्र का एक माला नित्य ही जप करने से ऋद्धि–सिद्धि की प्राप्ति होती है।

व्यवसाय वृद्धि हेतु शाबर मंत्र

श्री शुक्ले महा शुक्ले कमल दल निवासे श्री महालक्ष्मी–नमो नमः ।॥ लक्ष्मी माई सबकी सवाई, आओ चेतो करो भलाई, ना करो तो सात समुद्रों की दुहाई, ऋद्धि–सिद्धि ना देवो तो नौ नाथ चौरासी सिद्धों की दुहाई। ।

जप हेतु मंत्र–

ॐ ऐं क्लीं सोः (मेष राशि हेतु धनदायक)

ॐ ऐं क्लीं श्रीं नमः (वृष राशि हेतु)

ॐ क्लीं ऐं सोः नमः (मिथुन राशि हेतु)

ॐ ऐं क्लीं श्रीं नमः(कर्क राशि हेतु)

ॐ ह्रीं श्रीं सोः नमः (सिंह राशि)

ॐ श्रीं ऐं सोः नमः(कन्या राशि)

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं नमः(तुला राशि हेतु)

ॐ ऐं क्लीं सोः नमः (वृश्चिक राशि के जातकों के लिए)

ॐ ह्रीं क्लीं सोः नमः(धनु)

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं नमः(मकर)

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं नमः(कुंभ राशि वालों के लिए)

ॐ ह्रीं क्लीं सोः नमः(मीन राशि हेतु)

नोट – ॐ का अधिकार सबको नहीं।

धन के अन्य उपाय –

पूर्व दिशा की अलमारी में महत्वपूर्ण कागजात रखें।

धन की अलमारी का मुख उत्तर की ओर हो

छत की ढलान पश्चिम की ओर न हो।

चप्पल जूतों का ढेर न लगायें उनको छोटी सी बाहर की अलमारी में रखें।

धुले वस्त्र अलग अलमारी में और एकाध बार के पहने अलग रखें।

रात को पहने वस्त्र सुबह सात से पहले ही बदल लें

एक चांदी का टुकड़ा अपने पर्स में रखें ।

अपनी तर्जनी में चांदी या अनामिका में सोने की अंगूठी पहनकर रखें।

सात मुखी रुद्राक्ष धन का आकर्षण करता है पर व्यवहार भी विनम्र रखें।

घर में आठ अंगुल तक की लक्ष्मी जी की मूर्ति की सेवा करें या श्रीयंत्र में इनको पूजें।

कनकधारा स्तोत्र के 1000 पाठ या सहस्र नाम के हजार पाठ बिल्ववृक्ष के नीचे करें।

चैत्र शुक्ल पंचमी को लक्ष्मी मंदिर में सफाई करवाकर विशेष पूजा करें।

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

यह महालक्ष्म्यष्टकम् भी धनदायक है।

श्री गणेशाय नमः ।।

इन्द्र उवाच–

ॐ नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।। १ ।।

नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयंकरी ।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।। २ ।।

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि ।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।। ३ ।।

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि ।
मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।। ४ ।।

आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्ति–महेश्वरि
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।। ५ ।।

स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्तिमहोदरे ।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।। ६ ।।

पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।। ७ ।।

श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते ।
जगत्स्थिते जगन्मार्त महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।। ८ ।।

फलश्रुति –

महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ।। ९ ।।

●एककाले पठेन्नित्यं महापापविनाशनम् ।
●●द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः ।। १० ।।

●●●त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम् ।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ।। ११ ।।

।। इति श्री इन्द्रकृतं महालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम्

एक स्तोत्र और सुनें–

इन्द्र उवाच ।।

ॐ नमः कमलवासिन्यै नारायण्यै नमो नमः ।।
कृष्णप्रियायै सारायै पद्मायै च नमो नमः ।।

अर्थ–

देवराज इन्द्र बोले– भगवती कमलवासिनी को नमस्कार है। देवी नारायणी को बार–बार नमस्कार है। संसार की सारभूता कृष्णप्रिया भगवती पद्मा को अनेकशः नमस्कार है।

पद्मपत्रेक्षणायै च पद्मास्यायै नमो नमः ।।
पद्मासनायै पद्मिन्यै वैष्णव्यै च नमो नमः ।।

अर्थ–

कमलरत्न के समान नेत्र वाली कमलमुखी भगवती महालक्ष्मी को नमस्कार है। पद्मासना, पद्मिनी एवं वैष्णवी नाम से प्रसिद्ध भगवती महालक्ष्मी को बार–बार नमस्कार है।

सर्वसम्पत्स्वरूपायै सर्वदात्र्यै नमो नमः ।।
सुखदायै मोक्षदायै सिद्धिदायै नमो नमः ।।

अर्थ–

सर्वसम्पत्स्वरूपिणी सर्वदात्री देवी को नमस्कार है। सुखदायिनी, मोक्षदायिनी और सिद्धिदायिनी देवी को बारंबार नमस्कार है।

हरिभक्तिप्रदात्र्यै च हर्षदात्र्यै नमो नमः ।।
कृष्णवक्षस्थितायै च कृष्णेशायै नमो नमः ।।

अर्थ–

भगवान श्रीहरि में भक्ति उत्पन्न करने वाली तथा हर्ष प्रदान करने में परम कुशल देवी को बार–बार नमस्कार है। भगवान श्रीकृष्ण के वक्षःस्थल पर विराजमान एवं उनकी हृदेश्वरी देवी को बारंबार प्रणाम है।

कृष्णशोभास्वरूपायै रत्नाढ्यायै नमो नमः ।।
सम्पत्त्यधिष्ठातृदेव्यै महादेव्यै नमो नमः ।।

अर्थ–

रत्नपद्मे! शोभने! तुम श्रीकृष्ण की शोभास्वरूपा हो, सम्पूर्ण सम्पत्ति की अधिष्ठात्री देवी एवं महादेवी होय तुम्हें मैं बार–बार प्रणाम करता हूँ।

सस्याधिष्ठातृदेव्यै च सस्यलक्ष्म्यै नमो नमः ।।
नमो बुद्धिस्वरूपायै बुद्धिदायै नमो नमः ।।

अर्थ–

शस्य की अधिष्ठात्री देवी एवं शस्यस्वरूपा हो, तुम्हें बारंबार नमस्कार है। बुद्धिस्वरूपा एवं बुद्धिप्रदा भगवती के लिये अनेकशः प्रणाम है।

वैकुण्ठे च महालक्ष्मीर्लक्ष्मीः क्षीरोदसागरे ।।
स्वर्गलक्ष्मीरिन्द्रगेहे राजलक्ष्मीर्नृपालये ।।

गृहलक्ष्मीश्च गृहिणां गेहे च गृहदेवता ।।
सुरभिस्सा गवां माता दक्षिणा यज्ञकामिनी ।।

अर्थ–

देवि! तुम वैकुण्ठ में महालक्ष्मी, क्षीरसमुद्र में लक्ष्मी, राजाओं के भवन में राजलक्ष्मी, इन्द्र के स्वर्ग में स्वर्गलक्ष्मी, गृहस्थों के घर में गृहलक्ष्मी, प्रत्येक घर में गृह देवता, गोमाता सुरभि और यज्ञ की पत्नी दक्षिणा के रूप में विराजमान रहती हो।

अदितिर्देवमाता त्वं कमला कमलालये ।।
स्वाहा त्वं च हविर्दाने कव्यदाने स्वधा स्मृता ।।

अर्थ–

तुम देवताओं की माता अदिति हो। कमलालयवासिनी कमला की तुम्हीं हो। हव्य प्रदान करने समय 'स्वाहा' और कव्य प्रदान करने के अवसर पर 'स्वधा' का जो उच्चारण होता है, वह तुम्हारा ही नाम है।

त्वं हि विष्णुस्वरूपा च सर्वाधारा वसुन्धरा ।।
शुद्धसत्त्वस्वरूपा त्वं नारायणपरायणा।।

अर्थ–

सबको धारण करने वाली विष्णुस्वरूपा पृथ्वी तुम्हीं हो। भगवान नारायण की उपासना में सदा तत्पर रहने वाली देवि! तुम शुद्ध सत्त्वस्वरूपा हो।

क्रोधहिंसावर्जिता च वरदा च शुभानना।।
परमार्थप्रदा त्वं च हरिदास्यप्रदा परा।।

अर्थ–

तुममें क्रोध और हिंसा के लिये किञ्चिन्मात्र भी स्थान नहीं है। तुम्हें वरदा, शारदा, शुभा, परमार्थदा एवं हरिहास्यप्रदा कहते हैं।

यया विना जगत्सर्वं भस्मीभूतमसारकम् ।।
जीवन्मृतं च विश्वं च शवतुल्यं यया विना ।।

अर्थ–

तुम्हारे बिना सारा जगत भस्मीभूत एवं निःसार है। जीते–जी ही मृतक है, शव के तुल्य है।

सर्वेषां च परा त्वं हि सर्वबान्धवरूपिणी।।
यया विना न संभाष्यो बान्धवैर्बान्धवः सदा।।

अर्थ–

तुम सम्पूर्ण प्राणियों की श्रेष्ठ माता हो। सबके बान्धवरूप में तुम्हारा ही पधारना हुआ है। तुम्हारे बिना भाई भी भाई–बन्धुओं के लिये बात करने योग्य भी नहीं रहता है।

त्वया हीनो बन्धुहीनस्त्वया युक्तः सबान्धवः।।
धर्मार्थकाममोक्षाणां त्वं च कारणरूपिणी।।

अर्थ–
जो तुमसे हीन है, वह बन्धुजनों से हीन है तथा जो तुमसे युक्त है, वह बन्धुजनों से भी युक्त है। तुम्हारी ही कृ पा से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त होते हैं।

स्तनन्धयानां त्वं माता शिशूनां शैशवे यथा।।
तथा त्वं सर्वदा माता सर्वेषां सर्वविश्वतः ।।

अर्थ–

जिस प्रकार बचपन में दुधमुँहे बच्चों के लिये माता है, वैसे ही तुम अखिल जगत की जननी होकर सबकी सभी अभिलाषाएँ पूर्ण किया करती हो।

त्यक्तस्तनो मातृहीनः स चेज्जीवति दैवतः ।।
त्वया हीनो जनः कोऽपि न जीवत्येव निश्चितम् ।।

अर्थ–
स्तनपायी बालक माता के न रहने पर भाग्यवश जी भी सकता हैय परंतु तुम्हारे बिना कोई भी नहीं जी सकता। यह बिलकुल निश्चित है।

सुप्रसन्नस्वरूपा त्वं मे प्रसन्ना भवाम्बिके ।।
वैरिग्रहस्तद्विषयं देहि मह्यं सनातनि ।।

अर्थ–

अम्बिके! सदा प्रसन्न रहना तुम्हारा स्वाभाविक गुण है। अतः मुझ पर प्रसन्न हो जाओ। सनातनी! मेरा राज्य शत्रुओं के हाथ में चला गया है, तुम्हारी कृपा से वह मुझे पुनः प्राप्त हो जाए।

वयं यावत्त्वया हीना बन्धुहीनाश्च भिक्षुकाः ।।
सर्वसंपद्विहीनाश्च तावदेव हरिप्रिये ।।

हरिप्रिये! मुझे जब तक तुम्हारा दर्शन नहीं मिला था, तभी तक मैं बन्धुहीन, भिक्षुक तथा सम्पूर्ण सम्पत्तियों से शून्य था।

राज्यं देहि श्रियं देहि बलं देहि सुरेश्वरि ।।
कीर्तिं देहि धनं देहि पुत्रान्मह्यं च देहि वै ।।

अर्थ–

सुरेश्वरि! अब तो मुझे राज्य दो, श्री दो, बल दो, कीर्ति दो, धन दो और यश भी प्रदान करो।

कामं देहि मतिं देहि भोगान्देहि हरिप्रिये ।।
ज्ञानं देहि च धर्मं च सर्वसौभाग्यमीप्सितम् ।।

अर्थ–

हरिप्रिये! मनोवांछित वस्तुएँ दो, बुद्धि दो, भोग दो, ज्ञान दो, धर्म दो तथा सम्पूर्ण अभिलाषित सौभाग्य दो।

सर्वाधिकारमेवं वै प्रभावं च प्रतापकम् ।।
जयं पराक्रमं युद्धे परमैश्वर्य्यमेव च।।

इसके सिवा मुझे प्रभाव, प्रताप, सम्पूर्ण अधिकार, युद्ध में विजय, पराक्रम तथा परम ऐश्वर्य प्राप्ति भी कराओ। इस प्रकार श्रीब्रह्मवैवर्तमहापुराण द्वितीय प्रकृतिखण्ड अध्याय ३६ अंतर्गत् इन्द्रकृत लक्ष्मीस्तोत्र पूर्ण हुआ।

श्रीलक्ष्मी कवच–

बिना कवच के कोई भी साधना सफल नहीं होती अतः जो भी इष्ट चुनों उनका एक कवच नित्य जपें। इस कवच के 1000 पाठ से अक्षय धन प्राप्त होता है पर यह बिल्ववृक्ष या महादेव के निकट जपें।

नारायण उवाच–

सर्वसम्पत्प्रदस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः। ऋषिश्छन्दश्च बृहती देवी पद्मालया स्वयम् ॥

धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः। पुण्यबीजं च महतां कवचं परमाद्भुतम्॥

ॐ ह्रीं कमलवासिन्यै स्वाहा मे पातु मस्तकम् । श्रीं मे पातु कपालं च लोचने श्रीं श्रियै नमः ॥

ॐ श्रीं श्रियै स्वाहेति च कर्णयुग्मं सदाऽवतु । ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै स्वाहा मे पातु नासिकाम् ॥

ॐ श्रीं पद्मालयायै च स्वाहा दन्तं सदाऽवतु। ॐ श्रीं कृष्णप्रियायै च दन्तरन्ध्रं सदाऽवतु ॥

ॐ श्रीं नारायणेशायै मम कण्ठं सदाऽवतु। ॐ श्रीं केशवकान्तायै मम स्कन्धं सदाऽवतु ॥

ॐ श्रीं पद्मनिवासिन्यै स्वाहा नाभिं सदाऽवतु। ॐ ह्रीं श्रीं संसारमात्रे मम वक्षः सदाऽवतु ॥

ॐ श्रीं श्रीं कृष्णकान्तायै स्वाहा पृष्ठं सदाऽवतु । ॐ ह्रीं श्रीं श्रियै स्वाहा मम हस्तौ सदाऽवतु ॥

ॐ श्रीं निवासकान्तायै मम पादौ सदाऽवतु। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रियै स्वाहा सर्वाङ्गं मे सदाऽवतु ॥

प्राच्यां पातु महालक्ष्मीराग्नेय्यां कमलालया। पद्मा मां दक्षिणे पातु नैर्ऋत्यां श्रीहरिप्रिया।।

पद्मालया पश्चिमे मां वायव्यां पातु श्रीः स्वयम् । उत्तरे कमला पातु ऐशान्यां सिन्धुकन्यका॥

नारायणेशी पातूर्ध्वमधो विष्णुप्रियाऽवतु । सततं सर्वतः पातु विष्णुप्राणाधिका मम॥)

गणपति खंड अध्याय 38

48. श्री रक्तदंतिका देवी

खड्गं पात्रं च मूसलं लाङ्गलं च बिभर्ति सा।
आख्याता रक्तचामुण्डा देवी योगेश्वरीति च ।।

अनया व्याप्तमखिलं जगत्–स्थावर–जङ्गमम् ।
इमां यः पूजयेद्–भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम् ।।

(मूर्ति रहस्यम)

देवी महिषासुर मर्दिनी मणिद्वीप निवासिनी (ह्रीं स्वरूपा महालक्ष्मी) ही तत्वतः शुम्भ निशुम्भ घातिनी कौशिकी अर्थात महासरस्वती हैं। इस रूप का बीज ऐं है। वे ही मधु कैटभ की बुद्धि को वश में करके विष्णु द्वारा इनके नाश का कारण बनने वाली महामाया महाकाली हैं । तीनों महादेवियाँ ही समय समय पर सभी प्रकार की लीलाएं करती हैं ये ही संपूर्ण भयों और सभी संकटों के नाश के लिए व दानवों के नाश के लिए रक्तदंतिका तक बन जाती हैं । बहुत पहले की बात है एक समय वैप्रचित्त नाम वाले बहुत सारे असुरों का समूह था सबका नाम ही यही वैप्रचित्त था। तब इनके नाश के लिए देवताओं तथा मनुष्यों ने देवी महिषासुर मर्दिनी को पुकारा तब देवी ने चार भुजा धारण की और तत्काल प्रकट हुई। जब तक शिशु रोते नहीं तब तक साधारण माँ भी दूध नहीं पिलाती क्योंकि उनके पास अन्य कार्य भी होते हैं इसी प्रकार देवी के अधीन एक नहीं अनगिनत ब्रह्माण्ड हैं तो सोचिए कि यदि आपको साक्षात् उनको ही पुकारना है न कि अंशभूतात्मक देवियों को तो अधिक तपस्या तो करनी ही होगी। इन देवी पराम्बिका ने इस अवतार में चार भुजाओं में मूसल, हल तथा खड्ग के साथ एक मनोहर पानपात्र भी रखा। वे दानव बहुत ही भयंकर अपराध कर रहे थे प्रजा और प्रजा की स्त्रियों के साथ भी उनका व्यवहार वासनात्मक था वे अनेक नारियों से बलात् व्यवहार करके उनकी इज्जत का भक्षण करके राक्षसों और खूनी पशुओं जैसे बनकर उनका माँस नोच–खसोट कर खा जाते थे तब उनकी बद्दुआओं ने तथा उनके पतियों व देवों ने देवी को अनेक दिनों तक अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक पुकारा । तब देवी प्रकट हुई और उन्होनें इन नारियों की दुर्दशा और दयनीय स्थिति देखी तो पल भर में ही इन दानवों का भक्षण कर डाला अनेको को खड्ग से मार भगाया और सिर धड़ से अलग कर दिया तथा मूसल की चोट से अनेकों का कचूमर निकल गया व हल (जो बलभद्र जी के पास भी आयुध है) से अनेकों को धरती में धंसा दिया। और अनेकों को अपने मधुर व मनोहर दन्तावली से चबा डाला जिससे इनके चमकीले दांत अनार के पुष्पों की तरह लाल रंग के (रक्त वर्णी) हो गए जिससे इनकी संज्ञा रक्तदंतिका हो गई । वे देवी लाल रंग के ही वस्त्र धारण किये हुए थी। और देह का रंग भी लाल ही था और छवि ऐसी की बार बार दर्शन का मन हो वे अत्यधिक सौन्दर्य से परिपूर्ण थी उनके रूप की तुलना कोई भी नहीं कर सकता था। उनके संपूर्ण आभूषण श्रृंगार की अनुपम सामग्री कुण्डल, गले का हार, करधनी, अंगूठी, पायल बिन्दी आदि भी लाल ही थे। और केश भी मनोहर लाल रंग के घनीभूत संग्रह थे।

ये देवी वात्सल्य का भंडार और करुणा की देवी है । जो जितेन्द्रिय भक्त हैं और जो शम दम युक्त हैं जिनकी वासना का क्षय पूर्णतः हो गया है ये उन वनवासी भक्तों को अपने स्तनों से अमृत के समान दुग्ध पिलाती हैं। इनके स्तनों का दूध जिस भी जितेन्द्रिय भक्त ने एक बार भी पान किया वह भक्त पुनर्जन्म को नहीं प्राप्त होता।

और देवी भद्रकाली भी अपने बच्चों को स्तन पान कराती हैं। हमने एक बार देवी भद्रकाली के संदर्भ में श्वेत दुग्धधारा और महावर्णी विषयक यथार्थ संभाषण किया भी था। ये भगवती महिषासुर मर्दिनी ही नन्दा (नन्दबाबा की पत्नी यशोदा से उत्पन्न) बनी । विंध्याचल पर्वत पर आज भी ये नंदा देवी ही रहती हैं जो भारत के भक्तों व योगियों की रक्षा में संलग्न रहती हैं।

ये ईश्वरी ही भीमा व दुर्गमासुर के नाश के लिए दुर्गा बनी अर्थात दुर्गा कहलाई।

ये दुर्गमासुर की कथा बहुत बाद की है इसी कारण सप्तशती में दुर्गमासुर के वध की कथा नहीं मिलेगी जो श्रीमद्देवीभागवत महापुराण में अवश्य है।

देवी रक्त दंतिका नामक ये देवी भुवनेश्वरी शत्रुओं के नाश के लिए भयानक रूप में प्रकट होती हैं पर भक्तों के प्रेम के कारण अत्यधिक सौम्य रूप में ही दर्शन देती हैं।

वैप्रचित्तों (दानवों) के नाश के लिए इन्होनें विकराल रूप धारण किया था। बड़ी ही करुणामयी व रक्षक स्वरूप है माँ की मूर्ति, ये भक्तों का दुःख नहीं देख सकतीं। पुनः सुनें –

माँ अपनी चार भुजाओं में

- खड्ग,
- पानपात्र,
- मूसल और
- हल धारण करती हैं।

1.देवी रक्तदन्तिका का आकार वसुधा की भांति अत्यधिक विशाल लाल रंग वाला है,

2.दंतकांति भी मनोहर लाल है ।

3. उनके दोनों स्तन सुमेरु पर्वत के समान हैं, वे लंबे, चौड़े, अत्यंत स्थूल एवं बहुत ही मनोहर हैं

(दीर्घा लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ) कठोर होते हुये भी अत्यंत कमनीय हैं तथा दुग्ध के सागर हैं, संपूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाले ये दोनों स्तन देवी अपने बालभावी भक्तों को वात्सल्य स्वरूपा होकर(दुग्धामृत का) पान कराती हैं।

(भक्तान् सम्पाययेद्देवी सर्वकामदुधौ स्तनौ)

या रक्तदन्तिका नाम देवी प्रोक्ता मयानघ।
तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु सर्वभयापहम्।।

रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वांगभूषणा।
रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशातिभीषणा।।

रक्ततीक्ष्णनखा रक्तदशना रक्तदन्तिका।
पतिं नारीवानुरक्ता देवी भक्तं भजेज्जनम्।।

वसुधेव विशाला सा सुमेरुयुगल स्तनी।
दीर्घो लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ।।

कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्दपयोनिधी।
भक्तान् सम्पाययेद्देवी सर्वकामदुघौ स्तनौ।।

माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ
माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ
माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ

ॐ रं रक्तदन्तिकायै नमः

कुछ शाक्तभक्त जो लम्बे समय से वनों और पहाड़ो के आसपास या गुफाओं में एकांत रूप से विचरण करते हुये रहते हैं जिनकी भूख प्यास ही प्रबल शत्रु थी उन भक्तों को ये देवी नित्य दोनों समय (भूख काल में) अपना स्तनपान कराती हैं जिससे वो भक्त बड़े ही सुख पूर्वक स्वतंत्र और बंधन मुक्त होकर संसार रूपी भयंकर संघर्ष और चिंताओं से मुक्त रहते हैं व इन माँ की कृपा से उनको इसी जगत में शाश्वत सुख प्राप्त होता है।

हे भक्तों !

यह अक्षयरुद्र अंशभूतशिव परम सत्य कहता है कि यह संसार मात्र पापियों के लिए ही दुखालय है या जिनके पूर्व जन्म के भयंकर पाप हैं उनको ही यह संसार दुखों का दलदल है पर जो देवी रक्त दंतिका या इनकी प्रधान मूर्ति महिषासुर मर्दिनी या कौशिकी अथवा महामाया का भजन करता है वह कुछ ही महीनों में देवी की परम कृपा से देवी का लाड़ला पुत्र बन जाता है। और फिर कहने की आवश्यकता नहीं कि देवी उनका मंगल कैसे कैसे चमत्कारों से करती हैं। ये ही यथार्थ में मंगल को सुपूजित मंगलचण्डिका ही हैं पर मूर्ति भेद व आयुध भेद से ही रक्तदंतिका हैं। देवी पराशक्ति के ये छः रूप आज भी महान भक्तों द्वारा सेवनीय हैं।

1. रक्तदंतिका (जिनका दर्शन आप इस अध्याय में कर रहे हो)
2. नन्दा (नन्दबाबा की सुता व आनंद देने के कारण)
3. दुर्गा (दुर्गमासुर के नाश से नाम हुआ)
4. भीमा (भीम रूप धारण)
5.भ्रामरी (छः छः पैरो वाले भ्रामरों का रूप रखकर अरुण नामक दैत्य का वध करने से देवी को भ्रामरी कहा गया)
6. शाकम्भरी (शाक पात फल फूल से तृप्त कराने वाली)
7. मंगल चण्डिका
8. पार्वती (सभी शक्तिपीठ सहित)
9. भद्रकाली
10. तारा
11. छिन्नमस्ता
12. त्रिपुरभैरवी (ये देवी ललिता पराम्बा की रथवाहिनी हैं अर्थात महा त्रिपुरसुन्दरी के रथ का संचालन लीलावश करती हैं पर साक्षात् वे ही पराम्बा इस रूप में हैं ।

ब्रह्माण्ड पुराण में वर्णन है कि इस विश्व की समस्त योगिनियाँ इनके ही अधीन और इनकी ही सेविकाएं हैं। अर्थात योगिनायों की अधिष्ठात्री ये जगदम्बिका त्रिपुरभैरवी ही हैं)
13. धूमावती
14. वगलामुखी (परमात्मा की संहारक शक्ति) जिनको पीताम्बरा देवी कहा जाता है। घोर शत्रुओं के नाश के लिए देवी का एक अमोघ रूप यह भी है इस कारण इनको ब्रह्मास्त्र भी कहा जाता है।

कुण्डिका तंत्र में इनकी सेवा की विशेष विधियाँ हैं।

मुण्डमाला तंत्र में जिसका वर्णन हमने एक बार किया था दुर्गा माहात्म्य संदर्भ में उसी में यह कहा है कि इनकी साधना व सिद्धि के लिए नक्षत्र विचार की आवश्यकता है ही नहीं ये देवी हर समय जागृत और रक्षक रहती हैं। और सभी नक्षत्र भी इनकी साधना के समय तत्काल अनुकूल हो जाते हैं। जिस प्रकार नमः शिवाय नामक पंचाक्षरी के अनुष्ठान के लिए लग्न, मुहूर्त आदि की आवश्यकता नहीं उसी तरह ये देवी भी सदा ही सिद्ध होती हैं। बस इनकी साधना में अखंड ब्रह्मचर्य अति से भी अति अनिवार्य है।

जो पुरुष परायी नारी को अपवित्र भाव से देखता है और इनकी साधना करता है वह पुरुष इनकी कृपा कभी भी नहीं पा सकता। भगवान ब्रह्मा भी इनके भक्त हैं। सनत्कुमार और सनक आदि भी ब्रह्मा जी की आज्ञा से इनका सुमिरन करते हैं । सांख्यायन जी ने वगला तंत्र रचा जो 36 पटलों से युक्त है । सुनें देवी को प्रसन्न करने के लिए पटल का ज्ञान होना ही चाहिए। देवी यमुना की सेवा हमने भी वृन्दावन जाने के उद्देश्य से 59 दिन की थी पर किसी कारणवश बंद करना पड़ी और 59 दिन तक ही हम वृन्दावन रह पाये। जो यही संकेत देता है कि यदि साधना का संकल्प लिया जाये तो ही वह अनंत फल देती है पर हमने संकल्प न लेकर 59 दिन ही देवी यमुना को वृन्दावन में निवास के लिए पुकारा था। अब विस्तार तो देवी यमुना ही जानें। पर हर प्रकार की साधना के फल के लिए पटल (पूजा की पद्यति क्रमबद्ध) अनिवार्य है।

15. मातंगी– मतंग मुनि ने भगवती त्रिपुरा की तपस्या की थी तब देवी त्रिपुरा के नेत्र से एक श्यामल विग्रह प्रकट हुआ वे ही ये देवी हैं। सप्तशती के सातवें अध्याय में इनका ध्यान बताया है। ये श्याम वर्ण की हैं।
16. कात्यायनी – ये भी देवी भुवनेश्वरी ही हैं जो कात्यायन ऋषि की पुत्री बनी ।
17. कूष्माण्डा
18. चंद्र घण्टा
19. सिद्धिदात्री (ये साक्षात् पराम्बा का परिपूर्णतम रूप है) महागौरी तो साक्षात् पार्वती ही हैं जो पंचक प्रकृति में से एक हैं।
20. कमला (रमा जो क्षीरसागर के विष्णु जी की पत्नी बनी सागर मंथन के समय) भी पंचक प्रकृति का एक रूप है जिनको महाविद्या में सम्मिलित किया गया है। देवी पार्वती और कमला की शक्तियों में भेद नहीं।

वैष्णवी शक्ति भी कमला से अलग नहीं

21. सावित्री
22. सरस्वती
23. षष्ठी
24. मनसा 25. स्वधा
26 स्वाहा
27. दक्षिणा

28 तुलजाभवानी
29 पंचावरणी पूजा में स्थित सभी देवियां
30. वागीश्वरी 31. घण्टाकर्णी
32. चक्रहृदया
33 त्रैलोक्य मोहिनी
34. लेखिनी
35. व्योमचारिणी
36. माया
37. संकर्षणी
38. अपराजिता
39. मधुदंष्ट्री
40. भवमालिनी
41. अजिता 42. जया
43. शुष्करेवती
44. कामधेनु
45.ज्वालामुखी
46. नव शक्तियाँ
47. मातृकायें / मातृगण
48. इस ब्रह्माण्ड की सभी लोकमाताएं,
49.अरुन्धती देवी
50. तथा सभी अन्य देव रूपों की पत्नियाँ (रति आदि)
51. श्रृद्धा, धृति, ख्याति और अनुसूया आदि प्रसूति की सभी बेटियाँ
52. गति क्रिया, हविर्भू और कला आदि देवहूति की नौ कन्याएं
53. नर नारायण की माता मूर्ति
53. संज्ञा छाया आदि महामूर्ति सूर्य देव की प्रिया
54. ब्रह्मवादिनी स्त्रियाँ तथा इन सभी महान देवियों पर प्रेम की वर्षा करने वाली मणिद्वीप की समस्त शक्तियाँ और भी सब देवियाँ तथा और भी प्रधान प्रधान देवियाँ जिनका नाम समयाभाव के कारण यह अक्षयरुद्र नहीं ले पाया वे सब इस विश्व का मंगल करें समस्त तीर्थों का कल्याण करें, सभी ब्रह्मनिष्ठों, भक्तों, सभी धर्मात्माओं और जितेन्द्रिय ब्राह्मणों का हित साधन करें इस अक्षयरुद्र की दृष्टि जहाँ भी जाये जिस प्राणी पर भी जाये और जिसके विषय में भी इसकी बुद्धि जाए उस उसका मंगल हो।

तथा उपर्युक्त नामावली का स्मरण करने वाले भक्तों की मनोकामना पूर्ण करके उनका अभ्युदय करें। इन सब देवियों को नमस्कार बार बार नमस्कार तथा

एक प्रधान वृन्दावनेश्वरी श्री राधा जो इस अक्षयरुद्र के हृदय में निवास करती हैं उनको बार बार नमन ।ये सब की सब देवियों मूल चार महादेवियों (ह्रीं, ऐं , क्लीं की तीन महादेवियों तथा एक षोडशी इन चारों) की मूर्तियाँ ही हैं। अतः पुनः यह अंशभूतशिव इन चार देवियों को और एक प्रधानिक रहस्य की सर्वोच्च सत्ता मूर्ति को नमन करता

49. श्रीसरस्वती जी

देवी शारदा ज्ञान व कला की अधिष्ठात्री हैं, इनके बिना न तो लोक की स्थिति संभव है न ही परलोक की अतः इनका स्मरण सदा ही करना चाहिए। इनके अनेक मंत्र हैं जिनमें इनका बीज ऐं ही संपूर्ण मंत्रों का सारा फल देने में समर्थ हैं। इनके स्तोत्र को बिना दीक्षित हुए भी जपने से ये देवी ज्ञान का खजाना खोल देती है और ज्ञान आने पर समृद्धि व सुख भी सहज ही आता है। देवी शारदा अर्थात् सरस्वती के कवच का माहात्म्य तो स्तोत्र से भी लाख गुना अधिक व अद्भुत है। एक कवच की महिमा सुनें– इसे सर्वैश्वर्य प्रद नामक परम अद्भुत कवच कहा जाता है । यह समस्त मन्त्रसमुदायका मूर्तिमान् स्वरूप है। धर्मात्मा पुरुष ब्राह्मणको मेरुके समान सुवर्णका पहाड़ दान करके जो फल पाता है, उससे कहीं अधिक फल इस कवचसे मिलता है। जो मनुष्य विधिवत् गुरुकी अर्चना करके इस कवचको गलेमें अथवा दाहिनी भुजापर धारण करता है, वह प्रत्येक जन्ममें श्रीसम्पन्न होता है और उसके घरमें लक्ष्मी सौ पीढ़ियोंतक निश्चलरूपसे निवास करती हैं। वह देवेन्द्रों तथा राक्षसराजोंद्वारा निश्चय ही अवध्य हो जाता है। जिसके गलेमें यह कवच विद्यमान रहता है, उस बुद्धिमान्ने सभी प्रकारके पुण्य कर लिये, सम्पूर्ण यज्ञोंमें दीक्षा ग्रहण कर ली और समस्त तीर्थोंमें स्नान कर लिया। लोभ, मोह और भयसे भी इसे जिस किसीको नहीं देना चाहियेय अपितु शरणागत एवं गुरुभक्त शिष्यके सामने ही प्रकट करना चाहिये। इस कवचका ज्ञान प्राप्त किये बिना जो जगज्जननी लक्ष्मीका जप करता है, उसके लिये करोड़ोंकी संख्यामें जप करनेपर भी मन्त्र सिद्धिदायक नहीं होता।

श्रीमहाकृष्ण द्वारा वर्णित (जिसे सर्वप्रथम ब्रह्माजी ने प्राप्त किया था) विश्व–जय नामक सरस्वती कवच के नित्य जाप से एवं **ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सरस्वत्यै बुधजनन्यै स्वाहा** नामक शारदा मंत्र से कोई भी प्राणी त्रिलोक में बुद्धि में प्रखरता लाकर दिव्य प्रज्ञा जगाकर कवियों का सम्राट, परम चतुर भाषण में प्रवीण एवं त्रिलोक विजयी हो सकता है, परंतु इस कवच की सिद्धि के लिये 5 लाख जप नियम पूर्वक अनिवार्य है। वास्तव में त्याग के बिना व्यक्ति का जीवन नीरस ही होता है। कवच की सिद्धि से माँ विशेष अनुग्रह भी करती है, जिससे वह भक्त सर्वज्ञ हो जाता है।

श्री मद् देवीभागवत महापुराण **के 9वें स्कंध** तथा ब्रह्म वैवर्त पुराण में वर्णित विश्वजय कवच (सरस्वती जी का प्रधान कवच) के पाठ से विश्व पर महाविजय (बुद्धि, ज्ञान, एवं विवेक के क्षेत्र में) सहज ही हो जाती है। यह कवच साक्षात् महाकृष्ण प्रभु ने ब्रह्माजी को एवं ब्रह्माजी ने भृगु की सेवा, प्रार्थना से खुश होकर कहा था इस कवच को धारण करने से ही शुक्राचार्य दैत्यों के गुरू बन गए। बृहस्पति जी ने भी मंत्र जाप के साथ यह स्तोत्र को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाया।

इसी कवच के प्रभाव से ही कणाद, गौतम, कण्व, पाणिनि, शाकटायन, कात्यायन आदि ग्रंथों की रचना करने में सफल हुए। वेदव्यासजी ने इसी कवच के प्रभाव से वेदों का विभाग और पुराणों का प्रणयन किया। इसको हरेक से कहने के योग्य नहीं। पाँच लाख जाप से यह (27 श्लोकी कवच) सिद्ध होता है। इस कवच से मानव कवियों का सम्राट, त्रैलोक्य विजयी, बृहस्पति के समान, परम चतुर होकर सर्वज्ञ हो जाता है।

कवचस्यास्य विप्रेन्द्र ऋषिरेष प्रजापतिः।
स्वयं च बृहतीच्छन्दो देवता शारदाम्बिका॥१

सर्वतत्त्वपरिज्ञाने सर्वार्थसाधनेषु च।
कवितासु च सर्वासु विनियोगः प्रकीर्तितः॥२

श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा शिरो मे पातु सर्वतः।
श्रीं वाग्देवतायै स्वाहा भालं मे सर्वदावतु॥३

ॐ ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहेति श्रोत्रे पातु निरन्तरम्।
ॐ श्रीं ह्रीं भगवत्यै स्वाहा नेत्रयुग्मं सदावतु॥४

ऐं ह्रीं वाग्वादिन्यै स्वाहा नासां मे सर्वतोऽवतु।
ह्रीं विद्याधिष्ठातृदेव्यै स्वाहा चोष्ठं सदावतु॥५

ॐ श्रीं ह्रीं ब्राह्मयै स्वाहेति दन्तपङ्क्ति सदावतु।
ऐमित्येकाक्षरो मन्त्रो मम कण्ठं सदावतु॥६

ॐ श्रीं ह्रीं पातु मे ग्रीवां स्कन्धौ मे श्रीं सदावतु।
ॐ ह्रीं विद्याधिष्ठातृदेव्यै स्वाहा वक्षः सदावतु॥७

ॐ ह्रीं विद्यास्वरुपायै स्वाहा मे पातु नाभिकाम्।
ॐ ह्रीं क्लीं वाण्यै स्वाहेति मम हस्तौ सदावतु॥८

ॐ सर्ववर्णात्मिकायै (स्वाहा) पादयुग्मं सदावतु।
ॐ वागधिष्ठातृदेव्यै सर्व सदावतु॥६

ॐ सर्वकण्ठवासिन्यै स्वाहा प्राच्यां सदावतु।
ॐ ह्रीं जिह्वाग्रवासिन्यै स्वाहाग्निदिशि रक्षतु॥१०

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सरस्वत्यै बुधजनन्यै स्वाहा।
सततं मन्त्रराजोऽयं दक्षिणे मां सदावतु॥११
ऐं ह्रीं श्रीं त्र्यक्षरो मन्त्रो नैर्ऋत्यां सर्वदावतु।
ॐ ऐं जिह्वाग्रवासिन्यै स्वाहा मां वारुणेऽवतु॥१२

ॐ सर्वाम्बिकायै स्वाहा वायव्ये मां सदावतु।
ॐ ऐं श्रीं क्लीं गद्यपद्यवासिन्यै स्वाहा मामुत्तरेऽवतु॥१३

ॐ ऐं सर्वशास्त्रवासिन्यै स्वाहैशान्यां सदावतु।
ॐ ह्रीं सर्वपूजितायै स्वाहा चोर्ध्वं सदावतु॥१४

ॐ ह्रीं पुस्तकवासिन्यै स्वाहाधो मां सदावतु।
ॐ ग्रन्थबीजरुपायै स्वाहा मां सर्वतोऽवतु॥१५

●●●●●ध्यान व मंत्रादि ●●●●●●●

हे विप्र ! मैंने आपको ब्रह्ममन्त्रसमूहके विग्रहरूप इस सरस्वतीकवचको बतला दिया। 'विश्वजय' नामक यह कवच साक्षात् ब्रह्मस्वरूप है।

पूर्व कालमें मैंने गन्धमादनपर्वतपर धर्मदेवके मुखसे यह कवच सुना था। आपके स्नेहके कारण मैंने आपको इसे बतलाया है।

● किसी अन्य व्यक्तिको इसे नहीं बताना चाहिये ॥

●विद्वान् पुरुषको चाहिये कि नानाविध वस्त्र, अलंकार तथा चन्दनसे भलीभाँति गुरुकी पूजा करके दण्डकी भाँति जमीनपर गिरकर प्रणाम करे और इसके बाद इस कवचको धारण करे।

●पाँच लाख जप कर लेनेसे यह कवच सिद्ध हो जाता है।

● इस कवचको यदि साधक सिद्ध कर ले तो वह बृहस्पतिके समान हो जाता है।

●इस कवचके प्रसादसे मनुष्य महान् वक्ता, कवियोंका सम्राट्, लेखक, परम विज्ञान से युक्त तथा तीनों लोकोंपर विजय प्राप्त करनेवाला हो जाता है और वह सब कुछ जीत लेनेमें समर्थ हो जाता है।

●हे मुने ! मैंने कण्वशाखाके अन्तर्गत वर्णित यह सरस्वती–कवच आपको बतला दिया। अब आप सरस्वतीके मंत्र , ध्यान और स्तोत्र को सुनें।

हे मुने ! सुगन्धित श्वेत पुष्प, सुगन्धित श्वेत चन्दन, नवीन श्वेत वस्त्र तथा सुन्दर शंख, श्वेत पुष्पोंकी माला, श्वेत वर्णका हार तथा आभूषण भगवती सरस्वतीको अर्पण करने चाहिये ।

भगवती सरस्वती का ध्यान–

हे महाभाग ! भगवती सरस्वती का जैसा ध्यान वेदमें वर्णित है; उस प्रशंसनीय, सुननेमें सुन्दर तथा भ्रमका नाश करनेवाले ध्यानके विषयमें सुनिए–

'मैं भक्तिपूर्वक शुक्ल वर्णवाली, मुसकानयुक्त, अत्यन्त मनोहर, करोड़ों चन्द्रमाकी प्रभाको तिरस्कृत करनेवाले परिपुष्ट तथा श्रीसम्पन्नविग्रहवाली, अग्निसदृश विशुद्ध वस्त्र धारण करनेवाली, हाथमें वीणा तथा पुस्तक धारण करनेवाली, उत्कृष्ट कोटिके रत्नोंसे निर्मित नवीन आभूषणोंसे विभूषित, ब्रह्मा–विष्णु– शिव आदि देवगणोंसे सम्यक् पूजित तथा मुनीश्वरों, मनुगण और मनुष्योंसे वन्दित भगवती सरस्वतीकी वन्दना करता हूँ' – इस प्रकार ध्यान करके विद्वान् पुरुष समस्त पूजन–सामग्री मूलमन्त्रसे विधिपूर्वक सरस्वतीको अर्पण करके स्तुति करे और कवचको धारण करके दण्डकी भाँति भूमिपर गिरकर सरस्वतीको प्रणाम करे।

हे मुने ! ये सरस्वती जिन लोगोंकी इष्ट देवी हैं, उनके लिये तो यह नित्यक्रिया है। अन्य सभी लोगोंको विद्यारम्भके अवसरपर, वर्षके अन्तमें तथा पंचमी तिथिको यह आराधना अवश्य करनी चाहिये।

वैदिक अष्टाक्षर मूल मन्त्र परम श्रेष्ठ तथा सबके लिये उपयोगी है। अथवा जिन्हें जिसने जिस मन्त्रका उपदेश दिया है, उनके लिये वही मूल मन्त्र है। सरस्वती–इस शब्दके अन्तमें चतुर्थी तथा अन्तमें 'स्वाहा' लगाकर सबके आदिमें लक्ष्मीबीज और मायाबीज लगाकर बना हुआ यह मन्त्र 'श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा' कल्पवृक्षके समान है ।

प्राचीन कालमें कृपानिधि भगवान् नारायणने पुण्यक्षेत्र भारतवर्षमें गंगाके तटपर वाल्मीकिको यह मन्त्र प्रदान किया था। इसी प्रकार भृगुमुनिने पुष्करक्षेत्रमें पर्यापर्तके अवसरपर यह मन्त्र शुक्राचार्यको दिया। तथा परंपरा से चले आ रहे मंत्र को परम गुरु से अवश्य ही प्राप्त करके अपना जीवन सफल करना चाहिए। विद्यालय और महाविद्यालय के छात्रों को भी यह अनिवार्य है ताकि उनका अभ्युदय हो सके

याज्ञवल्क्य जी ने माँ शारदा की आराधना (सूर्यदेव की आज्ञा से कल्याणार्थ, शाप से मुक्ति का उपाय) करके सर्वस्व पाया। उनके द्वारा की हुई श्रीमद् देवीभागवत में वर्णित स्तुति याज्ञवल्क्य स्तोत्र नाम से प्रसिद्ध है। इस स्तोत्र के पाठ से भी कवीन्द्र पद प्राप्त होता है। भाषण कला में प्रवीणता प्राप्त होती है। कोई भयंकर मूर्ख ही क्यों न हो? इस याज्ञवल्क्य स्तोत्र को यदि सरस्वती जयंती से आरंभ कर नित्य 1 वर्ष तक नियमपूर्वक दोनों समय

पाठ/श्रवण करता है तो वह निश्चय ही पण्डित, बुद्धिमान एवं महान हो जाता है। यह स्तोत्र भी विश्वजय कवच की भांति 27 श्लोक में है जो देवीभागवत में वर्णित है। कृपया वहीं से स्वाध्याय करें। '**श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा**' यह महामंत्र भी ज्ञान प्राप्ति का अमोघ महामंत्र है जो कि हरि अवतार साक्षात् नारायण ऋषि ने वाल्मिकी जी को तथा वाल्मिकी जी से प्रार्थना करने पर वेदव्यास जी ने यह मंत्र प्राप्त किया। देवगुरू बृहस्पति जी ने अपनी प्रभुता इसी महामंत्र से मारीच की कृपा से प्राप्त की। सूर्यग्रहण के समय परशुराम जी ने शुक्र को यह रहस्य बताकर अमर किया, ज्ञाननिष्ठ किया।

चार लाख जप से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। इस मंत्र को सिद्ध करने वाला देवगुरू के समान साक्षात् बृहस्पति ही हो जाता है। वर्तमान के समाचार पत्रों में इस मंत्र को एकाग्रता का दाता भी कहा जाता है।

जो महान मूर्ख होते हुए भी 1 महीने तक प्रतिदिन सरस्वती नदी में स्नान करता है तथा माँ के मंत्र का जाप करता है वह परम बुद्धिमान हो जाता है। एक और स्तोत्र सुनें जो हर माह की त्रयोदशी को 21 बार जपने से महान बुद्धिमान बना डालता है।

श्रीसिद्ध सरस्वती स्तोत्र

विनियोगः

ऊँ अस्य श्रीसिद्धसरस्वतीस्तोत्रमन्त्रस्य मार्कण्डेय ऋषिः, स्रग्धरा अनुष्टुप् छन्दः, मम वाग्विलाससिद्ध्यर्थं पाठे विनियोगः।

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।।1।।

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।।2।।

ह्रीं ह्रीं हृद्यैकबीजे शशिरुचिकमले कल्पविस्पष्टशोभे
भव्ये भव्यानुकूले कुमतिवनदवे विश्ववन्द्याङ्घ्रिपद्मे।
पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणतजनमनोमोदसम्पादयित्रि
प्रोत्फुल्लज्ञानकूटे हरिनिजदयिते देवि संसारसारे।।3।।

ऐं ऐं ऐं दृष्टमन्त्रे कमलभवमुखाम्भोजभूते स्वरूपे
रूपारूपप्रकाशे सकलगुणमये निर्गुणे निर्विकारे।
न स्थूले नैव सूक्ष्मेऽप्यविदितविभवे नापि विज्ञानतत्त्वे
विश्वे विश्वान्तरात्मे सुरवरनमिते निष्कले नित्यशुद्धे।।4।।

ह्रीं ह्रीं ह्रीं जाप्यतुष्टे हिमरुचिमुकुटे वल्लकीव्यग्रहस्ते
मातर्मातर्नमस्ते दह दह जडतां देहि बुद्धिं प्रशस्ताम्।
विद्ये वेदान्तवेद्ये परिणतपठिते मोक्षदे मुक्तिमार्गे
मार्गातीतस्वरूपे भव मम वरदा शारदे शुभ्रहारे।।5।।

धीं धीं धीं धारणाख्ये धृतिमतिनतिभिर्नामभिः कीर्तनीये
नित्येऽनित्ये निमित्ते मुनिगणनमिते नूतने वै पुराणे।...
पुण्ये पुण्यप्रवाहे हरिहरनमिते नित्यशुद्धे सुवर्णे
मातर्मात्रार्धतत्त्वे मतिमतिमतिदे माधवप्रीतिमोदे।।6।।

ह्रूं ह्रूं ह्रूं स्वस्वरूपे दह दह दुरितं पुस्तकव्यग्रहस्ते
संतुष्टाकारचित्ते स्मितमुखि सुभगे जृम्भिणि स्तम्भविद्ये।
मोहे मुग्धप्रवाहे कुरु मम विमतिध्वान्तविध्वंसमीडे
गीर्गौर्वाग्भारति त्वं कविवररसनासिद्धिदे सिद्धिसाध्ये।।7।।

स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे मम खलु रसनां नो कदाचित्त्यजेथा
मा मे बुद्धिर्विरुद्धा भवतु न च मनो देवि मे यातु पापम्।
मा मे दुःखं कदाचित् क्वचिदपि विषयेऽप्यस्तु मे नाकुलत्वं
शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु मम धीर्माऽस्तु कुण्ठा कदापि।।8।।

जगज्जननी सरस्वती की पूजाविधि –

●हर दिन देवी की संक्षिप्त पूजा कर सकते हैं पर माघ शुक्ल पंचमी तथा विद्यारम्भके दिन पूर्वाह्णकाल में प्रतिज्ञा करके आराधक उस दिन संयम तथा पवित्रता से युक्त रहकर विस्तार से मैया की सेवा करें।

● स्नान और नित्यक्रिया करके भक्तिपूर्वक कलश–स्थापन करनेके बाद अपनी शाखामें कही गयी विधिसे अथवा तान्त्रिक विधि से पहले गुरु व गणेश जी का पूजन करके अभीष्ट देवी सरस्वतीकी विधिपूर्वक पूजा करनी चाहिये।
बताये गये ध्यानके द्वारा बाह्य घटमें देवीका ध्यान करके तत्पश्चात् व्रतीको चाहिये कि फि ध्यानपूर्वक षोडशोपचार विधिसे भगवती सरस्वतीका पूजन करे।

● सरस्वती पूजाके लिये उपयोगी जो कुछ नैवेद्य वेदोंमें बताये गये हैं और जैसा मैंने आगमशास्त्रमें अध्ययन किया है, उसे आपको बता रहा हूँ–

1.मक्खन, 2.दही, 3.दूध, 4.धानका लावा, 5.तिलका लड्डू, 6.सफेद गन्ना, 7.गन्नेका रस, 8.उसे पकाकर बनाया हुआ गुड़, 9.मधु, 10.स्वस्तिक (एक प्रकारका पक्वान), 11.शक्कर, 12.सफेद धानका बिना टूटा हुआ चावल (अक्षत),13. बिना उबाले हुए श्वेत धानका चिठड़ा,14. सफेद लड्डू (स्नान की हुई गृहिणी के द्वारा ही बना शुद्ध न कि बाजार का अशुद्ध लड्डू) 15 .घी और सेंधा नमक डालकर बनाया गया शास्त्रोक्त हविष्यान्न, 16.जौ अथवा गेहूँके आटेसे घृतमें

तले हुए पदार्थ, 17.स्वस्तिक तथा पके हुए केलेका पिष्टक, 18.उत्तम अन्न को घृत (घी) में पकाकर उससे बना हुआ अमृततुल्य मधुर मिष्टान्न, 19.नारियल,20. नारियलका जल, 21.कसेरु, 22.मूली, 23.अदरक,24. पका हुआ केला, 25.सुन्दर बेल, 26.बेरका फल, 27.देश और कालके अनुसार उपलब्ध सुन्दर, श्वेत और पवित्र ऋतुफल ये सब नैवेद्य (प्रशस्त) हैं।

सामर्थ्य के अनुरूप ही जो भी उपलब्ध हो निश्चित ही देवी को समर्पित करें।

28.सुगन्धित श्वेत पुष्प,
29.सुगन्धित श्वेत चन्दन,
30.नवीन श्वेत वस्त्र तथा
31.सुन्दर शंख,
32.श्वेत पुष्पोंकी माला,
33.श्वेत वर्णका हार तथा ये आभूषण भगवती सरस्वतीको अर्पण करने चाहिये ।

50. देवी पृथ्वी व धरा स्तोत्र

यह पृथ्वी पुण्यतीर्थों तथा पवित्र भारतदेशसे सम्पन्न है। यह स्वर्णमयी भूमिसे सुशोभित है तथा सात स्वर्गोंसे समन्वित है। इस पृथ्वीके नीचे सात पाताल हैं, ऊपर ब्रह्मलोक है तथा ब्रह्मलोकसे भी वैकुण्ठ आदि हैं

और उसमें समस्त विश्व स्थित है। इस प्रकार सम्पूर्ण लोक पृथ्वीपर ही निर्मित हैं। ये सभी विश्व विनाशशील तथा कृत्रिम हैं ।प्राकृत प्रलयके अवसरपर ब्रह्माका भी निपात हो जाता है। उस समय केवल महाविराट् पुरुष विद्यमान रहते हैं; क्योंकि सृष्टिके आरम्भमें ही परब्रह्म ने इनका सृजन किया था ।

ये सृष्टि तथा प्रलय नित्य हैं और काष्ठा आदि अवयवोंवाले कालके स्वामीके अधीन होकर रहते हैं। सभीकी अधिष्ठातृदेवी पृथ्वी भी नित्य हैं।

वाराहकल्पमें सभी देवता, मुनि, मनु, विप्र, गन्धर्व आदिने उन पृथ्वीका पूजन किया था। वेदसम्मत वे पृथ्वी वराहरूपधारी भगवान् विष्णुकी पत्नीके रूपमें विराजमान हुईं; उनके पुत्ररूपमें मंगलको तथा मंगलके पुत्ररूपमें घटेशको जानना चाहिये।
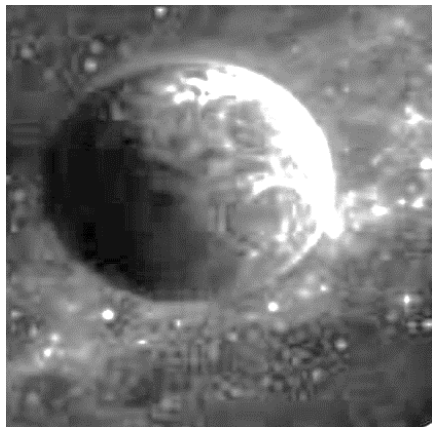
सभी लोग वाराहकल्पमें सबको आश्रय प्रदान करनेवाली इस वाराही साध्वी पृथ्वीकी पूजा करते हैं यह पृथ्वी पंचीकरण–मार्गसे मूलप्रकृतिसे उत्पन्न हुई है।महाविराट् पुरुष अनन्त कालसे जलमें स्थित रहते हैं, यह स्पष्ट है। समयानुसार उनके भीतर सर्वांगव्यापी शाश्वत मन प्रकट हुआ। तत्पश्चात् वह मन उस महाविराट् पुरुषके सभी रोमकूपोंमें प्रविष्ट हो गया। हे मुने ! बहुत समयके पश्चात् उन्हीं रोमकूपोंसे पृथ्वी प्रकट हुई ।

उस महाविराट्के जितने रोमकूप हैं, उन सबमें सर्वदा स्थित रहनेवाली यह पृथ्वी एक–एक करके जलसहित बार–बार प्रकट होती और छिपती रहती है। यह पृथ्वी सृष्टिके समय प्रकट होकर जलके ऊपर स्थित हो जाती है और प्रलयके समय यह अदृश्य होकर जलके भीतर स्थित रहती है ।

प्रत्येक ब्रह्माण्डमें यह पृथ्वी पर्वतों तथा वनोंसे सम्पन्न रहती है, सात समुद्रोंसे घिरी रहती है और सात द्वीपोंसे युक्त रहती है।यह वसुधा हिमालय तथा मेरु आदि पर्वतों, सूर्य तथा चन्द्र आदि ग्रहोंसे संयुक्त रहती है। महाविराट्की आज्ञाके अनुसार ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि देवता इसपर प्रकट होते हैं तथा समस्त प्राणी इसपर निवास करते हैं।

पृथ्वीकी अधिष्ठात्री देवीको कामभावसे युक्त देखकर करोड़ों सूर्यके समान प्रभावाले वाराहरूपधारी सकाम भगवान् श्रीहरिने अपना अत्यन्त मनोहर तथा रतिकलायोग्य समग्र रूप बना करके उसके साथ एकान्तमें दिव्य एक वर्षतक निरन्तर विहार किया। आनन्दकी अनुभूतिसे वह सुन्दरी मूच्छित हो गयी। विदग्ध पुरुषके साथ विदग्ध स्त्रीका संगम अत्यन्त सुखदायक होता है। उस सुन्दरीके अंग–संश्लेषके कारण विष्णुको दिन–रातका ज्ञान भी नहीं रहा। एक वर्षके पश्चात् चेतना आनेपर भगवान् श्रीहरि उससे विलग हो गये । तदनन्तर उन्होंने लीलापूर्वक अपना पूर्वका वराह–रूप धारण कर लिया। इसके बाद साध्वी भगवती पृथ्वीका ध्यान करके धूप, दीप, नैवेद्य, सिन्दूर, चन्दन, वस्त्र, पुष्प और बलि आदिसे उनकी पूजा करके श्रीहरि उनसे कहने लगे ।

श्रीभगवान् बोले– हे शुभे ! तुम सबको आश्रय देनेवाली बनो। तुम मुनि, मनु, देवता, सिद्ध और दानव आदि–सभीके द्वारा भलीभाँति पूजित होकर सुख प्राप्त करोगी ।

● "अम्बुवाचीयोगको छोड़कर अन्य दिनोंमें, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, बावली तथा सरोवरके निर्माणके समयपर, गृह तथा कृषिकार्यके अवसरपर देवता आदि सभी लोग मेरे वरके प्रभावसे तुम्हारी पूजा करेंगे और जो मूर्ख प्राणी तुम्हारी पूजा नहीं करेंगे, वे नरकमें जायँगे।"यह धरती हम

सभी का आधार है तथा देह के मल मूत्र आदि विसर्जित करने पर भी चुप रहती है यह धैर्य का स्वरूप है इस पर वृक्ष आदि लगाने से ये सभी पाप नष्ट कर डालती है इस भूमि पर जो मानव इनके स्वामी श्रीवराह की पुराण को अपने घर में आश्रय देता है उस पर ये पृथ्वी प्रसन्न होकर समृद्धि और आर्थिक विकास व यश कीर्ति देती है।

एक बार इन पति और पत्नी का अद्भुत संवाद हुआ वह सुनों –

वसुधा बोली – हे भगवन् ! आपकी आज्ञाके अनुसार मैं वाराहीरूपसे समस्त स्थावर जंगममय विश्वका लीलापूर्वक वहन करती हूँ। किंतु हे भगवन् ! आप यह सुन लीजिये कि

● मैं मोती, ●सीप,● शालग्रामशिला,● शिवलिंग, ●पार्वतीविग्रह, ●शंख, ●दीप, ●यन्त्र, ●माणिक्य, ●हीरा, ●यज्ञोपवीत, ●पुष्प,● पुस्तक, ● तुलसीदल, ●जपमाला, ●पुष्पमाला, ●कपूर, ●सुवर्ण, ●गोरोचन, ●चन्दन और ●शालग्रामका जल

इन वस्तुओंका वहन करनेमें सर्वथा असमर्थ हूँ, इससे मुझे क्लेश होता है।

(सौरमान से आर्द्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में पृथ्वी ऋतुमती रहती है; इतने समयका नाम अम्बुवाची है।)

तब श्रीभगवान् बोले– हे सुन्दरि । जो मूर्ख तुम्हारे ऊपर (अर्थात् आसनविहीन भूमिपर) ये वस्तुएँ रखेंगे, वे कालसूत्र नामक नरकमें दिव्य सौ वर्षीतक निवास करेंगे

हे नारद ! यह कहकर भगवान् चुप हो गये। उस समय पृथ्वी गर्भवती हो चुकी थीं। उसी गर्भसे तेजस्वी मंगलग्रह उत्पन्न हुए । अतः ये देवी मंगल ग्रह की माता हैं। अलग अलग पुराणों में अलग अलग कथाएं हैं कल्पभेद से। एक पौराणिक मत से पृथ्वी के पति वामन हैं और पुत्र यही मंगल। एक मत से मंगल को भूमाता ने मात्र पाला है।

पर सभी कल्प लीला से संभव हैं।

भगवान् की आज्ञाके अनुसार वहाँ उपस्थित सभी लोगोंने पृथ्वीकी पूजा की और कण्वशाखामें कहे गये ध्यान तथा स्तोत्रपाठसे उनकी स्तुति की और मूलमन्त्रसे नैवेद्य आदि अर्पण किया। इस प्रकार तीनों लोकोंमें उन पृथ्वीकी पूजा तथा स्तुति होने लगी ।

नारदजी बोले – पृथ्वीका ध्यान क्या है, उनका स्तवन क्या है और उनका मूलमन्त्र क्या है, यह सब मुझे बतलाइये। समस्त पुराणोंमें निगूढ़ इस प्रसंगको सुननेके लिये मुझे बहुत कौतूहल हो रहा है

श्रीनारायण बोले– सर्वप्रथम भगवान् वराहने भगवती पृथ्वीकी पूजा की, तत्पश्चात् ब्रह्माजीद्वारा इन पृथ्वीकी पूजा की गयी। इसके बाद सभी मुनीश्वरों, मनुओं और मनुष्यों आदिने पृथ्वीकी पूजा की

सुनिये; अब मैं पृथ्वीके ध्यान, स्तवन तथा मन्त्रके विषयमें बता रहा हूँ।

●●●●●●●●●●●●●●

'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं वसुधायै स्वाहा'

●●●●●●●●●●●●●●

इस मन्त्रसे भगवान् विष्णुने प्राचीनकालमें इनका पूजन किया था। उनके ध्यानका स्वरूप यह है–

'पृथ्वीदेवी श्वेतकमलके वर्णके समान आभासे युक्त हैं, उनका मुखमण्डल शरत्पूर्णिमाके चन्द्रमाके समान है, उनके सम्पूर्ण अंग चन्दनसे अनुलिप्त हैं, वे रत्नमय अलंकारोंसे सुशोभित हैं, वे रत्नोंकी आधारस्वरूपा हैं, वे रत्नगर्भा हैं, वे रत्नोंके आकर (खान)–से समन्वित हैं, उन्होंने अग्निके समान विशुद्ध वस्त्र धारण कर रखे हैं, उनका मुखमण्डल मुसकानसे युक्त है तथा वे सभी लोगोंके द्वारा वन्दनीय हैं।

इनका स्तोत्र हमने पहले सबको बता ही दिया।...श्रीमद्देवी भागवत में ये उपाय ''प्रत्येक जन्म में राजा बनने का उपाय'' साक्षात् श्रीनारायण प्रभु ने बताया है। कृपया इस स्तोत्र को पवित्र होकर ही स्वाध्याय करें।

श्रीनारायण उवाच :

जय जये जलाधारे जलशीले जलप्रदे।
यज्ञसूकरजाये च जयं देहि जयावहे।
मंगले मंगलाधारे मांगल्ये मंगलप्रदे।।
मंगलार्थं मंगलेशे देहि मे भवे।
सर्वाधारे च सर्वज्ञे सर्वशक्तिसमन्विते।।
सर्वकामप्रदे देवि सर्वेष्टं देहि मे भवे।
पुण्यस्वरूपे पुण्यानां बीजरूपे सनातनि।।
पुण्याश्रये पुण्यवतामालये पुण्यदे भवे।
सर्वशस्यालये सर्वशस्याढये सर्वशस्यदे।।
सर्वशस्यहरे काले सर्वशस्यात्मिके भवे।
भूमे भूमिपसर्वस्वे भूमिपालपरायणे।।
भूमिपानां सुखकरे भूमिं देहि च भूमिदे।।

(श्रीमद्देवीभागवत 9/9/52–58)

अर्थात्–श्रीनारायण : हे नारद! यह स्तोत्र परम पवित्र है जो पुरूष प्रातःकाल इसका पाठ करता है, उसे बलवान् राजा होने का सौभाग्य अनेक जन्मों के लिये प्राप्त होता है। इसे पढ़ने से मनुष्य पृथ्वी के दान से उत्पन्न पुण्य के अधिकारी बन जाते हैं। पृथ्वी दान के अपहरण से, दूसरे के कुएँ को बिना उसकी आज्ञा लिए खोदने से, दूसरे की भूमि का अपहरण करने से जो पाप होते हैं, उन पापों का उच्छेद करने के लिये यह परम उपयोगी है। मुने! पृथ्वी पर वीर्य त्यागने तथा दीपक रखने से जो पाप होता है, उससे भी पुरूष इस स्तोत्र का पाठ करने से मुक्त हो जाता है।

वास्तव में भूमि माता की बहुत महिमा है। जो पुरूष त्रिकाल संध्या से युक्त योग्य ब्राह्मण को एक विश्वा मात्र भी भूमि दान करता है, वह भगवान् शिव के मन्दिर निर्माण के पुण्य का भागी बन जाता है। फसलों से लहलहाती भूमि को ब्राह्मण के लिये अर्पण करने वाला सत्पुरूष उतने ही वर्षों तक भगवान् विष्णु के धाम में विराजता है, जितने उस जमीन के रजःकण हों। जो कामान्ध व्यक्ति एकान्त में पृथ्वी पर वीर्य गिराता, उसे वहाँ की जमीन में जितने रजःकण हैं, उतने वर्षों तक 'रौरव' नरक में रहना पड़ता है।

51. माँ कालिका के दर्शन के लिए सिद्ध शाबर मंत्र–

शाबर मंत्र अतिशीघ्र कृतकृत्य करते हैं यह तुलसीदास जी ने भी कहा था और शाबर मंत्रों के ज्ञाता भी जानते हैं अतः देवी रहस्य में उपासना खण्ड के अंतर्गत कुछ महत्वपूर्ण शाबर मंत्रों में से एक यहाँ प्रस्तुत कर रहे है। पर पहली बार जो भी इस साधना को करे वह निष्काम भाव से ही करें। और 41 दिन तक अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक रहे। तथा साधना आरंभ करने से 7 दिन पहले ब्रह्मचर्य का पालन आरंभ कर दे और देवी के दर्शन के बाद भी कुछ दिनों तक अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक रहकर देवी का सुमिरन करे तो वह साधक और भी अधिक कृपा का पात्र हो जाता है । अक्षयरुद्र का अनुभव है कि इस संसार में काम वासना की अति भूख ही तपस्या और जप तप व्रत–उपवास का फल नष्ट करती है इसी कारण विद्वान लोग भी कामासक्ति के आच्छादित होने से यथार्थ पराविज्ञान से वंचित ही रह जाते हैं बस वे ग्रह नक्षत्रों की चाल बताते बताते ही (अल्प पुण्य से) चिता के ढेर पर ढेर हो जाते हैं अर्थात लकड़ी पर सोकर स्वाहा हो जाते हैं। लालच और पिण्ड भोग लालसा (धन का लोभ और स्त्री का अतिभोग) ये दोनों ही पुनर्जन्म का कारण है आजकल संन्यास आश्रम के अधिकांश लोग भी इन दोनों से अछूते नहीं गिने चुने विरले ही बचे हैं और 10 सहस्र में जो 100लोग इनसे बच भी जायें वे कीर्ति के भूखे हैं बस प्रसिद्ध होने की तमन्ना उनको खाये जा रही है। तृष्णा से मुक्त होने पर ही पराविज्ञान का उदय हो पाता है पर लोग अभी रतिसुख पर ही अड़े पड़े हैं और उसी सुख की नित्य प्राप्ति के लिए वे अधिकांश जन धन कमाते हैं एकाध प्रतिशत ही ऐसे आदर्श गृहस्थ हैं जो 40–45 साल के बाद रतिसुख को त्याग कर मात्र शिवा सुख के लिए तत्पर हैं। आजकल के अधिकांश लोग या तो साधना करते ही नहीं या करते भी हैं तो 99 प्रतिशत यही सोचते हैं कि साधना कब पूरी हो यह सोचकर ही टेंशन में पड़ जाते हैं ताकि कब दैहिक भोग की पिपासा शान्त हो।

बस इस कारण ही वे न तो दर्शन के अधिकारी होते हैं न ही उनका चित्त शान्त ब्रह्म से एकाकार हो पाता है। 0.1111प्रतिशत भी कामेच्छा होने पर चित्त अशान्ति के दलदल में फंसा रहता है खैर .... हम अब ईष्ट शिव जी व संतों की कृपा से आपको अद्‌भुत शाबर मंत्र बता रहे हैं जिसका फल देवी के दर्शन है। पहले यह भी सुनिश्चित जानें की शाबर मंत्र के वाक्यों का अर्थ जो भी हो पर यह मंत्र सिद्ध होकर काम अवश्य करते हैं। अतएव शब्द या अर्थ के अनुसंधान में मत उलझना। और यदि गुरु आज्ञा दे तो ही करना। वैसे शाबर से दर्शन नहीं करना हो तो हमारी पुस्तक स्तोत्र निधिवन भाग एक में नमः शंकरकान्तायै सारायै ते नमो नमः वाला स्तोत्र है उसकी साधना से भी दर्शन हो जायेंगे। पर साधना के लिए शुभ मुहूर्त देख लेना। और पहले किसी ग्रहणकाल में लगातार जप करके अनुकूल कर लेना।

●●●●●

ॐ काली–काली। महा–काली ।।

इन्द्र की बेटी। ब्रह्मा की साली।।

कूचेपान बजावे ताली।

चल काली।। कलकत्ते वाली।

आल बाँधू–ताल बाँधू ।। और बाँधू तलैया ।

शिव जी का मंदिर बाँधू । हनुमान जी की दुहैया ।

शब्द साँचा ।। पिण्ड काँचा। फुरे मन्त्र ।। ईश्वरो वाचा ।।

अनुष्ठान की विधि –

१. इस मंत्र का अनुष्ठान 41 दिन का है, साधक नदी के किनारे (एकांत स्थान में जाकर) घी का दीपक जलाकर सुगंधित धूप सुलगाकर ऋतु फल व शुद्ध मिठाई भेंट रखकर नित्य मात्र दो माला जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा।

२. जप करते समय जब कालिका प्रत्यक्ष दर्शन दें तब उस समय पान उल्टा और एक पान सीधा (चिकना भाग ऊपर) रखकर उस पर कपूर जला दें तथा साधक अपने दायें हाथ की अनामिका अंगुली (कनिष्ठिका और मध्यमा के बीच) की कुछ रक्त बूँद धरा पर गिरा दे फिर माँ कालिका से या तो मात्र भक्ति या ज्ञान का वरदान ही लें या ये सात वचन ले लें कि–

1.आवाहन करने पर पुनः प्रकट होने का वर दो परंतु मेरी मति में कभी स्वार्थ न आये।

2. जो काम कहा जाय वह उस दिन करने की कृपा करें क्योंकी मैं मेरे शरणागतों के दुख देख नहीं सकता। तथा

3. आप सदा ही मेरे परिवार के सभी सदस्यों की रक्षा करें 4.मुझे वरदान दें कि मैं सदा विश्व का मंगल करूं व सदा आपके नाम का गुणगान करूँ।

5.जो भी मैं प्रश्न करके सोऊं तो उसी रात मुझे सपने में उत्तर मिल जाए।

6. देहांत के बाद मुझे मणिद्वीप प्राप्त हो।

7. जो भी पराविज्ञान हो वह मुझे अतिशीघ्र प्राप्त हो ।

जय जय श्रीकाली जय जय श्री तारा

माँ कालिका के दर्शन के लिए–

ॐ नमो आदेश गुरु को, डण्ड–भुज–डण्ड प्रचण्ड ।

नो खण्ड प्रगट देवी, तुहि झुण्डन के झुण्ड ।।

खगर दिखा खप्पर लियां , खड़ी कालका तागदड़े मस्तंग।

तिलक मागर दे मस्तंग, चोला जरी का फागड़ दीफू ।।

गले फुल माल, जय–जय– जयन्त ।

जय आदि–शक्ति जय कालका खपरधनी।।

जय मचकुट छन्दनी देव, जय–जय महिरा जय मरदिनी, जय–जय चण्ड– मुण्ड–भण्डासुर–खण्डनी।

जय रक्त–बीज बिडाल–बिहण्डनी।

जय निशुम्भ को दलनी। जय शिव राजेश्वरी।

अमृत–यज्ञ धागी–धृट। दृवड़–दृवड़नी,

बड़ रवि– डर डरनी, ॐ ॐ ॐ ॥

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का नित्य जो साधक 1 माला जप धूप दीप नैवेद्य विधि आदि से करता है, उसको भविष्य में माँ जगदम्बा कालिका के प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं। इस मंत्र का जप, एकाग्रचित हो गुरु जी की आज्ञा से करने पर शीघ्र सिद्धि मिलती है।

माँ कालिका का सिद्ध रक्षा मंत्र–

॥ मन्त्र ॥

ॐ काली–काली महा–काली, ज्यावे सीपी, वलके डाहोली दोनों हात से बजावे टाली, बाँएँ याट जा बसे, काल–भैरव उसका काट–काट कौन रखा कनकाला तोहू, म्हसासूर येऊ का उज्याला कर आला मछिन्द्र का सोटा,
काल–भैख का पाँव तुटा, दूरा लाजी लूखा, किया हाला सती सके का बाँधु, काल राखे गोरखनाथ सिंहनाथ फूरे अडबंगी बोले फूरो मंत्र, ईश्वरी वाचा

॥ विधि ॥

इस मन्त्र का ग्रहण काल में जप कर सिद्ध करें। फिर आवश्यकता के समय 21 बार जपकर ताली बजाने से या रक्षा घेरा बनाने से सुरक्षा प्राप्त होती है।

52. श्रीगंगा देवी

श्रीगंगा देवी साक्षात् गौरी, राधा, लक्ष्मी, गायत्री और शारदा और नर्मदा के समान कल्याणकारी और मोक्ष प्रदान करने वाली सौम्य देवी हैं इनका माहात्म्य अतुलनीय है ये देवी अपने तपोबल और श्रीहरि के मंत्र के पुरश्चरण से साक्षात् लक्ष्मी का स्वरूप होकर लक्ष्मी के समान ही वैकुण्ठ में नारायण की भार्या हुई इन्होनें पुरुषार्थ के बल पर देवी पद पाया जिससे ये देवी अद्भुत प्रेरणादायी सिद्ध हुई इनके पूर्व जन्म का इतिहास श्रीमद्भागवत महापुराण में वर्णित है इनका नाम ऋषिकुल्या नामक युवती था जिससे यह प्रण कर लिया था कि – समस्त देवियाँ तो आनंद से रहती हैं तो मैं भी तो नारी शक्ति हूँ मैं क्या नहीं कर सकती अतः मैं भी एक दिन ईश्वर की उपासना से पावन और निर्मल होकर पावन करने वाली सिद्ध हो जाऊँगी मनुष्य ईश्वर का अंश है हर स्त्री पराशक्ति का स्वरूप है अतः यदि यह कथन सत्य है तो मैं भी अध्यात्म के बल पर परम निर्मलता को निश्चित ही प्राप्त करूँगी फिर चाहे इसके लिए मुझे आजीवन अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक रहना पड़े अथवा एकान्तिक होकर तप के दौरान यह प्राण त्याग करना पड़े। अतः इस ऋषिकुल्या नामक युवती ने घोर तप किया ठीक वैसा ही जैसे कि पूर्व जन्म में वीरभद्र ने किया था। अतः इन दोनों को अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक जप तप व्रत–उपवास के कारण ईश्वरत्व प्राप्त हुआ। यह नर नारी सामान्य नहीं इनका आत्मा तत्वतः सोऽहम् महावाक्य से परमात्मा ही है बस जो कलाएं और ऐश्वर्य परमात्मा के पास है वही पाना शेष है तदोपरान्त जीवत्व (अवगुणों का पुंज) का नाश होकर ईश्वरत्व प्राप्त होने में एक पल का भी समय नहीं लगता।

अतः इन्होनें श्रीहरि से उन संपूर्ण शक्तियों को पा लिया जो उन हरि के पास हैं। और इस कन्या को वर मिला कि हे देवी ! तुम जप तप व्रत–उपवास और निर्मल अखंड ब्रह्मचर्य से मेरे ही समान सेवनीय और पूजित होओगी तुम्हारा स्मरण मुझ हरि और देवी लक्ष्मी के समान मोक्ष दायक सिद्ध होगा । हे ऋषिकुल्या ! तुम्हारे नाम के स्मरण से कोटी योजन दूर रहने वाला मनुष्य भी निष्पाप हो जायेगा, हे कन्या ! तुम जिस पर अपनी पावनदृष्टि डाल दोगी वह परम पद का अधिकारी हो जायेगा और जिससे कुपित होओगी उसे मैं भी नहीं बचा सकता ऐसा वरदान मैं तुमको देता हूँ तुम सदा लक्ष्मी के समान षोडश वर्षीय ,समस्त ऐश्वर्य और सौन्दर्य से युक्त रहोगी और मेरी समस्त शक्तियाँ मैं तुमको भी देता हूँ (यह गूढ़तम रहस्य है जिसको देवीय शास्त्रों ने भेद खोलते हुये बताया कि विष्णु जी की वैष्णवी शक्ति (परम मातृका) ही सदा के लिए ऋषिकुल्या से एकत्व को प्राप्त हुई जिससे ये ऋषिकुल्या साक्षात् श्रीहरि और लक्ष्मी के समान सदा के लिए हो गई। अब इनका गंगा रूप में माहात्म्य सुनें –

श्रुति में ऐसा कहा गया है कि भारतवर्ष में मनुष्योंके द्वारा करोड़ों जन्मोंमें किये गये दुष्कर्म के परिणामस्वरूप जो भी पाप संचित रहता है, वह मात्र एक बार ही गंगाकी वायुके स्पर्शमात्रसे नष्ट हो जाता है। यह श्रीमद्देवीभागवत महापुराण के नवें स्कन्ध के अध्याय 11 में वर्णन है।

●●●●●●●●●●●●●●●●

कोटीजन्मार्जितं पापं भारते यत्कृतं नृभिः।
गंगाया वात स्पर्शेन नश्यतीति श्रुतौ श्रुतम्। ।

●●●●●●●●●●●●●●●●

गंगाजी के स्पर्श और दर्शनकी अपेक्षा दस गुना पुण्य गंगा में मौसल स्नान करनेसे प्राप्त होता है।

"मौसल स्नान का अर्थ यह है कि शुद्ध वस्त्र धारण करके गंगा के निकट जायें और नमन करके स्नान की आज्ञा लें कि हे देवी ! आप परम पावन अर्थात अत्यधिक निर्मल हो और मैं विकारों का पुंज मुझमें इतना साहस नहीं कि अपने चरण आप गंगा में स्नान हेतु प्रवेश करा सकूँ पर हे माता! पुत्र आपकी शरण में नहीं जायेगा तो कहाँ जायेगा अतः हे वैष्णवी शक्ति ! मुझे आपके जल रूप में प्रवेश करने की आज्ञा दीजिए मैं बिना हाथ पैर हिलाये बड़े ही शान्त भाव से स्नान करूँगा और क्षार पदार्थ का प्रयोग नहीं करूँगा ।" आगे स्नान का फल सुनें वार और तिथि आदि संदर्भ में देखें।

●सामान्य दिनों में भी स्नान करनेसे मनुष्योंके सैकड़ों जन्मोंके पाप विनष्ट हो जाते हैं– ऐसा श्रुति कहती है।

●इच्छापूर्वक इस जन्ममें किये गये तथा अनेक पूर्वजन्मोंके संचित जो कुछ भी मनुष्योंके ब्रह्महत्या आदि पाप हैं, वे सब मौसलस्नान करनेमात्रसे नष्ट हो जाते हैं ॥

● पुण्यप्रद दिनोंमें गंगास्नानसे होनेवाले पुण्यका वर्णन तो वेद भी नहीं कर सकते।

●आगमशास्त्रके जो विद्वान् हैं, वे आगमोंमें प्रतिपादित कुछ–कुछ फल बताते हैं।

●ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि देवता भी पुण्यप्रद दिनोंके स्नानका सम्पूर्ण फल नहीं बता सकते।

●(श्रीहरि ने गंगा देवी से ही कहा है कि) हे सुन्दरि ! अब सामान्य दिवसोंमें संकल्पपूर्वक किये गये स्नानका फल सुनो।

●साधारण दिवस के संकल्पपूर्वक (संकल्प लेकर) स्नान का पुण्य मौसलस्नान से दस गुना अधिक होता है।

●उससे भी तीस गुना पुण्य सूर्य– संक्रान्तिके दिन स्नान करनेसे होता है। एक माह में यह सूर्य संक्रांति 12 बार आती है। हर माह सूर्य संक्रांति होती है।

● अमावस्या तिथि को भी स्नान करनेसे उसी सूर्यसंक्रान्तिके स्नानके समान पुण्य होता है।

●किंतु दक्षिणायनमें गंगा–स्नान करनेसे उसका दूना और उत्तरायणमें गंगा–स्नान करनेसे मनुष्योंको उससे दस गुना पुण्य प्राप्त होता है।

●चातुर्मास तथा पूर्णिमाके अवसरपर स्नान करनेसे अनन्त पुण्य प्राप्त होता है,

●अक्षय तृतीयाके दिन स्नान करनेसे भी उसीके समान पुण्य होता है।

●इन विशेष पर्वोपर किये गये स्नान तथा दान असंख्य पुण्य–फल प्रदान करते हैं।

●इन पर्वोपर किये गये स्नान– दानका फल सामान्य दिवसोंमें किये गये स्नान तथा दानकी अपेक्षा सौ गुना अधिक होता है ।

●मन्वन्तरादि तथा युगादि तिथियों, माघ शुक्ल सप्तमी, भीष्माष्टमी, अशोकाष्टमी, रामनवमी तथा नन्दा तिथिको दुर्लभ गंगा–स्नान करनेपर उससे भी दूना फल मिलता है ।

●गंगादशहराकी दशमीतिथिको स्नान करनेसे युगादि तिथियोंके तुल्य और

● वारुणीपर्वपर स्नान करनेसे नन्दातिथिके तुल्य फल प्राप्त होता है।

●महावारुणी आदि पर्वोपर स्नान करनेसे उससे चार गुना पुण्य प्राप्त होता है।

●महामहावारुणी–पर्वपर स्नान करनेसे उससे भी चार गुना और सामान्य स्नानकी अपेक्षा करोड़ गुना पुण्य प्राप्त होता है।

●चन्द्रग्रहण तथा सूर्यग्रहणके अवसरपर स्नान करनेसे उससे भी दस गुना पुण्य मिलता है और

●अर्धोदयकालमें स्नान करनेसे उससे भी सौ गुना फल प्राप्त होता है।

अब नारद जी ने गंगा जी के इस लोक पर प्राकट्य संबंधित रहस्य नारायण प्रभु से पूछा था वही आप सुनें –

श्रीनारायण बोले – राजराजेश्वर श्रीमान् सगर सूर्यवंशी राजा हो चुके हैं। वैदर्भी तथा शैव्या नामोंवाली उनकी दो मनोहर भार्याएँ थीं। उनकी शैव्या नामक पत्नीसे अत्यन्त सुन्दर तथा कुलकी वृद्धि करनेवाला एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जो असमंज– इस नामसे विख्यात हुआ ॥

उनकी दूसरी पत्नी वैदर्भीने पुत्रकी कामनासे भगवान् शंकरकी आराधना की और शिवजीके वरदानसे उसने गर्भ धारण किया। पूरे सौ वर्ष व्यतीत हो जानेपर उसने एक मांस– पिण्डको जन्म दिया। उसे देखकर तथा शिवका ध्यान करके वह बार–बार ऊँचे स्वरमें विलाप करने लगी, तब भगवान् शंकर ब्राह्मणका रूप धारणकर उसके पास गये और उन्होंने उस मांसपिण्डको बराबर– बराबर साठ हजार भागोंमें विभक्त कर दिया। वे सभी टुकड़े पुत्ररूपमें हो गये। वे महान् बल तथा पराक्रमसे सम्पन्न थे। उनके शरीरकी कान्ति ग्रीष्मऋतुके मध्याह्नकालीन सूर्यकी प्रभाको भी तिरस्कृत कर देनेवाली थी। पर कपिलमुनिके शापसे वे सभी जलकर भस्म हो गये। यह समाचार सुनकर राजा सगर बहुत रोये और वे घोर जंगलमें चले गये ।

● तदनन्तर उनके पुत्र असमंज गंगाको लानेके निमित्त तपस्या करने लगे। इस प्रकार एक लाख वर्षतक तप करनेके पश्चात् वे कालयोगसे मर गये ॥ पर उनको तप का संपूर्ण फल (गंगा प्रकट) न मिल सका परंतु वे तपस्या के कारण पूर्णतः निष्पाप होकर परमधाम को अवश्य प्राप्त हुए। तपस्या और संयम का फल कभी भी निरर्थक नहीं होता।

●उन असमंजके पुत्र अंशुमान् भी गंगाको पृथ्वीपर ले आनेके उद्देश्यसे एक लाख वर्षतक तप करनेके उपरान्त कालयोगये मृत्युको प्राप्त हो गये ॥१२॥

●अंशुमान्के पुत्र भगीरथ थे। वे भगवान के अनन्य भक्त, परम भक्त, विद्वान्, श्रीमद्देवीभागवत के अनुसार ये भगीरथ गोलोक के श्रीकृष्ण रूप में ही चित्त को लगाने वाले और कर्तव्य का पालन करने वाले, गुणवान, अजर– अमर का आत्मतत्व जानने वाले वैष्णव थे। (अलग अलग ग्रंथों में भगीरथ के तप का अलग अलग वर्णन है जो भी हो पर ईश्वर केवल एक ही है अतः नाम रूप से लोक परलोक आदि के चक्कर में भेद न करें); अतः

उन्होंने गंगाको ले आनेके लिये एक लाख वर्षतक तप करके भगवान् श्री हरि कृष्ण का साक्षात् दर्शन किया। वे ग्रीष्मकालीन करोड़ों सूर्योक समान प्रभासे सम्पन्न थे, उनकी दो भुजाएँ थीं, वे हाथमें मुरली धारण किये हुए थे, उनकी किशोर अवस्था थी, वे गोपवेषमें थे और कभी गोपालसुन्दरीके रूपमें हो जाते थे, भक्तोंपर अनुग्रह करनेके लिये ही उन्होंने यह रूप धारण किया था, उस समय ब्रह्मा– विष्णु–महेश आदि देवता अपनी इच्छाके अधीन उन परिपूर्णतम परब्रह्मस्वरूप प्रभु श्रीकृष्णका स्तवन कर रहे थे,

द्विभुजं मुरलीहस्तं किशोरं गोपवेषिणम्।
गोपाल सुन्दरी रूपं भक्तानुग्रहरूपिणम्। ।

मुनियोंने उनके समक्ष अपने मस्तक झुका रखे थे, सदा निर्लिप्त, सबके साक्षी, निर्गुण, प्रकृतिसे परे तथा भक्तोंपर कृपा करनेवाले उन श्रीकृष्णका मुखमण्डल मन्द मुसकानयुक्त तथा प्रसन्नतासे भरा हुआ था; वे अग्निके समान विशुद्ध वस्त्र धारण किये हुए थे और रत्नमय आभूषणोंसे सुशोभित हो रहे थे–ऐसे स्वरूपवाले भगवान् कृष्णको देखकर राजा

भगीरथ बार–बार प्रणामकर उनकी स्तुति करने लगे। उन्होंने लीलापूर्वक श्रीकृष्णसे अपने पूर्वजोंको तारनेवाला अभीष्ट वर प्राप्त कर लिया। उस समय भगवान्की स्तुति करनेसे उनका रोम–रोम पुलकित हो गया था।

(तब भक्त की तपस्या से प्रसन्न होकर श्रीभगवान् गंगा जी से बोले– हे सुरेश्वरि ! सरस्वतीके शापके प्रभावसे आप शीघ्र ही भारतवर्षमें जाइये और मेरी आज्ञासे राजा सगरके सभी पुत्रोंको पवित्र कीजिये)

आपसे स्पर्शित वायुका संयोग पाकर वे सब पवित्र हो जायँगे और मेरा स्वरूप धारण करके दिव्य रथपर आरूढ़ होकर मेरे लोकको प्राप्त होंगे। वे जन्म–जन्मान्तरमें किये गये कर्मोंके फलोंका समूल उच्छेद करके सर्वथा निर्विकार भावसे युक्त होकर मेरे पार्षदके रूपमें प्रतिष्ठित होंगे अतः देर न लगायें । तब सुनकर देवी गंगा को दुख हुआ कि हे प्रभु ! मैं आपसे दूर नहीं जा सकती पर आपकी आज्ञा का पालन अवश्य करूँगी। हे प्रभु ! वहाँ पापीलोग मेरे जल में स्नान करेंगे तो मेरी मलिनता का नाश कैसे होगा तब भगवान ने उनको अनन्य भक्तों का माहात्म्य सुनाया कि मेरे अथवा शम्भु के भक्त आपके जल में जैसे ही प्रवेश करेंगे आप उन भक्तों के स्पर्श से तत्काल ही शुद्ध हो जाया करोगी मेरे भक्त ,श्री शिव के भक्त या पराशक्ति के भक्त अपने दर्शन और स्पर्श मात्र से ही सभी को शुद्ध करने की क्षमता रखते हैं इन अनन्य व जितेन्द्रिय भक्तों के दर्शन मात्र से तो पीपल को काटने का भयंकर पाप भी तत्काल नष्ट हो जाता है इन शम दम युक्त परम भक्तों के स्पर्श मात्र से सहस्र कोटी ब्रह्महत्याओं व भ्रूण हत्याओं का पाप भी भस्मीभूत हो जाता है वे भक्त साधारण नहीं वे देवीय कला को पाकर मातृकाओं के विशेष संरक्षण में रहते हैं और त्रिदेव के समान फलदायक होते हैं। मंत्र जप तप व्रत–उपवास से भी पापों का नाश होता है पर इन जितेन्द्रिय व शम दम युक्त अनन्य भक्तों के दर्शन से और स्पर्श से निष्पापता के अतिरिक्त पराविज्ञान का उदय भी होता है अतः साधारण मनुष्य को यथा संभव इन विशुद्ध भक्तों के दर्शनों के लिए सतत् प्रयास करते ही रहना चाहिए और इनको तीर्थ स्थलों से भी अधिक मानना चाहिए क्योंकि ये ही तीर्थों को भी पवित्र करने वाले हैं हे गंगा तुमको भी ये शमदमयुक्त भक्त ही पवित्र करते ही रहेंगे। और तुम सामान्य नर नारियों को निष्पाप करके परम धाम देती रहोगी तुम्हारे जल में स्नान व तुम्हारी पूजा से जीव अपनी मनोकामना को भी पूर्ण करेंगे।

53. सदाशिव जी के लीला विलास की सहचरी

भुवनेश्वरी शिवा ही प्रभु सदाशिव रूपी परब्रह्म के समस्त लीला विलास की सहचरी हैं। जो इन युगल को ध्याता है वही परम सौभाग्यशाली । देवी प्रणव इनका ही है जो ह्रीम् कहा जाता है। और देव या प्रभु का सूक्ष्म प्रणव ऊँ कार है। जो ज्ञानमयी कैलास के परमात्मा सदाशिव जी का बीज है।

महानिर्वाण तंत्र के अनुसार भी श्शेष संपूर्ण महाविद्यायें काली तारा कमला त्रिपुराभैरवी आदि भगवती भुवनेश्वरी की सेवा में सदा संलग्न रहती है यद्यपि इन सभी रूपों को धारण करने वाली देवी भी एक मात्र (ज्ञान से भी व यथार्थ पराविज्ञान से भी) भुवनेश्वरी ही हैं।

भगवती जगदम्बिका अष्टादशभुजी महालक्ष्मी साक्षात् चतुर्भुजी भुवनेश्वरी ही हैं वे ही दुर्गमासुर के नाश के लिए देवताओं, भक्तों और ब्राह्मणों की प्रार्थना पर प्रकट हुईं थी पहले उन्होंने शाक, फल मूल से विश्व के प्राणियों का पोषण किया और उनको इस कारण शाकम्भरी और शताक्षी नाम प्राप्त हुआ फिर उन कृपालु माँ ने दुर्गम असुर का वध करके वेदों को उससे प्राप्त किया और देवताओं को सौंपा और वे दुर्गमासुरसंहन्त्री कहलायीं। ये ही 4 भुजा धारी मातुलुंगधारी व गदाधारी महालक्ष्मी हैं। अधिक क्या कहें इस महाग्रंथ का आत्मा और इस अक्षयरुद्र की

इष्ट भी ये भुवनेश्वरी ही हैं। ये ही अर्थात् माँ भुवनेश्वरी ही दुर्गा नाम से प्रसिद्ध हुईं जो स्मरण मात्र से ही भक्तों के संकट का नाश कर के सभी भयों से मुक्त कर देती हैं। सुरथ और वैश्य ने **देवीसूक्त** से इनकी ही सतत् तीन वर्षों तक ब्रह्मचर्य पूर्वक साधना से मनुपद और पराविज्ञान का वर पाया ।

वे दयामयी भुवनेश्वरी चतुर्भुजी हैं, अभय और वर मुद्रा से भक्तों को भयरहित करके वर देने से अभया और वरदायनी भी कही जाती हैं और शेष दो हाथों में अंकुश और पाश से सुशोभित हैं।

राधा, लक्ष्मी, पार्वती, सरस्वती और सावित्री इन पांचों के रूप में पंचक प्रकृति कहलाने वाली ये माँ भुवनेश्वरी ही हैं। तथा नर्मदा गंगा यमुना भी ये ही हैं।

ध्यान रहे बिना कवच के कोई भी सकाम साधना फलीभूत नहीं होती । रुद्रयामल से इनका कवच भुवनेश्वरी कवच प्राप्त कर साधना आरंभ करें अथवा शीघ्र परिणाम के लिए शाक्त गुरु से देवी पराशक्ति के इस रूप अथवा किसी भी स्वरूप षोडशी श्रीविद्या ललिता त्रिपुरसुन्दरी, महालक्ष्मी, कौशिकी, महाकाली रूप मंत्र की दीक्षा लेकर जीवन सुफल करें अथवा इसी कृति में दिये गये प्रकृति कवच का जाप करें । जितनी महिमा इन मूल भुवनेश्वरी दुर्गा जी की है उतनी ही महिमा इनकी महाविद्या रूप ''माँ षोडशी चतुर्थ महाविद्या की है (श्रीविद्या नाम जिनकी आराधना श्रीयंत्र रूप में की जाती है)

54. कुण्डलिनी स्तोत्र

यह उत्तम स्तोत्र जिसके जप से मूलाधार से लेकर सभी चक्र जाग्रत हो जाते हैं जिससे साधक अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक रहता है और शाश्वत सुख प्राप्त करके स्वच्छंद विचरण करता है।

यह कुण्डलिनी स्तोत्र अष्टक रुद्रयामलउत्तर तंत्र से लिया गया है । 46 के लगभग यामलग्रंथों में उमा यामलकी भाँति यह रुद्रयामल अद्भुत तंत्र शास्त्र ही है।)

अथ श्री कुण्डलिनी–स्तोत्राष्टकम्

जन्मोद्धारनिरीक्षणीह तरुणी वेदादि–बीजादिमा,
नित्यं चेतसि भाव्यते भुवि कदा सद्वाक्यसञ्चारिणी ।
मां पातु प्रियदा स विपदं संहारयित्री धरे,
धात्रि त्वं स्वयमादिदेववनिता दीनातिदीनं पशुम् ॥1॥

रक्ताभामृत चन्द्रिका लिपिमयी सर्पाकृतिर्निद्रिता,
जाग्रत्कूर्मसमाश्रिता भगवती त्वं मां समालोक्य ।
मांसोद्‌गन्ध–कुगन्धदोषजडितं वेदादिकार्यान्वितं,
स्वल्पान्यामलचन्द्राकोटि किरणैर्नित्यं शरीरं कुरु ॥2॥

सिद्धार्थी निजदोषवित् स्थलगतिर्व्याजीयते विद्यया,
कुण्डल्याकुलमार्गमुक्तनगरीमाया–कुमार्गः श्रिया ।
यद्येवं भजति प्रभातसमये मध्याहकालेऽथवा,
नित्यं यः कुलकुण्डली–जय–पदाम्भोजं स सिद्धो भवेत् ॥3॥

वाय्वाकाशचतुर्दलेऽतिविमले वाञ्छाफलोन्मूलके,
नित्यं सम्प्रति नित्यदेहघटिता संकेतिता भाविता।
विद्याकुण्डलमानिनी स्वजननी मायाक्रिया भाव्यते,
यैस्तैः सिद्धकुलोद्‌भवैः प्रणतिभिः सत्स्तोत्रकैः शम्भुभिः॥4॥

वेधः शंकरमोहिनी त्रिभुवनच्छायापटोद्‌गामिनी,
संसारदिमहाऽसुखप्रहरणी तत्र स्थिता योगिनी।
सर्वग्रन्थि–विभेदिनी स्वभुजगा सूक्ष्मातिसूक्ष्मा परा,
ब्रह्मज्ञान–विनोदिनी कुलकुटी–व्याघातिनी भाव्यते ॥5॥

वन्दे श्रीकुलकुण्डलीं त्रिविलिभिः सांगैः स्वयम्भू–प्रियं,
प्रावेष्ट्याम्बर–मार चित्तचपलां बालाबलां निष्फलाम् ।
या देवी परिभाति वेदवदना सम्भावनी तापिनी,
स्वेष्टानां शिरसि स्वयम्भुवनिता तां भावयामि क्रियाम्॥6॥

वाणी कोटि–मृदंगनादमदना–निश्रेणिकोटि–ध्वनिः,
प्राणेशी रसराशिमूलकमलोल्लासैक–पूर्णानना।
आषाढोद्भव–मेघवाज–नियुत–ध्वान्तानना स्थायिनी,
माता सा परिपातु सूक्ष्मपथगा मां योगिनां शंकरी ॥7॥

त्वामाश्रित्य नरा व्रजन्ति सहसा वैकुण्ठ–कैलासयोरानन्दैक–
विलासिनी शशिशतानन्दाननां कारणाम् ।
मातः श्रीकुलकुण्डति प्रियकरे काती–कुलोद्दीपनेः,
तत्स्थानं प्रणमामि भद्रवनिते मामुद्धर त्वं पशुम्॥8॥

कुण्डली–शक्ति–मार्गस्थं स्तोत्राष्टक–महाफलम् ।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय स वै योगी भवेद् ध्रुवम् ॥9॥

– रुद्र यामल पटल 6, श्लोक 29 से 37

उपर्युक्त स्तोत्र का प्रातः उठते ही कुण्डली का ध्यान करते हुए पाठ करने से योग–शक्ति की प्राप्ति होती है।

"हे भगवती कुण्डलिनी! आप वेदों के आदि बीज ओंकार के समान आकृति वाली, लाल आभा से युक्त, अमृचन्द्रिका, जागृत कूर्म वायु का आश्रय लिए हुए, सृष्टि–स्थिति–संहार शक्ति से परिपूर्ण ब्रह्मादि देवों को मोहित करने वाली, वेदवदना, स्वयम्भूलिंग को आवेष्टित कर विराजमान, सूक्ष्ममार्ग से गमन कर सहस्रार तक पहुँचने वाली, आप साक्षात शिवा स्वरूपा व ब्रह्मज्ञान दात्री हैं तथा विद्युत के समान चमक वाली हैं। आप मेरी रक्षा करें, मेरे दोषों को मिटायें, सभी ग्रंथियों का भेटन करें तथा मुझ अज्ञानी का उद्धार करें।" मैं इष्ट भुवनेश्वरी की प्रसन्नता के लिए आपको बार–बार प्रणाम करता हूँ।

55. पराम्बा का एक रूप श्रीराधे

भाद्रपद शुक्ल अष्टमी चन्द्रवार (सोमवार) को मध्याह्न के समय अनुराधा नक्षत्र में श्रीराधा का प्राकट्य कालिन्दीतट पर स्थित रावल ग्राम में ननिहाल में हुआ। प्राकट्य के समय अकस्मात् प्रसूतिगृह में एक ऐसी दिव्य ज्योति फैली कि जिसके तेज से अपने–आप ही सबकी आंखें मुँद गईं। इसी समय ऐसा भान हुआ कि कीर्तिदाजी के प्रसव हुआ है। पर प्रसव में केवल हवा निकली और जब कीर्तिदा तथा पास में उपस्थित गोपांगनाओं के नेत्र खुले, तब उनको वायु में कम्पन–सा दिखाई दिया और उसमें सहसा एक परम दिव्य लावण्यमयी बालिका प्रकट हो गयी। रानी कीर्तिदा ने यही समझा कि इस बालिका का जन्म मेरे ही उदर से हुआ है। उस कन्या का रूप मन को हरने वाला था। उन्होंने मंगलविधान कराके पुत्री के कल्याण की कामना से दो लाख गायों के दान का संकल्प किया। राधिकाजी के पृथ्वी पर प्रकट होने पर नदियां स्वच्छ हो गयीं। सम्पूर्ण दिशाओं में आनन्द फैल गया। कमल की गन्ध से युक्त वायु बहने लगी। आकाश से देवतागणों ने नन्दनवन के इतने सुगन्धित और सुकोमल पुष्पों की वर्षा की कि चारों ओर ढेर–के–ढेर पुष्प स्वयं ही सुन्दर ढंग से सुसज्जित हो गये। भगवान श्रीकृष्ण के प्राकट्य के समय जो आनन्द की रसधारा बही थी, वही आनन्द–रस आज हृदयेश्वरी श्रीराधा के प्राकट्य पर समुद्र बनकर उमड़ने लगा। सभी दिशाओं में जयघोष होने लगा। श्रृंगी, गर्ग और दुर्वासा आदि मुनि पहले से ही पधारे हुए थे। उन्होंने उस बालिका के ग्रह–नक्षत्र देखकर कुण्डली बनाई। देवर्षि नारद भी आनन्दरसमयी श्रीराधिका के दर्शन के लिए आये। देवताओं को भी जिनका दर्शन मिलना कठिन है, वे ही राधिकाजी गोपराज वृषभानु के यहां स्वयं प्रकट हुईं।

देवर्षि नारद यह जानकर कि श्रीकृष्ण का प्राकट्य हो चुका है, वीणा बजाते हुए गोकुल में नन्दजी के यहां पहुंचे। वहां जाकर उन्होंने देखा कि योगमाया के स्वामी भगवान श्रीकृष्ण बालक का रूप धारण करके सोने के पलंग पर, जिस पर कोमल श्वेत वस्त्र बिछे थे, सो रहे हैं और गोपबालिकाएं आनन्दमग्न हो लगातार उन्हें निहार रही थीं। भगवान का शरीर अत्यन्त सुकुमार थाय जैसे वे भोले थे, वैसी ही उनकी चितवन भी बड़ी भोली–भाली थी। उनके काले–काले घुंघराले बाल मुख पर बिखरे हुए थे। बीच–बीच में मुसकराहट के कारण उनके दो–एक दांत दिखाई दे जाते थे। उन्हें नग्न बालरूप में देखकर नारदजी को बहुत ही हर्ष हुआ। उन्होंने नन्दजी से कहादृ'तुम्हारे पुत्र के अतुलनीय प्रभाव को इस जगत में कोई नहीं जानता। शिव, ब्रह्मा आदि देवता भी इस विचित्र बालक में अनुराग रखना चाहते हैं। इसका चरित्र सभी के लिए आनन्ददायी है। अतः तुम परलोक की चिन्ता छोड़ दो और अनन्यभाव से इस दिव्य बालक में प्रेम करो। यह कहकर नारदजी नन्दभवन से निकलकर मन–ही–मन सोचने लगेदृ'जब भगवान का अवतार हो चुका है तो उनकी प्रियतमा भी भगवान की क्रीडा के लिए गोपी रूप धारणकर निश्चय ही प्रकट हुई होंगी, इसमें कोई सन्देह नहीं है। अतः व्रजवासियों के घरों में उन्हें खोजना चाहिए।'

इसके बाद नारदजी नन्दबाबा के मित्र गोपश्रेष्ठ वृषभानुजी के घर गये और उनसे पूछा कि क्या उन्हें कोई पुत्र या पुत्री पैदा हुई है। पहले तो वृषभानुजी अपने पुत्र को लेकर आए। उसे देखकर नारदजी ने कहादृ'तुम्हारा यह पुत्र बलराम और श्रीकृष्ण का श्रेष्ठ सखा होगा।' फिर अपनी कन्या श्रीकृष्णात्मा, नित्य–श्रीकृष्णवल्लभा श्रीराधा का दर्शन कराने के लिए देवर्षि नारद को गोपश्रेष्ठ वृषभानु घर के भीतर ले गये। वहां पृथ्वी पर सोयी हुई जगज्जननी, सौन्दर्य की प्रतिमा नवजात कन्या को देखकर नारदजी मुग्ध हो गए और मन में विचार करने लगेदृमैंने समस्त लोकों में भ्रमण किया पर इसके समान अलौकिक सौन्दर्यमयी कन्या कहीं भी नहीं देखी। भगवती पार्वती को भी मैंने देखा है, वह भी इसकी शोभा को नहीं पा सकतीं। इस कन्या के दर्शनमात्र से श्रीकृष्ण के चरणकमलों में मेरे प्रेम की जैसी वृद्धि हुई है, वैसी इसके पहले कभी नहीं हुई थी। इसका रूप श्रीकृष्ण को अत्यन्त आनन्द प्रदान करने वाला होगा। अतः मैं एकान्त में इनकी स्तुति करूंगा।

वृषभानुजी को किसी कार्य से बाहर भेजकर नारदजी ने बालिका को गोद में उठा लिया और उसकी स्तुति करने लगे।।

'देवि ! तुम माया की अधीश्वरी, महान तेज का पुंज और महान माधुर्य की वर्षा करने वाली हो। तुम्हारा हृदय अद्‌भुत रसानन्द से पूर्ण रहता है। मेरे किसी महान सौभाग्य से आज तुम मेरे नेत्रों के सामने प्रकट हुई हो। सृष्टि, स्थिति और संहार तुम्हारे ही स्वरूप हैं। बड़े–बड़े योगीश्वरों के ध्यान में भी तुम कभी नहीं आतीं। तुम्हीं सबकी अधीश्वरी हो। इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति और क्रियाशक्तिदृये सब तुम्हारे ही अंशमात्र हैं। भगवान श्रीकृष्ण वृन्दावन में तुम्हारे साथ ही क्रीडा करते हैं। कुमारावस्था में ही तुम अपने सुन्दर रूप से विश्व को मुग्ध कर रही हो। न जाने यौवन का स्पर्श होने पर तुम्हारा रूपलावण्य कैसा विलक्षण होगा। तुम्हारा जो स्वरूप भगवान श्रीकृष्ण को परम प्रिय है, मैं उसका दर्शन करना चाहता हूँ। अतः हरिवल्लभे ! दया करके इस समय अपना वह मनोहर रूप प्रकट करो, जिसे देखकर नन्दनन्दन श्रीकृष्ण भी मोहित हो जायेंगे।'

ऐसा कहकर नारदजी श्रीकृष्ण का ध्यान करके उनके गुणों का गान करने लगेदृ'भक्तों के चित्त को चुराने वाले श्रीकृष्ण ! वृन्दावन के प्रेमी गोविन्द ! बांकी भौंहों वाले, वंशीबजैया, मोरमुकुट धारण करने वाले गोपीमोहन ! अपने किशोरस्वरूप से भक्तों के मन को चुराने वाले चित्त के चुरैया ! वह दिन कब आयेगा जब मैं तुम्हारी ही कृपा से तुम्हें तरुणावस्था की मनोहर शोभा से युक्त इस दिव्य बालिका के साथ देखूंगा।'

नारदजी जब इस प्रकार स्तुति कर रहे थे तब उस वृषभानुसुता ने चौदहवर्षीय परम लावण्यमयी बालिका का रूप धारण कर लिया। तत्काल ही उन्हीं के समान अवस्था व दिव्य वस्त्राभूषणों से सुसज्जित दूसरी व्रजबालाएं भी वहां आ पहुँची और वृषभानुसुता को चारों ओर से घेर कर खड़ी हो गयीं। यह दृश्य देखकर नारदजी निश्चेष्ट से हो गये तब उन सखियों ने दिव्य बालिका के चरणोदक का छींटा नारदजी को दिया और कहने लगींदृ

'देवर्षि ! ब्रह्मा, रूद्र आदि देवता, सिद्ध, मुनि और भगवतद्‌भक्तों के लिए भी जिसे देखना व जानना कठिन है, वही अपनी अद्‌भुत अवस्था और रूप से सबको मोहित करने वाली श्रीकृष्णप्रियतमा हमारी सखी आज तुम्हारे समक्ष प्रकट हुईं हैं। यह निश्चय ही तुम्हारे किसी अचिन्त्य सौभाग्य का प्रभाव है। शीघ्र ही इनकी प्रदक्षिणा कर प्रणाम करो, यह इसी क्षण अन्तर्ध्यान हो जायेंगी।'

प्रेमविह्वल नारदजी ने बालिका की प्रदक्षिणाकर साष्टांग प्रणाम किया और फिर गोपश्रेष्ठ वृषभानु को बुलाकर कहादृ'तुम्हारी इस कन्या का स्वरूप और स्वभाव दिव्य है। देवता भी इसका महत्व नहीं जान सकते। जिस घर में इसका चरणचिह्न है, वहां साक्षात् भगवान नारायण निवास करते हैं। समस्त सिद्धियों सहित लक्ष्मी भी वहां रहती है। अब से तुम सम्पूर्ण आभूषणों से भूषित इस सुन्दरी कन्या की परादेवी की भांति यत्नपूर्वक अपने घर में रक्षा करो।' ऐसा कहकर नारदजी हरिगुण गाते चले गये।

श्रीराधे नाम की अद्वितीय महिमा

श्री कृष्ण जी के मुख से प्रत्यक्ष –

श्रीकृष्ण उवाच – हे राधे! जो व्यक्ति तुम्हारा एक क्षण भी ध्यान करके तुम्हारे नाम का पहला अक्षर रा का उच्चारण कर लेता है उस मनुष्य को मैं भयभीत सा होकर उत्तम पराभक्ति प्रदान करता हूँ और जो धा का भी उच्चारण कर लेता है तो मैं उसके पीछे पीछे डोलता फिरता हूँ, हे राधा !जो लोग 100वर्ष तक मेरी नित्य 16 उपचारों से पूजा करता है मैं उस भक्त से भी परम प्रसन्न नहीं होता पर जो प्रीति मुझे मात्र एक बार राधा शब्द के उच्चारण से होती है वह मेरी पूजा, मेरे विविध स्तोत्रों के जप से और मेरे ध्यान करने वालों के प्रति भी नहीं होती।

हे राधा! और भी रहस्य की बात सुनों कहता हूँ –

मुझे तुम जितनी प्रिय हो उससे भी अधिक प्रिय मुझे तुम्हारा नाम लेने वाला है।

राधा नाम का उच्चारण करने वाला मुझे जितना अधिक प्रिय है उतना ब्रह्मा, अनन्त, धर्म, गणेश, कार्तिकेय, कपिल, नारायण ऋषि आदि भी नहीं । मैं लक्ष्मी, सरस्वती, पार्वती, सावित्री तथा गंगा षष्ठी मनसा से भी प्रसन्न रहता हूँ परंतु जितनी प्रसन्नता मुझे उस भक्त से होती है उतनी इन देवियों से भी नहीं।

यदि राधा का उच्चारण करने वाले की इच्छा किसी ब्रह्माण्ड में रुद्र, विष्णु और ब्रह्मा भी बनने की हो तो मैं उसे सहज ही बना देता हूँ, हे राधा! तुम मेरे लिए क्या हो ये मैं स्वयं भी नहीं बता सकता।

सभी देवी और देवताओं को मैने अलग अलग पात्रता के अनुसार अलग अलग स्थान पर नियुक्त किया है पर तुम तो साक्षात् मेरे वक्षः स्थल में ही सदा विराजमान रहती हो और जो भक्त मेरी प्रसन्नता के लिए मेरा भी सुमिरण न करके मात्र तुम्हारा नाम(राधा)का एक बार भी उच्चारण कर लेता है मैं उसको पूर्ण रूप से प्राप्त हो जाता हूँ पर जो तुम्हारा ध्यान और जप छोड़कर मेरे नाम का स्मरण करता है उसको 100जन्मों में मैं गोलोक देता हूँ पर तुम्हारा नाम जपने वाले को इसी जन्म में ही भवरोग से मुक्त करके गोलोक दे देता हूँ।

यद्यपि मैं ही तुम और सभी रूपों में हूँ पर मुझे केवल तुम्हारा नाम ही अधिक प्रिय है।

ब्राह्मणों से अधिक मुझे शंकर प्यारे हैं पर शंकर से भी अधिक मैं उसको चाहता हूँ जो राधा राधा का सदा ही उच्चारण करता है।...........................

रहस्य

भगवान् नारायण कहते हैं– नारद! सुनो, यह वेदवर्णित रहस्य तुम्हें बताता हूँ। यह सर्वोत्तम एवं परात्पर सार–रहस्य **जिस किसीके सम्मुख नहीं कहना चाहिये** ।

इस रहस्यको सुनकर दूसरोंसे कहना उचित नहीं है क्योंकि यह अत्यन्त गुह्य रहस्य है। मूलप्रकृतिस्वरूपिणी भगवती भुवनेश्वरीके सकाशसे जगत्की उत्पत्तिके समय दो शक्तियाँ प्रकट हुईं। श्रीराधा भगवान् श्रीकृष्णके प्राणोंकी अधिष्ठात्री देवी हैं और श्रीदुर्गा उनकी बुद्धिकी अधिष्ठात्री । ये ही **दोनों देवियाँ** सम्पूर्ण जगत्को नियन्त्रणमें रखती और प्रेरणा प्रदान करती हैं। विराट् आदि चराचरसहित सम्पूर्ण जगत् इन्हींके अधीन है। अतः इन भगवती श्रीराधा और दुर्गाको प्रसन्न करनेके लिये निरन्तर उनकी उपासना करनी चाहिये।

श्रीराधावांछाचिन्तामणि मन्त्र–

नारद! पहले मैं श्रीराधाका मन्त्र बतलाता हूँ, तुम भक्तिपूर्वक सुनो। इस श्रेष्ठ मन्त्रका ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओंने सदा सेवन किया है। 'श्रीराधा' इस शब्दके अन्तमें चतुर्थी विभक्ति लगाकर उसके आगे वह्निजाया अर्थात् 'स्वाहा' शब्द जोड़ देना चाहिये।

श्रीराधावांछाचिन्तामणि मन्त्र –

श्रीराधायै स्वाहा

यह भगवती श्रीराधाका षडक्षर मन्त्र धर्म और अर्थका प्रकाशक है। इसीके आदिमें मायाबीज (ह्रीं) का प्रयोग करे तो

यह भगवती श्रीराधावांछाचिन्तामणि मन्त्र कहा जाता है।

(मन्त्र इस प्रकार है– ह्रीं श्रीराधायै स्वाहा) ।

असंख्य मुख और जिह्वावाले भी इस मन्त्रके माहात्म्यका वर्णन नहीं कर सकते। सर्वप्रथम भगवान् श्रीकृष्णने भक्तिपूर्वक इस मन्त्रका जप किया था। इसे किसी भी संत से श्रवण कर जपने से परम मंगल होता है व सभी कार्य सिद्ध होने लगते है पुरश्चरण से साक्षात् श्रीराधे के दर्शन भी संभव है।

उस समय भगवान् गोलोकमें थे, रासका प्रारम्भ था, मूलप्रकृति श्रीराधा देवीके आदेशसे इस मन्त्रके जपमें भगवान्की प्रवृत्ति हुई थी। फिर भगवान् श्रीकृष्णने विष्णुको, विष्णुने विराट् ब्रह्माको, ब्रह्माने धर्मदेवको और धर्मदेवने मुझे इसका उपदेश किया। इस प्रकार परम्परा चली आयी। मैं निरन्तर इस मन्त्रका जप करता हूँ, इसीसे ऋषि मेरा सम्मान करते हैं। ब्रह्मा आदि सम्पूर्ण देवता नित्य प्रसन्न होकर उन भगवती राधाका ध्यान करते हैंय क्योंकि यदि श्रीराधाकी पूजा न की जाय तो पुरुष भगवान् श्रीकृष्णकी पूजाका अनधिकारी समझा जाता हैय इसलिये सम्पूर्णविष्णुभक्तोंको चाहिये कि भगवती श्रीराधाकी उपासना अवश्य करें। ये देवी भगवान् श्रीकृष्णके प्राणोंकी अधिष्ठात्री हैंय अतएव भगवान् इनके अधीन रहते हैं। भगवान् श्रीकृष्णके रासकी ये नित्यस्वामिनी हैं।

इन श्रीराधाके बिना भगवान् श्रीकृष्ण क्षणभर भी नहीं ठहर सकते। सम्पूर्ण कामनाओंको सिद्ध करनेके कारण इन देवीका नाम श्रीराधा हुआ है। यहाँ जितने मन्त्र उद्धृत हैं उनमें यह जो श्रीराधाका मन्त्र है,

इसका ऋषि मैं नारायण हूँ, गायत्री छन्द है, श्रीराधा इस मन्त्रकी देवता हैं। ताराबीज और शक्तिबीजको इनकी शक्ति कहा गया है।

यह विनियोग है।

ध्यान

इसके बाद रासेश्वरी भगवती श्रीराधाका सामवेदमें वर्णित पूर्वोक्त विधिके अनुसार ही

ध्यान करना चाहिये। भगवती श्रीराधाका वर्ण श्वेतचम्पकके समान है। इनका मुख ऐसा प्रतीत होता है, मानो शरद् ऋतुका चन्द्रमा हो। इनका श्रीविग्रह असंख्य चन्द्रमाके समान चमचमा रहा है।

आँखें शरद् ऋतुके विकसित कमलकी तुलना कर रही हैं। इनके अधर बिम्बाफलके समान, श्रोणी स्थूल और नितम्ब करधनी से अलंकृत हैं।

कुन्दपुष्पके सदृश इनकी स्वच्छ दन्तपंक्तिसे इनकी विचित्र शोभा होती है। पवित्र चिन्मय दिव्य रेशमी वस्त्र इन्होंने पहन रखे हैं। इनके प्रसन्न मुखपर मुसकान छायी हुई है। इनके विशाल उरोज हैं। रत्नमय भूषणोंसे विभूषित **ये देवी सदा 12 वर्षकी अवस्थाकी ही प्रतीत होती हैं। शृंगारकी मानो ये समुद्र हैं।**

भक्तोंपर कृपा करनेके लिये इनमें समय–समयपर चिन्ता उठा करती है। इन्होंने अपने केशोंमें मल्लिका और मालतीकी मालाओंको धारण कर रखा है, जिससे इनकी शोभा विचित्र हो रही है। इनके सभी अंग अत्यन्त सुकुमार हैं। रासमण्डलमें विराजमान होकर ये देवी सबको अभय प्रदान करती हैं। ये शान्तस्वरूपा देवी सदा शाश्वतयौवना बनी रहती हैं। गोपियोंकी स्वामिनी बनकर ये रत्नमय सिंहासनपर विराजमान हैं। ये परमेश्वरी देवी भगवान् श्रीकृष्णके प्राणोंकी अधिदेवता हैं। वेदोंने इनकी महिमाका वर्णन किया है।

नोट–

पद्म पुराण के पाताल खंड में 3 स्वयंसिद्ध युगल मंत्र भी दिये गये हैं जिन पर चारों वर्णों का अधिकार है और उनमें पंचपदी तत्काल निहाल कर देता है।

पूजा–

इस प्रकार हृदयमें ध्यान करके बाहर शालग्रामकी मूर्ति, कलश अथवा आठ दलवाले यन्त्रपर श्रीराधादेवीका आवाहन करके विधि पूर्वक पूजन करना चाहिये ।

1. क्रम यह है पहले देवीका आवाहन करे।

2. तत्पश्चात् आसन आदि समर्पण करे।
3. मूलमन्त्रका उच्चारण करके ये आसन आदि पदार्थ भगवतीके सम्मुख उपस्थित करने चाहिये।
4. उनके चरणोंमें पाद्य देनेका विधान है।
5. अर्घ्य मस्तकपर देना चाहिये ।
6. मुखके सम्मुख जल ले जाकर मूलमन्त्रसे तीन बार आचमन कराना चाहिये।
7. इसके अनन्तर मधुपर्क निवेदन करके श्रीराधाके लिये एक पयस्विनी गौ देनी चाहिये।
8. तत्पश्चात् उन्हें स्नानगृहमें पधराकर वहीं इनकी पूजा सम्पन्न करे।
9. तैल आदि सुगन्धित वस्तु लगाकर सविधि स्नान करानेके पश्चात्
10. दो वस्त्र अर्पण करे।
11. अनेक प्रकारके अलंकारोंसे अलंकृत करके चन्दन अर्पण करे।
12. अनेक प्रकारके पुष्पोंकी मालाएँ
13. तथा तुलसी निवेदन करे।
14. पारिजात और कमल आदि नाना प्रकारके पुष्प चढ़ावे।
15. तत्पश्चात् परमेश्वरी श्रीराधाके पवित्र परिवारका अर्चन करना चाहिये।
16. पूर्व, अग्निकोण और वायव्य दिशाके मध्यमें श्रीराधाके दिक्सम्बन्धी अंगकी पूजा होती है।
17. इसके बाद अष्टदल यन्त्रको आगे करके उसके अग्रभागमें मालावती,
18. अग्निकोणमें माधवी,
19. दक्षिण में रत्नमाला,
20. नैर्ऋत्यकोणमें सुशीला,
21. पश्चिममें शशिकला,
22. वायव्यकोणमें पारिजाता,
23. उत्तरमें पद्मावती
24. ईशानकोणमें सुन्दरी तथा
25. प्रियकारिणी—इन—इन दिशाओंके दलोंमें बुद्धिमान् पुरुष उपर्युक्त देवियोंकी पूजा करे।
26. यन्त्रपर ही दलके बाहर ब्रह्मा आदि देवताओं,
27. सामने भूमिपर दिक्पालों एवं वज्र आदि आयुधोंकी अर्चा करे—
28. इस प्रकार भगवती श्रीराधाकी पूजा करनी चाहिये।

नोट—

ये पूर्वकथित देवता देवीके आवरण हैं।

कम से कम कितनी माला —

1. इनके साथ गन्ध आदि उत्तम उपचारोंसे बुद्धिमान् पुरुष भगवती श्रीराधाकी अर्चना करे।
2. तदनन्तर इनके **<u>सहस्त्र नाम</u> (1000 नाम)का पाठ करके स्तुति करनी चाहिये ।**
3. **यत्नपूर्वक इन देवीके मन्त्रका नित्य <u>एक हजार</u> (10 माला)जप करनेका विधान है।**
4. **और जगन्मंगल राधा कवच का अनिवार्य पाठ करें ध्यान रहे बिना कवच के श्री राधा या किसी की भी उपासना करने पर विपरीत फल प्राप्त होता है**

5. **तथा हे श्रीराधाजू के प्यारे भक्तों एक बात और अति महत्वपूर्ण है वह यह कि जो मानव श्रीकृष्ण जी का भक्त है परंतु राधेरानी की पूजा न करके मात्र माधव की पूजा करता है उसकी उपासना सफल नही होती यह साक्षात भोलेनाथ ने कहा है।**
6. इस प्रकार जो पुरुष रासेश्वरी परमपूज्या श्रीराधा देवीकी अर्चना करते हैं, वे भगवान् विष्णुके समान हो हो जाते हैं गोलोकमें निवास करते हैं।
7. जो बुद्धिमान् पुरुष शुभ अवसरपर भगवती श्रीराधाका जन्मोत्सव मनाता है, उसे रासेश्वरी श्रीराधा अपना सांनिध्य प्रदान कर देती हैं।
8. गोलोकमें सदा निवास करनेवाली भगवती श्रीराधा किसी कारणसे वृन्दावनमें पधारीं थी।
9. यहाँ कहे हुए सम्पूर्ण मन्त्रों की वर्णसंख्या विधानके अनुसार होनी चाहिये। इसे पुरश्चरण कहा गया है।
10. इसमें मन्त्रका दशांश हवन करना चाहिये।
11. दूध, मधु और घृत आदि स्वादिष्ट पदार्थोंसे युक्त तिलोंद्वारा भक्तिसे सम्पन्न होकर हवन करे।

अब आप सम्यक् प्रकारसे स्तोत्र सुनानेकी कृपा करें, जिससे भगवती श्रीराधा प्रसन्न हो जाती हैं।

श्रीराधा स्तोत्र महिमा सहित

1. जो पुरुष त्रिकाल संध्या के समय भगवती श्रीराधाका स्मरण करते हुए उनके इस स्तोत्रका पाठ करता है, उसके लिये कभी कोई भी वस्तु किंचिन्मात्र भी दुर्लभ नहीं हो सकती।
2. आयु समाप्त होनेपर शरीरका त्यागकर वह बड़भागी पुरुष (इस भारत भूमि पर चाहे कहीं भी रहता हो फिर भी पाठ मात्र से)गोलोकमें जा रासमण्डलमें नित्य स्थान पाता है।
3. श्री राधा माधव के श्री चरणों में अनन्य भक्ति प्राप्त होती है.
4. संपूर्ण यज्ञ दान तीर्थ आदि का फल सुलभ हो जाता है। यह परम रहस्य जिस किसीके सामने नहीं कहना चाहिये। '

नारायण उवाच–

नमस्ते परमेशानि रासमण्डलवासिनि।
रासेश्वरि नमस्तेऽस्तु कृष्णप्राणाधिकप्रिये ॥

नमस्त्रैलोक्यजननि प्रसीद करुणार्णवे।
ब्रह्मविष्ण्वादिभिर्देवैर्वन्द्यमानपदाम्बुजे।।

नमः सरस्वतीरूपे नमः सावित्रि शंकरि ।
गंगापद्मावतीरूपे षष्ठि मङ्गलचण्डिके ॥

नमस्ते तुलसीरूपे नमो लक्ष्मीस्वरूपिणि ।
नमो दुर्गे भगवति नमस्ते सर्वरूपिणि॥

मूलप्रकृतिरूपां त्वां भजामः करुणार्णवाम् ।
संसारसागरादस्मानुद्धराम्ब दयां कुरु ॥

अर्थ–

भगवान् नारायण कहते हैं– भगवती परमेशानी! तुम रासमण्डलमें विराजमान रहती हो। तुम्हें नमस्कार है। रासेश्वरि ! भगवान् श्रीकृष्ण तुम्हें प्राणोंसे भी अधिक प्रिय मानते हैं, तुम्हें नमस्कार है। करुणार्णवे! तुम त्रिलोककी जननी हो, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। तुम मुझपर प्रसन्न होनेकी कृपा करो। ब्रह्मा, विष्णु आदि समस्त देवता तुम्हारे चरणकमलोंकी उपासना करते हैं। जगदम्बे! तुम सरस्वती, सावित्री, शंकरी, गंगा, पद्मावती और षष्ठी, मंगलचण्डिका इन रूपोंसे विराजती हो। – तुम्हें नमस्कार है। तुलसीरूपे! तुम्हें नमस्कार है। लक्ष्मीस्वरूपिणी! तुम्हें नमस्कार है। भगवती दुर्गे! तुम्हें नमस्कार है। सर्वरूपिणी! तुम्हें नमस्कार है। जननी! तुम मूलप्रकृतिस्वरूपा एवं करुणाकी सागर हो । हम तुम्हारी उपासना करते हैं, अतः तुम इस संसार–सागरसे हमारा उद्धार करनेकी कृपा करो।

फलश्रुति–

इदं स्तोत्रं त्रिसंध्यं यः पठेद् राधां स्मरन्नरः ।
न तस्य दुर्लभं किंचित्कदाचिच्च भविष्यति ॥

देहान्ते च वसेन्नित्यं गोलोके रासमण्डले ।
इदं रहस्यं परमं न चाख्येयं तु कस्यचित् ॥...............

श्रीराधा नाम का अर्थ

रसिकशेखर श्यामसुन्दर श्रीकृष्णने मन्द–मन्द मुस्कराती हुई अपनी उन प्रियतमाको देखा। प्राणवल्लभापर दृष्टि पड़ते ही विश्वकान्त श्रीकृष्ण मिलनके लिये उत्सुक हो गये। परम मनोहर कान्तिवाले प्राणवल्लभको देखते ही श्रीराधा उनके सामने दौड़ी गयीं। महेश्वरि ! उन्होंने अपने प्राणाराम की ओर धावन किया, इसीलिये पुराणवेत्ता महापुरुषोंने उनका 'राधा' यह सार्थक नाम निश्चित किया।

राधा श्रीकृष्णकी आराधना करती हैं और श्रीकृष्ण श्रीराधाकी। वे दोनों परस्पर आराध्य और आराधक हैं। संतोंका कथन है कि उनमें सभी दृष्टियोंसे पूर्णतः समता है। महेश्वरि! मेरे ईश्वर श्रीकृष्ण रासमें प्रियाजीके धावनकर्मका स्मरण करते हैं, इसीलिये वे उन्हें 'राधा' कहते हैं,

ऐसा श्रीशिव का अनुमान है।
आगे भोलेनाथ ने कहा कि हे दुर्गे! गौरी!

भक्त पुरुष **'रा'** शब्दके उच्चारणमात्रसे परम दुर्लभ मुक्तिको पा लेता है और **'धा'** शब्दके उच्चारणसे वह निश्चय ही श्रीहरिके चरणोंमें दौड़कर पहुँच जाता है।

'रा' का अर्थ है 'पाना'
और

'धा' का अर्थ है 'निर्वाण' (मोक्ष)। भक्तजन उनसे निर्वाण मुक्ति पाता है, इसलिये उन्हें 'राधा' कहा गया है। श्रीराधाके रोमकूपोंसे गोपियोंका समुदाय प्रकट हुआ है तथा श्रीकृष्णके रोमकूपोंसे सम्पूर्ण गोपोंका प्रादुर्भाव हुआ है।

हे श्री राधे कृपा करो !!!!!

वृंदासुत के पद–

1.जै जै राधा श्री वृषभानु सुता प्यारी!
तव महिमा कहि न सकहिं सारद हर सेष स्वयं कृष्ण मुरारी!!

वृंदावन श्री धाम तिहारो जहाँ बिराजौ संग हरि बनवारी!

सुंदर रूप तिहारो रसिकन भक्तन लागै सकल बिधि मनहारी!!

सहज सील करुणा की खानि सब भांति सदा मंगलकारी!

देहु बास सदा मोहि बृज को राधा 'वृंदासुत' की हितकारी!!

अर्थ)–श्री वृषभानु जी की पुत्री श्री राधा जी आप की सदा ही जय हो, आप की महिमा को कहने में शारदा,शिव,शेषनाग यहां तक भगवान श्रीकृष्ण स्वयं असमर्थ हैं! श्री धाम वृंदावन आपका धाम है जहां आप भगवान श्री कृष्ण के साथ निवास करती हैं,आपका सब प्रकार से सुंदर रूप भक्तों और रसिकों को अत्यंत सुंदर लगता है!आप अत्यंत सहज,शील ,करुणा की अगाध खान है और सब प्रकार से मंगलकारी हैं ,'वृंदासुत' की हितकारी श्री राधा मुझे श्री धाम वृंदावन का वास प्राप्त हो!

सुमिरु मन राधा–कृष्ण को नाम!
सुखराशि आनंदघन सब भांति रूप एकु धरे द्वै नाम!!
नाम युगलवर को ध्यावहिं सन्त रसिक शिव आठो याम!
युगल चरण रज मस्तक धरबै को सन्त बने बेल – बिटप श्रीधाम!!
कृपा कोर की छिन छिन बांट निहारत ठाडे एक ही पाम!
दया करहु एहि भांति प्रिया जु 'वृंदासुत' जपै युगलवर नाम!!

अर्थ)–अरे मन!श्रीराधा–कृष्ण के नाम का स्मरण कर,यद्यपि श्री राधा कृष्ण एक ही हैं फिर भी उनके ये दो नाम सुख की राशि,आनंद देने वाले बादल के समान हैं! स्वयं शिव,सन्त,रसिक आठो पहर इस युगल नाम का ध्यान करते हैं,इन्ही युगल के चरणों की रज को मस्तक पर धारण करने हेतु ब्रज धाम में अनेक संत वृक्ष लता–पता बन कर एक पैर पर दृढ़ खड़े हैं!युगल कृपा की राह देख रहे हैं,अब 'वृंदासुत' पर इस प्रकार कृपा कीजिये कि आपके इस युगल नाम जप वह सदा ध्यान करता रहे!

जय वृषभानु कुंवरि श्री श्यामा!
कृष्ण प्रिया वृन्दावन वासिनी कीरति नंदिनी शोभा धामा!!
नवल किशोरी अति रस भोरी अनुपम रूप रासि गुण धामा!
रास बिहारिनि रास रासेश्वरी जात बलिहार कोटि रति कामा!!
कुंज बिहारिनि रस बिस्तारिणी प्राण आधार श्री राधा श्यामा!
'वृंदासुत'बृज बास करै सुमिरै राधा नाम तजि जग कामा!!

अर्थ)–श्री वृषभानु जी की पुत्री श्री राधा जु की जय हो,आप श्री कृष्ण की प्रिय,वृन्दावन में वास करने वाली,कीर्ति जी की पुत्री,शोभा की धाम हैं!आपको सदैव किशोरावस्था में रहने के कारण किशोरी कहा जाता है,अत्यंत भोली,अनुपम रूप राशि की धनी एवं सद्गुणों की धाम हैं,आप रास–बिहारिणी,रास–राशेश्वरी हैं आपके रूप पर अनंत कोटि रति

बलिहार जाती हैं!आप कुंज बिहारिणी,रस का विस्तार करने वाली,भक्तों की प्राण आधार हैं,'वृंदासुत' राधा नाम का सुमिरन करते हुए सदा बृज धाम में वास करे!

'राधा' नाम की महिमा भारी!
धोखेहु जपत नाम राधा को होत अधीन कुंज बिहारी!!
ज्यों 'रा' बोलत कोउ जन मिटहिं त्रिबिध ताप होत सुखारी!
'धा' सुनतहि होत मुदित देत दरस राधा रमन बिहारी!!
सुमिरत नाम मिटहिं संताप सकल राधा नाम गति अति न्यारी!
ऐसे परम धन राधा नाम की 'वृन्दासुत'' लेत बलिहारी!!

अर्थ)–राधा नाम की अत्यंत भारी महिमा है,यदि कोई भूल से भी राधा नाम बोल दे तो श्री कृष्ण उसके अधीन हो जाते हैं!'रा' शब्द का उच्चारण करने से त्रिविध तापों का नाश हो जाता है,'धा' शब्द बोलते ही श्रीराधारमण प्रसन्न हो कर दर्शन दे देते हैं!राधा नाम का जाप करने से सभी प्रकार के तापों का नाश होता है,राधा नाम का प्रताप अनंत है,ऐसे परम धन स्वरूप श्रीराधा नाम की 'वृंदासुत' बलिहारी लेता है!

श्री राधा जु आयो शरण तिहारी!
सरल किशोरी दीनन हितकारी रसिक सिरोमनि प्यारी!!
अति आनंद भरी प्यारी जु जासु महिमा अति भारी!
भोरी सहज कृपालु प्रिया जु नेक निहारो कृपा की कोरी!!
बीति गइ मोरी आयु बहुतेरी शेष रही अब अति थोरी!
''वृंदासुत'' को मन ब्याकुल दरस करावहु वृषभानु किशोरी!!

अर्थ)–श्रीराधा जी मैं आपकी शरण मे आया हूँ,आप अत्यंत सरल,दीनों का हित करने वाली,रसिकों की शिरोमणि हैं!आप सदा,आनंद–उमंग से पूर्ण रहने वालीं आपकी महिमा अत्यंत अपार है,भोली,सरल,कृपा करने वालीं राधा जी मुझे कृपा की दृष्टि से देखिये!मेरी बहुत आयु नष्ट हो गयी जो बची है वो थोड़ी ही है,आपके दर्शन के लिए 'वृंदासुत'अत्यंत व्याकुल है उसको दर्शन देकर उसकी व्याकुलता शांत कीजिये!

दिन दूनो दुखु दुकालु दारिदु बढ़त है!
मोह मदमय मन रात्यो परनारि अनुदिन मरजाद घटत है!!
जो भावै सोइ करै कहइ सोइ जो मुख आवै असि पापी मन है!
काहुँ की सहत नाहिं पाप कुकर्म मानहिं ज्यों परम् धन है!!
ध्यानु–ग्यानु बचन–बिराग बरन–धरमु सकल मूर्छित परयो है!
''वृंदासुत''कलि तरिहैं जे जिन राधा नाम सदा उर धरयो है!!

अर्थ)–कलियुग में दो गुना गति से दुख,बुरा समय,दरिद्रता बढ़ रही है,मोह के नशे में चूर मन, परनारी में आकर्षण, दिनों दिन मर्यादा कम हो रही है!जिसको जो अच्छा लगता है वो वही करता है,जो मुख में आए सो बोलता है मन इस प्रकार पापमय होता जा रहा है,किसी दूसरे की करनी सही नही जाती और कुकर्मो से इस प्रकार लगाव है मानो

पाप कर्म परम धन ही हों! ध्यान, ज्ञान, वचन, वैराग्य, वर्ण व्यवस्था, धर्म कलिकाल में सब मूर्छित हुए पड़े हैं,'वृंदासुत' ऐसे भयानक कलियुग में एक मात्र वही तर निकलेंगे जिन्होंने राधा नाम आपने हृदय में धारण कर रखा है!

मोहि कोउ दूजो नाम नही जपने!
राधा नाम भरोसो इक मोहि बैठें–उठें,जागत–बागत,सोये,सपने!!
दास तिहारो जद्यपि मूरख तद्यपि श्री राधा मानहुँ दास अपने!
राधा जो मुख फेरो आसरो दूजो न मोहि इंहा सकल निरपने!!
ज्ञान–बिग्यान रहित उर मेरो काम–क्रोध–मद–लोभ के मेघ छाए घने!
राधा नाम कृपा बरखा सों होहिहै पुनीत "वृंदासुत" पाप सने!!

अर्थ)–मुझे कोई दूसरा नाम नही जपना है,जागते–सोते,सपने में,उठते–बैठते मुझे एकमात्र राधा नाम का ही भरोसा है!वैसे तो आपका यह दास मूर्ख है लेकिन फिर भी श्रीराधा इसको अपना मानिए,यदि आप मुझसे मुंह फेर लेंगी तो मै कहां जाऊंगा?कोई दूसरा सहारा भी नही है यहां सब पराये हैं!मेरा हृदय ज्ञान–विज्ञान से रहित है,मेरे हृदय में तो केवल काम–क्रोध–मद–लोभ के ही घने बादल छाए हैं,किन्तु राधा नाम रूपी वर्षा से 'वृंदासुत' भी विकार रहित होकर पवित्र हो जाएगा!

सुनहु श्यामा कछु बिनती मोरी!
केंहि भांति करौं अस्तुति तोरी मोरि मति अति थोरी!!
पूजा जप तप नेम रहित अभिमान रह्यो मोहि भारी!
मम समान गुणवान नही कोउ अस बिचारि रहूं सुखारी!!
सब द्वारे मैं जाए निहारो लै लै नाम सबहि को पुकार करी!
बरसाने 'वृंदासुत' पुकार करै अब कृपा करहुं वृषभानु दुलारी!!

अर्थ)–श्री राधा जी मेरी थोड़ी प्रार्थना सुनिए,मेरी बुद्धि अत्यंत कम है आपकी स्तुति मैं किस प्रकार करूँ?मैं पूर्णतयः पूजा,जाप,नियम,तपस्या से रहित अति अभिमानी हूँ,मेरे जैसा गुणवान कोई दूसरा नही है ऐसा विचार कर के मैं सदा खुश रहता हूं!मैंने सबके द्वार पर जा–जाकर सबको पुकारा किसी ने मुझ सरीखे अभिमानी को शरण नही दी,अब बरसाना धाम में आकर 'वृंदासुत' आपको बुला रहा है हे वृषभानु जी की पुत्री उस पर कृपा कीजिये!

अतः हे परशुराम!

जो इस स्तोत्र से (मेरे भद्रकाली रूप का ध्यान करके)

मेरी स्तुती करता है उस भक्त का भय तत्काल दूर हो जाता है वह त्रिलोक में पूजित, त्रैलोक्य विजयी, ज्ञानियों में श्रेष्ठ,गुरुओं का भी गुरु, शत्रु पक्ष का विमर्दन करने वाला और साक्षात् परात्पर ब्रह्म व शिवस्वरूप को प्राप्त हो जाता है।

हे शिवशिष्य! हे परशुराम !अतिशीघ्र भयंकर से भी भयंकर शत्रुओं के क्षय के लिए मैं ही चमुण्डा रूप में लीलारत हूँ और माधव ही सृष्टि के संहार और ज्ञानदाता गुरु रूप अर्थात् महादेव रूप में लीलारत हैं।

जिनको यह स्तोत्र ज्ञात हो वे महान भक्त कृपया शांत बने रहें।

राधे रानी का एक स्तोत्र और सुनो–इसके पाठ से समस्त संतों की सेवा का महापुण्य प्राप्त हो जाता है चारों वेद, छः शास्त्र, सभी उपनिषदों के स्वाध्याय के अलावा, समस्त प्रकार के यज्ञ, दान और तीर्थों का फल भी प्राप्त हो जाता है और जितने भी व्रत इस भूमण्डल पर बताए गए हैं उन सभी व्रतों का फल भी जप करने वाले को प्राप्त हो जाता है तथा मन में जो कामना होती है वह अवश्य ही सिद्ध होती है। यह स्तोत्र श्रीराधे रानी के 16 नामों से युक्त है जो निष्काम भाव से जपने पर परम मंगल का दाता है।

राधा रासेश्वरी रासवासिनी रसिकेश्वरी।
कृष्णप्राणाधिका कृष्णप्रिया कृष्णस्वरूपिणी।।

कृष्णवामांगसम्भूता परमानन्दरूपिणी।
कृष्णा वृन्दावनी वृन्दा वृन्दावनविनोदिनी।।

चन्द्रावली चन्द्रकान्ता शरच्चन्द्रप्रभानना।
नामान्येतानि साराणि तेषामभ्यन्तराणि च।।

राधेत्येवं च संसिद्धौ राकारो दानवाचकः।
स्वयं निर्वाणदात्री या सा राधा परिकीर्तिता।।

रासेश्वरस्य पत्नीयं तेन रासेश्वरी स्मृता।
रासे च वासो यस्याश्च तेन सा रासवासिनी।।

सर्वासां रसिकानां च देवीनामीश्वरी परा।
प्रवदन्ति पुरा सन्तस्तेन तां रसिकेश्वरीम्।।

प्राणाधिका प्रेयसी सा कृष्णस्य परमात्मनः।
कृष्णप्राणाधिका सा च कृष्णेन परिकीर्तिता।।

कृष्णस्यातिप्रिया कान्ता कृष्णो वास्याः प्रियः सदा।
सर्वैर्देवगणैरुक्ता तेन कृष्णप्रिया स्मृता।।

कृष्णरूपं संनिधातुं या शक्ता चावलीलया।
सर्वांशःकृष्णसदृशी तेन कृष्णस्वरूपिणी।।

वामांगार्द्धेन कृष्णस्य या सम्भूता परा सती।
कृष्णवामांगसम्भूता तेन कृष्णेन कीर्तिता।।

परमानन्दराशिश्च स्वयं मूर्तिमती सती।
श्रुतिभिः कीर्तिता तेन परमानन्दरूपिणी।।

कृषिमोक्षार्थवचनो ण एवोत्कृष्टवाचकः।
आकारो दातृवचनस्तेनकृष्णा प्रकीर्तिता।।

अस्ति वृन्दावनं यस्यास्तेन वृन्दावनी स्मृता।
वृन्दावनस्याधिदेवी तेन वाथ प्रकीर्तिता।।

संघः सखीनां वृन्दः स्यादकारोऽप्यस्तिवाचकः।
सखिवृन्दोऽस्ति यस्याश्च सा वृन्दा परिकीर्तिता।।

वृन्दावने विनोदच सोऽस्या ह्यस्ति च तत्र वै।
वेदा वदन्ति तां तेन वृन्दावनविनोदिनीम्।।

नखचन्द्रावलीवक्त्रचन्द्रोऽस्ति यत्र संततम्।
तेन चन्द्रावली सा च कृष्णेन परिकीर्तिता।।

कान्तिरस्ति चन्द्रतुल्या सदा यस्या दिवानिशम्।
मुनिना कीर्तिता तेन शरच्चन्द्रप्रभानना।।

इदं षोडशनामोक्तमर्थव्याख्यानसंयुतम्।
नारायणेन यद्दतं ब्रह्मणे नाभिपंकजे।।

ब्रह्मणा च पुरा दत्तं धर्माय जनकाय मे।
धर्मेण कृपया दत्तं मह्यमादित्यपर्वणि।।

और यदि अतिरिक्त समय हो तो दो स्तोत्र और सुनो–परंतु साथ में एक राधेरानी का कवच है उसका पाठ उपर्युक्त दोनों या एक स्तोत्र के बाद अवश्य ही करें; क्योंकि कवच के पाठ से स्तोत्र का अनंत गुना फल हो जाता है तथा रक्षा भी होती है।

विरह कष्टनाशक राधिका स्तोत्र–

प्रेमिका या प्रेमी जो वासनाहीन हो उससे मिलन करवाकर नेत्रों की प्यास बुझाने वाला यह स्तोत्र है। इस स्तोत्र से जन्म जन्मांतरों के बिछडे साथी से भी मिलन होता है। हम एक एकांतवासी हैं अतः नारी संबंधित प्रेमालाप या विरह संताप या प्रेम पर अधिक नही लिख सकते पर 23 वीं चतुर्युगी में जो श्रीराम की विरह अवस्था थी वह भयंकर थी वाल्मिकी रामायण के अरण्यकांड के सर्ग 60,61,62, व 63 में श्रीराम सीता के वियोग में यह तक कह बैठे कि अब में मैथिली के बिना नहीं जी सकता। सर्ग 60 श्लोक 22 में वे प्रियतमा के वियोग में पागलों की तरह हो गए थे उनकी ये लीला नहीं अपितु प्रेम के अश्रु थे मुद्दा ये नहीं किवह तो छाया सीता थी पर वे पत्नी वियोग में सब कुछ विस्मृत कर गऐ। यही था सच्चा प्रेम।

देखों– 62.9 हा ममार्ये क्व याजासि ....आदि आदि............... पर ....

और जिनका विवाह नहीं हो पा रहा वे भी 360 दिन तक त्रिकाल पाठ करें तो गुणवती कन्या या गुणवान वर से निश्चित ही विवाह हो जाता है।और विवाहित पत्नि रूठकर कहीं चली जाए तो 30 दिन के पाठ से पुनः वापस आ जाती है अथवा निष्काम भाव से जपें तो परमगति प्राप्त हो जाती है। ब्रह्मवैवर्त पुराण के

अनुसार **इसी स्तोत्र से राम जी को सीता व रुद्रदेव को सती तथा क्षीरसागर के प्रभु को रमा की प्राप्ति हुई पर इस स्तुति के साथ श्रीराधा कवच भी अनिवार्य पढे।**

आरंभ–

श्रीकृष्ण बोले–सुमुखि श्रीराधे! क्या मैं इसी प्रकार तुम्हारा प्रिय हूँ और मुझमें तुम्हारी प्रीति है? तुम्हारी वाणीमें जो छलना थी, वहआज अच्छी तरह प्रकट हो गयी। 'हेकृष्ण! तुम मेरे प्राण हो, जीवात्मा हो' इस तरहकी बातें जो तुम नित्य–निरन्तर प्रेमपूर्वक कहा करती थीं, वे अब तत्काल कहाँ चली गयीं? मैं पहले तुम्हारे सामने जो कुछ कहता था, मेरा वचन आज भी ध्रुव सत्य है। 'तुम मेरे पाँचों प्राणोंकी अधिष्ठात्री देवी हो', 'राधा मेरे लिये प्राणोंसे भी बढ़कर प्रिय है' मेरी ये बातें जैसे पहले सत्य थीं, उसी तरह आज भी हैं। मैं तुम्हें अपने पास रखने में समर्थ न हो सका, अतः तुम्हारे बिना मेरे प्राण चले जा रहे हैं। अधिष्ठात्री देवीके बिना कौन कहाँजीवित रह सकता है? तुम महाविष्णुकी माता, मूल प्रकृति ईश्वरी हो। अपनी कलासे तुम सगुणरूप में प्रकट होती हो। स्वयं तो निर्गुणा प्राकृत गुणोंसे रहित ही हो। ज्योतिःपुञ्ज ही तुम्हारा स्वरूप है।

तुम वास्तवमें निराकार हो। भक्तोंपर अनुग्रहकरनेके लिये ही तुम रूप धारण करती हो। भक्तोंकी विभिन्न रुचिके कारण नाना प्रकारकी मूर्तियाँ ग्रहण करती हो। वैकुण्ठमें महालक्ष्मी और सरस्वतीके रूपमें तुम्हारा ही निवास है। पुण्यक्षेत्र भारतवर्षमें सत्पुरुषोंकी जननी भी तुम्हीं हो। सती और पार्वतीके रूपमें तुम्हारा ही प्राकट्य हुआ है तुम्हीं पुण्यरूपा तुलसी और भुवनपावनी गंगा हो। ब्रह्मलोकमें सावित्रीके रूपमें तुम्हीं रहती हो। तुम्हीं अपनी कलासे वसुन्धरा हुई हो, गोलोकमें तुम्हीं समस्त गोपालोंकी अधीश्वरी राधा हो। तुम्हारे बिना मैं निर्जीव हूँ। किसी भी कर्मको करनेमें असमर्थ हूँ। तुम्हें शक्तिके रूपमें पाकर ही शिव शक्तिमान् हैं, तुम्हारे बिना वे शिव नहीं, शव हैं। तुम्हें ही वेदमाता सावित्रीके रूपमें अपने साथ पाकर साक्षात् ब्रह्माजी वेदों के प्राकट्यकर्ता माने गये हैं।

मैं, तुम लक्ष्मीका सहयोग मिलनेसे ही जगत् का पालन करता हूँ। तुम्हीं दक्षिणारूपसे साथ रहती हो, इसलिये यज्ञ फल देता है। तुम्हें पृथ्वीके रूपमें मस्तकपर धारण करके ही शेषनाग, सृष्टिका संरक्षण करते हैं। गंगाधर शिव, तुम्हें ही गंगारूपमें अपने मस्तकपर धारण करते हैं। तुमसे ही सारा जगत् शक्तिमान् है तुम्हारे बिना सब कुछ शव के तुल्य है। तुम वाणी हो। तुम्हें पाकर ही सब लोग वक्ता बनते हैं। तुम्हारे बिना पौराणिक सूत भी मूक हो जाता है तुम प्रकृति देवीके साथ ही मैं सृष्टि–रचनामें सफल होता हूँ। तुम्हारे बिना मैं सर्वत्र जड़ हूँकहीं भी शक्तिमान् नहीं हूँ। तुम्हीं सर्वशक्तिस्वरूपा होअतः मेरे निकट आओ।

अग्निमें तुम्हीं दाहिकाशक्ति हो तुम्हारे बिना अग्नि दाहकर्ममें समर्थ नहीं हैं। चन्द्रमामें तुम्हीं शोभा बनकर रहती हो तुम्हारे बिना चन्द्रमा सुन्दर नहीं लगेगा। सूर्यमें तुम्ही प्रभा हो तुम्हारे बिना सूर्यदेव प्रभापूर्ण नहीं रह सकते। प्रिये! तुम्हीं रति हो तुम्हारे बिना कामदेव कामिनियोंके प्राणवल्लभ नहीं हो सकते।

श्रीजगन्मङ्गल कवच

विनियोग

ऊँ अस्य श्रीजगन्मङ्गलकवचस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्री छन्दः स्वयं रासेश्वरी देवता श्रीकृष्णभक्तिसम्प्राप्तौ विनियोगः।

इस जगन्मङ्गल राधाकवचके प्रजापति ऋषि हैं, गायत्री छन्द है, स्वयं रासेश्वरी देवता हैं, श्रीकृष्णभक्ति–प्राप्तिके लिये इसका विनियोग बताया गया है।

ऊँ राधायै स्वाहा।यह मन्त्र कल्पवृक्षके समान मनोवाञ्छित फल देनेवाला है और श्रीकृष्ण ने इसकी उपासना की है। यह मेरे मस्तककी रक्षा करे। **'ऊँह्रीं श्रीं राधिकायै स्वाहा।'** यह मन्त्र मेरे कपालकी तथा दोनों नेत्रों और

कानोंकी सदा रक्षा करे। **'ऊँ रां ह्रीं श्रीं राधिकायै स्वाहा।'** यह मन्त्रराज सदा मेरे मस्तक और केशसमूहोंकी रक्षा करे।**'ऊँ रां राधायै स्वाहा।'** यह सर्वसिद्धिदायक मन्त्र मेरे कपोल, नासिका और मुखकी रक्षा करे।

'ऊँ क्लीं श्रीं कृष्णप्रियायै नमः।' यह मन्त्र मेरे कण्ठकी रक्षा करे। **'ऊँ रां रासेश्वर्यै नमः।'** यह मन्त्र मेरे कंधेकी रक्षा करे। **'ऊँ रां रासविलासिन्यैस्वाहा।'** यह मन्त्र मेरे पृष्ठभागकी सदा रक्षा करे।**'ऊँ वृन्दावनविलासिन्यै स्वाहा।'** यह मन्त्र वक्षःस्थलकी सदा रक्षा करे। **'ऊँ तुलसीवनवासिन्यै स्वाहा।'** यह मन्त्र नितम्बकी रक्षा करे। **'ऊँ कृष्णप्राणाधिकायै स्वाहा।'** यह मन्त्र दोनों चरणों तथा सम्पूर्ण अङ्गोंकी सदा सब ओरसे रक्षाकरे। राधा पूर्व दिशामें मेरी रक्षा करें। कृष्णप्रिया, अग्निकोणमें मेरा पालन करें। रासेश्वरी, दक्षिणदिशा में मेरी रक्षा का भार संभालें। गोपीश्वरी, नैर्ऋत्यकोणमें मेरा संरक्षण करें। निर्गुणा पश्चिम तथा कृष्णपूजिता वायव्यकोणमें मेरा पालन करें। मूलप्रकृति ईश्वरी उत्तरदिशामें निरन्तर मेरे संरक्षण में लगी रहें। सर्वपूजिता, सर्वेश्वरी सदा ईशानकोणमें मेरी रक्षा करें।महाविष्णु–जननी जल, स्थल, आकाश, स्वप्न और जागरणमें सदा सब ओरसे मेरा संरक्षण करें।

दुर्गे! यह परम उत्तम श्रीजगन्मङ्गलकवच मैंने तुमसे कहा है यह गूढ़ से भी परम गूढ़तर तत्त्वहै। इसका उपदेश हर एकको नहीं देना चाहिये। जो अपना शिष्य और श्रीकृष्णभक्त ब्राह्मण हो, उसीके समक्ष इस कवचको प्रकाशित करे। जो शठ तथा दूसरेका शिष्य हो, उसको इसका उपदेश देनेसे मृत्युकी प्राप्ति होती है। प्रिये! राज्य दे दे,अपना मस्तक कटा दे परंतु अनधिकारी को यह कवच न दे। मैंने गोलोकमें देखा था कि साक्षात् परमात्मा श्रीकृष्णने भक्तिभावसे अपने कण्ठमें इसको धारण किया था। पूर्वकालमें ब्रह्मा और विष्णुने भी इसे अपने गलेमें स्थान दिया था।

56. देवी सुरभि।

देवी श्रीराधा ही अपने एक अंश से देवी सुरभि हुई हैं। अतः अब सुनें –

गौशाला के संवर्धन के लिए गौ भक्त को देवी सुरभि के इस मंत्र का 100000 बार जप करके सिद्ध कर लेना चाहिए ताकि गायों के पालन पोषण या देखकर में समस्या न हो। गाय भले ही सुरभि स्वरूपा हैं पर रक्षा के लिए अनुष्ठान अनिवार्य ही है।

पूर्वकालमें भगवान् श्रीकृष्णने देवी सुरभीकी पूजा की थी। तत्पश्चात् त्रिलोकीमें उस देवीकी दुर्लभ पूजाका प्रचार हो गया। दीपावलीके दूसरे दिन भगवान् श्रीकृष्णकी आज्ञासे देवी सुरभीकी पूजा सम्पन्न हुई थी। यह प्रसङ्ग नारायण भी अपने पिता धर्मके मुखसे सुन चुके हैं ।

देवी सुरभीका ध्यान, स्तोत्र, मूलमन्त्र तथा पूजाकी विधिका वेदोक्त क्रम   सुनो।

'ॐ सुरभ्यै नमः' सुरभीदेवीका यह षडक्षर–मन्त्र है।

एक लाख जप करनेपर मन्त्र सिद्ध होकर भक्तोंके लिये कल्पवृक्षका काम करता है।

ध्यान और पूजन यजुर्वेदमें सम्यक् प्रकारसे वर्णित हैं। जो ऋद्धि, वृद्धि, मुक्ति और सम्पूर्ण कामनाओंको देनेवाली हैं;

जो लक्ष्मीस्वरूपा, श्रीराधाकी सहचरी, गौओंकी अधिष्ठात्री, गौओंकी आदिजननी, पवित्ररूपा, पूजनीया, भक्तोंके अखिल मनोरथ सिद्ध करनेवाली हैं तथा जिनसे यह सारा विश्व पावन बना है, उन भगवती सुरभीकी मैं उपासना करता हूँ।

पूजा कहाँ करें –

कलश, गायके मस्तक, गौओंके बाँधनेके खंभे, शालग्रामकी मूर्ति, जल अथवा अग्निमें देवी सुरभीकी भावना करके द्विज इनकी पूजा करें।

नोट –

जो दीपमालिकाके दूसरे दिन पूर्वाह्नकालमें भक्तिपूर्वक भगवती सुरभीकी पूजा करेगा, वह जगत्में पूज्य हो जायेगा।

माहात्म्य–

एक बार वाराहकल्पमें देवी सुरभीने दूध देना बंद कर दिया। उस समय त्रिलोकीमें दूधका अभाव हो गया था। तब देवता अत्यन्त चिन्तित होकर ब्रह्मलोकमें गये और ब्रह्माजीकी स्तुति करने लगे। तदनन्तर ब्रह्माजीकी आज्ञा पाकर इन्द्रने देवी सुरभीकी स्तुति आरम्भ की।

स्तोत्र–

इन्द्रने कहा– देवी एवं महादेवी सुरभीको बार–बार नमस्कार है। जगदम्बिके ! तुम गौओंकी बीजस्वरूपा हो; तुम्हें नमस्कार है। तुम श्रीराधाको प्रिय हो, तुम्हें नमस्कार है। तुम लक्ष्मीकी अंशभूता हो, तुम्हें बार–बार नमस्कार है। श्रीकृष्ण– प्रियाको नमस्कार है। गौओंकी माताको बार–बार नमस्कार है। जो सबके लिये कल्पवृक्षस्वरूपा तथा श्री, धन

और वृद्धि प्रदान करनेवाली हैं, उन भगवती सुरभीको बार–बार नमस्कार है। शुभदा, प्रसन्ना और गोप्रदायिनी सुरभी देवीको बार–बार नमस्कार है। यश और कीर्ति प्रदान करनेवाली धर्मज्ञा देवीको बार–बार नमस्कार है।

ध्यान और पूजन के बाद

इस स्तोत्र का एक पाठ करें तदोपरान्त इस महामंत्र का नित्य 51माला 21 दिन तक । इससे देवी का यह मंत्र कल्पवृक्ष का कार्य करेगा। यह मंत्र सिद्ध पुरुष या गुरु से सुनकर या दीक्षा में लेकर ही आराधना आरंभ करें।

●●●●●●स्तोत्र●●●●●●

महेन्द्र उवाच

नमो देव्यै महादेव्यै सुरभ्यै च नमो नमः।
गवां बीजस्वरूपायै नमस्ते जगदम्बिके।।1।।

नमो राधाप्रियायै च पद्मांशायै नमो नमः।
नमः कृष्णप्रियायै च गवां मात्रे नमो नमः।।2।।

अर्थ

देवी एवं महादेवी सुरभि को बार–बार नमस्कार है। जगदम्बिके! तुम गौओं की बीजस्वरुपा हो, तुम्हें नमस्कार है। तुम श्रीराधा को प्रिय हो, तुम्हें नमस्कार है। तुम लक्ष्मी की अंशभूता हो, तुम्हें बार–बार नमस्कार है। श्रीकृष्णप्रिया को नमस्कार है। गौओं की माता को बार–बार नमस्कार है।

कल्पवृक्षस्वरूपायै सर्वेषां सततं परम् ।
श्रीदायै धनदायै च बुद्धिदायै नमो नमः।।3।।

शुभदायै प्रसन्नायै गोप्रदायै नमो नमः।
यशोदायै सौख्यदायै धर्मज्ञायै नमो नमः।।4।।

अर्थ–

जो सबके लिए कल्पवृक्षस्वरूपा तथा श्री, धन और बुद्धि प्रदान करने वाली हैं, उन भगवती सुरभि को बार–बार नमस्कार है। शुभदा, प्रसन्ना और गोप्रदायिनी सुरभि देवी को बार–बार नमस्कार है। यश और सौख्य प्रदान करने वाली धर्मज्ञा देवी को बार–बार नमस्कार है।

स्तोत्रस्मरणमात्रेण तुष्टा हृष्टा जगत्प्रसूः।
आविर्बभूवतत्रैव ब्रह्मलोके सनातनी।।5।।

महेन्द्राय वरं दत्त्वा वांछितं सर्वदुर्लभम् ।
जगाम सा च गोलोकं ययुर्देवादयो गृहम् ।।6।।

अर्थ–

इस प्रकार स्तुति सुनते ही सनातनी जगज्जननी भगवती सुरभि संतुष्ट और प्रसन्न हो उस ब्रह्मलोक में ही प्रकट हो गईं। देवराज इन्द्र को परम दुर्लभ मनोवांछित वर देकर वे पुनः गोलोक को चली गईं, देवता भी अपने–अपने स्थानों को चले गए।

बभूव विश्वं सहसा दुग्धपूर्णं च नारद।
दुग्धाद्घृतं ततो यज्ञस्ततःप्रीतिः सुरस्य च।।7।।

अर्थ –

नारद! फिर तो सारा विश्व सहसा दूध से परिपूर्ण हो गया। दूध से घृत बना और घृत से यज्ञ संपन्न होने लगे तथा उनसे देवता संतुष्ट हुए।

इदं स्तोत्रं महापुण्यं भक्तियुक्तश्च यः पठेत् ।
स गोमान् धनवांश्चैव कीर्तिवान् पुण्यवान् भवेत् ।।8।।

अर्थ–

जो मानव इस महान पवित्र स्तोत्र का भक्तिपूर्वक पाठ करेगा, वह गोधन से संपन्न, प्रचुर संपत्ति वाला, परम यशस्वी और पुत्रवान हो जाएगा।

सुस्नातः सर्वतीर्थेषु सर्वयज्ञेषु दीक्षितः।
इह लोके सुखं भुक्त्वा यात्यन्ते कृष्णमन्दिरम् ।।9।।

अर्थ –

उसे संपूर्ण तीर्थों में स्नान करने तथा अखिल यज्ञों में दीक्षित होने का फल सुलभ होगा। ऐसा पुरुष इस लोक में सुख भोगकर अन्त में भगवान श्रीकृष्ण के धाम में चला जाता है।

सुचिरं निवसेत्तत्र कुरुते कृष्णसेवनम् ।
न पुनर्भवनं तस्य ब्रह्मपुत्र भवे भवेत् ।।10।।

।।इति श्रीब्रह्मवैवर्तमहापुराणे प्रकृतिखण्डे महेन्द्रकृतं सुरभिस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

अर्थ –

चिरकाल तक वहाँ रहकर भगवान की सेवा करता रहता है। हे ब्रह्मपुत्र नारद ! उसे पुनः इस संसार में नहीं आना पड़ता है।

इस प्रकार श्रीब्रह्मवैवर्तमहापुराण के प्रकृति खण्ड में महेन्द्रकृत सुरभिस्तोत्र पूरा हुआ।

57.माँ जानकी

जय माँ जानकी – सीता मां देवी लक्ष्मी ही है उनकी कृपा से धन संपदा आती ही है। हर हरि सेवकों का कर्तव्य है कि वे प्रभु के लिए देवी को मनाएं।

जय माँ सीता ....जय जय जनक– दुलारी

अध्याय 47 में जिन कमला देवी का वर्णन हैं वे तत्वतः ये ही हैं। इनकी कला ही देवी दक्षिणा हैं जिनका वर्णन अध्याय 41 में हुआ है।

हर हरिभक्त का कर्तव्य है कि वह जानकी माता के प्रकाट्य दिवस पर या नित्य ही संभव हो तो देवी जनक दुलारी श्री राम वल्लभा के 108 नाम या 1000 नाम का पाठ करें।

या अपने इष्ट के कवच का पाठ करके वह फल श्रीसीता मातेश्वरी को अर्पण करें।

मर्यादित जीवन की लीला करने वाले श्री राम भगवान साक्षात् श्री नारायण ही हैं जो आप लोग सत्यनारायण की कथा सुनने हो वे सत्यनारायण ये श्रीराम ही हैं।इनकी सेवा करने वाली परात्परा देवी लव कुश की माँ ही वैष्णवीय पराशक्ति है।

अगस्तिरुवाच–

एवं सुतीष्ण सीतायाः कवचं ते मयेरितं ।
अतः परं श्रुणुष्वान्यत् सीतायाः स्तोत्रमुत्तमं ॥ १

यस्मिनष्टोत्तरशतं सीतानामानि सन्ति हि ।
अष्टोत्तरशतं सीता नाम्नां स्तोत्र मनुत्तमम् ॥ २

ये पठन्ति नरास्त्वत्र तेषां च सफलो भवः ।
ते धन्या मानवा लोके ते वैकुण्ठं व्रजन्ति हि ॥ ३

विनियोग –

अस्य श्री सीतानामाष्टोत्तरशतमन्त्रस्य– अगस्त्य ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । रमेति बीजं । मातुलिङ्गीति शक्तिः । पद्माक्षजेति कीलकं । अवनिजेत्यस्त्रं । जनकजेति कवचं । मूलकासुर मर्दिनीति परमो मन्त्रः । श्री सीतारामचन्द्र प्रीत्यर्थं सकल कामना सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः ॥

करन्यासः ॥

ॐ सीतायै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ रमायै तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ मातुलुङ्ग्यै मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ पद्माक्षजायै अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ अवनिजायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ॐ जनकजायै करतल करपृष्ठाभ्यां नमः ॥

अङ्गन्यासः ॥

ॐ सीतायै हृदयाय नमः ।

ॐ रमायै शिरसे स्वाहा ।

ॐ मातुलुङ्ग्यै शिखायै वषट् ।

ॐ पद्माक्षजायै नेत्रत्रयाय वौषट् ।

ॐ जनकात्मजायै अस्त्राय फट् ।

ॐ मूलकासुरमर्दिन्यै इति दिग्बन्धः ॥

अथ ध्यानम् ॥

वामाङ्गे रघुनायकस्य रुचिरे या संस्थिता शोभना या विप्राधिपयान–रम्य–नयना या विप्रपालानना । विद्युत्पुञ्ज विराजमान वसना भक्तार्ति सङ्खण्डना श्रीमद् राघव पादपद्मयुगल न्यस्तेक्षणा सावतु ॥

(जो एक सुन्दर सिंहासन पर भगवान श्रीहरि के वामांग में विराजमान है जिनके नयन मृगनयन के समान सुन्दर हैं

जो चंद्रमुखी अर्थात चंद्रमा के समान मुख वाली हैं जो ऐसे वस्त्र धारण किए हुए हैं जो बिजली के समूह की तरह दमक रहे हैं जो अपने भक्तों की पीड़ा दूर करने में कुछ संकोच नहीं करती और तत्काल उन भक्तों के दुख दूर कर देती हैं जिनके नेत्र श्रीराम चन्द्र जी के चरण कमलों में लगे हैं वे सीता रूप में पराशक्ति हमारी रक्षा करें।

(रक्षा करें रक्षा करें)

●अथ श्रीसीता अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्●

श्री सीता जानकी देवी वैदेही राघवप्रिया ।
रमावनिसुता रामा राक्षसान्त प्रकारिणी ॥ १

रत्नगुप्ता मातुलिङ्गी मैथिली भक्ततोषदा ।
पद्माक्षजा कञ्जनेत्रा स्मितास्या नूपुरस्वना ॥ २

वैकुण्ठनिलया मा श्रीर्मुक्तिदा कामपूरणी ।
नृपात्मजा हेमवर्णा मृदुलाङ्गी सुभाषिणी ॥ ३

कुशाम्बिका दिव्यदा च लवमाता मनोहरा ।
हनूमद् वन्दितपदा मुग्धा केयूर धारिणी ॥ ४

अशोकवन मध्यस्था रावणादिकमोहिनी ।
विमानसंस्थिता सुभ्रूः सुकेशी रशनान्विता ॥ ५

रजोरूपा सत्वरूपा तामसी वह्निवासिनी ।
हेममृगासक्त चित्ता वाल्मीक्याश्रम वासिनी ॥ ६

पतिव्रता महामाया पीतकौशेय वासिनी ।
मृगनेत्रा च बिम्बोष्ठी धनुर्विद्या विशारदा ॥ ७

सौम्यरूपा दशरथस्नुषा चामर वीजिता ।
सुमेधा दुहिता दिव्यरूपा त्रैलोक्यपालिनि ॥ ८

अन्नपूर्णा महालक्ष्मीः धीर्लज्जा च सरस्वती ।
शान्तिः पुष्टिः क्षमा गौरी प्रभायोध्यानिवासिनी ॥ ९

वसन्तशीलता गौरी स्नान सन्तुष्ट मानसा ।
रमानाम भद्रसंस्था हेमकुम्भ पयोधरा ॥ १०

सुरार्चिता धृतिः कान्तिः स्मृतिर्मेधा विभावरी ।
लघूदरा वरारोहा हेमकङ्कण मण्डिता ॥ ११

द्विजपत्न्यर्पित निजभूषा राघव तोषिणी ।
श्रीराम सेवनरता रत्नताटङ्क धारिणी ॥ १२

रामावामाङ्ग संस्था च रामचन्द्रैक रञ्जिनी ।
सरयूजल सङ्कीडा कारिणी राममोहिनी ॥ १३

सुवर्ण तुलिता पुण्या पुण्यकीर्तिः कलावती ।
कलकण्ठा कम्बुकण्ठा रम्भोरूर्गजगामिनी ॥ १४

रामार्पितमना रामवन्दिता रामवल्लभा ।
श्रीरामपद चिह्नांका राम रामेति भाषिणी ॥ १५

रामपर्यङ्क शयना रामांघ्रिक्षालिनी वरा ।
कामधेन्वन्न सन्तुष्टा मातुलुङ्गकरे धृता ॥ १६

दिव्यचन्दन संस्था श्रीर्मूलकासुर मर्दिनी ।
एवमष्टोत्तरशतं सीतानाम्नां सुपुण्यदम् ॥ १७

ये पठन्ति नरा भूम्यां ते धन्याः स्वर्गगामिनः ।
अष्टोत्तरशतं नाम्नां सीतायाः स्तोत्रमुत्तमम् ॥ १८

जपनीयं प्रयत्नेन सर्वदा भक्ति पूर्वकं ।
सति स्तोत्राण्यनेकानि पुण्यदानि महान्ति च ॥ १६

नानेन सदृशानीह तानि सर्वाणि भूसुर ।
स्तोत्राणामुत्तमं चेदं भुक्ति मुक्ति प्रदं नृणाम् ॥ २०

एवं सुतीष्ण ते प्रोक्तं अष्टोत्तरशतं शुभं ।
सीतानाम्नां पुण्यदं च श्रवणान् मङ्गल प्रदम् ॥ २१

नरैः प्रातः समुत्थाय पठितव्यं प्रयत्नतः ।
सीता पूजन कालेऽपि सर्व वाञ्छितदायकम् ॥ २२

इति श्री आनंद रामायणे श्रीसीताष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम् सम्पूर्णम्। ।

58. देवी मनसा

देवी मनसा का सुमिरण नाग व सर्प के भय का नाशक है इनका स्मरण विष का नाशक है। ये परम ज्ञानी होने से ज्ञानदात्री भी है। ये भगवती इसी मंवंतर के देवपिता–कश्यपजी की मानसी कन्या हैं तथा मनसे उद्दीप्त होती हैं, इसलिये 'मनसा' देवीके नामसे विख्यात हैं। कश्यप जी की सुपुत्री होने से ये इंद्र, वरुण, अर्यमा आदि की बहन हुईं। व 11 रुद्रों की भी बहन। व अनन्त कर्कोटक तक्षक आदि की बहन। तीनों समय इनका व नर्मदा देवी का स्मरण करने वाले के खानदान पर व स्वयं पर भी सर्प तथा जहर का भय नही होता।
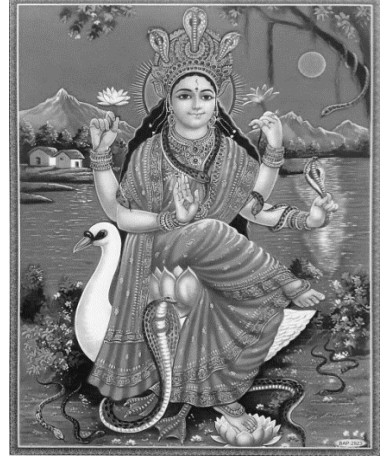
1. आत्मामें रमण करनेवाली इन सिद्धयोगिनी 3.वैष्णवीदेवीने तीन युगोंतक परब्रह्म भगवान् श्रीकृष्णकी तपस्या की है। गोपीपति परम प्रभु उन परमेश्वरने इनके वस्त्र और शरीरको जीर्ण देखकर इनका 'जरत्कारु' नाम रख दिया। साथ ही, उन कृपानिधिने कृपापूर्वक इनकी सभी अभिलाषाएँ पूर्ण कर दीं, इनकी पूजाका प्रचार किया और स्वयं भी इनकी पूजा की। स्वर्गमें, ब्रह्मलोकमें, भूमण्डलमें और पातालमें – सर्वत्र इनकी पूजा प्रचलित हुई।
2. सम्पूर्ण जगत्में ये अत्यधिक गौरवर्णा, सुन्दरी और मनोहारिणी हैंय अतएव ये साध्वी देवी 'जगगौरी' के नामसे विख्यात होकर सम्मान प्राप्त करती हैं।
3. भगवान् शिवसे शिक्षा प्राप्त करनेके कारण ये देवी 'शैवी' कहलाती हैं।
4. भगवान् विष्णुकी ये अनन्य उपासिका हैं। अतएव लोग इन्हें 'वैष्णवी' कहते हैं।
5. इसी चतुर्युगी के कलि के आरंभ में राजा जनमेजयके यज्ञमें इन्हींके सत्प्रयत्नसे नागोंके प्राणोंकी रक्षा हुई थी, अतः इनका नाम 'नागेश्वरी' और 'नागभगिनी' पड़ गया।
6. विषका संहार करनेमें परम समर्थ होनेसे इनका एक नाम 'विषहरी' है।
7. इन्हें भगवान् शंकरसे योगसिद्धि प्राप्त हुई थी। अतः ये 'सिद्धयोगिनी' कहलाने लगीं।
8. इन्होंने शंकरसे महान् गोपनीय ज्ञान एवं मृतसंजीवनी नामक उत्तम विद्या प्राप्त की है, इस कारण विद्वान् पुरुष इन्हें 'महाज्ञानयुता' कहते हैं।
9. **ये परम तपस्विनी देवी मुनिवर आस्तीककी माता हैं। अतः ये देवी जगत्में सुप्रतिष्ठित होकर 'आस्तीकमाता' नामसे विख्यात हुई हैं।**
10. **जगत्पूज्य योगी महात्मा मुनिवर जरत्कारुकी प्यारी पत्नी होनेके कारण ये 'जरत्कारुप्रिया' नामसे विख्यात हुईं।**

जरत्कारु जगद्गौरी मनसा सिद्ध योगिनी ।
वैष्णवी नागभगिनी शैवी नागेश्वरी तथा ।।

जरत्कारूप्रियास्तीकमाता विषहरीति च ।
महाज्ञानयुता चौव सा देवी विश्व पूजिता।।

द्वादशैतानि नामानि पूजाकाले च यः पठेत।
तस्य नागभयं नास्ति तस्य वंशोद्भवस्य च ।।

(ब्रह्म वैवर्त पुराण प्रकृतिखण्ड अध्याय 45)

अर्थात्

जरत्कारु,
जगद्गौरी,
मनसा,
सिद्धयोगिनी,
वैष्णवी,
नागभगिनी,
शैवी,
नागेश्वरी,
जरत्कारुप्रिया,
आस्तीकमाता,
विषहरी और
महाज्ञानयुता

इन बारह नामोंसे विश्व इनकी पूजाकरता है।

1. जो पुरुष पूजाके समय इन बारह नामोंका पाठ करता है, उसे तथा उसके वंशजको भी सर्पका भय नहीं हो सकता।
2. जिस शयनागारमें नागका भय हो, जिस भवनमें बहुतेरे नाग भरे हों, नागोंसे युक्त होनेके कारण जो महान् दारुण स्थान बन गया हो तथा जो नागसे वेष्टित हो, वहाँ भी पुरुष इस स्तोत्रका पाठ करके सर्पभयसे मुक्त हो जाता है–इसमें कोई संशय नहीं है।
3. जो प्रभु श्रीकृष्ण या इनके गुरु महाभाग शंकर के प्रीत्यर्थे या इन देवी की प्रसन्नता के लिये नित्य इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसे देखकर ही नाग भाग जाते हैं।
4. दस लाख पाठ अनुष्ठान पूर्वक करनेसे यह स्तोत्र मनुष्योंके लिये सिद्ध हो जाता है।
5. जिसे यह स्तोत्र सिद्ध हो गया, वह–विष–भक्षण करके भी नहीं मरता ।
6. नागोंको भूषण बनाकर अपने शरीर पर धारण कर सकता है भगवान शिव की तरह।
7. बड़े बड़े नागों और सभी प्रकार के सर्पों पर वह सवारी करनेमें भी समर्थ हो सकता है।
8. वह नागासन, नागतल्प तथा महान् सिद्ध हो जाता है।

देवी मनसाकी पूजाका विधान तथा सामवेदोक्त ध्यान–

✍देवी मनसा जी का ध्यान– ✍

'भगवती मनसा श्वेतचम्पक–पुष्पके समान वर्णवाली हैं। इनका विग्रह रत्नमय भूषणोंसे विभूषित है। अग्निशुद्ध वस्त्र इनके शरीरकी शोभा बढ़ा रहे हैं । इन्होंने सर्पोंका यज्ञोपवीत धारण कर रखा है। महान् ज्ञानसे सम्पन्न होनेके कारण

प्रसिद्ध ज्ञानियोंमें भी ये प्रमुख मानी जाती हैं। ये सिद्धपुरुषोंकी अधिष्ठात्री देवी हैं। सिद्धि प्रदान करनेवाली तथा सिद्धा हैं, मैं इन भगवती मनसाकी उपासना करता हूँ।'

इस प्रकार ध्यान करके मूलमन्त्रसे भगवतीकी पूजा करनी चाहिये।

अनेक प्रकारके नैवेद्य तथा गन्ध, पुष्प और अनुलेपनसे देवीकी पूजा होती है। सभी उपचार मूलमन्त्रको पढ़कर अर्पण करने चाहिये। मुने! इनके मूलमन्त्रका नाम है–

'मूल कल्पतरु'

यह सुसिद्ध मन्त्र है। इसमें बारहअक्षर हैं। इसका वर्णन वेदमें है। यह भक्तांक मनोरथको पूर्ण करनेवाला है।

मन्त्र इस प्रकार है–

'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं मनसादेव्यै स्वाहा।'

1.पाँच लाख (500000) मन्त्र जप करनेपर यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

2. जिसे इस मन्त्रकी सिद्धि प्राप्त हो गयी, वह धरातलपर सिद्ध है।

3.उसके लिये विष भी अमृतके समान हो जाता है।

4. उस पुरुषकी धन्वन्तरिसे तुलना की जा सकती है।

5. रुद्राक्ष की माला से जप अनुष्ठान के सभी नियमों का पालन करके और शिवालय में शीघ्र सिद्धि मिलती है।

ब्रह्मन् ! जो पुरुष आषाढकी संक्रान्तिके दिन 'गुडा' (कपास या सेंहुड़) नामक वृक्षकी शाखापर यत्नपूर्वक इन भगवती मनसाका आवाहन करके भक्तिभावके साथ पूजा करता है।

तथा मनसापञ्चमीको उन देवीके लिये बलि अर्पण करता है, वह अवश्य ही धनवान्, पुत्रवान् और कीर्तिमान् होता है।

महाभाग ! पूजाका विधान कह चुका। अब धर्मदेवके मुखसे जैसा कुछ सुना है, वह उपाख्यान कहता हूँ, सुनो।

प्राचीन समयकी बात है। भूमण्डलके सभी मानव नागोंके भयसे आक्रान्त हो गये थे। नाग जिन्हें काट खाते, वे जीवित नहीं बचते थे। यह देख–सुनकर कश्यपजी भी भयभीत हो गयेय अतः ब्रह्माजीके अनुरोधसे उन्होंने सर्पभयनिवारक मन्त्रोंकी रचना की। ब्रह्माजीके उपदेशसे वेदबीजके अनुसार मन्त्रोंकी रचना हुई। साथ ही ब्रह्माजीने अपने मनसे उत्पन्न करके इन देवीको इस मन्त्रकी अधिष्ठात्री देवी बना दिया। तपस्या तथा मनसे प्रकट होनेके कारण ये देवी 'मनसा' नामसे विख्यात हुई। कुमारी अवस्थामें ही ये भगवान् शंकर से ही गुरुदीक्षा लेने और ज्ञान लेने के लिए शिव के धाम कैलास में चली गयीं।

कैलासमें पहुँचकर इन्होंने भक्तिपूर्वक भगवान् चन्द्रशेखरकी पूजा करके उनकी स्तुति की। मुनिकुमारी मनसाने देवताओंके वर्षसे हजार (1000) वर्षोंतक भगवान् शंकरकी उपासना की। तदनन्तर भगवान् आशुतोष इनपर प्रसन्न हो गये। मुने!

भगवान् शंकरने प्रसन्न होकर इन्हें महान् ज्ञान प्रदान किया। सामवेदकाअध्ययन कराया और भगवान् श्रीकृष्णके कल्पवृक्षरूप रुअष्टाक्षर रुमन्त्रका उपदेश किया।

मन्त्रका रूप ऐसा है– लक्ष्मीबीज, मायाबीज और कामबीजका पूर्वमें प्रयोग करके कृष्ण शब्दके अन्तमें 'ङे' विभक्ति लगाकर 'नमः' पद जोड़ दिया जाता है

✍('श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णाय नमः') ✍।

जो इस मंत्र को नागपंचमी को जपता है उससे भी माँ मनसा प्रसन्न होती हैं तथा नाग भय दूर हो जाता है।

भगवान् शंकरकी कृपासे जब मुनिकुमारी मनसाको उक्त मन्त्रके साथ

त्रैलोक्यमङ्गल नामक श्रीकृष्ण कवच,

पूजनका क्रम,

सर्वमान्य स्तवन, भुवनपावन ध्यान,

सर्वसम्मत वेदोक्त पुरश्चरणका नियम

तथा मृत्युञ्जय–ज्ञान प्राप्त हो गया,

तब वह साध्वी उनसे आज्ञा ले पुष्करक्षेत्रमें श्रीकृष्ण के दर्शन के लिए तपस्या करनेके लिये चली गयी।

वहाँ जाकर उसने गोलोक के भगवान् श्रीकृष्णकी तीन युगोंतक उपासना की।
इसके बाद उसे तपस्यामें सिद्धि प्राप्त हुई। भगवान् श्रीकृष्णने सामने प्रकट होकर उसे दर्शन दिये। उस समय कृपानिधि श्रीकृष्णने उस रुकृशाङ्गी बालापर अपनी कृपाकी दृष्टि डाली।
उन्होंने उसका दूसरोंसे पूजन कराया और स्वयं भी उसकी पूजा कीय साथ ही वर दिया कि 'देवि! तुम जगत् में पूजा प्राप्त करो।' इस प्रकार कल्याणी मनसाको वर प्रदान करके भगवान् अन्तर्धान हो गये।
इस तरह इस मनसादेवीकी सर्वप्रथम भगवान् श्रीकृष्णने पूजा की। तत्पश्चात् लीलावश जगत को प्रेरणा देने के लिए (कि मनसा पूज्यनीय है) इनके गुरु शंकर ने तथा, कश्यप, देवता, मुनि, मनु, नाग एवं मानव आदिसे त्रिलोकीमें श्रेष्ठ व्रतका पालन करनेवाली यह देवी सुपूजित हुई। फिर कश्यपजीने जरत्कारु मुनिके साथ उसका विवाह कर दिया।
भाद्रपद श्शुक्ल पंचमी को ऋषि पंचमी व्रत है यह व्रत मुख्यतः नारियों के निमित्त हैं। इसमें सभी मंवन्तरों के 7–7 ऋषियों का सुमिरण किया जाता है। और साधुओं की सेवा का माहात्म्य भी है।
इनके पुत्र आस्तिक मुनि के स्मरण या उनकी आन देने पर भी सर्प डस नहीं सकते व भाग जाते हैं।

देवी रहस्य महाग्रंथ–

(देवी मनसा का अनुग्रह हर गृहस्थ या संन्यासी को अनिवार्य)

जिनको सपने में नाग या सर्प परेशान करते हैं या जो वन प्रान्त के निकट या जंगल में रहते हैं वे चाहे देव हों चाहे मानव, दानव हों चाहे दैत्य सबको मनसा देवी का सुमिरन करना चाहिए जिस प्रकार बच्चों का विभाग षष्ठी (छट मैया जो भगवान शिव के पुत्र कार्तिकेय की पत्नी और पार्वती जी की पुत्रवधु है) के पास है उसी प्रकार नाग, विष और सर्प से रक्षा का विभाग दो देवियों के पास है एक तो मनसा देवी और एक नर्मदा देवी।

अन्य सबको मनसा देवी अब नहीं करेंगे।

हर शुक्ल मास की पंचमी को आप मनसा देवी का एक स्तोत्र पढ़ लिया करें इससे आप रक्षित रहोगे।

आपके जीवन में सब्जी वाले की, क्षौर–कर्म वाले की, मिस्त्री और गणित के शिक्षक की, दूध वाले की, किसान आदि की जितनी आवश्यकता है उतनी ही आवश्यकता आध्यात्मिक जगत में अलग अलग रूपों की बनाई गई है यदि जरूरत न होती तो स्वधा, स्वाहा, दक्षिणा, मनसा, षष्ठी, धन्वंतरि, सूर्य, चंदा, क्षेत्रपाल, भैरव, दिक्पाल, ग्रहन क्षत्र, लक्ष्मी, शारदा आदि बनते ही नहीं सारा कार्य वैकुण्ठ के नारायण ही करते या कैलासपर्वतपर के महा नायक जो विष्णु जी को भी सुदर्शन देने वाले हैं। वे ही करते। या दूर की सोचो तो पराशक्ति हो सब कुछ करती तो वे शंकर या महेश को भी नहीं बनाती। अथवा सृष्टि ही नहीं बनाती वह जगतजननी। अतः सुनें –

और जो वन या जंगल में रहते हैं वे सर्प से रक्षा के लिए

देवी मनसा के 12 नाम जपकर ही खेती बाड़ी करें या वन में घूमें । या जिनके परिवार के अन्य सदस्य को इन विष आदि से भय की संभावना हो उसके घर का एक सदस्य भी इन मनसा का हर पंचमी को (इष्ट देव के निमित्त) स्मरण अवश्य करे।

स्तुति –

इन्द्र बोले– देवि! तुम साध्वी पतिव्रताओंमें परम श्रेष्ठ तथा परात्पर देवी हो। इस समय मैं तुम्हारी स्तुति करना चाहता हूँ; किंतु यह महत्त्वपूर्ण कार्य मेरी शक्तिके बाहर है। देवी प्रकृते! वेदोंमें स्तोत्रोंका लक्षण यह बताया गया है कि स्तुत्यके स्वभावका प्रतिपादन किया जाय; परंतु सुव्रते! मैं तुम्हारे स्वभावका वर्णन करने में असमर्थ हूँ। तुम शुद्ध–सत्त्वस्वरूपा हो, तुममें कोप और हिंसाका नितान्त अभाव है। यही कारण है कि जरत्कारु मुनिके द्वारा परित्यक्त होनेपर भी तुमने उन मुनिको शाप नहीं दिया। साध्वि! मैंने माता अदितिके समान मानकर तुम्हारा पूजन किया है। तुम मेरी दयारूपिणी भगिनी और माताके समान क्षमाशील हो सुरेश्वरि ! तुमने पुत्र और स्त्रीसहित मेरे प्राणों की रक्षा की है, मैं तुम्हें पूजनीया बनाता हूँ।

तुम्हारे प्रति मेरी प्रीति निरन्तर बढ़ रही है। जगदम्बिके! यद्यपि इस जगत्में तुम्हारी नित्य पूजा होती है, फिर भी मैं तुम्हारी पूजाका प्रचार और प्रसार कर रहा हूँ। सुरेश्वरि ! जो पुरुष आषाढ़ मासकी संक्रान्तिके समय, मनसासंज्ञक पञ्चमी (नागपञ्चमी)–को अथवा आषाढ़से आश्विनतक प्रतिदिन भक्तिके साथ तुम्हारी पूजा करेंगे, अथवा हर पंचमी को तुम्हारा नाम लेंगे उनके यहाँ पुत्र–पौत्र आदिकी और धनकी वृद्धि होगी– यह निश्चित है। साथ ही वे यशस्वी, कीर्तिमान्, विद्वान् और गुणी होंगे। जो व्यक्ति अज्ञानके कारण तुम्हारी पूजासे विमुख होकर निन्दा करेंगे, या तुमको साधारण मनुष्य जैसा समझेंगे

उनके यहाँ लक्ष्मी नहीं ठहरेगी और उन्हें सर्पोंसे सदा भय बना रहेगा। तुम स्वयं स्वर्ग में स्वर्गलक्ष्मी हो । वैकुण्ठमें कमलाकी कला हो । ये मुनिवर जरत्कारु भगवान् नारायणके साक्षात् अंश हैं। पिताजीने हम सबकी रक्षाके लिये ही तपस्या और तेजके प्रभावसे मनके द्वारा तुम्हारी सृष्टि की है। अतएव तुम मनसादेवी कहलाती हो । देवि! तुम सिद्धयोगिनी हो, अतः स्वतः मनसे देवन (सर्वत्र गमन) करनेकी शक्ति रखती हो; इसलिये जगत्में मनसादेवीके नामसे पूजित और वन्दिता होती हो । देवता भक्तिपूर्वक निरन्तर मनसे तुम्हारी पूजा करते हैं, इसीसे विद्वान् पुरुष तुम्हें मनसादेवी कहते हैं। देवि! तुम सदा सत्त्वका सेवन करनेसे सत्त्वस्वरूपा हो। जो पुरुष जिस वस्तुका निरन्तर चिन्तन करते हैं, वे तुम्हारे सुमिरन से वैसी –वस्तुको सौगुनी संख्यामें पा जाते हैं। यह रहस्य सामान्य पुरुष नहीं जानते ।

(संस्कृत भाषा में समयानुसार)

(मुने! इस –प्रकार इन्द्र देवी मनसाकी स्तुति करके वस्त्र और आभूषणोंसे विभूषित उस बहिनको साथ ले अपने निवास स्थानको चले गये। ')

(देवी मनसाने अपने पुत्रके साथ पिता कश्यपजीके आश्रममें दीर्घकालतक वास किया। भ्रातृवर्ग सदा उनका पूजन, अभिवादन और सम्मान करता था । ब्रह्मन्! तदनन्तर एक बार गोलोकसे सुरभी गौ आयी और उसने अपने दूधसे आदरणीया मनसाको स्नान कराकर सादर उनका पूजन किया। साथ ही, उसने सर्वदुर्लभ गोप्य ज्ञानका भी उपदेश दिया। उस समय सुरभी भी पूजित होकर फिर अदृश्य हो गई।)

यह स्तोत्र पुण्यबीज कहलाता है। जो पुरुष मनसादेवीकी पूजा करके इस स्तोत्रका पाठ करता है, उसे तथा उसके वंशके लिये भी नागसे भय नहीं हो सकता। यदि यह स्तोत्र सिद्ध हो जाय तो पुरुषके लिये विष भी अमृत–तुल्य हो जाता है। इस स्तोत्र का पाँच लाख जप करनेपर यह सिद्ध हो जाता है। फिर मन्त्रसिद्ध पुरुष सर्पशायी तथा सर्पवाहन हो सकता है अर्थात् उसपर सर्पका कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता।

(अध्याय ४४.४६)

आत्मकथात्मक सत्य –

एक सर्प रात में सोते समय (वर्षा काल में)सन् 2003 के लगभग हमारे पेट पर बैठ गया था तब हमने मनसा देवी के 12 नाम तत्काल आरंभ कर दिये थे और मात्र एक दो मिनट में वह उतर गया ; हमने सोचा कि मित्र ही पेट पर गुदगुदी कर रहे हैं और सुबह पेपर है अतः शायद उठा रहे हैं , पर वह सर्प दोस्त नहीं था भयंकर काल था परंतु देवी मनसा ने बचा लिया।

जिसके गवाह आज भी इंजीनियरिंग कॉलेज के दो छात्र हैं एक प्रतीक तिवारी और एक हेमंत नाहर ये दोनों इंजीनियरिंग कॉलेज के हमारे अभिन्न मित्र हैं जो आज जॉब कर रहें हैं प्रमाण के लिए इनका नाम लेना पड़ा क्योंकि आजकल कुछ अविश्वासी हमारी आत्मकथात्मक पोस्ट पर अविश्वास की मोहर लगाते हैं और कहते हैं कि अंशभूत बहुत अतिशयोक्तिपूर्ण कहता है इसी कारण ये मित्र प्रमाण हैं।

जय मनसा देवी
जय मनसा देवी
जय मनसा देवी

59. स्वर्गलक्ष्मी

सत्ययुग की वेदवती (जिन्होनें रावण के स्पर्श के कारण प्राण त्याग दिये थे वही देवी)

ही त्रेता में छायासीता हुई और वही श्रीराम जी और अग्निदेव के कहने से पुष्कर में तप करने चली गई और एक महान पद (स्वर्गलक्ष्मी) पाया और द्वापर में भगवान के दर्शन और सान्निध्य के लिए वही छायासीता (स्वर्ग लक्ष्मी अर्थात वेदवती) ही राजा द्रुपद के यहाँ यज्ञ की वेदी से अयोनिज ही प्रकट हुई उसी का नाम द्रोपदी पड़ा। भगवान नारायण ने श्रीमद्देवीभागवत (नवां स्कन्ध अध्याय 16) में नीच कहा है उसका कारण यही था कि उसने वेदवती पर भी कुदृष्टि रखी।

परम कार्य को संपन्न करने के बाद – भगवान् श्रीराम और अग्निदेव बोले देवी! तुम तप करने के लिये अत्यन्त पुण्यप्रद पुष्करक्षेत्र में चली जाओ। वहीं रहकर तपस्या करना। इसके फलस्वरूप तुम्हें स्वर्गलक्ष्मी बनने का सुअवसर प्राप्त होगा ।

भगवान् श्रीराम और अग्निदेव के वचन सुनकर छाया सीता ने पुष्करक्षेत्र में जाकर तप आरम्भ कर दिया। उसकी कठिन तपस्या बहुत लम्बे काल तक चलती रही। इसके बाद उसे स्वर्गलक्ष्मी होने का सौभाग्य प्राप्त हो गया। समयानुसार वही छाया सीता राजा द्रुपद के यहाँ यज्ञ की वेदी से प्रकट हुई। उसका नाम 'द्रौपदी' पड़ा और पाँचों पाण्डव उसके पतिदेव हुए। इस प्रकार सत्ययुग में वही कल्याणी वेदवती कुशध्वज की कन्या, त्रेतायुग में छायारूप से सीता बनकर भगवान् श्रीराम की सहचरी तथा द्वापर में द्रुपदकुमारी द्रौपदी हुई। अतएव इसे 'त्रिहायणी' कहा गया है । वहाँ तीनों युगों में यह विद्यमान रही है।

अब सुने –

नारदजी ने पूछा संदेहों के निराकरण करने में परमकुशल मुनिवर ! द्रौपदी के पाँच पति कैसे हुए? मेरे मन की यह शंका मिटाने की कृपा करें।

भगवान् नारायण कहते हैं– नारद! जब लंका में वास्तविक सीता भगवान् श्रीराम के पास विराजमान हो गयी, तब रूप एवं यौवन से शोभा पाने वाली छाया सीता की चिन्ता का पार न रहा । तदनन्तर वह भगवान् श्रीराम और अग्निदेव के आज्ञानुसार भगवान् शंकर की उपासना में तत्पर हो गयी। पति प्राप्त करने के लिये व्यग्र होकर वह बार–बार यही प्रार्थना कर रही थी कि 'भगवान् त्रिलोचन ! मुझे पति प्रदान कीजिये ।' यही शब्द उसके मुँह से पाँच बार निकले। भगवान् शंकर परम रसिक हैं। छाया सीता की यह प्रार्थना सुनकर उसे यह वर दे दिया। तुम्हें पाँच पति मिलेंगे। नारद! इस प्रकार त्रेता की जो छाया सीता थी, वही द्वापर में द्रौपदी बनी और पाँचों पाण्डव उसके पति हुए। यह सब जो बीच की बातें थीं, सुना चुका । अब जो प्रधान विषय रहा था, वह सुनो।

भगवान् राम ने लंका में मनोहारिणी सीता को पा जाने के पश्चात् वहाँ का राज्य विभीषण को सौंप दिया और वे स्वयं अयोध्या पधार गये। अयोध्या भारतवर्ष में है। ग्यारह हजार वर्षों तक भगवान् श्रीराम ने वहाँ राज्य किया। तत्पश्चात् वे समस्त पुरवासियों सहित वैकुण्ठधाम को पधारे। लक्ष्मी के अंश से प्रादुर्भूत जो वेदवती थी, वह लक्ष्मी के विग्रह में विलीन हो गयी। इस प्रकार का पवित्र आख्यान मैंने कह सुनाया। इस पुण्यदायी उपाख्यान के प्रभाव से सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। धर्मध्वज और माधवी की कन्या (तुलसी)का प्रसंग भी महापाप नष्ट करता हूँ। यह तुलसी कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा को जन्मी थी। और इस दिन शुक्रवार था यह लक्ष्मी देवी की अंशभूता थी। इसका सौन्दर्य अतुलनीय होने से इसे तुलसी कहा गया। सब लोगों व माता और पिता आदि के द्वारा रोकने पर भी यह न रुकी और श्री हरि को पाने के लिए तप करने बदरीवन चली गई।

60. काली काली महाकाली–

काली काली महाकाली श्रीरुद्रद्वारा इस प्रकार कहे जानेपर नरसिंह–विग्रहधारी भगवान् श्रीहरिने –

1.अपनी जीभसे वागीश्वरीको,
2.हृदयसे मायाको,
3.गुह्यप्रदेशसे भवमालिनीको और
4.हड्डियों से काली को प्रकट किया।

ये चार प्रधान हैं जो 8–8 मातृकाओं को अनुशासन में रखती हैं।

उन महात्माने इस कालीकी सृष्टि पहले भी की थी, जिसने महान् आत्मबलसे सम्पन्न अन्धकोंके रुधिरका पान किया था और जो इस लोकमें शुष्करेवती नामसे प्रसिद्ध है।
इसी प्रकार सुदर्शन चक्रधारी भगवान्ने अपने अङ्गोंसे बत्तीस अन्य मातृकाओंकी सृष्टि की, वे सभी महान् भाग्यशालिनी थीं। मैं उनके नामोंका वर्णन कर रहा हूँ, तुम उन्हें मुझसे श्रवण करो। उनके नाम हैं–

●घण्टाकर्णी,● त्रैलोक्यमोहिनी,● पुण्यमयी ●सर्वसत्त्ववशंकरी, ●चक्रहृदया,● व्योमचारिणी, ●शङ्खिनी,● लेखिनी और ●काल–संकर्षणी।

! ये वागीश्वरीके पीछे चलनेवाली उनकी अनुचरी कही गयी हैं।

● संकर्षणी,● अश्वत्था, ●बीजभावा, ●अपराजिता, ●कल्याणी, ●मधुदंष्ट्री, ●कमला और ●उत्पलहस्तिका– ये आठों देवियाँ मायाकी अनुचरी कहलाती हैं।

●अजिता, ●सूक्ष्महृदया, ●वृद्धा, ●वेशाश्मदर्शना, ●नृसिंहभैरवा,● बिल्वा, ●गरुत्महृदया और ●जया–ये आठों मातृकाएँ भवमालिनीकी अनुचरी हैं।

अब देवी शुष्करेवति (काली नामक मातृका जो नरसिंह जी न हड्डियों से प्रकट) की अनुचरी सुनों –

●आकर्णनी,

●सम्भटा,

●उत्तरमालिका,

●ज्वालामुखी,

●भीषणिका,

●कामधेनु,

●बालिका तथा

● पद्मकरा– ये शुष्करेवती (अर्थात काली) की अनुचरी कही जाती हैं। ये काली अतुलनीय बलशाली और सर्वेश्वरी हैं मात्र लीलावश ही नरसिंह जी की हड्डियों से आज प्रकट हुई। ठीक उसी प्रकार जैसे कि कौशिकी जी पार्वती से प्रकट हुई थी।

आठ–आठके विभागसे भगवान् नरसिंह के शरीरसे उद्भूत हुई ये सभी 32 देवियाँ महान् बलवती तथा त्रिलोकीके सृजन और संहारमें समर्थ थीं। ये महा मातृकाएं हैं।

इनका बीज क्रीं हैं। ये ही चामुण्डा कहलाई।
और योगनिद्रा , महामाया का बीज क्लीं।

61. देवी यमुना
श्री कलिन्दनन्दिन्यै नमः

ये देवी भगवान सूर्य की प्यारी पुत्री व यमदेव व शनिदेव की प्रिय बहन है जो साक्षात् लक्ष्मी का अवतार ही है। ये इसी कारण तत्काल श्रीदायक सिद्ध होती हैं। घोर तप करके इन्होनें भगवान माधव को पति रूप में वरण किया। प्रयाग,वृन्दावन अथवा कहीं से भी जिस व्यक्ति ने भी इनका दर्शन किया है वह नमन का पात्र है। अतः इन परादेवी को हम प्रणाम करते हैं।

अद्वितीय संपदा पाने का सरल उपाय–

1. गर्ग संहिता के माधुर्य खण्ड के अध्याय 16 में वर्णित श्री यमुना कवच के मात्र 10 पाठ करने से कोई भी व्यक्ति भविष्य में निश्चित ही धनवान हो जाता है।

2. मात्र तीन महिने अर्थात् 90 दिन तक संयम व शाकाहार पूर्वक पटल व नियम सहित नित्य ''मात्र 10 बार नित्य'' पाठ से **संपूर्ण राज्यों पर अधिकार** प्राप्त हो जाता है। इसमें कुछ भी संदेह नहीं अतः रोओ मत तप करो वह भी मात्र 3 मास बस। गर्ग संहिता में ही आगे लिखा है कि–

3. **मात्र तीन महिने तक यदि कोई नित्य 110 पाठ करे तो वह क्या क्या नहीं पा लेगा? अर्थात् सब कुछ पा लेता है। २** *शुक्लपक्ष की दोज से आरंभ करें पर उस दोज को सोमवार या शुक्रवार न हो*

गर्ग संहिता के अनुसार पटल आदि सुनें।.................

मांधाता बोले– मुनिश्रेष्ठ! यमुनाजीके काम पूरक पवित्र पटल तथा पद्धतिका जैसा स्वरूप है, वह मुझे बताइये क्योंकि आप साक्षात् ज्ञानकी निधि हैं ॥1॥

सौभरिने कहा– महामते! अब मैं यमुनाजीके पटल तथा पद्धतिका भी वर्णन करता हूँ, जिसका अनुष्ठान, श्रवण अथवा जप करके मनुष्य जीवन्मुक्त हो जाता है।

पहले प्रणव (ॐ) का उच्चारण करके
फिर मायाबीज (ह्रीं) का उच्चारण करे।

तत्पश्चात् लक्ष्मीबीज (श्रीं) को रखकर उसके बाद कामबीज (क्लीं) का विधिवत् प्रयोग करे। इसके अनन्तर 'कालिन्दी' शब्दका चतुर्थ्यन्त रूप (कालिन्यै) रखे । फिर 'देवी' शब्दके चतुर्थ्यन्तरूप (देव्यै) का प्रयोग करके अन्तमें 'नमः' पद जोड़ दे।

(इस प्रकार 'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कालिन्द्यै देव्यै नमः।' यह मन्त्र बनेगा ।)

इस मन्त्रका मनुष्य विधिवत् जप करे। पुरश्चरण के लिये इस ग्यारह अक्षरवाले मन्त्रका ग्यारह लाख (1100000) जप करनेसे इस पृथ्वीपर परम सिद्धि प्राप्त हो सकती है। मनुष्योंद्वारा जिन जिन काम्य–पदार्थोंके लिये प्रार्थना की जाती है, वे सब स्वतः सुलभ हो जाते हैं ॥ २–४ ॥

सुन्दर सिंहासनपर षोडशदल कमल अङ्कित करके उसकी कर्णिकामें श्रीकृष्णसहित कालिन्दीका न्यास (स्थापन) करे।

कमलके सोलह दलोंमें अलग अलग विधिपूर्वक नाम ले–लेकर मानवश्रेष्ठ साधक क्रमशः

गङ्गा,

विरजा,

कृष्णा,

चन्द्रभागा,

सरस्वती,

गोमती,

कौशिकी,

वेणी,

सिंधु,

गोदावरी,

वेदस्मृति,

वेत्रवती,

शतद्रू,

सरयू,

ऋषिकुल्या

तथा

ककुद्मिनीका पूजन करे। पूर्वादि चार दिशाओंमें क्रमशः वृन्दावन, गोवर्धन, वृन्दा तथा तुलसीका उनके नामोच्चारणपूर्वक क्रमशः पूजन करे।

तत्पश्चात्

'ॐ नमो भगवत्यै कलिन्दनन्दिन्यै

सूर्यकन्यकायै यमभगिन्यै

श्रीकृष्णप्रियायै यूथीभूतायै स्वाहा।'

इस मन्त्रसे आवाहन आदि सोलह उपचारोंको एकाग्रचित्त हो अर्पित करे।

इस प्रकार यमुनाका पटल जानो । अब पद्धति बताऊँगा।

1. जबतक पुरश्चरण पूरा न हो जाय, तबतक ब्रह्मचर्यका पालन करते हुए मौनावलम्बनपूर्वक द्विजको जप करना चाहिये।

2. पुरश्चरणकालमें जौका आटा खाय,

3.पृथ्वीपर शयन करे,

4. पत्तलपर भोजन करे और

5. मनको वशमें रखे। राजन्!

6.आचार्यको चाहिये कि काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा द्वेषको त्यागकर परम भक्तिभावसे में प्रवृत्त रहे। 7. ब्राह्ममुहूर्तमें उठकर कालिन्दी देवीका ध्यान करे ।

8.और अरुणोदयकी बेलामें नदीमें स्नान करे।

9. मध्याह्नकालमें और दोनों संध्याओंके समय संध्या वन्दन अवश्य किया करे।

10.राजन्! जब अनुष्ठान समाप्त हो, तब यमुनाके तटपर जाकर पुत्रों सहित दस लाख (या सामर्थ्य के अनुसार) महात्मा ब्राह्मणोंका गन्ध–पुष्पसे पूजन करके उन्हें उत्तम भोजन दे।

11. तदनन्तर वस्त्र, आभूषण और सुवर्णमय चमकीले पात्र तथा उत्तम दक्षिणाएँ दे।

इससे निश्चय ही सिद्धि होती है ।महामते ! नरेश! इस प्रकार मैंने तुमसे यमुनाजीके जप और पूजनकी पद्धति बतायी है। तुम सारा नियम पूर्ण करो। बताओ! अब और क्या सुनना चाहते हो ?

मांधाता बोले– महाभाग। आप मुझे श्रीकृष्ण की पटरानी यमुनाके सर्वथा निर्मल कवचका उपदेश दीजिये, मैं उसे सदा धारण करूँगा ।

सौभरी बोले– महामते नरेश! यमुनाजीका कवच मनुष्योंकी सब प्रकारसे रक्षा करनेवाला तथा साक्षात् चारों पदार्थोंको देनेवाला है, तुम इसे सुनो

<u>यमुनाजीके चार भुजाएँ हैं। वे श्यामा (श्यामवर्णा एवं षोडश वर्षकी अवस्थासे युक्त) हैं। उनके नेत्र प्रफुल्ल कमलदलके समान सुन्दर एवं विशाल हैं। वे परम सुन्दरी हैं और दिव्य रथपर बैठी हुई हैं। इस प्रकार उनका ध्यान करके कवच धारण करे ॥ २–३ ॥</u>

स्नान करके पूर्वाभिमुख हो मौनभावसे कुशासन पर बैठे और कुशोंद्वारा शिखा बाँधकर संध्या–वन्दन करनेके ब्राह्मण (अथवा द्विजमात्र) स्वस्ति कासन से स्थित हो स्तोत्र और कवचका पाठ करे।

श्री यमुना स्तोत्र–

श्री कृष्ण के बाए कंधे से प्रकट हुई कृष्णा को सदा मेरा नमस्कार है। कृष्णे! तुम श्री कृष्ण स्वरूपिनी हो, तुम्हें बारम्बार नमस्कार है।

जो पापरूपी पंकजल के कलंक से कुत्सित, कामी, कुबुद्धि मनुष्य सत्पुरुषों के साथ कलह करता है उसे भी गूंजते हुये भ्रमर और जलपक्षियों से युक्त कलिंदनंदिनि यमुना वृंदावन धाम प्रदान करती हैं।

कृष्णे! तुम्ही साक्षात् श्रीकृष्ण स्वरूपा हो। तुम्हीं प्रलय सिंधु के वेग युक्त भंवर में महामत्स्य रूप धारण करके विराजती हो। तुम्हारी उर्मि–उर्मि में भगवान कूर्म रूप से वास करते हैं तथा तुम्हारे बिंदु बिंदु में श्री गोविंददेव की आभा का दर्शन होता हैं। तटिनी! तुम लीलावती हो, मैं तुम्हारी वंदना करता हूँ तुम घनी मेघ के समान श्याम कान्ति धारण करती हो।

श्रीकृष्ण के बाएं कंधे से तुम्हारा प्राकट्य हुआ हैं। संपूर्ण जलों की राशिरूप जो विरजा नदी का वेग है उसको भी अपने बल से खंडित करती हुई ब्रह्माण्ड को छेद कर देवनगर, पर्वत, गण्ड शैल आदि दुर्गम वस्तुओं का भेदन करके तुम इस भूमिखंड के मध्यभाग में अपनी तरंगमालाओं को स्थापित करके प्रवाहित होती हो। यमुने! पृथ्वी पर तुम्हारा नाम दिव्य है वह नाम "**श्रीयमुना**" श्रवण पथ में आकर पर्वताकार पाप समुह को भी दण्डित एवं खण्डित कर देता है, तुम्हारा वह अखंड नाम मेरे वांगमण्डल वचन समुह में क्षणभर में स्थित हो जाये।

यदि वह एक बार भी वाणी द्वारा गृहीत हो जाए तो समस्त पापों का खण्डन हो जाता है। उसके स्मरण से दण्डनीय पापी भी अदण्डनीय हो जाता है। तुम्हारे भाई सूर्यपुत्र यमराज के नगर में तुम्हारा प्रचण्डा ये नाम सुदृढ़

अति दण्ड बनकर विचरता हैं तुम विषयरूपी नौका से पार जाने के लिये रस्सी हो अथवा पापरूपी चूहों को निगल जाने वाली काली नागिन हो अथवा विराट पुरुष मूर्ति की वेणी को अलंकृत करने वाला नीले पुष्पों का गजरा हो या उनके मस्तक पर सुशोभित होने वाली सुंदर नीलमणि की माला हो।

जहाँ आदिकर्ता भगवान श्री कृष्ण की वल्लभा गोलोक में भी अति दुर्लभा, अति सौभाग्यवती अद्वितिया नदी श्री यमुना प्रवाहित होती है, उस भूतल के मनुष्यों का भाग्य इसी कारण से धन्य है गौओ के समुदाय तथा गोप–गोपियों की क्रीड़ा से कलित कलिनन्द–नन्दिनी यमुने। कृष्णप्रभे! तुम्हारे तट पर जो जल की गोलाकार चपल एवं उत्ताल तरंगों का कोलाहल (कल कल राव) होता है वह कोलाहल सदा मेरी रक्षा करें।

तुम्हारे दुर्गम कुन्जों के प्रति कौतुहल रखने वाले भ्रमर समुदाय के गुंजारव, मयूरों को केका तथा कुजते हुए कोकिलो की काकली का शब्द ही उस कोलाहल में मिला रहता है तथा वह व्रजलताओं के अलंकार को धारण करने वाला है। शरीर में जितने रोम है उतनी ही जिह्वायें हो जाये, धरती पर जितने सिकताकण हैं उतनी ही वाग्देवियाँ आ जाएं और उनके साथ सभी संत महात्मा भी शेषनाग के समान सहस्रों जिह्वाओं से युक्त होकर गुणगान करने लग जाये तथापि तुम्हारे गुणों का अंत कभी भी नहीं हो सकता।

कलिन्दगिरीनंदिनि यमुना का यह उत्तम स्तोत्र यदि ऊषाकाल में ब्राह्मण के मुख से सुना जाए अथवा स्वयं पढ़ा जाय तो भूतल पर परम् मंगल का विस्तार करता हैं। जो कोई मनुष्य भी यदि नित्य इसका धारण (चिंतन) करे तो वह भगवान की निकुन्जलीला के द्वारा वरण किए गए परमपद को प्राप्त होता है ।

श्रीयमुना कवच–

अथ श्री यमुना कवचं

यमुना में शिरः पातु कृष्णा नेत्रद्वयं सदा ।
श्यामा भ्रूभंगदेशं च नासिकां नाकवासिनी ।।1।।

कपोलौ पातु में साक्षात् परमानन्दरूपिणी ।
कृष्णवामांससम्भूता पातु कर्ण द्वयं मम ।।2।।

अधरौ पातु कालिन्दी चिबुकं सूर्यकन्यका ।
यमस्वसा कन्धरां च हृदयं मे महानदी ।।3।।

कृष्णप्रिया पातु पृष्ठं तटिनी मे भुजद्वयम ।
श्रोणितटं च सुश्रोणी कटिं मे चारुदर्शना ।।4।।

उरुद्वयं तु रम्भोरूर्जानुनी त्वंघ्रिभेदिनी ।
गुल्फौ रासेश्वरी पातु पादौ पापापहारिणी ।।5।।

अन्तर्बहिरधश्चोर्ध्वं दिशासु विदिशासु च।
समन्तात् पातु जगतः परिपूर्णतमप्रिया।।6।।

अतः कोई भी अन्य साधना न भी बनें तो इस सरल उपाय को अवश्य ही करें।

अर्थ –

'यमुना' मेरे मस्तकको रक्षा करें और 'कृष्णा' सदा दोनों नेत्रोंकी। 'श्यामा' भ्रूभंग–देशकी और 'नाकवासिनी' नासिकाकी रक्षा करें। 'साक्षात् परमानन्दरूपिणी' मेरे दोनों कपोलोंकी रक्षा करें। 'कृष्णवामांससम्भूता' (श्रीकृष्णके बायें कंधेसे प्रकट हुई वे देवी) मेरे दोनों कानोंका संरक्षण करें। 'कालिन्दी' अधरोंकी और 'सूर्यकन्या' चिबुक (ठोढ़ी) की रक्षा करें। 'यमस्वसा' (यमराजकी बहिन) मेरी ग्रीवाकी और 'महानदी' मेरे हृदयकी रक्षा करें। 'कृष्णप्रिया' पृष्ठ–भागका और 'तटिनी' मेरी दोनों भुजाओंका रक्षण करें। 'सुश्रोणी' श्रोणीतट (नितम्ब) की और 'चारुदर्शना' मेरे कटिप्रदेशकी रक्षा करें। 'रम्भोरू' दोनों ऊरुओं (जाँघों) की और 'अङ्घ्रिभेदिनी' मेरे दोनों घुटनोंकी रक्षा करें। 'रासेश्वरी' गुल्फों (घुट्टियों) का और 'पापापहारिणी' पादयुगलका त्राण करें। 'परिपूर्णतम प्रिया' भीतर–बाहर, नीचे–ऊपर तथा दिशाओं और विदिशाओंमें सब ओरसे मेरी रक्षा करें' ॥४–१०॥

श्रीयमुना स्तोत्र एवं यह अमोघ रामवाण के समान यमुना कवच है जो सब कुछ देने में समर्थ है।

नोट–मात्र 90 सेकिण्ड का यह एक पाठ है अर्थात् नित्य 15 मिनिट की छोटी सी तपस्या है तथा पटल में नित्य वृन्दावन, गोवर्धन, तुलसी, गंगा आदि की पूजा है जो मानसिक भी की जा सकती है व एक विशेष यमुना मैया के मंत्र से देवी यमुना जी की पूजा भी तथा नित्य भगवान गणेश जी की मानसिक पूजा भी।

62. कलंक नाशक कथा

जिसने भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी अर्थात गणेश चतुर्थी पर चंद्रमा देख लिया हो उस पर मिथ्या कलंक लगता है पर इस कथा को पढ़ने से वह कलंक तो दूर होता ही है साथ में प्रभु श्री गणेश द्वारा वरदान भी मिलता है और माधव उनकी शक्ति सहित परम प्रसन्न होते हैं ।

पहले सार रूप अर्थात् अति संक्षिप्त में सुनें–''श्रीसूर्यदेव के द्वारा प्रदत्त स्यमन्तक मणि की कथा, 22 दिन जाम्बवान व श्रीहरि का युद्ध हुआ परंतु श्रीहरि के द्वारा गुफा से बाहर न आने पर 12 वें दिवस ही श्रीकेशव के साथी व किंकर डरकर भाग गये तब घर जाकर सभी ने श्रीकृष्णजी को साधारण नर समझकर उनकी रक्षा के लिए देवी दुर्गा की नौ दिन तक साधना की.........

नोट–

''यह माधव ही हम लोगों को यथार्थ बात बताने के लिए लीला कर रहे थे कि हे मानवों आप कभी भी यदि घोर से भी घोर संकट में फंस जाओ तो आप देवी दुर्गा के स्तोत्र व मंत्र से आराधना आरंभ कर देना ऐसा करने पर आप भय व संकटों से मुक्त हो जाओगे। स्तोत्र निधिवन प्रथम भाग में हमनें ब्रह्मवैवर्त पुराण से दुर्गनाशन स्तोत्र को संकलित किया है। या 32 नामों की माला सर्व सुलभ है ही। अथवा नवदुर्गाओं में सप्तशती का पाठ या श्रीमद् देवीभागवत का स्वाध्याय। पर एक कवच का पाठ भी करना बिना उसके फल कम ही मिलता है।..............................''

फिर अगले ही दिन श्रीकृष्ण भगवान जाम्बवती सहित सबको प्राप्त, श्री केशव पर सत्राजित् द्वारा लगाया कलंक दूर, सत्राजित ने अपयश के डर से अपनी बेटी सत्यभामा का विवाह

श्रीकृष्णजी से कराया तदोपरान्त् कुछ दिनों बाद माधव के द्वारिका से बाहर जाने पर शतधन्वा ने मणि के लोभ से सत्यभामा के पिता सत्राजित् की सोते हुए मार डाला और स्यमन्तक मणि ले गया और अक्रूर के यहां छिपा दी। तब पुनः कुछ लोगों ने माधव पर संदेह किया तब प्रभु ने पुनः स्यमन्तक मणि का पता लगाया और अक्रूर से वापस न लेकर मात्र स्वर्ण लेने का कहा।

जिन नारियों को अधिक समय न हो वे नारियाँ भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की गणेश चतुर्थी को अज्ञान के कारण चंद्रमा देख ले तो उन पर मिथ्या कलंक लगता है परंतु इस लघु कथा का पाठ कर लें तो वे कलंक से मुक्त हो जाती हैं। पर समय हो तो बहाने न बनाये और ***निम्नलिखित श्रीमद् भागवत पुराणोक्त शुकदेव और परीक्षित संवाद रूपी इस कथा*** का पाठ कुशासन,ऊन या कंबल के आसन पर बैठकर ही करें अथवा मोबाइल से गूगल पर सर्च करके भी सुन सकती हैं या सुन सकते हैं।

अथ षट्पंचाशत्तमोऽध्यायः

श्री शुकदेव जी कहते हैं– परीक्षित ! सत्राजित ने श्रीकृष्ण पर झूठा कलंक लगाया था। फिर उस अपराध का मार्जन करने के लिए उसने स्वयं स्यमन्तक मणि सहित अपनी कन्या सत्याभामा भगवान श्रीकृष्ण को सौंप दी। यह **श्रीमद्भागवत महापुराण दशम स्कंध से है।**

राजा परीक्षित ने पूछा– भगवन् ! सत्राजित ने भगवान श्रीकृष्ण का क्या अपराध किया था ? उसे स्यमंतक मणि कहाँ से मिली ? और उसने अपनी कन्या उन्हें क्यों दी ?

श्रीशुकदेव जी ने कहाः परीक्षित ! सत्राजित भगवान सूर्य का बहुत बड़ा भक्त था। वे उसकी भक्ती से प्रसन्न होकर उसके बहुत बड़े मित्र बन गये थे। सूर्य भगवान ने ही प्रसन्न होकर बड़े प्रेम से उसे स्यमंतक मणि दी थी। सत्राजित उस मणि को गले में धारण कर ऐसा चमकने लगा, मानो स्वयं सूर्य ही हो। परीक्षित ! जब सत्राजित द्वारका आया, तब अत्यन्त तेजस्विता के कारण लोग उसे पहचान न सके। दूर से ही उसे देखकर लोगों की आँखें

उसके तेज से चौंधिया गईं। लोगों ने समझा कि कदाचित स्वयं भगवान सूर्य आ रहे हैं। उन लोगों ने भगवान के पास आकर उन्हें इस बात की सूचना दी। उस समय भगवान चौसर खेल रहे थे। लोगों ने कहाः 'शंख–चक्र–गदाधारी नारायण ! कमलनयन दामोदर ! यदुवंशशिरोमणि गोविन्द ! आपको नमस्कार है। जगदीश्वर देखिये, अपनी चमकीली किरणों से लोगों के नेत्रों को चौंधियाते हुए प्रचण्डरश्मि भगवान सूर्य आपका दर्शन करने आ रहे हैं। प्रभो ! सभी श्रेष्ठ देवता त्रिलोकी में आपकी प्राप्ति का मार्ग ढूँढते रहते हैं, किन्तु उसे पाते नहीं। आज आपको यदुवंश में छिपा हुआ जानकर स्वयं सूर्यनारायण आपका दर्शन करने आ रहे हैं।

श्रीशुकदेव जी कहते हैं– परीक्षित ! अनजान पुरूषों की यह बात सुनकर कमलनयन भगवान श्रीकृष्ण हँसने लगे। उन्होंने कहा– 'अरे, ये सूर्यदेव नहीं है। यह तो सत्राजित है, जो मणि के कारण इतना चमक रहा है। इसके बाद सत्राजित अपने समृद्ध घर में चला आया। घर पर उसके शुभागमन के उपलक्ष्य में मंगल–उत्सव मनाया जा रहा था। उसने ब्राह्मणों द्वारा स्यमंतक मणि को एक देवमन्दिर में स्थापित करा दिया। परीक्षित ! वह मणि प्रतिदिन आठ भार सोना दिया करती थी। और जहाँ वह पूजित होकर रहती थी, वहाँ दुर्भिक्ष, महामारी, ग्रहपीड़ा, सर्पभय, मानसिक और शारीरिक व्यथा तथा मायावियों का उपद्रव आदि कोई भी अशुभ नहीं होता था। एक बार भगवान श्रीकृष्ण ने प्रसंगवश कहा– 'सत्राजित ! तुम अपनी मणि राजा उग्रसेन को दे दो।' परन्तु वह इतना अर्थलोलुप–लोभी था कि भगवान की आज्ञा का उल्लंघन होगा, इसका कुछ भी विचार न करके उसे अस्वीकार कर दिया।

एक दिन सत्राजित के भाई प्रसेन ने उस परम प्रकाशमयी मणि को अपने गले में धारण कर लिया और फिर वह घोड़े पर सवार होकर शिकार खेलने वन में चला गया। वहाँ एक सिंह ने घोड़े सहित प्रसेन को मार डाला और उस मणि को छीन लिया। वह अभी पर्वत की गुफा में प्रवेश कर ही रहा था कि मणि के लिए ऋक्षराज जाम्बवान् ने उसे मार डाला। उन्होंने वह मणि अपनी गुफा में ले जाकर बच्चे को खेलने के लिए दे दी। अपने भाई प्रसेन के न लौटने से उसके भाई सत्राजित को बड़ा दुःख हुआ। वह कहने लगा, 'बहुत सम्भव है श्रीकृष्ण ने ही मेरे भाई को मार डाला हो, क्योंकि वह मणि गले में डालकर वन में गया था।' सत्राजित की यह बात सुनकर लोग आपस में काना–फूँसी करने लगे। जब भगवान श्रीकृष्ण ने सुना कि यह कलंक का टीका मेरे सिर लगाया गया है, तब वे उसे धो–बहाने के उद्देश्य से नगर के कुछ सभ्य पुरूषों को साथ लेकर प्रसेन को ढूँढने के लिए वन में गये। वहाँ खोजते–खोजते लोगों ने देखा कि घोर जंगल में सिंह ने प्रसेन और उसके घोड़े को मार डाला है। जब वे लोग सिंह के पैरों का चिन्ह देखते हुए आगे बढ़े, तब उन लोगों ने यह भी देखा कि पर्वत पर रीछ ने सिंह को भी मार डाला है।

भगवान **श्रीकृष्ण ने सब लोगों को बाहर ही बिठा दिया और अकेले ही घोर अन्धकार से भरी हुई ऋक्षराज की भयंकर गुफा में प्रवेश किया।** भगवान ने वहाँ जाकर देखा कि श्रेष्ठ मणि स्यमन्तक को बच्चों का खिलौना बना दिया गया है। वे उसे हर लेने की इच्छा से बच्चे के पास जा खड़े हुए। उस गुफा में एक अपरिचित मनुष्य को देखकर बच्चे की धाय भयभीत की भाँति चिल्ला उठी। उसकी चिल्लाहट सुनकर परम बली ऋक्षराज जाम्बवान क्रोधित होकर वहाँ दौड़ आये। परीक्षित ! जाम्बवान उस समय कुपित हो रहे थे। उन्हें भगवान की महिमा, उनके प्रभाव का पता न चला। उन्होंने एक साधारण मनुष्य समझ लिया और वे अपने स्वामी भगवान श्रीकृष्ण से युद्ध करने लगे। जिस प्रकार मांस के लिये दो बाज आपस में लड़ते हैं, वैसे ही विजयाभिलाषी भगवान श्रीकृष्ण और जाम्बवान आपस में घमासान युद्ध करने लगे। पहले तो उन्होंने अस्त्र–शस्त्रों का प्रहार किया, फिर शिलाओं का तत्पश्चात वे वृक्ष उखाड़कर एक दूसरे पर फेंकने लगे। अन्त में उनमें बाहुयुद्ध होने लगा।

परीक्षित ! वज्र–प्रहार के समान कठोर घूँसों की चोट से जाम्बवान के शरीर की एक एक गाँठ टूट गयी। उत्साह जाता रहा। शरीर पसीने से लथपथ हो गया। तब उन्होंने अत्यंत विस्मित–चकित होकर भगवान श्रीकृष्ण से कहा– 'प्रभो ! मैं जान गया। आप ही समस्त प्राणियों के स्वामी, रक्षक, पुराणपुरूष भगवान विष्णु हैं। आप ही सबके

प्राण, इन्द्रियबल, मनोबल और शरीर बल हैं। आप विश्व के रचयिता ब्रह्मा आदि को भी बनाने वाले हैं। बनाये हुए पदार्थों में भी सत्तारूप से आप ही विराजमान हैं। काल के कितने भी अवयव है, उनके नियामक परम काल आप ही हैं और शरीर भेद से भिन्न–भिन्न प्रतीयमान अन्तरात्माओं के परम आत्मा भी आप ही हैं। प्रभो ! मुझे स्मरण है, आपने अपने नेत्रों में तनिक सा क्रोध का भाव लेकर तिरछी दृष्टि से समुद्र की ओर देखा था। उस समय समुद्र के अंदर रहने वाल बड़े–बड़े नाक (घड़ियाल) और मगरमच्छ क्षुब्ध हो गये थे और समुद्र ने आपको मार्ग दे दिया था। तब आपने उस पर सेतु बाँधकर सुन्दर यश की स्थापना की तथा लंका का विध्वंस किया। आपके बाणों से कट–कटकर राक्षसों के सिर पृथ्वी पर लोट रहे थे। (अवश्य ही आप मेरे वे ही राम जी श्रीकृष्ण के रूप में आये हैं।) परीक्षित ! जब ऋक्षराज जाम्बवान ने भगवान को पहचान लिया, तब कमलनयन श्रीकृष्ण ने अपने परम कल्याणकारी शीतल करकमल को उनके शरीर पर फेर दिया और फिर अहैतुकी कृपा से भरकर प्रेम गम्भीर वाणी से अपने भक्त जाम्बवान जी से कहा–

ऋक्षराज ! हम मणि के लिए ही तुम्हारी इस गुफा में आये हैं। इस मणि के द्वारा मैं अपने पर लगे झूठे कलंक को मिटाना चाहता हूँ।

मणिहेतोरिह प्राप्ता वयमृक्षपते बिलम् ।
मिथ्याभिशापं प्रमृजन्नात्मनो मणिनामुना ।।

10.56.31 श्रीमद्भागवत महापुराण

भगवान के ऐसा कहने पर जाम्बवान बड़े आनन्द से उनकी पूजा करने के लिए अपनी कन्या कुमारी जाम्बवती को मणि के साथ उनके चरणों में समर्पित कर दिया।

भगवान श्रीकृष्ण जिन लोगों को गुफा के बाहर छोड़ गये थे, उन्होंने बारह दिन तक उनकी प्रतीक्षा की। परन्तु जब उन्होंने देखा कि अब तक वे गुफा से नहीं निकले, तब वे अत्यंत दुःखी होकर द्वारका लौट गये। वहाँ जब माता देवकी, रूक्मणि, वसुदेव जी तथा अन्य सम्बन्धियों और कुटुम्बियों को यह मालूम हुआ कि श्रीकृष्ण गुफा से नहीं निकले, तब उन्हें बड़ा शोक हुआ। सभी द्वारकावासी अत्यंत दुःखित होकर सत्राजित को भला बुरा कहने लगे और भगवान श्रीकृष्ण की प्राप्ति के लिए महामाया दुगदिवी की शरण गये, उनकी उपासना करने लगे। उनकी उपासना से दुगदिवी प्रसन्न हुई और उन्होंने आशीर्वाद दिया। उसी समय उनके बीच में मणि और अपनी नववधू जाम्बवती के साथ सफलमनोरथ होकर श्रीकृष्ण होकर श्रीकृष्ण सबको प्रसन्न करते हुए प्रकट हो गये। सभी द्वारकावासी भगवान श्रीकृष्ण को पत्नी के साथ और गले में मणि धारण किये हुए देखकर परमानन्द में मग्न हो गये, मानो कोई मरकर लौट आया हो।

तदनन्तर भगवान् ने सत्राजित् को राजसभामें महाराज उग्रसेनके पास बुलवाया और जिस प्रकार मणि प्राप्त हुई थी, वह सब कथा सुनाकर उन्होंने वह मणि सत्राजित्को सौंप दी ।। ३८ ।। सत्राजित् अत्यन्त लज्जित हो गया। मणि तो उसने ले ली, परन्तु उसका मुँह नीचेकी ओर लटक गया।

अपने अपराधपर उसे बड़ा पश्चात्ताप हो रहा था, किसी प्रकार वह अपने घर पहुँचा ॥ ३९ ॥उसके मनकी आँखोंके सामने निरन्तर अपना अपराध नाचता रहता बलवान के साथ विरोध करनेके कारण वह भयभीत भी हो गया था। अब वह यही सोचता रहता कि मैं अपने अपराधका मार्जन कैसे करूँ ? मुझपर भगवान् श्रीकृष्ण कैसे प्रसन्न हो ॥ ४० ॥

मैं ऐसा कौन–सा काम करूँ, जिससे मेरा कल्याण हो और लोग मुझे कोसें नहीं। सचमुच मैं अदूरदर्शी, क्षुद्र हूँ। धनके लोभसे मैं बड़ी मूढ़ताका काम कर बैठा ॥ ४१ ॥ अब मैं रमणियोंमें रत्नके समान अपनी कन्या सत्यभामा और

वह स्यमन्तकमणि दोनों ही श्रीकृष्णको दे दूँ। यह उपाय बहुत अच्छा है। इसीसे मेरे अपराधका मार्जन हो सकता है, और कोई उपाय नहीं है' ॥ ४२ ॥ सत्राजितूने अपनी विवेक बुद्धिसे ऐसा निश्चय करके स्वयं ही इसके लिये उद्योग किया और अपनी कन्या तथा स्यमन्तकमणि दोनों ही ले जाकर श्रीकृष्णको अर्पण कर दीं ॥ ४३ ॥ सत्यभामा शील–स्वभाव, सुन्दरता, उदारता आदि सद्गुणोंसे सम्पन्न थीं। बहुतसे लोग चाहते थे कि सत्यभामा हमें मिलें और उन लोगोंने उन्हें माँगा भी था। परन्तु अब भगवान् श्रीकृष्णने विधिपूर्वक उनका पाणिग्रहण किया ।। ४४ ।

परीक्षित! भगवान् श्रीकृष्णने सत्राजित्से कहा– 'हम स्यमन्तकमणि न लेंगे। आप सूर्य भगवान्के भक्त हैं, इसलिये वह आपके ही पास रहे। हम तो केवल उसके फलके, अर्थात् उससे निकले हुए सोनेके अधिकारी हैं। वही स्वर्ण ही आप हमें दे दिया करें' ।

भगवानाह न मणिं प्रतीच्छामो वयं नृप ।

तवास्तां देवभक्तस्य वयं च फलभागिनः ॥ ४५॥

<u>श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे' उत्तरार्धे स्यमन्तकोपाख्याने षट्पञ्चाशत्तमः ॐ तत् सत्</u> ॥

(मात्र इतनी ही कथा से कलंक दूर हो जायेगा पर और भी अधिक लाभ के लिए व प्रारब्ध जनित कलंक के नाश के लिए, हजारों अपराधों को नष्ट करने के लिए तथा सुयश व अतुलनीय धन संपदा प्राप्ति के लिए अगला अध्याय भी पढ सकते हैं।)

श्रीशुकदेवजी कहते हैं– परीक्षित्! यद्यपि भगवान् श्रीकृष्णको इस बातका पता था कि लाक्षागृहकी आगसे पाण्डवोंका बाल भी बाँका नहीं हुआ है, तथापि द्य जब उन्होंने सुना कि कुन्ती और पाण्डव जल मरे, तब उस समयका कुल परम्परोचित व्यवहार करनेके लिये वेबलरामजीके साथ हस्तिनापुर गये ॥ १ ॥ वहाँ जाकर भीष्मपितामह, कृपाचार्य, विदुर, गान्धारी और द्रोणाचार्यसे मिलकर उनके साथ समवेदना सहानुभूति प्रकट की और उन लोगोंसे कहने लगे– 'हाय–हाय। यह तो बड़े ही दुःखकी बात हुई' ॥ २ ॥

भगवान् श्रीकृष्णके हस्तिनापुर चले जानेसे द्वारकामें अक्रूर और कृतवर्माको अवसर मिल गया। उन लोगनि शतधन्वासे आकर कहा– 'तुम सत्राजित् से मणि क्यों नहीं छीन लेते ? ॥ ३ ॥ सत्राजितूने अपनी श्रेष्ठ कन्या सत्यभामाका विवाह हमसे करनेका वचन दिया था और अब उसने हमलोगोंका तिरस्कार करके उसे श्रीकृष्णके साथ व्याह दिया है। अब सत्राजित् भी अपने भाई प्रसेनकी तरह क्यों न यमपुरीमें जाय ?' ॥ ४ ॥ शतधन्वा पापी था और अब तो उसकी मृत्यु भी उसके सिरपर नाच रही थी। अक्रूर और कृतवर्माके इस प्रकार बहकानेपर शतधन्वा उनकी बातों में आ गया और उस महादुष्टने लोभवश सोये हुए सत्राजित्को मार डाला द्यद्य ५ द्य इस समय स्त्रियाँ अनाथके समान रोने चिल्लाने लगीं परन्तु शतधन्वाने उनकी ओर तनिक भी ध्यान न दियाय जैसे कसाई पशुओंकी हत्या कर डालता है, वैसे ही वह सत्राजित्को मारकर और मणि लेकर वहाँसे चम्पत हो गया ॥ ६ ॥

<u>सत्यभामाजीको यह देखकर कि मेरे पिता मार डाले गये हैं. बड़ा शोक हुआ और वे 'हाय पिताजी! हाय पिताजी! मैं मारी गयी इस प्रकार पुकार पुकारकर विलाप करने लगीं। बीच–बीचमें वे बेहोश हो जाता और होशमें आनेपर फिर विलाप करने लगतीं ॥ ७ ॥ इसके बाद उन्होंने अपने पिताके शवको तेलके कड़ाहमें रखवा दिया और आप हस्तिनापुरको गयीं।</u> उन्होंने बड़े दुःखसे भगवान् श्रीकृष्णको अपने पिताकी हत्याका वृत्तान्त सुनाया – यद्यपि द्य इन बातोंको भगवान् श्रीकृष्ण पहलेसे ही जानते थे ॥ ८ ॥ परीक्षित्! सर्वशक्तिमान् भगवान् श्रीकृष्ण और बलरामजीने सब सुनकर मनुष्योंकी–सी लीला करते हुए अपनी आँखों में आँसू भर लिये और विलाप करने लगे कि 'अहो ! हम

लोगोंपर तो यह बहुत बड़ी विपत्ति आ पड़ी !' ॥ ६ ॥ इसके बाद भगवान् श्रीकृष्ण सत्यभामाजी और बलरामजीके साथ हस्तिनापुरसे द्वारका लौट आये और शतधन्वाको मारने तथा उससे मणि छीननेका उद्योग करने लगे ।। १० ।।

जब शतधन्वाको यह मालूम हुआ कि भगवान् श्रीकृष्ण मुझे मारनेका उद्योग कर रहे हैं, तब वह बहुत डर गया और अपने प्राण बचानेके लिये उसने कृतवर्मा से सहायता माँगी। तब कृतवर्माने कहा– ॥ ११ ॥

'भगवान् श्रीकृष्ण और बलरामजी सर्वशक्तिमान् ईश्वर हैं। मैं उनका सामना नहीं कर सकता। भला, ऐसा कौन है, जो उनके साथवैर बाँधकर इस लोक और परलोकमें सकुशल रह सके ? ।। १२ ।। तुम जानते हो कि कंस उन्हींसे द्वेष करनेके कारण राज्यलक्ष्मीको खो बैठा और अपने अनुयायियों के साथ मारा गया। जरासन्ध जैसे शूरवीरको भी उनके सामने सत्रह बार मैदानमें हारकर बिना रथके ही अपनी राजधानीमें लौट जाना पड़ा था। जब कृ तवर्माने उसे इस प्रकार टका–सा जवाब दे दिया।

तब शतधन्वाने सोचा कि अक्रूरजी ने ही मुझे मणि हथियाने की प्रेरणा दी थी अतःसहायताके लिये अक्रूरजी के पास चलना चाहिए अतः उनसे प्रार्थना की। पर उन्होंने कहा–

1. 'भाई ऐसा कौन है, जो सर्वशक्तिमान् भगवानका बल–पौरुष जानकर भी उनसे वैर–विरोध ठाने।
2. जो भगवान् खेल–खेल में ही इस विश्वकी रचना, रक्षा और संहार करते हैं तथा जो कब क्या करना चाहते हैं इस बातको मायासे मोहित ब्रह्मा आदि विश्व विधाता भी नहीं समझ पाते।
3. जिन्होंने सात वर्षकी अवस्था में जब वे निरे बालक थे, एक हाथसे ही जब गिरिराज गोवर्द्धनको उखाड़ लिया और जैसे नन्हे नन्हे बच्चे बरसाती छत्तेको उखाड़कर हाथमें रख लेते हैं. वैसे ही खेल–खेल में सात दिनोंतक उसे उठाये रखा, मैं तो उन भगवान् श्रीकृष्णको नमस्कार करता हूँ।
4. उनके कर्म अद्भुत हैं। वे अनन्त, अनादि, एकरस और आत्मस्वरूप हैं। मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ' ॥ १४ – १७
5. जब इस प्रकार अक्रूरजीने भी उसे कोरा जवाब दे दिया, तब शतधन्वाने स्यमन्तकमणि उन्होंके पास रख दी और आप चार सौ कोस लगातार चलनेवाले घोड़ेपर सवार होकर वहाँसे बड़ी फुर्तीसे भागा ॥ १८ ॥

परीक्षित् ! भगवान् श्रीकृष्ण और बलराम दोनों भाई अपने उस रथपर सवार हुए, जिसपर गरुड़चिह्न से चिह्नित ध्वजा फहरा रही थी और बड़े वेगवाले घोड़े जुते हुए थे। अब उन्होंने अपने श्वसुर सत्राजितको मारनेवाले शतधन्वाका पीछा किया ॥ १९ ॥ मिथिलापुरीके निकट एक उपवनमें शतधन्वा का घोड़ा गिर पड़ा, अब यह उसे छोड़कर पैदल ही भागा। वह अत्यन्त भयभीत हो गया था भगवान् श्रीकृष्ण भी क्रोध करके उसके पीछे दौड़े ॥ २० ॥

शतधन्वा पैदल ही भाग रहा था, इसलिये भगवान्ने भी पैदल ही दौड़कर अपने तीक्ष्ण धारवाले चक्रसे उसका सिर उतार लिया और उसके वस्त्रों मे स्यमन्तकमणिको ढूँढ़ा ॥ २१ ॥ परन्तु जब मणि मिली नहीं तब भगवान् श्रीकृ ष्णने बड़े भाई बलरामजीके पास आकर कहा– 'हमने शतधन्वाको व्यर्थ ही मारा क्योंकि उसके पास स्यमन्तकमणि तो है ही नहीं २२ ॥बलरामजीने कहा– 'इसमें सन्देह नहीं कि शतधन्वाने स्यमन्तकमणिको किसी–न–किसीके पास रख दिया है। हे कान्हा ! अब तुम द्वारका जाओ और उसका पता लगाओ ॥ २३ ॥

भगवान अनंत का विदेहराज से मिलन–

मैं विदेहराजसे मिलना चाहता हूँ, क्योंकि वे मेरे बहुत ही प्रिय मित्र है। परीक्षित्! यह कहकर यदुवंशशिरोमणि बलरामजी मिथिला नगरीमें चले गये ॥ २४ ॥ जब मिथिलानरेशने देखा कि पूजनीय बलरामजी महाराज पधारे हैं,

तब उनका हृदय आनन्दसे भर गया। उन्होंने झटपट अपने आसनसे उठकर अनेक सामग्रियोंसे उनकी पूजा की ।। २५ ।। इसके बाद भगवान् **बलरामजी कई वर्षों तक मिथिलापुरीमें ही रहे। महात्मा जनकने बड़े प्रेम और सम्मानसे उन्हें रखा।** इसके बाद समयपर धृतराष्ट्रके पुत्र दुर्योधनने बलरामजी से गदायुद्धकी शिक्षा ग्रहण की ।। २६ ।। अपनी प्रिया सत्यभामाका प्रिय कार्य करके भगवान् श्रीकृष्ण द्वारका लौट आये और उनको यह समाचार सुना दिया कि शतधन्वाको मार डाला गया, परन्तु स्यमन्तकमणि उसके पास न मिली ॥ २७ ॥ इसके बाद उन्होंने भाई–बन्धुओंके साथ अपने श्वशुर सत्राजितकी वे सब और्ध्वदैहिक क्रियाएँ करवायीं, जिनसे मृतक प्राणीका परलोक सुधरता है ॥ २८ ॥

अक्रूर और कृतवर्माने शतधन्वाको सत्राजितके वधके लिये उत्तेजित किया था। इसलिये जब उन्होंने सुना कि भगवान् श्रीकृष्णने शतधन्वाको मार डाला है, तब वे अत्यन्त भयभीत होकर द्वारकासे भाग खड़े हुए ॥ २९ ॥ आगे महत्वपूर्ण बात–

1. परीक्षित् ! **कुछ लोग ऐसा मानते हैं पर सत्य का मुझे ज्ञान नहीं कि अक्रूरके द्वारकासे चले जानेपरद्वारका वासियोंको बहुत प्रकारके अनिष्टों और अरिष्टोंका सामना करना पड़ा।**
2. दैविक और भौतिक निमित्तोंसे बार–बार वहाँके नागरिकोंको शारीरिक और मानसिक कष्ट सहना पड़ा। परन्तु जो लोग ऐसा कहते हैं, वे पहले कही हुई बातोंको भूल जाते हैं।
3. भला, यह भी कभी सम्भव है कि जिन भगवान् श्रीकृष्णमें समस्त ऋषि–मुनि निवास करते हैं, उनके निवासस्थान द्वारकामें उनके रहते कोई उपद्रव खड़ा हो जाय ॥ ३०–३१ ॥
4. उस समय नगरके बड़े–बूढ़े लोगोंने कहा– 'एक बार काशी नरेशके राज्यमें वर्षा नहीं हो रही थी, सूखा पड़ गया था।
5. तब उन्होंने अपने राज्यमें आये हुए अक्रूरके पिता श्वफल्क को अपनी पुत्री गान्दिनी ब्याह दी। तब उस प्रदेशमें वर्षा हुई।
6. अक्रूर भी श्वफल्कके ही पुत्र हैं और इनका प्रभाव भी वैसा ही है। इसलिये जहाँ–जहाँ अक्रूर रहते हैं, वहाँ–वहाँ खूब वर्षा होती है तथा किसी प्रकारका कष्ट और महामारी आदि उपद्रव नहीं होते।
7. 'परीक्षित्! उन लोगोंकी बात सुनकर भगवान् ने सोचा कि 'इस उपद्रव का यही कारण नहीं है................ यह जानकर भी भगवान्ने दूत भेजकर अकूरजीको बुलाया और आनेपर उनसे बातचीत की ।। ३२–३४ ।।
8. भगवानका स्वागत–सत्कार किया और मीठी–मीठी प्रेमकी बातें कहकर उनसे सम्भाषण किया। परीक्षित् । भगवान् सबके चित्तका एक–एक सङ्कल्प देखते रहते हैं। इसलिये उन्होंने मुसकराते हुए अक्रूरसे कहा ॥ ३५ ॥
9. 'चाचाजी ! आप दान–धर्मके पालक हैं। हमें यह बात पहलेसे ही मालूम है कि शतधन्वा आपके पास वह स्यमन्तकमणि छोड़ गया है, जो बड़ी ही प्रकाशमान और धन देनेवाली है ।। ३६ ।।
10. आप जानते ही हैं कि सत्राजितके कोई पुत्र नहीं है। इसलिये उनकी लड़कीके लड़के –उनके नाती ही उन्हें तिलाञ्जलि और पिण्डदान करेंगे, उनका ऋण चुकायेंगे।
11. औरजो कुछ बच रहेगा, उसके उत्तराधिकारी होंगे ॥ ३७ ॥
12. इस प्रकार शास्त्रीय दृष्टिसे यद्यपि स्यमन्तक मणि हमारे पुत्रोको ही मिलनी चाहिये, तथापि वह मणि आपके ही पास रहे। क्योंकि आप बड़े व्रतनिष्ठ और पवित्रात्मा हैं तथा दूसरोंके लिये उस मणिको रखना अत्यन्त कठिन भी है।

13. परन्तु हमारे सामने एक बहुत बड़ी कठिनाई यह आ गयी है। कि हमारे बड़े भाई बलरामजी मणिके सम्बन्धमें मेरी बातका पूरा विश्वास नहीं करते ॥ ३८ ॥ इसलिये महाभाग्यवान् अक्रूरजी! आप वह मणि दिखाकर हमारे इष्ट–मित्र बलरामजी, सत्यभामा और जाम्बवतीका सन्देह दूर कर दीजिये और उनके हृदयमें शान्तिका सञ्चार कीजिये।
14. हमें पता है कि उसी मणिके प्रतापसे आजकल आप लगातार ही ऐसे यज्ञ करते रहते हैं, जिनमें सोनेकी वेदियाँ बनती हैं ॥ ३६ ॥
15. परीक्षित्! जब भगवान् श्रीकृष्णने इस प्रकार सान्त्वना देकर उन्हें समझाया बुझाया, तब अक्रूरजीने वस्त्रमे लपेटी हुई सूर्यके समान प्रकाशमान वह मणि निकाली और भगवान् श्रीकृष्णको दे दी॥४०॥
16. भगवान् श्रीकृष्णने वह स्यमन्तकमणि अपने जाति–भाइयोंको दिखाकर अपना कलङ्क दूर किया और उसे अपने पास रखनेमें समर्थ होनेपर भी पुनः अक्रूरजीको लौटा दिया ॥ ४१ ॥

<u>इन दोनों अध्यायों की फलश्रुति–</u>

सर्वशक्तिमान् सर्वव्यापक भगवान् श्रीकृष्णके पराक्रमोंसे परिपूर्ण यह आख्यान समस्त पापों, अपराधों और कलङ्कों का मार्जन करनेवाला तथा परम मङ्गलमय है। जो इसे पढ़ता सुनता सुनाता , बताता अथवा स्मरण करता है, वह सब प्रकारकी ''अपकीर्ति और पापों'' से छूटकर शान्तिका अनुभव करता है ॥

63. श्रीकात्यायनी व्रत

यह क्वांरी कन्याओं के लिए मार्गशीर्ष माह का कात्यायनी व्रत है

जिसे श्रीराधा सहित गोपांगनाओं ने भी किया था।

क्वांरी कन्याओं को उत्तम वर की प्राप्ति हेतु एक मास का व्रत जो मार्गशीर्ष से आरंभ करके पूरे 30 दिन करना है ब्रह्म वैवर्त पुराण के श्रीकृष्ण जन्म खण्ड अध्याय 27 में इसका वर्णन है। इस व्रतको वेदवती ने भी किया, जानकी मैया ने भी श्रीराम जी की प्राप्तिके लिए और राधा सहित सभी गोपियों ने भी किया था। या उन क्वांरी कन्याओं के पालक भी प्राप्त कर सकते हैं, अतः मूल कथा पर आते हैं – भगवान् श्रीनारायण कहते हैं नारद! सुनो। अब मैं पुनः श्रीकृष्ण–लीलाका वर्णन करता हूँ। यह वह लीला है, जिसमें देवी पराशक्ति की पूजा और व्रत गोपियों ने किया तथा गोपियोंके चीर का अपहरण हुआ और उन्हें मनोवाञ्छित वरदान दिया गया।

हेमन्तके प्रथम मास– मार्गशीर्ष में गोपाङ्गनाएँ प्रेमके वशीभूत हो प्रतिदिन केवल एक बार हविष्यान्न ग्रहण करके पूर्णतः संयमशील हो पूरे महीनेभर भक्तिभावसे व्रत करती रहीं। वे नित्य मूंगे की माला से 10माला देवी के गुह्यतम मन्त्र का जप करती और सर्वमङ्गल स्तोत्र का पाठ तीनों समय करती थी ।

वे नहाकर यमुनाके तटपर पार्वतीकी बालुकामयी मूर्ति बना उसमें देवीका आवाहन करकेमन्त्रोच्चारणपूर्वक नित्यप्रति पूजा किया करती थीं।

मुने! गोपियाँ चन्दन, अगुरु, कस्तूरी, कुंकुम, नाना प्रकारके मनोहर पुष्प, भाँति–भाँतिके पुष्पहार, धूप, दीप, नैवेद्य, वस्त्र, अनेकानेक फल, मणि, मोती और मूँगे चढ़ाकर तथा अनेक प्रकारके बाजे बजाकर प्रतिदिन देवीकी पूजा सम्पन्न करती थीं।

हे देवि जगतां मातः सृष्टिस्थित्यन्तकारिणि नन्दगोपसुतं कान्तमस्मभ्यं देहि सुव्रते ॥

अर्थात

'उत्तम व्रतका पालन करनेवाली हे देवि ! हे जगदम्ब ! तुम्हीं जगत्की सृष्टि, पालन और संहार करनेवाली होय तुम हमें नन्दगोप नन्दन श्यामसुन्दरको ही प्राणवल्लभ पतिके रूपमें प्रदान करो।' ऐसा कहती थी।

इस मन्त्रसे देवेश्वरी दुर्गाकी मूर्ति बनाकर संकल्प करके मूल मन्त्र'से उनका पूजन करे। सामवेदोक्त मूलमन्त्र बीजमन्त्रसहित इस प्रकार है।

ॐ श्रीदुर्गायै सर्वविघ्नविनाशिन्यै नमः ।

इसी मन्त्रसे सब गोपकुमारियाँ भक्तिभाव और प्रसन्नताके साथ देवीको

फूल,

माला,

नैवेद्य,

धूप,

दीप और वस्त्र चढ़ाती थीं।

मूँगेकी मालासे भक्तिपूर्वक इस मन्त्रका एक सहस्र (1000 अर्थात 10 माला) जप और स्तुति करके वे धरती पर माथा टेककर देवी को पंचांग प्रणाम करती थीं। उस समय कहतीं कि–

'समस्त मङ्गलोंका भी मङ्गल करनेवाली और सम्पूर्ण कामनाओंको देनेवाली शंकरप्रिये देवि शिवें ! तुम्हें नमस्कार है। कृपया दया करके तुम मुझे मनोवाञ्छित वस्तु दो।'

यों कह नमस्कार करके नित्य दक्षिणा दे सारे नैवेद्य ब्राह्मणों को अर्पित करके वे घरको चली जाती थीं।

नारद–

हे भगवान! वो स्तोत्र कौन सा था जो ये गोपियाँ नित्य तीनों समय पाठ करती थी ।

भगवान् श्रीनारायण कहते हैंकृमुने! देवीका वह स्तवराज सुनो, जिससे सब गोपकिशोरियाँ भक्तिपूर्वक पराशक्ति रूपिणी पार्वती जी का स्तवन करती थीं, जो सम्पूर्ण अभीष्ट फलोंको देनेवाली हैं।

पहले यह सुनों कि यह स्तोत्र किस किसने जपकर अपना अभीष्ट पाया।

जब सारा जगत् घोर एकार्णवमें डूब गया।थाय चन्द्रमा और सूर्यकी भी सत्ता नहीं रह गयी थीय कज्जलके समान जलराशिने समस्त चराचर विश्वको आत्मसात् कर लिया थाय उस पुरातन कालमें जलशायी श्रीहरिने ब्रह्माजीको इस स्तोत्रका उपदेश दिया उपदेश देकर उन जगदीश्वरने योगनिद्राका आश्रय लिया। तदनन्तर उनके नाभिकमलमें विराजमान ब्रह्माजी जब मधु और कैटभसे पीड़ित हुए, तब उन्होंने इसी स्तोत्रसे मूलप्रकृति ईश्वरीका स्तवन किया।

अथ श्री सर्वमङ्गल शक्ति स्तोत्रम–

'ॐ नमो जय दुर्गायै'

ब्रह्मा बोले– दुर्गे ! शिवे! अभये! माये! नारायणि!

सनातनि! जये! मुझे मङ्गल प्रदान करो।

सर्वमङ्गले! तुम्हें मेरा नमस्कार है।

दुर्गाका 'दकार' दैत्यनाशरूपी अर्थका वाचक कहा गया है।

'उकार' विघ्ननाशरूपी अर्थका बोधक है। उसका यह अर्थ वेदसम्मत है।

'रेफ' रोगनाशक अर्थको प्रकट करता है।

'गकार' पापनाशक अर्थका वाचक है।

और 'आकार' भय तथा शत्रुओंके नाशका प्रतिपादक कहा गया है।

जिनके चिन्तन, स्मरण और कीर्तनसे ये दैत्य आदि निश्चय ही नष्ट हो जाते हैंय वे भगवती दुर्गा श्रीहरिकी शक्ति कही गयी हैं। यह बात किसी औरने नहीं, साक्षात् श्रीहरिने ही कही है। 'दुर्ग' शब्द विपत्तिका वाचक है और 'आकार' नाशका। जो दुर्ग अर्थात् विपत्तिका नाश करनेवाली हैंय वे देवी ही सदा 'दुर्गा' कही गयी हैं।

'दुर्ग' शब्द दैत्यराज दुर्गमासुरका वाचक है और 'आकार' नाश अर्थका बोधक है। पूर्वकालमें देवीने उस दुर्गमासुरका नाश किया थाय इसलिये विद्वानोंने उनका नाम 'दुर्गा' रखा। शिवा शब्दका 'शकार' कल्याण अर्थका, 'इकार' उत्कृष्ट एवं समूह अर्थका तथा 'वाकार' दाता अर्थका वाचक है। वे देवी कल्याणसमूह तथा उत्कृष्ट वस्तुको देनेवाली हैंय इसलिये 'शिवा' कही गयी हैं। वे शिव अर्थात् कल्याणकी मूर्तिमती राशि हैं इसलिये भी उन्हें 'शिवा' कहा गया है। 'शिव' शब्द मोक्षका बोधक है तथा 'आकार' दाताका । वे देवी स्वयं ही मोक्ष देनेवाली हैंय इसलिये 'शिवा' कही गयी हैं। 'अभय' का अर्थ है भयनाश और 'आकार' का अर्थ है दाता। वे तत्काल अभय–दान करती हैंय इसलिये 'अभया' कहलाती हैं।

'मा' का अर्थ है राजलक्ष्मी और 'या' का अर्थ है प्राप्ति करानेवाला। जो शीघ्र ही राजलक्ष्मीकी प्राप्ति कराती हैंय उन्हें 'माया' कहा गया है।

'मा' मोक्ष अर्थका और 'या' प्राप्ति अर्थका वाचक है। जो सदा मोक्षकी प्राप्ति कराती हैं, उनका नाम 'माया' है। वे देवी भगवान् नारायणका आधा अङ्ग हैं। उन्हींके समान तेजस्विनी हैं और उनके शरीरके भीतर निवास करती हैंय इसलिये उन्हें 'नारायणी' कहते हैं। 'सनातन' शब्द नित्य और निर्गुणका वाचक है। जो देवी सदा निर्गुणा और नित्या हैंय उन्हें 'सनातनी' कहा गया है। 'जय' शब्द कल्याणका वाचक है और 'आकार' दाताका। जो देवी सदा जय देती हैं, उनका नाम 'जया' है। 'सर्वमङ्गल' शब्द सम्पूर्ण ऐश्वर्यका बोधक है और 'आकार' का अर्थ है देनेवाला। ये देवी सम्पूर्ण ऐश्वर्यको देनेवाली हैंय इसलिये 'सर्वमङ्गला' कही गयी हैं। ये देवीके आठ नाम सारभूत हैं और यह स्तोत्र उन नामोंके अर्थसे युक्त है।''

फलश्रुति–

भगवान् नारायणने नाभिकमलपर बैठे हुए ब्रह्माको इसका उपदेश दिया था । उपदेश देकर वे जगदीश्वर योगनिद्राका आश्रय ले सो गये। तदनन्तर जब मधु और कैटभ नामक दैत्य ब्रह्माजीको मारनेके लिये उद्यत हुए तब ब्रह्माजीने इस स्तोत्रके द्वारा दुर्गाजीका स्तवन एवं नमन किया। उनके द्वारा स्तुति की जानेपर साक्षात् दुर्गाने उन्हें 'सर्वरक्षण' नामक दिव्य

श्रीकृष्ण कवचका उपदेश दिया। कवच देकर महामाया अदृश्य हो गयीं।उस स्तोत्रके ही प्रभाव से विधाताको दिव्य कवचकी प्राप्ति हुई।

उस श्रेष्ठ कवचको पाकर निश्चय ही वे निर्भय हो गये। फिर ब्रह्माने महेश्वरको उस समय स्तोत्र और कवचका उपदेश दिया, जब कि त्रिपुरासुरके साथ युद्ध करते समय रथसहित भगवान् शंकर नीचे गिर गये थे। उस कवचके द्वारा आत्मरक्षा करके उन्होंने योगनिद्रा की स्तुति की। फिर योगनिद्राके अनुग्रह और स्तोत्रके प्रभावसे वहाँ शीघ्र ही वृषभरूपधारी भगवान् जनार्दन आये। उनके साथ शक्तिस्वरूपा दुर्गा भी थीं। वे भगवान् शंकरको विजय देनेके लिये आये थे। उन्होंने रथ सहित शंकरको मस्तकपर बिठाकर अभय दान दिया और उन्हें आकाशमें बहुत ऊँचाईतक पहुँचा दिया। फिर जयाने शिवको विजय दी। उस समय ब्रह्मास्त्र हाथमें ले योगनिद्रासहित श्रीहरिका स्मरण करते हुए भगवान् शंकरने स्तोत्र और कवच पाकर त्रिपुरासुरका वध किया था।
इसी स्तोत्र से दुर्गाका स्तवन करके गोपकुमारियोंने श्रीहरिको प्राणवल्लभके रूपमें प्राप्त कर लिया।

इस स्तोत्रका ऐसा ही प्रभाव है।

1. **गोपकन्याओंद्वारा किया गया 'सर्वमङ्गल' नामक स्तोत्र शीघ्र ही समस्त विघ्नोंका विनाश करनेवाला**
2. **और मनोवाञ्छित वस्तुको देनेवाला है।**
3. **शैव, वैष्णव अथवा शाक्त कोई भी क्यों न हो, जो मानव तीनों संध्याओंके समय प्रतिदिन भक्तिभावसे इस स्तोत्रका पाठ करता है, वह संकटसे मुक्त हो जाता है।**
4. स्तोत्रके स्मरणमात्रसे मनुष्य तत्काल ही संकटमुक्त एवं निर्भय हो जाता है।
5. साथ ही सम्पूर्ण उत्तम ऐश्वर्य एवं मनोवाञ्छित वस्तुको शीघ्र प्राप्त कर लेता है। पार्वतीकी कृपासे इहलोकमें श्रीहरिकी सुदृढ़ भक्ति और निरन्तर स्मृति पाता है एवं अन्तमें भगवान्के दास्यसुखको उपलब्ध करता है।

इस स्तवराजके द्वारा व्रजाङ्गनाओंने एक मासतक प्रतिदिन बड़ी भक्तिके साथ ईश्वरीका स्तवन एवं नमन किया। जब मास पूरा हुआतो व्रतकी समाप्तिके दिन वे गोपियाँ अपने वस्त्रोंको तटपर रखकर यमुनाजीमें स्नानके लिये उतरीं।

नारद। रत्नों के मोलपर मिलनेवाले नाना प्रकारके द्रव्य, लाल, पीले, सफेद और मिश्रित रंगवाले मनोहर वस्त्र यमुनाजीके तटपर छा रहे थे। उनकी गणना नहीं की जा सकती थी। उन सबके द्वारा यमुनाजीके उस तटकी बड़ी शोभा हो रही थी।

चन्दन, अगुरु और कस्तूरीकी वायुसे सारा तट – प्रान्त सुरभित था। भाँति–भाँति के नैवेद्य, देश–कालके अनुसार प्राप्त होनेवाले फल, धूप, दीप, सिन्दूर और कुंकुम यमुनाके उस तटको सुशोभित कर रहे थे।

जलमें उतरनेपर गोपियाँ कौतूहलवश क्रीडाके लिये उन्मुख हुई। उनका मन श्रीकृष्णको समर्पित था। वे अपने नग्न शरीरसे जल–क्रीड़ामें आसक्त हो गयीं।

श्रीकृष्णने तटपर रखे हुए भाँति–भाँति के द्रव्यों और वस्त्रोंको देखा। देखकर वे ग्वाल–बालोंके साथ वहाँ गये और सारे वस्त्र लेकर वहाँ रखी हुई खाद्य वस्तुओंको सखाओंके साथ खाने लगे। फिर कुछ वस्त्र लेकर बड़े हर्षके साथ उनका गट्ठर बाँधा और कदम्बकी ऊँची डालपर चढ़कर गोविन्दने गोपिकाओंसे इस प्रकार कहा।

श्रीकृष्ण बोले–

1. गोपियो ! तुम सब–की सब इस व्रतकर्ममें असफल हो गयीं।
2. पहले मेरी बात सुनकर विधि–विधानका पालन करो।
3. उसके बाद इच्छानुसार जलक्रीड़ा करना ।
4. जो मास व्रत करनेके योग्य है जिसमें मङ्गलकर्मके अनुष्ठानका संकल्प किया गया है उसी मासमें तुमलोग जलके भीतर घुसकर नंगी नहा रही होय ऐसा क्यों किया?
5. इस कर्मके द्वारा तुम अपने व्रतको अङ्गहीन करके उसमें हानि पहुँचा रही हो।
6. तुम्हारे पहननेके वस्त्र, पुष्पहार तथा व्रतके योग्य वस्तुएँ, जो यहाँ रखी गयी थीं, किसने चुरा लीं ?
7. जो स्त्री व्रतकालमें नंगी स्नान करती है, उसके ऊपर स्वयं वरुणदेव रुष्ट हो जाते जान पड़ता है, वरुणके अनुचर तुम्हारे वस्त्र उठा ले गये।
8. अब तुम नंगी होकर घरको कैसे जाओगी ? तुम्हारे इस व्रतका क्या होगा ? व्रतके द्वारा जिस देवीकी आराधना की जा रही थी, वह कैसी है? तुम्हारी वस्तुओंकी रक्षा क्यों नहीं कर रही है?

श्रीकृष्णकी यह बात सुनकर व्रजाङ्गनाओंको बड़ी चिन्ता हुई। उन्होंने देखा, यमुनाजीके तटपर न तो हमारे वस्त्र हैं और न वस्तुएँ ही। वे जलमें नंगी खड़ी हो विषाद करने लगीं। जोर–जोरसे रोने लगीं और बोलीं– 'यहाँ रखे हुए हमारे वस्त्र कहाँ गये और पूजाकी वस्तुएँ भी कहाँ हैं? इस प्रकार विषाद करके वे सब गोपकन्याएँ दोनों हाथ जोड़ भक्ति और विनयके साथ हाथ जोड़कर वहीं श्यामसुन्दरसे बोलीं ।'

गोपिकाओंने कहा–

1. गोविन्द ! तुम्हीं हम दासियोंके श्रेष्ठ स्वामी हो
2. अतः हमारे पहनने योग्य वस्त्रोंको तुम अपनी ही वस्तु समझो।
3. उन्हें लेने या स्पर्श करनेका तुम्हें पूरा अधिकार है

4. परंतु व्रतके उपयोगमें आनेवाली जो दूसरी वस्तुएँ हैं, वे इस समय आराध्य देवताकी सम्पत्ति हैं उन्हें दिये बिना उन वस्तुओंको ले लेना तुम्हारे लिये कदापि उचित नहीं है।
5. हमारी साड़ियाँ दे दो
6. उन्हें पहनकर हम व्रतकी पूर्ति करेंगी।
7. श्यामसुन्दर ! इस समय उनके अतिरिक्त अन्य वस्तुओंको ही अपना आहार बनाओ।
8. यह सुनकर, श्रीकृष्णने कहा– तुमलोग

आकर अपने–अपने वस्त्र ले जाओ। यह सुनकर श्रीराधाके अङ्गोंमें रोमाञ्च हो आया। वे श्रीहरिके निकट वस्त्र लेनेके लिये नहीं गयीं। उन्होंने जलमें योगासन लगाकर श्रीहरिके उन चरणकमलोंका चिन्तन किया, जो ब्रह्मा, शिव, अनन्त (शेषनाग) तथा धर्मके भी वन्दनीय एवं मनोवाञ्छित वस्तु देनेवाले हैं। उन चरणकमलोंका चिन्तन करते–करते उनके नेत्रों मेंप्रेमके आँसू उमड़ आये और वे भावातिरेकसे उन गुणातीत प्राणेश्वरकी स्तुति करने लगीं।

64. हरकाली व्रत–

राजा युधिष्ठिरने पूछा – भगवन् ! भगवती हरकालीदेवी कौन हैं? इनका पूजन करनेसे स्त्रियोंको क्या फल प्राप्त होता है ? इसका आप वर्णन करें ?

भगवान् श्रीकृष्ण बोले– महाराज ! दक्ष प्रजापतिकी एक कन्याका नाम था सति। तपस्या से उनका वर्ण कृष्ण अर्थात काला हो गया था (कौशिकी के प्राकट्य पर भी देवी का वर्ण काला हुआ था) यह वर्ण की तुलना नीलकमल के वर्ण से की जाती है । इनका विवाह भगवान् शंकरके साथ हुआ था । विवाहके बाद भगवान् शंकर भगवती कालीके साथ आनन्द– पूर्वक रहने लगे। एक समय भगवान् शंकर भगवान् विष्णुके साथ अपने सुरम्य मण्डपमें विराजमान थे। उस समय हँसकर शिवजीने भगवती कालीको बुलाया और कहा–'प्रिये! गौरि ! यहाँ आओ।' शिवजीका यह वक्रवाक्य सुनकर भगवतीको बहुत क्रोध आया और वे यह कहकर रुदन करने लगीं कि 'शिवजीने मेरा कृष्णवर्ण देखकर परिहास किया है और मुझे गौरी कहा है, अतः अब मैं अपनी इस देहको अग्निमें प्रज्वलित कर दूँगी।' भगवान् शंकरने उन्हें अग्निमें प्रवेश करनेसे रोकनेका प्रयत्न किया, परंतु देवीने अपनी देहकी हरितवर्णकी कान्ति हरी दूर्वा आदि घासमें त्यागकर अपनी देहको अग्निमें हवन कर दिया और उन्होंने पुनः हिमालयकी पुत्री–रूपमें गौरी नामसे प्रादुर्भूत होकर शिवजीके वामाङ्गमें निवास किया। इसी दिनसे जगत्पूज्या श्रीभगवतीका नाम 'हरकाली' हुआ।

भाद्रपद मासके शुक्ल पक्षकी तृतीया तिथिको सब प्रकारके नये धान्य एकत्रकर उनपर अङ्कुरित हरी घाससे निर्मित भगवती हरकालीकी मूर्ति स्थापित करे और गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, मोदक आदि नैवेद्य तथा भाँति–भाँतिके उपचारोंसे देवीका पूजन करे। रात्रिमें गीत–नृत्य आदि उत्सवकर जागरण करे और देवी हरकालीको इस मन्त्रसे प्रणाम करे –

हरकर्मसमुत्पन्ने हरकाये हरप्रिये।

मां त्राहीशस्य मूर्तिस्थे प्रणतोऽस्मि नमो नमः ॥

'भगवान् शंकरके लीलाकृत्य से उत्पन्न हे शंकरप्रिये ! आप भगवान् शंकरके शरीरमें निवास करनेवाली हैं, भगवान् शंकरकी मूर्तिमें स्थित रहनेवाली हैं, मैं आपकी शरण हूँ, आप मेरी रक्षा करें। आपको बार–बार प्रणाम है।

इस प्रकार देवीका पूजन कर प्रातःकाल सुवासिनी स्त्रियाँ बड़े उत्सवसे गीत–नृत्यादि करते हुए प्रतिमाको पवित्र जलाशयके समीप ले जायँ और इस मन्त्रको पढ़ते हुए विसर्जित करें,अर्चितासि मया भक्त्या गच्छ देवि सुरालयम् ।

हरकाले शिवे गौरि पुनरागमनाय च ॥

(उत्तरपर्व २० । २२)

'हे हरकाली देवि ! मैंने भक्तिपूर्वक आपकी पूजा की है, हे गौरि ! आप पुनः आगमनके लिये इस समय देवलोकको प्रस्थान करें।'

इस विधिसे प्रतिवर्ष जो स्त्री अथवा शिवा का भक्त

व्रत करता है, वह आरोग्य, दीर्घायुष्य, सौभाग्य, पुत्र, पौत्र, धन, बल, ऐश्वर्य आदि प्राप्त करता है और सौ वर्षतक संसारका सुख भोगकर शिवलोक प्राप्त करता है।

अर्थात वह मृत्युञ्जय स्तोत्र का फल भी पा लेता है।

महादेवके अनुग्रहसे वहाँ वीरभद्र, महाकाल, नन्दीश्वर, विनायक आदि शिवजीके गण उसकी आज्ञामें रहते हैं। जो भी स्त्री भक्तिपूर्वक यह हरकाली–व्रत करती है और रात्रिके समय गीत–वाद्य–नृत्यसे जागरण कर उत्सव मनाती है, वह अपने पतिकी अति प्रिय होती ळें

65.1 इन्द्रादि द्वारा देवी की स्तुति

दुर्गा सप्तशती के मध्यम चरित्र के चौथे अध्याय की इन्द्रादि देवताओं द्वारा देवी की स्तुति व महाफल– विजय हेतु यह उत्तम अपाय है। इस कथा को आप पढे इसके बाद सप्तशती के मध्यम चरित्र का फल देने वाली संक्षिप्त कथा जो श्रीमद् देवीभागवत में है वह 65.2 में बतायेंगे; वह कथा आपको संपूर्ण मध्यम चरित्र का फल देगी।

महर्षि मेधा बोले– देवी ने जब पराक्रमी दुरात्मा महिषासुर को मार गिराया और असुरों की सेना को मार दिया तब इन्द्रादि समस्त देवता अपने सिर तथा शरीर को झुकाकर भगवती की स्तुति करने लगे–

जिस देवी ने अपनी शक्ति से यह जगत व्याप्त किया है और जो सम्पूर्ण देवताओं तथा महर्षियों की पूजनीय है, उस अम्बिका को हम भक्तिपूर्वक नमस्कार करते हैं, वे हम सब का कल्याण करें, जिनके अतुलनीय प्रभाव और बल का वर्णन भगवान विष्णु, शंकर और ब्रह्माजी भी नहीं कर सके, वही चंडिका देवी इस संपूर्ण जगत का पालन करे और अशुभ भय का नाश करे। जो पुण्यात्माओं के घरों में स्वयं लक्ष्मी रूप से, पापियों के घरों में दरिद्रता रूप से, विशुद्ध अंतःकरण वाले पुरुषों के हृदय में बुद्धि रूप से, सत्पुरुषों में श्रृद्धा रूप से तथा

कुलीन मनुष्यों में लज्जा रूप से निवास करती हैं उन आप भगवती दुर्गा को हम नमस्कार करते हैं।

हे देवी! इस विश्व का पालन करो, हे देवी! हम तुम्हारे अचिन्त्य रूप का किस प्रकार वर्णन करें। असुरों का नाश करने वाले भारी पराक्रम तथा समस्त देवताओं और दैत्यों के विषय में जो तुम्हारे पवित्र–चरित्र हैं उनका हम किस प्रकार वर्णन करें। हे देवी! त्रिगुणात्मिका होने पर भी तुम सम्पूर्ण जगत की उत्पत्ति का कारण हो। हे देवी ! भगवान विष्णु, शंकर आदि देवता भी आपका पार नहीं पाते आप ही सबका आश्रय हो, यह सम्पूर्ण जगत आपका ही अंशभूत है क्योंकि आप सबकी आदि भूत परा प्रकृति हो।

हे देवी! आपके जिस नाम के उच्चारण से सम्पूर्ण यज्ञों में सब देवता तृप्ति लाभ करते हैं, वह 'स्वाहा' आप ही हो। इसके अतिरिक्त आप ही पितरों की तृप्ति का कारण हो, इसलिए सब आपको 'स्वधा' कहते हैं। हे देवी! वह विद्या जो मोक्ष को देने वाली है, जो अचिन्त्य महाज्ञान, स्वरूपा है, तत्वों के सार को वश में करने वाले, सम्पूर्ण दोषों को दूर करने वाले, मोक्ष की इच्छा वाले, मुनिजन जिसका अभ्यास करते हैं वह पराविज्ञान रूपी पराविद्या (अपरोक्ष ज्ञान) आप ही हो, आप वाणीरूप हो, दोष रहित ऋग, यजुर्वेदों की; उद् गीथ और सुन्दर पदों के पाठ वाले सामवेद की आश्रय रूप आप ही हो । इस विश्व की उत्पत्ति एवं पालन के लिए आप वार्त्ता के रूप में प्रकट हुई हो और आप सम्पूर्ण संसार की पीड़ा हरने वाली हो, हे देवी! जिससे सारे शास्त्रों को जाना जाता है, वह मेधाशक्ति आप ही हो और दुर्गम भवसागर से पार करने वाली नौका भी आप ही हो।

लक्ष्मी रूप से विष्णु भगवान के हृदय में निवास करने वाली और भगवान महादेव द्वारा सम्मानित गौरी देवी आप ही हो, मन्द मुसकान वाले, निर्मल पूर्णचन्द बिम्ब के समान और उत्तम, सुवर्ण की मनोहर कांति से कामनीय आपके मुख को देखकर भी महिषासुर क्रोध में भर गया, यह बड़े आश्चर्य की बात है और हे देवी! आपका यही मुख जब क्रोध से भर गया तो उदयकाल के चन्द्रमा की भाँति लाल हो गया और तनी हुई भौंहों के कारण विकराल रूप हो गया, तो उसे देखकर भी महिषासुर के शीघ्र प्राण नहीं निकल गये, यह बड़े आश्चर्य की बात है। आपके कुपित मुख के दर्शन करके भला कौन जीवित रह सकता है, हे देवी! आप हमारे कल्याण के लिए प्रसन्न होओ ! आपके प्रसन्न होने से इस जगत का अभ्युदय होता है और जब आप क्रुद्ध हो जाती हैं तो कितने ही कुलों का सर्वनाश हो जाता है। यह हमने अभी– अभी जाना है कि जब आपने महिषासुर की बहुत बड़ी सेना को देखते– देखते ही मार गिराया।

हे देवी! सदा अभ्युदय देने वाली आप जिस पर प्रसन्न हो जाती हो, वही देश में सम्मानित होते हैं, उनके धन यश की वृद्धि होती है। उनका धर्म कभी शिथिल नहीं होता है और उनके यहाँ अधिक पुत्र–पुत्रियाँ और दासादि होते हैं। हे देवी! आपकी कृपा से ही धर्मात्मा पुरुष प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक यज्ञ करता है और धर्मानुकूल आचरण

करता है और उसके प्रभाव से स्वर्गलोक में जाता है क्योंकि आप तीनों लोकों में मनोवांछित फल देने वाली हो। हे माँ दुर्गे ! आप स्मरण करने पर सम्पूर्ण जीवों के भय नष्ट कर देती हो और स्थिर चित्त वालों के द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें और अत्यन्त मंगल देती हो। दारिद्रदुख नाशिनी हे देवी! तुम्हारे सिवा दूसरा कौन है, तुम्हारा चित्त सदा दूसरों के उपकार में लगा रहता है।
(दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः ......)

हे देवी! आप शत्रुओं को इसलिए मारती हो कि उनके मारने से दूसरों को सुख मिलता है।

वह चाहे नरक में जाने के लिए चिरकाल तक पाप करते रहे हों, किन्तु आपके साथ युद्ध करके सीधे स्वर्ग को जायें, इसीलिए आप उनका वध करती हो, हे देवी! क्या तुम दृष्टिपात मात्र से समस्त असुरो को भस्म नहीं कर सकती? अवश्य ही कर सकती हो! किन्तु शत्रुओं को शस्त्रों के द्वारा मारना इसलिए है कि शस्त्रों के द्वारा मरकर वे स्वर्ग को जावें। इस तरह से हे देवी! उन शत्रुओं के प्रति भी तुम्हारा विचार उत्तम ही है।

हे देवी! आपके उग्र खड्ग की चमक से और त्रिशूल की नोंक की कांति की किरणों से असुरों की आँखें फूट नहीं गई। उसका कारण यह था कि वे किरणों से शोभायमान आपके चन्द्रमा के समान आनन्द प्रदान करने वाले सुन्दर मुख को देख रहे थे। हे देवी! आपका शील बुरे वृतान्त को दूर करने वाला है और सबसे अधिक तुम्हारा रूप है, जो न तो कभी चिन्तन में आ सकता है और न जिसकी दूसरों से कभी तुलना ही हो सकती है। आपका बल व पराक्रम शत्रुओं का नाश करने वाला है। इस तरह आपने शत्रुओं पर भी दया प्रकट की है। हे देवी! आपके बल की किसके साथ बराबरी की जा सकती है तथा शत्रुओं को भय देने वाला इतना सुन्दर रूप भी और किस का है?

हृदय में कृपा और युद्ध में निष्ठुरता यह दोनों बातें तीनों लोकों में केवल पराशक्ति भुवनेश्वरी अर्थात आपमें ही देखने में आई है।

हे माता! युद्ध भूमि में शत्रुओं को मारकर तुमने उन्हें स्वर्ग लोक में पहुँचाया है। इस तरह तीनों लोकों की आपने रक्षा की है तथा उन उन्मत्त असुरों से जो हमें भय था उसको भी आपने दूर किया है, आपको हमारा नमस्कार है। हे देवी! आप शूल तथा खड्ग से हमारी रक्षा करो तथा घण्टे की ध्वनि और धनुष की टंकार से भी हमारी रक्षा करो। हे चण्डिके! आप अपने शूल को घुमाकर पूर्व, पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण दिशा में हमारी रक्षा करो। तीनों लोकों में जो आपके सौम्य रूप हैं तथा घोर रुप हैं, उनके द्वारा भी आप हमारी रक्षा करो तथा इस पृथ्वी की भी रक्षा करो। हे अम्बिके! आपके कर–पल्लवों में जो खड्ग, शूल और गदा आदि शस्त्र शोभा पा रहे हैं, उनसे हमारी रक्षा करो।

महर्षि बोले कि इस प्रकार जब सब देवताओं ने जगत माता भगवती महिषासुर मर्दिनी दुर्गा देवी की स्तुति की और नन्दवन के पुष्पों तथा गन्ध अनुलेपों द्वारा उनका पूजन किया। और फिर सबने मिलकर सुगंधित व दिव्य धूपों द्वारा उनको सुगन्धि निवेदन की, तब देवी ने प्रसन्न होकर कहा– हे देवताओं! तुम सब मुझसे मनवांछित वर माँगो।

देवता बोले–हे भगवती! आपने हमारा सब कुछ कार्य कर दिया अब हमारे लिए कुछ भी माँगना बाकी नहीं रहा क्योंकि आपने हमारे शत्रु महिषासुर को मार डाला है। हे महेश्वरि ! तुम इस पर भी यदि हमें कोई वर देना चाहती हो तो बस इतना वर दो कि जब–जब हम आपका स्मरण करें, तब–तब आप हमारी विपत्तियों को हरण करने के लिए हमें दर्शन दिया करो।

हे अम्बिके ! जो कोई भी आपकी यह स्तुति करे, आप उनको वित्त समृद्धि और वैभव देने के साथ ही उनके धन और स्त्री आदि सम्पत्ति बढ़ावे और सदा हम पर प्रसन्न रहें।

महर्षि बोले–हे राजन् ! देवताओं ने जब जगत के लिए तथा अपने लिये इस प्रकार प्रश्न किया तो "तथास्तु" कहकर देवी अन्तर्धान हो गई। हे भूप! जिस प्रकार तीनों लोकों का हित करने वाली वे देवी सब देवताओं के तेज से लीलावश प्रकट हुई थी वे ही गौरी के शरीर से कौशिकी होकर शुम्भ और निशुंभ का वध करने के लिए प्रकट हुई थी।

65.2 महिषमर्दिनीका प्राकट्य और उनके द्वारा महिषासुर का वध

यह श्रीदुर्गा सप्तशती के मध्यम चरित्र की अति संक्षिप्त कथा है। यह पावन कथा श्रीमद्देवीभागवत महापुराण दशम स्कन्धके अध्याय 12 से ली गई है इसका एक लाभ यह है कि यह अति संक्षिप्त होने पर भी सप्तशती के मध्यम चरित्र का संपूर्ण फल देती है। अतः जिनको सप्तशती के विस्तार का समय न हो वह यही पढ़े। दोनों भाषाओं में है।

मुनि बोले– (एक बार) महिषीके गर्भसे उत्पन्न महान् बलशाली तथा पराक्रमी महिषासुर सभी देवताओंको पराजित करके सम्पूर्ण जगत्का स्वामी हो गया।वह महान् असुर समस्त लोकपालों के अधिकारीको बलपूर्वक छीनकर तीनों लोकोंके अद्‌भुत ऐश्वर्यका भोग करने लगा। सभी देवता उससे पराजित होकर स्वर्गसे निष्कासित कर दिये गये। तत्पश्चात् वे ब्रह्माजीको आगे करके उस उत्तम लोकमें पहुँचे, जहाँ देवाधिदेव भगवान् विष्णु तथा शिव विराजमान थे। वे उस दुरात्मा महिषासुरका वृत्तान्त बताने लगे – हे देवेश्वरो ! बल, वीर्य तथा मदसे उन्मत्त वह महिषासुर नामक दुष्ट दैत्य सभी देवताओंके लोकोंको शीघ्र जीतकर उनपर स्वयं शासन कर रहा है। हे असुरोंका नाश करनेवाले! आप दोनों शीघ्र ही उस महिषासुरके वधका कोई उपाय सोचिये। तब देवताओंकी यह दुःखभरी वाणी सुनकर वे भगवान् विष्णु, शिव तथा पद्मयोनि ब्रह्मा अत्यधिक कुपित हो उठे। हे महीपते ! इस प्रकार कुपित उन भगवान् विष्णुके मुखसे हजारों सूर्योकी कान्तिके समान दिव्य तेज उत्पन्न हुआ।इसके पश्चात् क्रमसे इन्द्र आदि सभी देवताओंके शरीरसे उन देवाधिपोंको प्रसन्न करता हुआ तेज निकला। शिवके शरीरसे जो तेज निकला, उससे मुख बना, यमराजके तेजसे केश बने तथा विष्णुके तेजसे भुजाएँ बनीं । हे भूप ! चन्द्रमाके तेजसे दोनों स्तन हुए। इन्द्रके तेजसे कटिप्रदेश, वरुणके तेजसे जंघा और ऊरु उत्पन्न हुए। पृथिवीके तेजसे दोनों नितम्ब, ब्रह्माके तेजसे दोनों चरण, सूर्यके तेजसे पैरोंकी अँगुलियाँ और वसुओंके तेजसे हाथोंकी अँगुलियाँ निर्मित हुईं ।

हे पृथ्वीपते ! कुबेरके तेजसे नासिका और प्रजापतिके उत्कृष्ट तेजसे दाँत उत्पन्न हुए। अग्निके तेजसे शुभकारक तीनों नेत्र उत्पन्न हुए, सन्ध्याके तेजसे कान्तिकी निधिस्वरूपा दोनों भृकुटियाँ उत्पन्न हुई और वायुके तेजसे दोनों कान उत्पन्न हुए। हे नरेश ! इस प्रकार सभी देवताओंके तेजसे भगवती महिषमर्दिनी प्रकट हुईं । शिवजीने उन्हें अपना शूल, विष्णुने चक्र, वरुणने शंख, अग्निने शक्ति और वायुने धनुष–बाण प्रदान किये। इन्द्रने वज्र तथा ऐरावत हाथीका घण्टा, यमराजने कालदण्ड और ब्रह्माने अक्षमाला तथा कमण्डलु प्रदान किये । हे पृथ्वीपते ! सूर्यने देवीके रोमछिद्रोंमें अपनी रश्मिमालाओंका संचार किया। कालने देवीको तलवार तथा स्वच्छ ढाल दी। हे राजन् ! समुद्रने स्वच्छ हार, कभी जीर्ण न होनेवाले दो वस्त्र, चूड़ामणि, कुण्डल, कटक, बाजूबन्द, विमल अर्धचन्द्र, नूपुर तथा गलेमें धारण किया जानेवाला आभूषण अति प्रसन्न होकर उन भगवतीको प्रदान किये।हे धरणीपते ! विश्वकर्माने उन भगवतीको अँगूठियाँ दीं। हिमालयने उन्हें वाहनके रूपमें सिंह तथा विविध प्रकारके रत्न प्रदान किये। धनपति कुबेरने उन्हें सुरासे पूर्ण एक पानपात्र दिया तथा सर्वव्यापी भगवान् शेषनागने उन्हें नागहार प्रदान किया ।

इसी प्रकार अन्य समस्त देवताओंने जगन्मयी भगवतीको सम्मानित किया। इसके बाद महिषासुरद्वारा पीडित देवताओंने जगत्की उत्पत्तिकी कारणस्वरूपिणी उन महेश्वरी महाभगवतीकी अनेक स्तोत्रोंसे स्तुति की।

उन देवताओंकी स्तुति सुनकर देवपूजित सुरेश्वरी महिषासुरके वधके लिये उच्च स्वरसे गर्जना करने लगीं। हे भूपते ! महिषासुर उस नाद से चकित हो उठा और अपने सभी सैनिकोंको साथमें लेकर जगद्धात्री भगवतीके पास पहुँचा।तत्पश्चात् महिष नामक वह प्रबल दानव आहे द्वारा छोडे गये विविध शस्त्रास्त्रों सम्पूर्ण आकाश मण्डलको आच्छादित करते हुए भगवती के साथ पुढ करने लगा। प्रधान सेनापति चिक्षुरके अतिरिक्त दुर्भर, दुष बाष्कल, ताम्र तथा विडालवदन–इन सभीये तक संग्राममें यमराजकी भाँति भयंकर अन्य असेश योद्धाओंसे वह दानवश्रेष्ठ पराक्रमी महिषासुर चिरा हुआ था। तदनन्तर क्रोधसे लाल आँखाँवाली उन जगन्मोहित भगवतीने युद्धभूमिमें महिषासुरके अधीनस्थ मुखा योद्धाओंको मार डाला।उन योद्धाओंके मारे जानेके अनन्तर परम मायावी वह महिषासुर क्रोधसे मूच्छित

होकर देवीके समक्ष शीघ्रतासे आ खड़ा हुआ।वह दानवेन्द्र महिष अपनी मायाके प्रभावसे अनेक प्रकारके रूप धारण कर लेता था; किंतु वे देवी उसके उन सभी रूपोंको नष्ट कर डालती थीं ।

तब अन्तमें महिषका रूप धारण किये हुए उस देवपीडक तथा देवगणोंके लिये यमराजतुल्य महिषासुरको पाशमें दृढ़तापूर्वक बाँधकर भगवतीने अपने खड्गसे उसका सिर काटकर (पृथ्वीपर) गिरा दिया। इससे (दानवी सेनामें) हाहाकार मच गया और उसकी शेष सेना दसों दिशाओंमें भाग गयी। समस्त देवगण इससे अति प्रसन्न होकर देवदेवेश्वरी भगवतीको स्तुति करने लगे। महिषासुरका वध करनेवाली देवी महालक्ष्मीका इस प्रकार प्रादुर्भाव हुआ था।

●●मुनिरुवाच●●

महिषीगर्भसम्भूतो महाबलपराक्रमः ।
देवान्सर्वान्पराजित्य महिषोऽभूज्जगत्प्रभुः ॥ १

सर्वेषां लोकपालानामधिकारान्महासुरः ।
बलानिर्जित्य बुभुजे त्रैलोक्यैश्वर्यमद्भुतम् ॥ २ ॥

ततः पराजिताः सर्वे देवाः स्वर्गपरिच्युताः ।
ब्रह्माणं च पुरस्कृत्य ते जग्मुर्लोकमुत्तमम् ॥ ३ ॥

यत्रोत्तमौ देवदेवौ संस्थितौ शङ्कराच्युतौ ।
वृत्तान्तं कथयामासुर्महिषस्य दुरात्मनः ॥ ४ ॥

देवानां चैव सर्वेषां स्थानानि तरसासुरः ।
विनिर्जित्य स्वयं भुङ्क्ते बलवीर्यमदोद्धतः ॥ ५ ॥

महिषासुरनामासौ दुष्टदैत्योऽमरेश्वरौ ।
वधोपायश्च तस्याशु चिन्त्यतामसुरार्दनौ ॥ ६ ॥

एवं श्रुत्वा स भगवान्देवानामार्तियुग्वचः ।
चकार कोपं सुबहुं तथा शङ्करपद्मजौ ॥ ७ ॥

एवं कोपयुतस्यास्य हरेरास्यान्महीपते ।
तेजः प्रादुरभूद्दिव्यं सहस्रार्कसमद्युति ॥ ८ ॥

अथानुक्रमतस्तेजः सर्वेषां त्रिदिवौकसाम् ।
शरीरादुद्भवं प्राप हर्षयद्विबुधाधिपान् ॥ ९ ॥

यदभूच्छम्भुजं तेजो मुखमस्योदपद्यत ।
केशा बभूवुर्याम्येन वैष्णवेन च बाहवः ॥ १० ॥

सौम्येन च स्तनौ जातौ माहेन्द्रेण च मध्यमः ।
वारुणेन ततो भूप जङ्घोरू सम्बभूवतुः ॥ ११ ॥

नितम्बौ तेजसा भूमेः पादौ ब्राह्मेण तेजसा ।
पादाङ्गुल्यो भानवेन वासवेन कराङ्गुली ॥ १२ ॥

कौबेरेण तथा नासा दन्ताः सञ्जज्ञिरे तदा ।
प्राजापत्येनोत्तमेन तेजसा वसुधाधिप ॥ १३ ॥

पावकेन च सञ्जातं लोचनत्रितयं शुभम् ।
सान्ध्येन तेजसा जाते भृकुट्यौ तेजसां निधी ॥ १४ ॥

कर्णौ वायव्यतो जातौ तेजसो मनुजाधिप ।
सर्वेषां तेजसा देवी जाता महिषमर्दिनी ॥ १५ ॥

शूलं ददौ शिवो विष्णुश्चक्रं शङ्खं च पाशभृत् ।
हुताशनो ददौ शक्तिं मारुतश्चापसायकौ ॥ १६ ॥

वज्रं महेन्द्रः प्रददौ घण्टां चैरावताद् गजात् ।
कालदण्डं यमो ब्रह्मा चाक्षमालाकमण्डलू ॥ १७ ॥

दिवाकरो रश्मिमालां रोमकूपेषु सन्ददौ ।
कालः खड्गं तथा चर्म निर्मलं वसुधाधिप ॥ १८ ॥

समुद्रो निर्मलं हारमजरे चाम्बरे नृप ।
चूडामणिं कुण्डले च कटकानि तथाङ्गदे ॥ १६ ॥

अर्धचन्द्रं निर्मलं च नूपुराणि तथा ददौ ।
ग्रैवेयकं भूषणं च तस्यै देव्यै मुदान्वितः ॥ २० ॥

विश्वकर्मा चोर्मिकाश्च ददौ तस्यै धरापते ।
हिमवान्वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च ॥ २१ ॥

पानपात्रं सुरापूर्णं ददौ तस्यै धनाधिपः ।
शेषश्च भगवान्देवो नागहारं ददौ विभुः ॥ २२ ॥

अन्यैरशेषविबुधैर्मानिता सा जगन्मयी ।
तां तुष्टुवुर्महादेवीं देवा महिषपीडिताः ॥ २३ ॥

नानास्तोत्रैर्महेशानीं जगदुद्भवकारिणीम् ।
तेषां निशम्य देवेशी स्तोत्रं विबुधपूजिता ॥ २४ ॥

महिषस्य वधार्थाय महानादं चकार ह ।
तेन नादेन महिषश्चकितोऽभूद्धरापते ॥ २५ ॥

आससाद जगद्धात्रीं सर्वसैन्यसमावृतः ।
ततः स युयुधे देव्या महिषाख्यो महासुरः ॥ २६ ॥

शस्त्रास्त्रैर्बहुधा क्षिप्तैः पूरयन्नम्बरान्तरम् ।
चिक्षुरो ग्रामणीः सेनापतिर्दुर्धरदुर्मुखौ ॥ २७ ॥

बाष्कलस्ताम्रकश्चैव बिडालवदनोऽपरः ।
एतैश्चान्यैरसंख्यातैः संग्रामान्तकसन्निभैः ॥ २८ ॥

योधैः परिवृतो वीरो महिषो दानवोत्तमः ।
ततः सा कोपताम्राक्षी देवी लोकविमोहिनी ॥ २६ ॥

जघान योधान्समरे देवी महिषमाश्रितान् ।
ततस्तेषु हतेष्वेव स दैत्यो रोषमूर्च्छितः ॥ ३० ॥

आससाद तदा देवीं तूर्णं मायाविशारदः ।
रूपान्तराणि सम्भेजे मायया दानवेश्वरः ॥ ३१ ॥

तानि तान्यस्य रूपाणि नाशयामास सा तदा ।
ततोऽन्ते माहिषं रूपं बिभ्राणममरार्दनम् ॥ ३२ ॥

पाशेन बद्ध्वा सुदृढं छित्त्वा खड्गेन तच्छिरः ।
पातयामास महिषं देवी देवगणान्तकम् ॥ ३३ ॥

हाहाकृतं ततः शेषं सैन्यं भग्नं दिशो दश ।
तुष्टुवुर्देवदेवेशीं सर्वे देवाः प्रमोदिताः ॥ ३४ ॥

एवं लक्ष्मीः समुत्पन्ना महिषासुरमर्दिनी ।

66. समस्त बाधाओं के नाश के लिए श्री सप्तश्लोकी महास्तोत्रम्

शिव जी ने यह स्तोत्र साक्षात देवी से पूछा था तब देवी ने सभी भक्तों की विशेष रक्षा और कामनाओं के लिए यह बताया । (और यह अधिकांश सभी भक्तों के पास उपलब्ध भी होता है पर फिर भी शाक्त लोग इधर उधर भागते रहते हैं बहुत ही महान महिमा है इसकी)

ॐ अस्य श्रीदुर्गासप्तश्लोकीस्तोत्रमन्त्रस्य नारायण ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः,श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थं सप्तश्लोकीदुर्गापाठे विनियोगः ।

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति। ।1।।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्रदुःखभयहारणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ।।2।।

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ।।3।।

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ।। 4।।

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ।।5।।

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ।।6।।

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्।।7।।

अर्थात्

शिवजी बोले– हे देवि! तुम भक्तोंके लिये सुलभ हो और समस्त कर्मोंका विधान करनेवाली हो। कलियुगमें कामनाओंकी सिद्धि हेतु यदि कोई उपाय हो तो उसे अपनी वाणीद्वारा सम्यक् रूपसे व्यक्त करो।

देवीने कहा–हे देव! आपका मेरे ऊपर बहुत स्नेह है। कलियुगमें समस्त कामनाओंको सिद्ध करनेवाला जो साधन है वह बतलाऊँगी, सुनो! उसका नाम है 'अम्बास्तुति'।

ॐ इस दुर्गासप्तश्लोकी स्तोत्रमन्त्रके नारायण ऋषि हैं, अनुष्टुप् छन्द है, श्रीमहाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती देवता हैं, श्रीदुर्गाकी प्रसन्नताके लिये सप्तश्लोकी दुर्गापाठमें इसका विनियोग किया जाता है।

वे भगवती महामाया देवी ज्ञानियोंके भी चित्तको बलपूर्वक खींचकर मोहमें डाल देती हैं ॥ १ ॥

माँ दुर्गे! आप स्मरण करनेपर सब प्राणियोंका भय हर लेती हैं और स्वस्थ पुरुषोंद्वारा चिन्तन करनेपर उन्हें परम कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती हैं। दुःख, दरिद्रता और भय हरनेवाली देवि! आपके सिवा दूसरी कौन है, जिसका चित्त सबका उपकार करनेके लिये सदा ही दयार्द्र रहता हो ॥२॥

नारायणी! तुम सब प्रकारका मंगल प्रदान करनेवाली मंगलमयी हो। कल्याणदायिनी शिवा हो। सब पुरुषार्थोंको सिद्ध करनेवाली, शरणागतवत्सला, तीन नेत्रोंवाली एवं गौरी हो। तुम्हें नमस्कार है ॥ ३ ॥

शरणमें आये हुए दीनों एवं पीड़ितोंकी रक्षामें संलग्न रहनेवाली तथा सबकी पीड़ा दूर करनेवाली नारायणी देवि! तुम्हें नमस्कार है ॥ ४ ॥

सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकारकी शक्तियोंसे सम्पन्न दिव्यरूपा दुर्गे देवि! सब भयोंसे हमारी रक्षा करो तुम्हें नमस्कार है ॥ ५ ॥

देवि! तुम प्रसन्न होनेपर सब रोगोंको नष्ट कर देती हो और कुपित होनेपर मनोवांछित सभी कामनाओंका नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरणमें जा चुके हैं, उनपर विपत्ति तो आती ही नहीं। तुम्हारी शरणमें गये हुए मनुष्य दूसरोंको शरण देनेवाले हो जाते हैं ॥ ६ ॥

सर्वेश्वरि ! तुम इसी प्रकार तीनों लोकोंकी समस्त बाधाओंको शान्त करो और हमारे शत्रुओंका नाश करती रहो ॥ ७ ॥

।। इति श्रीसप्तश्लोकी दुर्गा सम्पूर्णम्।।

इस प्रकार देवी को प्रसन्न करके अतिशीघ्र ही जीवन में मंगल ही मंगल होने लगता है।

67. गायत्री से पापों का क्षय

शिवके मन्दिर तथा अन्य किसी भी शिवसम्बन्धी स्थानपर द्विज (शाम की संध्या के समय) पश्चिमाभिमुख बैठकर जप आरम्भ करे।

गायत्री जप–

●गायत्रीका एक बारका जप दिनके पापको नष्ट कर देता है।

● दस बार जप करनेसे दिन और रातके सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं।

● सौ बार जप करनेसे महीनोंका उपार्जित पाप नहीं ठहर सकता।

●एक हजारके जपसे वर्षों के पाप भस्म हो जाते हैं। ●गायत्रीके एक लाख जप से एक जन्म के सभी प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं। इसी कारण कर्मकांड विभाग केवल उसी को दिया जाता है जो कम से कम एक लाख जप चुका वह भी अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक। 12 लाख (आधा पुरश्चरण का माहात्म्य इससे अधिक है तथा 24 लाख जप रूपी एक पुरश्चरण का महानतम फल।

● दस लाख जपमें तीन जन्मोंके भी पापोंको नष्ट करनेकी अमोघ शक्ति है।

शिव पुराण के अनुसार अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक 24 लाख जप से वैदिक कर्मकांड का सर्वाधिकार ब्राह्मण को प्राप्त होता है मात्र ब्राह्मण नारी से जन्म ही कर्मकांड का अधिकार नहीं देता। पद्मपुराण, गरुड पुराण और स्कन्दपुराण में तथा ब्राह्मण गीता में सब कुछ स्पष्टीकरण है।

●यह हम पूर्व में भी अनेक बार कह चुके हैं। पर आश्चर्य है कि 30–35 वर्ष के आधे वृद्ध होकर भी आप द्विजों ने कम से कम आधा या एक पुरश्चरण भी नहीं किया।।।।। क्या यही सुनने के लिए अक्षयरुद्र इस भूलोक पर आया था। कि हम कामी हैं हम स्त्रीलम्पट हैं हम एक पुरश्चरण अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक नहीं कर सकेंगे । हम स्त्री भोग के बिना 10 दिन भी नहीं रह सकते।

बहुत दुख हुआ जानकर।..........

●एक पुरश्चरण के बाद नित्य 13 माला (एक वर्ष तक) जप से तथा क्रमशः 3,6 या 10 वर्षों तक अनेक सिद्धियों का स्वामी ये जापक हो जाता है जो श्रीमद्देवीभागवत महापुराण में वेदव्यास जी ने कहा है।

श्रीमद्देवीभागवत के अनुसार

●एक करोड़(10000000) जप करनेपर सम्पूर्ण जन्मोंके पाप नष्ट हो जाते हैं।

●पर मुक्ति के लिए यह पर्याप्त नहीं। मुक्त होने के लिए यथार्थ पराविज्ञान प्राप्त होना अनिवार्य है और वह दस करोड़ गायत्री जप से या ब्रह्मनिष्ठ (एकत्व युक्त)की आज्ञा व सेवा से भी प्राप्त होता है तभी वह ब्राह्मणों में महान या पराविज्ञानी हो पाता है और मुक्तिलाभ प्राप्त करता है।

अतः जिसने इतनी बार (10 करोड़ बार) गायत्री को नहीं गाया वह पराविज्ञानी नही है। ब्रह्मनिष्ठ के आगे साधारण बच्चा है जो खाली पीली चिल्लाता है कि मैं ब्राह्मण हूँ मेरी पूजा कर लेओ, मेरे पाँव धोकर पी लेओ......

जीवन में ब्राह्मण गायत्री से ही मुक्तिलाभ पाता है।
गायत्री–जप ही ब्राह्मण का आभूषण है।

गायत्री रहस्य– गायत्री मंत्र प्रयोग– स्तोत्र निधिवन भाग एक में अध्याय 35 के पास पृष्ठ 69 पर ।

तीन प्रकार के गायत्री अनुष्ठान

द्विज या मुमुक्षुजन के लिये गायत्री अनुष्ठान के प्रकार–
छोटे (लघु) , माध्यम (मध्यम) और बड़े (उच्च) तीन प्रकार होते हैं।

गिनती इस प्रकार है:

1) **लघु अनुष्ठान** :
24000 जाप 27 माला प्रतिदिन की दर से 9 दिन में पूर्ण करना है।
लिया गया समयः औसतन, प्रति दिन 3 घंटे (लगभग 10 से 11 माला प्रति घंटे के साथ)।

2) **मध्यम अनुष्ठान** :
1,25000 जप 33 माला प्रतिदिन की दर से 40 दिन में पूरा करना है।
समय लियाः प्रति दिन 3–4 घंटे। 3)

बड़ा अनुष्ठान :
24,00,000 जप एक वर्ष में 66 माला प्रतिदिन की दर से पूरा किया जाना है। समय लियाः प्रति दिन लगभग 6 घंटे।

माला – श्वेत कमलके बीजों की अथवा स्फटिक मणिकी माला बनाकर उसका संस्कार कर लेना चाहिये। इन्हीं वस्तुओंकी माला बनाकर तीर्थमें अथवा किसी देवताके मन्दिरमें जप करे। पीपलके सात पत्तोंपर संयमपूर्वक मालाको रखकर गोरोचनसे अनुलिप्त करे। फिर गायत्री जपपूर्वक विद्वान् पुरुष उस मालाको स्नान करावे तत्पश्चात् उसी मालापर विधिपूर्वक गायत्रीके सौ मन्त्रोंका जप करना चाहिये। अथवा पञ्चगव्य या गङ्गाजलसे स्नान करा देनेपर भी मालाका संस्कार हो जाता है। इस तरह शुद्ध की हुई मालासे जप करना चाहिये। **(यह आगे की बात तो आपको 10 बार बता ही चुके हैं)**

001. पुरश्चरण के लिए कितनी बार जप –

गायत्री छन्दमें अक्षरोंकी जितनी संख्या है, उतने लाख (अर्थात् २४ लाख) जप करनेसे एक पुरश्चरण सम्पन्न होता है।पर (एक ग्रंथ के अनुसार) हे नारद!

विश्वामित्रजीका मत है कि बत्तीस लाख जप होना चाहिये।

गायत्री पुरश्चरण के लिए तिथि –

गायत्री अनुष्ठान व साधना आरंभ

कब कब न करें अन्यथा नुकसानदायक है।

1.आषाढ़,

2.भाद्रपद,

3.पौष,

4. अधिक मास;

निषेधात्मक माह का त्याग करके अब उन बचे शुभ माहों में कृष्ण पक्ष को भी हटा दें। और जो शुक्ल पक्ष बचा । उसको वरण करने का ही विचार करें। शुक्ल पक्ष देवीय और कृष्ण पक्ष पितृगणों का है।
अब उस शुक्ल पक्ष में निम्नलिखित नुकसानदायक नक्षत्रों को देखो जिसमें गायत्री पुरश्चरण का श्रीगणेश आरंभ करने से सफलता नही मिलती।

1.भरणी,

2.कृत्तिका,

3.आर्द्रा,

4.आश्लेषा,

5. ज्येष्ठा,

6.धनिष्ठा,

7.श्रवण,

8.जन्मनक्षत्र (जिस नक्षत्र में पैदा हुये हो वह) ।

अब बार और तिथि पर फोकस करें –

निषेध वार –

मंगलवार, शनिवार;

व्यतीपात, वैधृति,

निषेध तिथि –

षष्ठी ,अष्टमी, त्रयोदशी , अमावस्या(अमावस्या का निषेध तो कृष्ण पक्ष के कारण हो चुका)

●चतुर्थी, ●नवमी , ●चतुर्दशी ,

(अर्थात् 4,6,8,9,13,14 और अमास) का त्याग करें।

प्रदोष, रात्रि में भी आरंभ न करें।

अर्थात्–

जिस कार्य (गलत मुहूर्त)से शरीरके निष्प्राण होनेकी सम्भावना हो, वह सम्पूर्ण कर्मोंमें अनुचित समझा जाता है तथा वह मन्त्र पुरश्चरणसे हीन कहा गया है। कुछ निषेध काल सुनें –

ज्येष्ठ, आषाढ़, भाद्रपद, पौष, अधिक मास ये पाँच माह गायत्री के पुरश्चरण आरंभ के लिए वर्जित है अन्यथा लाभ नहीं होता ।

मंगलवार, शनिवार में भी आरंभ न करें पर बुधवार को आरंभ करें तो बुधवार को शुभ नक्षत्र देख लेना अन्यथा हानिकारक हो जाता है यह सूची हमने शिव चरित मानस भाग द्वितीय में दी है।

●व्यतीपात और वैधृति योग में भी आरंभ न करें।

●अष्टमी, नवमी, षष्ठी, चतुर्थी,त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावस्या,(अर्थात् 4,6,8,9,13,14 और अमास)4,9,14 तो बैसे भी मनाही है, इन रिक्ता में जप आरंभ नहीं करते।

तथा प्रदोष व रात्रि में भी आरंभ न करें । भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, श्रवण, जन्मनक्षत्र (जिस नक्षत्र में पैदा हुये हो वह) भी ठीक नही। ये सभी महीने, दिन, योग, तिथियाँ, समय, नक्षत्र और लग्न पुरश्चरण के आरंभ के लिए वर्जित हैं।चन्द्रमा और नक्षत्र अनुकूल हों।

पक्ष – शुक्ल–पक्ष में ही पुरश्चरणका आरम्भ करना चाहिये।

अनुकूल तिथि – गायत्री मंत्र आरंभ की उत्तम तिथि 2, 5,7,10 (द्वितीया , पंचमी, सप्तमी,दशमी) पर इनमें नक्षत्र या बार का परीक्षण करें।

माला – मालाओं में स्फटिक या रुद्राक्ष श्रेष्ठ है। गौमुखी में माला होना चाहिए और जप से पहले नित्य माला का पूजन करें।

तथा गायत्री मंत्र के 24 अक्षरों का भी ज्ञान होना चाहिए उन अक्षरों के ऋषियों व देवताओं का भी ज्ञान होना उत्तम है। यह पद्मपुराण और श्रीमद्देवीभागवत में बहुत ही अच्छी तरह से बताया है। या हमारी पुस्तक ब्राह्मण गीता की पीडीएफ से भी जानकारी ले सकते हैं।

गायत्री जी का रूप, विनियोग, न्यास ध्यान, पूजा मुद्रा आदि के विषय में अति संक्षिप्त विवरण के लिए आप गीताप्रेस की पुस्तक नित्य कर्म पूजा प्रकाश भी देख सकते हैं।

यों पुरश्चरण करनेसे शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है। आरम्भमें विधिपूर्वक स्वस्तिवाचन और नान्दी–मुख श्राद्ध करे। ब्राह्मणोंको यत्नपूर्वक भोजन–वस्त्रसे संतुष्ट करे। फिर उन ब्राह्मणोंसे आज्ञा लेकर पुरश्चरण आरम्भ करे!

गायत्री कामधेनु

आयु–पलाश के अग्रभागसे युक्त समिधाका हवन करके पुरुष आयु प्राप्त करता है। पीपल, गूलर, वट और पाकड़की समिधाका हवन आयु प्रदान करनेवाला है। क्षीरी वृक्षोंकी अग्रभागयुक्त समिधाओंसे, जो तीनों मधुओंसे आर्द्र हों तथा व्रीहियोंसे सौ आहुति देकर पुरुष सुवर्ण और आयु प्राप्त करता है। सुनहरे रंगके कमलसे आहुति देनेपर सौ वर्षकी आयु प्राप्त होती है।

अकाल मृत्यु दूर–

1.दूर्वा, दूध, मधु अथवा घृतसे प्रतिदिन सौ–सौ आहुति देनेपर एक सप्ताहमें अपमृत्यु दूर होती है।

मृत्युञ्जय–मन्त्रका जब पाँच लाख जप पूरा हो जाता है, तब भगवान् शिव प्रत्यक्ष दर्शन देते हैं। एक लाखके जपसे शरीरकी शुद्धि होती है, दूसरे लाखके जपसे पूर्वजन्मकी बातोंका स्मरण होता है, तीसरा लाख पूर्ण होनेपर सम्पूर्ण काम्य वस्तुएँ प्राप्त होती हैं। चौथे लाखका जप होनेपर स्वप्नमें भगवान् शिवका दर्शन होता है और पाँचवें लाख का जप नियमपूर्वक ब्रह्मचर्य सहित ज्यों ही पूरा होता है भगवान शिव तत्काल उसी क्षण दर्शन देते हैं।

अथवा

ऐसे ही शमी की समिधा, अन्न, क्षीर और घृतकी एक सप्ताहतक दी हुई सौ–सौ आहुतियाँ अपमृत्युका विनाश करती हैं।

न्यग्रोधकी समिधाका हवन करके खीरका हवन करे। एक सप्ताहतक प्रतिदिन सौ–सौ आहुतियाँ होनी चाहिये । इसके प्रभावसे अपमृत्यु दूर हो जाती है।

मृत्युपर विजय–

यदि हो सके तो केवल दूध पीकर गायत्रीका जप करता रहे। इससे एक सप्ताहमें वह मृत्युपर विजय प्राप्त कर लेता है.

यदि मौन रहकर बिना कुछ खाये–पीये जप करे तो तीन रात में यमके पाशसे मुक्त हो जाता है।

यदि जलमें कंठ तक जप करे तो उसी क्षण मृत्यु दूर हो जाती है।

राज्य–

यदि बिल्व वृक्षके नीचे बैठकर जप करे तो एक महीनेमें राज्य मिल सकता है। मूल, फल और पल्लवसहित बिल्वकी आहुति राज्य प्रदान करती है।

कमलकी सौ आहुति देनेपर मानव निष्कण्टक राज्य प्राप्त करता है। अगहनीके चूर्णकी लपसीका हवन करके पुरुष ग्राम प्राप्त करता है।

1.पीपलके वृक्षकी समिधाओंका हवन युद्ध आदिके अवसरपर विजय प्रदान करता है।

2.मदारकी समिधाके हवनसे पुरुष सर्वत्र विजयी होता है।

वर्षा–

क्षीरसे संयुक्त बेंतके पत्रोंसे अथवा खीरसे यदि सौ आहुति दी जाय तो एक सप्ताहमें वृष्टि होती है। अथवा नाभिपर्यन्त जलमें खड़े होकर एक सप्ताहतक जप करनेपर वृष्टि होती है। जलमें भस्मकी सौ आहुति देनेसे घोर वृष्टि बंद हो जाती है।

3.पलाशकी समिधासे हवन करनेपर ब्रह्मतेज प्राप्त होता है।

पलाशके पुष्पोंकी आहुतियाँ सम्पूर्ण अभीष्ट प्रदान करती हैं।

मेधा तथा बुद्धि–

दूधकी आहुति मेधा तथा घृतकी आहुति बुद्धिकी प्राप्तिमें सहायक है। ब्राह्मी–बूटीके रसको गायत्री मन्त्रसे अभिमन्त्रित करके यदि पान किया जाय तो निर्मल बुद्धि प्राप्त होती है। ब्राह्मी–बूटीके पुष्पोंका हवन करनेसे सुगन्ध तथा तन्तुओं के हवनसे उसीके समान पट प्राप्त होते हैं। मधुमिश्रित बिल्व–पुष्पोंकी आहुति इष्टको वशमें करनेवाली है।

जलमें खड़े होकर गायत्रीमन्त्रको पढ़ते हुए नित्य अंजलिसे अपने ऊपर अभिषेक करे। रोक ऐसा करनेसे पुरुष बुद्धि, आरोग्यता, उत्तम आयु और स्वास्थ्य प्राप्त करता है। ब्राह्मण दूसरेके निमित्तसे करे तो उस अन्य पुरुषको भी तुष्टि प्राप्त होती है।

आयु–

आयुकी कामना करनेवाला किसी पवित्र स्थान में बैठकर उत्तम विधिके साथ महीनेभर प्रतिदिन एक–एक हजार (30 दिन तक नित्य मात्र 1000) गायत्रीका जप करें।

इससे उत्तम आयुकी प्राप्ति होती है।

द्विकामना, तीन कामना व तीन कामनादि–

द्विकामना : आयु और आरोग्यता

यदि आयु और आरोग्य दोनोंकी कामना हो तो द्विज को कि दो मासतक एक–एक हजार मन्त्रका नियमसे जप करे।

तीन कामना– आयु, आरोग्यता और लक्ष्मी चाहनेवालेको तीन महीने (90 दिन तक)करना चाहिये।

चार कामना–आयु, लक्ष्मी, पुत्र, स्त्री और यज्ञकी कामनावाला द्विज चार मास तक जप करे।

पुत्र, स्त्री, आयु आरोग्य, लक्ष्मी और विद्या– इनकी कामना करनेवालेको पाँच महीने (150 दिन)तक एक हजारके नियमसे जय करनेका विधान है। यों जितने–जितने मनोरथ अधिक हों, उसीके क्रमसे महीनेकी संख्या भी बढ़ानी चाहिये ।

3 माला 1 माह तक नित्य–बिना किसी अवलम्बके बाहोंको ऊपर उठाये हुए तीन सौ (3 माला=300 बार गायत्रीमंत्र) प्रतिदिन महीनेभर (30 दिन)जप करनेसे अनेक कामनाएँ प्राप्त हो जाती हैं।

इस प्रकार

एक मास–

11 माला महीनेभर तक–

11माला महीनेभर तक अर्थात् ग्यारह सौ (1100) बार इसी गायत्री मन्त्र का 30 दिन महीनेभर जप करनेसे कोई भी अभिलाषा अधूरी नहीं रह सकती।

अद्वितीय–

यदि प्राण और अपान वायुको रोककर तीन सौ गायत्रीमन्त्रका एक महीना जप करे तो वह जिसकी इच्छा करे, वह उसे प्राप्त हो जाय।

यों ग्यारह सौ मन्त्रोंका जप करनेपर पुरुष सर्वस्व पा जाता है।

एक पैर पर–

पर कौशिकजीका कथन है

एक पैर पर खड़े होकर दोनों बाहें ऊपर उठाकर

श्वास रोकते हुए सौ मन्त्रोंके क्रमसे एक महीना जप करे तो भी उसकी यथेष्ट कामनाएँ पूरी हो जाती हैं. इस प्रकार तेरह सौ (1300) मन्त्रोंका प्रतिदिन महीनेभर जप करनेसे भी अखिल मनोरथ प्राप्त हो जाते हैं।

जल में कंठ तक डूबकर सौ मन्त्रोंके नियमसे एक मास जप करे तो पुरुष अपना अभीष्ट प्राप्त कर लेता है। यों तेरह सौ मन्त्रोंका महीनेभर जप करनेसे द्विजकी सारी कामनाएँ हो जाती हैं।

गायत्री के विविध प्रयोग

1. एक वर्षतक –

यदि एक पैरसे, बिना किसी सहारे बाँहें ऊपर उठाकर खड़े हो एक वर्षतक जप करे, रातमें केवल हविष्यान्न खाय, वह पुरुष ऋषि हो जाता है।

2. दो वर्षतक –

यों यदि दो वर्ष करे तो उसकी वाणी अमोघ हो जाती है। अर्थात् वह जो कहता है, सो होकर रहता है।

3. तीन वर्षतक –

इस नियमसे तीन वर्षोंतक जप करनेपर मानव त्रिकालदर्शी हो जाता है।

4. चार वर्षतक –

यदि चार वर्षोंतक करे तो स्वयं भगवान् सूर्य उसके सामने आकर दर्शन देते हैं।

5. पाँच वर्षतक –

पाँच वर्षांतक जप करनेसे अणिमादि सिद्धियोंकी प्राप्ति होती है।

6. छः वर्षों तक–

इस प्रकार यदि छः वर्षोंतक जप करे तो पुरुषोंमें इच्छानुसार रूप धारण करनेकी योग्यता प्राप्त हो जाती है।

7. सात वर्षोंतक जप करनेसे देवत्व प्राप्त हो जाता है।

9 वर्षोंतक मनुत्व आ जाता है ,

10. दस वर्षोंतक करनेसे इन्द्रपद का अधिकार प्राप्त हो जाता है।

प्रजापति पद–

यह इंद्र पद से बडा होता है।

11.ग्यारह वर्षोंतक गायत्री जप नित्य 12 माला करनेसे पुरुष प्रजापति पद पा लेता है।

12. ब्रह्माकी योग्यता प्राप्त–

बारह वर्षोंके जपस्वरूप उसमें ब्रह्माकी योग्यता प्राप्त हो जाती है। इसी प्रकारकी तपस्या करके नारद प्रभृति ऋषियोंने सम्पूर्ण लोकोंपर विजय प्राप्त की है।

कुछ लोग केवल शाकके आहार पर रहते थे।

बहुत से ऐसे थे जिनका आहार केवल फल, मूल और दूध था।

कुछ ऋषि घृत पान करते,
कुछ सोमरस लेते और कुछ चरु भक्षण करते थे।
कुछ लोग पक्ष भरमें केवल एक बार भोजन करते थे.
कुछ भिक्षा से
अर्थात जैसे भी बनें यथासंभव श्रीगायत्री का सुमिरन करें ।

शिव से अभिन्न भाव और तद्रूपता को प्राप्त कोई भी जीवात्मा अपने अज्ञान रूपी कल्मषों के समूल नाश के कारण साक्षात् शिव स्वरूप ही हो जाता है और यही अभिन्नता ही जीवंतमुक्ती, कैवल्या मुक्ति, अद्वैत सिद्धि, अपरोक्ष अनुभूति आदि नाम से संबोधित की जाती है।

आरंभ में परोक्ष ज्ञान ही प्राप्त होता है जो अभ्यास और चिंतन से अपरोक्ष होने में देर नहीं करता, पर इसके लिए उसे ब्रह्मवेत्ता की संनिधि, साथ में समयानुसार उपनिषदों '' जो वेदों का अंतिम भाग ही'' उपनिषदों के महत्वपूर्ण सूत्रों से रचित वेदान्त दर्शन का गहराई से चिंतन, और परम अवधूतों (अष्टावक्र, अवधूत दत्तात्रेय) की अमृत वाणी (अवधूत गीता, अष्टावक्र गीता, रुद्रगीता, शिवगीता) के भेद रहित महावाक्यों का आत्मसात अनिवार्य है।

अभिन्नता ही सूक्ष्म और परमसत्य ज्ञान है जिसे अध्यात्म में विज्ञान की उपमा दी गई है इस विज्ञान की प्राप्ति ही परमतत्व की प्राप्ति है इस विज्ञान को ही परमतत्व कहा है शेष कोई भी परम नहीं और यही शिवत्व है, यही शिव तत्व है जिसके उदय होने पर अयमात्मा ब्रह्म की सत्यता का बोध होकर वह वही हो जाता है जो सत् चित् आनन्द है।

हालाँकि यह ज्ञाननिष्ठ पूर्णतः निस्पृही, असंग, अनासक्त और अभेदता की ही मूर्ति है पर इस शिवत्व प्राप्त ब्रह्मविद् को वज्रसूचिक उपनिषद में ब्राह्मण संज्ञा भी दी गई है जिसका संबंध न तो वर्ण से है न ही चारो आश्रमों से। पर यथार्थ में वो ब्राह्मण ,ब्रह्मचारी ,ब्रह्मविद् नाम से भी परे अनाम ही है,

एक ही है, पूर्ण ही है और इसे ही योगवाशिष्ठ में ज्ञान की सातवीं भूमिका पर स्थित पूर्ण शब्द की संज्ञा से अलंकृत किया गया है। यह सदा के लिये भवरोग से मुक्त ही है और देहांत के बाद वो निर्वाण को प्राप्त हो जाता है। सत्य केवल यही एकत्व है शेष अविद्या और माया के अंतर्गत ब्रह्म सर्वमय है उसी को मानव अलग अलग रूपों के कारण अलग अलग संज्ञा देता है पर मेरा इष्ट बड़ा या तेरा छोटा मानने वाला मुक्त नहीं हो पाता क्योंकि वहाँ द्वैत भाव से ही हीनता या प्रभुता का लक्षण प्रकट होता है अभिन्नता सिद्ध होने के बाद नहीं। अद्वैत भाव के बाद कुछ भी शेष नहीं रह जाता क्रियायोग और शास्त्रों की आज्ञा भी उस ज्ञाननिष्ठ के लिए शेष नहीं रह जाती पर आरंभिककाल में मूर्तिपजा अनिवार्य ही समझें।

गायत्री हवन प्रयोग

देवी गायत्री द्विजों के लिए शिवमयी ही है अतः इन देवी का भजन करने का तात्पर्य महादेव का ही भजन करना है।

ग्रह शान्त–

दूधवाली समिधाओंसे एक हजार गायत्रीका जप करके हवन करे। वे समिधाएँ शमीकी हों। इससे भौतिक रोग और ग्रह शान्त हो जाते हैं अथवा सम्पूर्ण भौतिक रोगोंकी शान्तिके लिये द्विज क्षीरवाले वृक्ष (अर्थात् पीपल, गूलर, पाकड़ एवं वट) की समिधाओंसे हवन करे।

जप और होमके पश्चात् हाथमें जल लेकर उससे सूर्यका तर्पण करे। इससे शान्ति प्राप्त होती है।.. **जानुपर्यन्त जलमें–**

जानुपर्यन्त जलमें रहकर गायत्रीका जप करके पुरुष सम्पूर्ण दोषोंको शान्त कर सकता है।

कण्ठपर्यन्त जल में–

कण्ठपर्यन्त जलमें जप करनेसे प्राणान्तकारी भय दूर हो जाता है।

सभी प्रकारकी शान्तिके लिये जलमें ही गायत्रीका जप करना

पंचगव्यद्वारा–

सुवर्ण, चाँदी, ताँबा, मिट्टी अथवा किसी दूधवाले काष्ठ के पात्रमें रखे हुए पंचगव्यद्वारा प्रज्वलित अग्निमें क्षीरवाले वृक्षकी समिधाओंसे एक हजार गायत्रीका मन्त्र उच्चारण करके हवन करे। यह कार्य धीरे–धीरे सम्पन्न करे। प्रत्येक आहुतिके समय मन्त्रका पाठ करके पात्रमें रखे हुए पंचगव्यसे समिधाको स्पर्श कराकर हवन करे। हजार बार यों करे।

हवनके पश्चात् एक हजार गायत्री मन्त्र पढ़कर पात्रमें अवशिष्ट पंचगव्यका अभिमन्त्रण करे और फिर मन्त्रका स्मरण करते हुए कुशोंद्वारा उस पंचगव्यसे वहाँके स्थानका प्रोक्षण करे। इसके बाद वहीं बलि देते हुए इष्टदेवताका ध्यान करे। यों करनेसे अभिचारसे उत्पन्न हुई कृत्या और पापका नाश हो जाता है।

जो इस प्रकार करता है, देवता, भूत और पिशाच उसके वशमें हो और जाते हैं। अतः ग्रह, ग्राम, पुर राष्ट्र इन सबपर वे अपना अनिष्ट प्रभाव नहीं डाल सकते।

भूमिपर चतुष्कोण मण्डल लिखकर उसके मध्य–भागमें गायत्री मन्त्र पढ़कर त्रिशूल धँसा दे। इससे भी पिशाचोंके आक्रमणसे पुरुष बच सकता है।

अथवा सब प्रकारकी शान्तिके लिये पूर्वोक्त कर्ममें ही गायत्रीके एक हजार मन्त्रसे अभिमन्त्रित करके त्रिशूल गाड़े। वहीं सुवर्ण, चाँदी, ताँबा अथवा मिट्टीका नवीन कलश स्थापित करे।

अभिचार जनित भय दूर–

प्रत्येक शनि वार के दिन पीपल वृक्ष के नीचे 1 माला गायत्री जाप से भौतिक रोग और अभिचार जनित भय दूर हो जाता है। अर्थात मानव इन समस्याओ से मुक्त हो जाता है।

'मृत्युंजय होम'–

द्विजको चाहिये कि गुरुचको खण्ड–खण्ड करके उसे क्षीरमें भिगोकर अग्निमें आहुति दे। इस प्रकारके होमको 'मृत्युंजय' कहते हैं। इसमें सम्पूर्ण व्याधियाँका नाश करनेकी शक्ति है। ज्वरकी शान्ति के लिये दूधमें भिगोये आमके पत्रों से हवन करें।

क्षीराक्त मीठे वचका हवन करनेसे क्षयरोग दूर होता है।

राजयक्ष्मा दूर–

तीन मधु (अर्थात्, दूध, दही और घृत) से किये हुए होममें राजयक्ष्माको दूर करनेकी शक्ति है।

खीरका हवन करके उसे भगवान् सूर्यको अर्पण करे। फिर प्रसादरूपसे स्वयं प्राशन करे तो राजयक्ष्माका उपद्रव शान्त हो। जाता है।

सोमलताको गाँठोंपरसे अलग–अलग करके उसे दूधमें भिगोकर क्षयरोगकी शान्तिके लिये द्विज अमावस्या तिथिको हवन करे।

कुष्ठरोगका निवारण–

शंखके वृक्षके पुष्पोंसे हवन करके कुष्ठरोगका निवारण करे।

मिरगी दूर–

अपामार्गके बीजसे यदि हवन किया जाय तो मिरगी दूर हो सकती है।

क्षीरी वृक्षकी समिधासे हवन करनेपर उन्माद रोग शान्त हो जाता है।

प्रमेहरोग की शान्त–

गूलरकी समिधाका हवन असाध्य प्रमेहरोगको दूर करता है। मधु अथवा ईखके रस से हवन करके पुरुष प्रमेहरोग को शान्त करे।

मसूरिका (चेचक) रोग दुर–

त्रिमधु (अर्थात् दूध, दही और घृत)के हवनसे मसूरिका (चेचक) रोग शान्त होता है। कपिला गौके घृतसे हवन करके भी मसूरिका रोगको शान्त किया जा सकता है।

गूलर,

वट

और

पीपलकी समिधाओंसे हवन करके गौ, घोड़े और हाथीके रोगको दूर करे।

पिपीलिका और मधुवल्मीकसंज्ञक जंतुओं द्वारा गृह में उपद्रव उपस्थित होनेपर द्विज शमीकी समिधाओं खीर और घृतसे प्रत्येक कार्यक करे। इससे वह लिये दो सौ (200)बार हवन करे। इस प्रकार करने से वह उपद्रव शान्त हो जाता है।

लक्ष्मीकी प्राप्ति–

पुष्टि, श्री और लक्ष्मीकी प्राप्तिके लिये द्विजको चाहिये कि पुष्पोंकी आहुति दे।

लक्ष्मी चाहनेवाला पुरुष लाल पुष्पोंसे हवन करे। इससे उसे लक्ष्मी प्राप्त हो जाती है।

बिल्वफलके खण्डों, पत्रों और पुष्पोंसे हवन करके पुरुष उत्तम लक्ष्मी प्राप्त कर लेता है। समिधाएँ भी बिल्ववृक्षकी ही होनी चाहिये ।

दूध और घृतसे मिश्रित हवन करे। सात दिनोंतक प्रतिदिन दो–दो सौ (200–200) आहुतियाँ देनेपर वह लक्ष्मी को पानेका अधिकारी होता है।

कन्या प्राप्त–

तीन मधुओंसे युक्त लाजाका हवन करनेसे पुरुष को कन्या प्राप्त होती है। पुत्री रूप की कामना हो तो देवी गायत्री विदुषी पुत्री को भी प्रदान करती हैं। इस विधिका पालन करनेसे कन्या या स्त्री भी अभिलषित वर प्राप्त कर लेती है। एक सप्ताहतक लाल कमलकी सौ (100) आहुति देनेपर सुवर्णकी प्राप्ति होती है।

गायत्रीमन्त्रका उच्चारण करके सूर्यका तर्पण करनेसे भविष्य में जलमें छिपा हुआ सुवर्ण पुरुष प्राप्त कर लेता है। अन्न का हवन करनेसे अन्न के स्वामी हो जाते हैं।

बछड़ेके गोबरके खण्डोंका हवन करनेसे पुरुष पशु– धन पा लेता है। दूध और घृतमिश्रित प्रियंगुके हवनसे प्रजाकी अनुकूलता प्राप्त करता है। खीर बनाकर हवन करे और उसे भगवान् सूर्यको अर्पण करके ऋतुस्नाता ब्राह्मणीको भोजन कराये तो पुरुषको श्रेष्ठ पुत्रकी प्राप्ति होती है। इस दुनिया में सब लोग या तो दान का फल भोग रहे हैं या जप तप का अथवा दुख है तो पूर्वकृत पाप का ही फल समझो। अतः रोओ मत बेटा! बेटियों कुछ करो। पंचाक्षरी 20 लाख जपो या पंचपदी चिंतामणि '' गोपीजन वल्लभ चरणान् शरणम् प्रपद्ये का मात्र एक बार जोर से उच्चारण या 30,60,90,120 अथवा 150 दिनों तक नित्य गायत्री हृदय न्यास के बाद गायत्री कवच व 13 माला गायत्री मंत्र।

68. युगल स्तुति

एक प्रवीण स्त्रीका एक प्रवीण पुरुषके साथ संयोग बड़ा कल्याणकारी होता है। यह संयोग सृष्टि के लिए कल्याणकारी होता है ;परंतु विवाह से पूर्व ईश्वर या ईश्वर की हृदयवल्लभा का दर्शन अनिवार्य है। ताकि जप तप व्रत–उपवास से प्रारब्ध पूर्णतः अनुकूल हो जाए और शेष अक्षय आनन्द दर्शन से प्राप्त हो जाए।

जिस प्रकार विष्णुके पास लक्ष्मी, श्रीकृष्णके पास राधिका, राम के पास सीता, ब्रह्माके पास सावित्री, भगवान् रुद्र पास भवानी, भगवान् वराहके पास धरा, यज्ञके पास दक्षिणा, अत्रिके पास अनसूया, नलके पास दमयन्ती, चन्द्रमाके पास रोहिणी, कामदेवके पास साध्वी रति, कश्यपके पास अदिति, वसिष्ठके पास अरुन्धती, गौतमके पास अहल्या, कर्दमके पास देवहूति, बृहस्पतिके पास तारा, मनुके पास शतरूपा, अग्निके पास स्वाहा, पितरों के पास स्वधा, इन्द्रके पास शची, गणेशके पास पुष्टि, स्कन्द (कार्तिकेय)–के पास देवसेना, शंखचूड के पास तुलसी और धर्मके पास साध्वी मूर्ति पत्नीरूपसे प्रतिष्ठित हुईं ; उसी प्रकार हे पराशक्ति भुवनेश्वरी आप परब्रह्म सदाशिव जी के साथ विराजमान होकर अनुपम सौन्दर्य से युक्त प्रतीत हो रही हो। हे परम युगल आपको हम नमन करते हैं बार बार नमन करते हैं। हे दिव्य युगल ! पृथ्वी का जो भी दंपत्ति इन परलौकिक महान दंपत्तियो का सुमिरन करे उनको अखंड सुख प्राप्त हो। जो भी प्रत्येक अमावस्या को देवी स्वधा और अपने गुरु के स्मरण के बाद इन दिव्य नामों का सुमिरन करे वह परम सुख को प्राप्त हो।

– देवी रहस्य महाग्रंथ

69. देवी पार्वती जी के पूर्व 19 जन्म

शिव जी की एक रहस्यात्मक वाणी सुनें–

प्रलय के बाद कालान्तर में महाकल्प के समय ब्रह्मा जी का भी लय हो जाता है उस समय श्री सोमनाथ का नाम बदल जाता है। अब तक मेरे कुछ कालखण्ड में छः ब्रह्मा बदल गए ये सातवाँ ब्रह्मा है। इस समय जो प्रजापति ब्रह्मा हैं, इनका नाम 'शतानन्द' है। देवेश्वरि ! ये ब्रह्मा जब आठ वर्षके हुए, तबसे लेकर मेरे इस लिंगका नाम सोमनाथ प्रसिद्ध हुआ है।

1. बीते हुए कल्पोंमें जो पहले ब्रह्मा थे, उनका नाम 'विरिंचि' था। उनके समयमें इन सोमनाथका नाम 'मृत्युंजय' था।
2. तत्पश्चात् दूसरे कल्पमें जो दूसरे ब्रह्मा हुए, वे 'पद्मभू' नामसे विख्यात हुए। देवि ! उनके समयमें मेरे इस लिंगका नाम 'कालाग्निरुद्र' हुआ।
3. तीसरे ब्रह्माकी प्रसिद्धि 'स्वयम्भू' नामसे हुई है। उस समय सोमनाथका नाम 'अमृतेश' था।
4. चौथे ब्रह्मा 'परमेष्ठी' नामसे विख्यात हुए; उस समय उनका नाम 'अनामय' था।
5. पाँचवें ब्रह्मा 'सुरज्येष्ठ' नामसे विख्यात हुए। उस समय सोमेश्वरदेवका नाम 'कृत्तिवास' था।
6. छठे ब्रह्माका नाम 'हेमगर्भ' था। उनके समयमें सोमनाथका नाम 'भैरवनाथ' रखा गया था।
7. ये जो सातवें ब्रह्मा हैं, 'शतानन्द' कहलाते हैं; इस समय मेरे इस लिंगका नाम 'सोमनाथ' प्रसिद्ध हुआ है।
8. इसके बाद आगामी कल्पमें आठवें ब्रह्मा 'चतुर्मुख' नामसे विख्यात होंगे। उस समय सोमेश्वरदेवका नाम 'प्राणनाथ' होगा।
9. इस तरह जो–जो ब्रह्मा बीत जाते हैं और उनके भी महाप्रलयके पश्चात् पुनः जो नये ब्रह्मा उत्पन्न होते हैं, उनकी आठ वर्षकी आयु होनेतक 'सोमेश्वरदेवका' एक नाम रहता है। उसके बाद वह बदल जाता है। इस प्रकार संक्षेपमें मैंने तुम्हें 'सोमनाथ' के नाम बताये हैं।

पार्वतीदेवी बोलीं– देवदेवेश्वर ! मनुष्योंके ऊपर दया करनेके लिये मैं भी आपके साथ बार–बार प्रकट होती हूँ। उस समय मेरे कौन– कौन–से नाम हुए हैं, यह बताइये।

महादेवजीने कहा– आदिकल्पमें तुम्हारा नाम 'जगन्माता' था।

2. दूसरेमें 'जगद्योनि',
3. तीसरेमें 'शाम्भवी',
4. चौथेमें 'विश्वरूपिणी',
5. पाँचवेंमें 'नन्दिनी',
6 छठेमें 'गणाम्बिका',

तथा

7. सातवेंमें तुम्हारा नाम 'विभूति' हुआ है।
8. इसी प्रकार आठवेंमें 'सुश्रू'
9. नवेंमें 'आनन्दा',
10. दसवेंमें 'वामलोचना',
11. ग्यारहवेंमें 'वरारोहा',

12. बारहवेंमें 'सुमंगला',
13. तेरहवेंमें 'महामाया',
14 चौदहवेंमें 'अनन्ता',
15. पंद्रहवेंमें 'भूतमाता',
16. सोलहवेंमें 'उत्तमा' तथा
17. सत्रहवें कल्पमें तुम्हारा नाम 'पितृकल्पा' प्रसिद्ध हुआ है।
18. तत्पश्चात् तुम दक्षकन्या सतीके नामसे प्रसिद्ध हुई। उस समय दक्षद्वारा अपमानित होनेसे तुमने अपना शरीर त्याग दिया।
19. तदनन्तर वाराहकल्प आनेपर पुनः हिमवान्ने तुम्हारी आराधना करके तुम्हें पुत्रीरूपमें प्राप्त किया। उसके बाद अत्यन्त दुष्कर एवं अद्भुत तपस्या करके तुमने मुझे पतिरूपमें पाया और 'पार्वती' नामसे प्रसिद्ध हुईं। सुमुखि ! जबतक इस कल्पका अन्त होगा, तबतक मैं तुम्हारे साथ कैलास पर्वतपर क्रीडा करूँगा।

70. देवी स्वधा.

देखिए हम आपसे अनेक बार कह चुके हैं कि देवी स्वधा ही आपके वंश का मूल कारक है देवी भुवनेश्वरी ने कुछ काम स्वाहा देवी को सौंपे तो कुछ दक्षिणा को तथा परिवार, पितृ, बच्चों पर पूर्वजों की कृपा आदि का विभाग इन स्वधा देवी को दिया है इस कारण इनकी मुख्य तिथि अमावस्या को इनके स्तोत्र का पाठ हर गृहस्थ को करना चाहिए। हर अमावस्या पर जो मनुष्य इनका पाठ करके काले तिल मिश्रित जल से तर्पण करता है या श्राद्ध में ब्राह्मण भोज आदि तो उसका फल 100 गुना हो जाता है आगे इनके नाम का अद्‌भुत प्रभाव आप जानोगे देखें इन देवी की शास्त्रोक्त कथा ।

श्रीनारायण बोले– हे नारद ! सुनिये, अब मैं स्वधाका उत्तम आख्यान कहूँगा, जो पितरोंके लिये तृप्ति– कारक तथा श्राद्धान्नके फलकी वृद्धि करनेवाला है।

जगत्का विधान करनेवाले ब्रह्माने सृष्टिके आरम्भमें चार मूर्तिमान् तथा तीन तेजः स्वरूप पितरोंका सृजन किया। उन सातों सुखस्वरूप तथा मनोहर पितरोंको देखकर उन्होंने श्राद्ध–तर्पणपूर्वक उनका आहार भी सृजित किया।

स्नान, तर्पण, श्राद्ध, देवपूजन तथा त्रिकाल सन्ध्या–ये ब्राह्मणोंके आह्निक कर्म श्रुतिमें प्रसिद्ध हैं ।जो ब्राह्मण प्रतिदिन त्रिकाल सन्ध्या, श्राद्ध, तर्पण, बलिवैश्वदेव और वेदध्वनि नहीं करता, वह विषहीन सर्पके समान है।

हे नारद ! जो व्यक्ति भगवतीकी सेवासे वंचित है तथा भगवान् श्रीहरिको बिना नैवेद्य अर्पण किये ही भोजन ग्रहण करता है, उसका अशौच केवल दाहपर्यन्त बना रहता है और वह कोई भी शुभ कृत्य करनेके योग्य नहीं रह जाता।

इस प्रकार ब्रह्माजी पितरोंके लिये श्राद्ध आदिका विधान करके चले गये, किंतु ब्राह्मण आदि के श्राद्धीय पदार्थ अर्पण करते थे, उन्हें पितरगण प्राप्त नहीं कर पाते थे।

अतः क्षुधासे व्याकुल तथा उदास मनवाले से पितर ब्रह्माजीकी सभामें गये और उन्होंने जगत्का विधान करनेवाले उन ब्रह्माको सारी बात बतायी । तब ब्रह्माजीने एक मनोहर मानसी कन्याका सृजन किया।

●वह रूप तथा यौवनसे सम्पन्न थी।

● और उसका मुख सैकड़ों चन्द्रमाओंके समान कान्तिमान था।

● वह साध्वी विद्या, गुण तथा परम रूपसे सम्पन थी। ●उसका वर्ण श्वेत चम्पाके समान उज्ज्वल था।

●और वह रत्नमय आभूषणोंसे सुशोभित थी। ●विशुद्ध मूलप्रकृतिकी अंशरूपा, वरदायिनी तथा कल्याणमवी वह मन्द–मन्द मुसकानसे युक्त थी।

●लक्ष्मीके लक्षणोंसे युक्त स्वधा नामक वह देवी सुन्दर दाँतोंवाली थी।

●शतदलकमलके ऊपर रखे चरणकमलवाली वह देवी अतिशय सुशोभित हो रही थी।

●पितरोंकी पत्नीस्वरूपा उस कमलोद्भवा स्वधादेवीके मुख तथा नेत्र कमलके समान थे।

ब्रह्माजीने उस तुष्टिरूपिणी देवीको सन्तुष्ट पितरोंको समर्पित कर दिया। उसी समय ब्रह्माजीने ब्राह्मणोंको यह गोपनीय उपदेश भी प्रदान किया कि आपलोगोंको अन्तमें स्वधायुक्त मन्त्रका उच्चारण करके ही पितरोंको कव्य पदार्थ अर्पण करना चाहिये। तभीसे ब्राह्मणलोग उसी क्रमसे पितरोंको कव्य प्रदान करने लगे।

●देवताओंके लिये हव्य प्रदान करते समय स्वाहा और ●पितरोंको कव्य प्रदान करते समय स्वधाका उच्चारण श्रेष्ठ माना गया है।

● दक्षिणा सर्वत्र प्रशस्त मानी गयी है; क्योंकि दक्षिणाविहीन यज्ञ विनष्ट हो जाता है।

उस समय पितरों, देवताओं, ब्राह्मणों, मुनियों तथा मनुगणोंने परम आदरपूर्वक शान्तिस्वरूपिणी भगवती स्वधाकी पूजा तथा स्तुति की।

भगवती स्वधाके वरदानसे पितरगण, देवता तथा विप्र आदि परम सन्तुष्ट तथा पूर्ण मनोरथवाले हो गये ।

हे नारद! इस प्रकार मैंने सभी प्राणियोंको तुष्टि प्रदान करनेवाला यह सम्पूर्ण स्वधाका उपाख्यान आपसे कह दिया; अब आप पुनः क्या सुनना चाहते हैं?

नारदजी बोले— वेदवेत्ताओंमें श्रेष्ठ हे महामुने ! मैं भगवती स्वधाकी पूजाका विधान, उनका ध्यान तथा स्तोत्र सुनना चाहता हूँ; यत्नपूर्वक बतलाइये ।

श्रीनारायण बोले— हे ब्रह्मन् ! आप समस्त प्राणियोंका मंगल करनेवाला भगवती स्वधाका वेदोक्त ध्यान तथा स्तवन आदि सब कुछ जानते ही हैं तो फिर उसे क्यों जानना चाहते हैं? तो भी लोगोंके कल्याणार्थ मैं उसे आपको बता रहा हूँ—

शरत्कालमें आश्विनमासके कृष्णपक्षमें त्रयोदशी तिथिको मघा नक्षत्रमें अथवा श्राद्धके दिन यत्नपूर्वक देवी स्वधाकी विधिवत् पूजा करके श्राद्ध करना चाहिये ।

●अहंकारयुक्त बुद्धिवाला जो विप्र भगवती स्वधाका पूजन किये बिना ही श्राद्ध करता है, वह श्राद्ध तथा तर्पणका फल प्राप्त नहीं करता, यह सत्य है ।

●मैं सर्वदा स्थिर यौवनवाली, पितरों तथा देवताओंकी

पूज्या और श्राद्धोंका फल प्रदान करनेवाली ब्रह्माकी मानसी कन्या भगवती स्वधाकी आराधना करता हूँ— इस प्रकार ध्यान करके शिला अथवा मंगलमय कलशपर उनका आवाहनकर मूलमन्त्रसे उन्हें पाद्य आदि उपचार अर्पण करने चाहिये—ऐसा श्रुतिमें प्रसिद्ध है ।

●●●●●●●मंत्र ●●●●●●●

हे महामुने ! द्विजको चाहिये कि—

'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं स्वधादेव्यै स्वाहा' इस मन्त्रका उच्चारण करके उनकी विधिवत् पूजा तथा स्तुति करके उन्हें प्रणाम करे । हे मुनिश्रेष्ठ ! हे ब्रह्मपुत्र ! हे विशारद ! अब आप सभी मनुष्योंकी सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण करनेवाले उस स्तुति (स्तोत्र)को सुनिये, जिसका पूर्वकालमें ब्रह्माजीने पाठ किया था।

श्रीनारायण बोले— 'स्वधा' शब्दका उच्चारण करनेमात्रसे मनुष्य तीर्थस्नायी हो जाता है। वह सभी पापोंसे मुक्त हो जाता है तथा वाजपेययज्ञका फल प्राप्त कर लेता है ॥

यदि मनुष्य स्वधा, स्वधा, स्वधा—इस प्रकार तीन बार स्मरण कर ले तो वह श्राद्ध, बलिवैश्वदेव तथा तर्पणका फल प्राप्त कर लेता है । जो व्यक्ति श्राद्धके अवसरपर सावधान होकर स्वधास्तोत्रका श्रवण करता है, वह श्राद्धसे होनेवाला सम्पूर्ण फल प्राप्त कर लेता है, इसमें सन्देह नहीं है । जो मनुष्य त्रिकाल सन्ध्याके समय स्वधा, स्वधा, स्वधा—ऐसा उच्चारण करता है; उसे पुत्रों तथा सद्गुणोंसे सम्पन्न, विनम्र, प्रिय तथा पतिव्रता स्त्री प्राप्त होती है । हे देवि ! आप पितरोंके लिये प्राणतुल्य और ब्राह्मणोंके लिये जीवनस्वरूपिणी हैं। आप श्राद्धकी अधिष्ठात्री देवी हैं और श्राद्ध आदिका फल प्रदान करनेवाली हैं। हे सुव्रते ! आप नित्य, सत्य तथा पुण्यमय विग्रहवाली हैं। आप सृष्टिके

समय प्रकट होती हैं तथा प्रलयके समय तिरोहित हो जाती हैं । आप ॐ स्वस्ति, नमः, स्वाहा, स्वधा तथा दक्षिणा रूपमें विराजमान हैं। चारों वेदोंने आपकी इन मूर्तियोंको अत्यन्त प्रशस्त बतलाया है। प्राणियोंके कर्मोंकी पूर्तिके लिये ही परमेश्वरने आपकी ये मूर्तियाँ बनायी हैं ।

ऐसा कहकर ब्रह्माजी ब्रह्मलोकमें अपनी सभामें विराजमान हो गये। उसी समय भगवती स्वधा सहसा प्रकट हो गयीं। तब ब्रह्माजीने उन कमलमुखी स्वधा देवीको पितरों के लिये समर्पित कर दिया। उन भगवतीको पाकर पितरगण अत्यन्त हर्षित हुए और वहाँसे चले गये। जो मनुष्य एकाग्रचित्त होकर भगवती स्वधाके इस पवित्र स्तोत्रका श्रवण करता है, उसने मानो सम्पूर्ण तीर्थोंमें स्नान कर लिया। वह इसके प्रभावसे वांछित फल प्राप्त कर लेता है ।

हे श्री स्वधा मैया इस अक्षयरुद्र अंशभूतशिव पर इसके माता पिता पर व परिवार पर तथा इस दास के सभी शुभ चिंतको तथा सभी भक्तों पर कृपा करें। आपको सहस्र कोटी नमन।

नोट– देवी स्वधा का संस्कृत में स्तोत्र अध्याय 72 में दिया गया है।

71. देवी स्वाहा

फल प्राप्तिके निमित्त सम्पूर्ण यज्ञोंके आरम्भिक कालमें शालग्राम अथवा कलशपर यत्नपूर्वक भगवती स्वाहाका विधिवत् पूजन करके यज्ञ करना चाहिये इससे संपूर्ण फल प्राप्त हो जाता है।

भगवती स्वाहा वेदांगमय मन्त्रोंसे सम्पन्न, मन्त्रसिद्धिस्वरूपा, सिद्धस्वरूपिणी, मनुष्योंको सिद्धि तथा उनके कर्मोंके फल प्रदान करनेवाली तथा कल्याणमयी हैं– इस प्रकार ध्यान करके मूलमन्त्रसे पाद्य आदि अर्पण करके भगवतीका स्तवन करनेसे मनुष्य सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त कर लेता है।

अब मूलमन्त्र सुनिये –

'ॐ ह्रीं श्रीं वह्निजायायै देव्यै स्वाहा' –

इस मन्त्रसे जो व्यक्ति भक्तिपूर्वक उन भगवती स्वाहाकी पूजा करता है, उसका समस्त अभीष्ट निश्चितरूपसे पूर्ण हो जाता है ।

स्वाहा देवी के सुमिरन के बिना कोई भी यज्ञ सफल नहीं होता। अतः ये तीन देवियों (श्री स्वाहा, श्री स्वधा और श्री दक्षिणा) को कभी भी विस्मृत न करें तभी महान सफलता और सुख प्राप्त होगा।

देवी के 16 नाम सुनें जो अक्सर हमार हर कृति में आपको उपलब्ध हो सकते हैं कारण एक ही है कि इनके स्मरण के बिना अक्षयरुद्र अंशभूतशिव कुछ भी नहीं करता। ये शिवा की स्वरूपा और मंगलचण्डिका की भाँति ही कृपालु हैं। अतः नाम श्रवण करें –

वह्नि बोले – स्वाहा, वह्निप्रिया, वह्निजाया, सन्तोषकारिणी, शक्ति, क्रिया, कालदात्री, परिपाककरी, ध्रुवा, मनुष्योंकी गति, दाहिका, दहनक्षमा, संसारसाररूपा, घोरसंसारतारिणी, देवजीवनरूपा

और देवपोषणकारिणी –

तथा ब्रह्म वैवर्त पुराण के अनुसार 16 नाम ये हैं –

ॐ स्वाहाद्या प्रकृतेरंशा मन्त्रतन्त्राङ्गरूपिणी।
मन्त्राणां फलदात्री च धात्री च जगतां सती।।
सिद्धिस्वरूपा सिद्धा च सिद्धिदा सर्वदा नृणाम्।
हुताशदाहिकाशक्तिस्तत्प्राणाधिकरूपिणी।।
संसारसाररूपा च घोरसंसारतारिणी।
देवजीवनरूपा च देवपोषणकारिणी।।

ये सोलह नाम भगवती स्वाहाके हैं। जो मनुष्य इनका भक्तिपूर्वक पाठ करता है, वह इस लोक तथा परलोकमें सम्पूर्ण सिद्धियाँ प्राप्त कर लेता है। उसका कोई कर्म अपूर्ण नहीं रहता, समस्त कर्म उत्तम फलदायी होते हैं, पुत्रहीन व्यक्ति पुत्रवान् हो जाता है तथा भार्याहीन व्यक्ति पत्नीको प्राप्त कर लेता है और रम्भातुल्य अपनी उस भार्याको प्राप्त करके वह सुख भोगता है ।

72. कुछ महत्वपूर्ण स्तोत्र

72.1 श्रीभद्रकाली कवच

हे शिवशक्ति माँ कालिका! हे भद्रकाली! हे लोलजिह्वा मेरी रक्षा करो।

अथ श्रीभद्रकाली कवचं

ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं कालिकायै स्वाहा मेरे मस्तक की रक्षा करें।
क्लीं कपाल की तथा ह्रीं ह्रीं ह्रीं नेत्रों की रक्षा करें।
ऊँ ह्रीं त्रिलोचने स्वाहा सदा मेरी नासिका की रक्षा करें।
क्रीं कालिके रक्ष रक्ष स्वाहा सदा मेरे दांतों की रक्षा करें।
ह्रीं भद्रकालिके स्वाहा मेरे दोनों ओठों की रक्षा करें।
ऊँ ह्रीं ह्रीं क्लीं कालिकायै स्वाहा सदा कण्ठ की रक्षा करें।
ऊँ ह्रीं कालिकायै स्वाहा सदा दोनों कानों की रक्षा करें।
ऊँ क्रीं क्रीं क्लीं काल्यै स्वाहा सदा मेरे कंधों की रक्षा करें।
ऊँ क्रीं भद्रकाल्यै स्वाहा सदा मेरे वक्षः स्थल की रक्षा करें।
ऊँ क्रीं कालिकायै स्वाहा सदा मेरी नाभि की रक्षा करें।
ऊँ ह्रीं कालिकायै स्वाहा सदा मेरे पृष्ठभाग की रक्षा करें।
रक्तबीजविनाशिन्यै स्वाहा सदा हाथों की रक्षा करें।
ऊँ ह्रीं क्लीं मुण्डमालिन्यै स्वाहा सदा पैरों की रक्षा करें।
ऊँ ह्रीं चामुण्डायै स्वाहा सदा मेरे सर्वांग की रक्षा करें।
पूर्व में महाकाली और अग्निकोण में रक्तदंतिका रक्षा करें।

दक्षिण में चामुण्डा रक्षा करें। नैर्ऋत्य कोण में कालिका रक्षा करें। पश्चिम में श्यामा रक्षा करें। वायव्य कोण में चण्डिका, उत्तर में विकटास्या और ईशान कोण में अट्टहासिनी रक्षा करें। ऊर्ध्व भाग में लोलजिह्वा रक्षा करें। अधोभाग में सदा आद्यामाया रक्षा करें। जल स्थल और अन्तरिक्ष में सदा विश्वप्रसु रक्षा करें।

72.2 श्रीस्वधा स्तोत्र

पितरों की स्वामिनी स्वधा देवी का अद्वितीय स्तोत्र

ब्रह्मोवाच–

स्वधोच्चारणमात्रेण तीर्थस्नायी भवेन्नरः।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो वाजपेयफलं लभेत्।।1।।

अर्थ –
ब्रह्मा जी बोले – 'स्वधा' शब्द के उच्चारण से मानव तीर्थ स्नायी हो जाता है. वह सम्पूर्ण पापों से मुक्त होकर वाजपेय यज्ञ के फल का अधिकारी हो जाता है.

स्वधा स्वधा स्वधेत्येवं यदि वारत्रयं स्मरेत्।
श्राद्धस्य फलमाप्नोति कालस्य तर्पणस्य च।।2।।

अर्थ–

स्वधा, स्वधा, स्वधा इस प्रकार यदि तीन बार स्मरण किया जाए तो श्राद्ध, काल और तर्पण के फल पुरुष को प्राप्त हो जाते हैं.

श्राद्धकाले स्वधास्तोत्रं यः श्रृणोति समाहितः।
लभेच्छ्राद्धशतानां च पुण्यमेव न संशयः।।3।।

अर्थ –

श्राद्ध के अवसर पर जो पुरुष सावधान होकर स्वधा देवी के स्तोत्र का श्रवण करता है, वह सौ श्राद्धों का पुण्य पा लेता है, इसमें संशय नहीं है.

स्वधा स्वधा स्वधेत्येवं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
प्रियां विनीतां स लभेत्साध्वीं पुत्रं गुणान्वितम्।।4।।

अर्थ –

जो मानव स्वधा, स्वधा, स्वधा इस पवित्र नाम का त्रिकाल सन्ध्या समय पाठ करता है, उसे विनीत, पतिव्रता एवं प्रिय पत्नी प्राप्त होती है तथा सद्‌गुण संपन्न पुत्र का लाभ होता है.

पितृणां प्राणतुल्या त्वं द्विजजीवनरूपिणी।
श्राद्धाधिष्ठातृदेवी च श्राद्धादीनां फलप्रदा।।5।।

अर्थ –

देवि! तुम पितरों के लिए प्राणतुल्य और ब्राह्मणों के लिए जीवनस्वरूपिणी हो. तुम्हें श्राद्ध की अधिष्ठात्री देवी कहा गया है. तुम्हारी ही कृपा से श्राद्ध और तर्पण आदि के फल मिलते हैं.

बहिर्गच्छ मन्मनसः पितृणां तुष्टिहेतवे।
सम्प्रीतये द्विजातीनां गृहिणां वृद्धिहेतवे।।6।।

अर्थ –

तुम पितरों की तुष्टि, द्विजातियों की प्रीति तथा गृहस्थों की अभिवृद्धि के लिए मुझ ब्रह्मा के मन से निकलकर बाहर जाओ.

नित्या त्वं नित्यस्वरूपासि गुणरूपासि सुव्रते।
आविर्भावस्तिरोभावः सृष्टौ च प्रलये तव।।7।।

अर्थ –

सुव्रते! तुम नित्य हो, तुम्हारा विग्रह नित्य और गुणमय है. तुम सृष्टि के समय प्रकट होती हो और प्रलयकाल में तुम्हारा तिरोभाव हो जाता है.

ऊँ स्वस्तिश्च नमः स्वाहा स्वधा त्वं दक्षिणा तथा।
निरूपिताश्चतुर्वेदे षट् प्रशस्ताश्च कर्मिणाम्।।8।।

अर्थ–

तुम ऊँ, नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा एवं दक्षिणा हो. चारों वेदों द्वारा तुम्हारे इन छः स्वरूपों का निरूपण किया गया है, कर्मकाण्डी लोगों में इन छहों की मान्यता है.

पुरासीस्त्वं स्वधागोपी गोलोके राधिकासखी।
धृतोरसि स्वधात्मानं कृतं तेन स्वधा स्मृता।।9।।

अर्थ –

हे देवि! तुम पहले गोलोक में 'स्वधा' नाम की गोपी थी और राधिका की सखी थी, भगवान कृष्ण ने अपने वक्षः स्थल पर तुम्हें धारण किया इसी कारण तुम 'स्वधा' नाम से जानी गई.

इत्येवमुक्त्वा स ब्रह्मा ब्रह्मलोके च संसदि।
तस्थौ च सहसा सद्यः स्वधा साविर्बभूव ह।।10।।

अर्थ–

इस प्रकार देवी स्वधा की महिमा गाकर ब्रह्मा जी अपनी सभा में विराजमान हो गए. इतने में सहसा भगवती स्वधा उनके सामने प्रकट हो गई.

तदा पितृभ्यः प्रददौ तामेव कमलाननाम्।
तां सम्प्राप्य ययुस्ते च पितरश्च प्रहर्षिताः।।11।।

अर्थ–

तब पितामह ने उन कमलनयनी देवी को पितरों के प्रति समर्पण कर दिया. उन देवी की प्राप्ति से पितर अत्यन्त प्रसन्न होकर अपने लोक को चले गए.

स्वधास्तोत्रमिदं पुण्यं यः श्रृणोति समाहितः।
स स्नातः सर्वतीर्थेषु वेदपाठफलं लभेत्।।12।।

अर्थ– यह भगवती स्वधा का पुनीत स्तोत्र है. जो पुरुष समाहित चित्त से इस स्तोत्र का श्रवण करता है, उसने मानो सम्पूर्ण तीर्थों में स्नान कर लिया और वह वेद पाठ का फल प्राप्त कर लेता है.

।।इति श्रीब्रह्मवैवर्तमहापुराणे प्रकृतिखण्डे ब्रह्माकृतं स्वधास्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

विशेष पितृ पक्ष श्राद्ध के दिनों में इस स्वधा स्तोत्र का पाठ करना चाहिए. यदि पूरा स्तोत्र समयाभाव के कारण नहीं पढ़ पाते हैं तब केवल तीन बार स्वधा, स्वधा, स्वधा बोलने से ही सौ श्राद्धों के समान पुण्य फल मिलता है.

72.3 सुरभि स्तोत्र महेन्द्रकृत

गोधन व सुख में अक्षय वृद्धि के लिये यह पाठ हर भक्त को करना ही चाहिये। गायों की रक्षा के लिये भी यह पाठ किया जा सकता है, जो किसी मजबूरीवश गायों की सेवा न कर पाये तो इस स्तोत्र के नित्य पाठ से भी गायों के प्रति ऋण नहीं रहता।

महेन्द्र उवाच

नमो देव्यै महादेव्यै सुरभ्यै च नमो नमः।
गवां बीजस्वरूपायै नमस्ते जगदम्बिके।।1।।

नमो राधाप्रियायै च पद्मांशायै नमो नमः।
नमः कृष्णप्रियायै च गवां मात्रे नमो नमः।।2।।

अर्थ –देवी एवं महादेवी सुरभि को बार–बार नमस्कार है। जगदम्बिके! तुम गौओं की बीजस्वरुपा हो, तुम्हें नमस्कार है। तुम श्रीराधा को प्रिय हो, तुम्हें नमस्कार है। तुम लक्ष्मी की अंशभूता हो, तुम्हें बार–बार नमस्कार है। श्रीकृष्णप्रिया को नमस्कार है। गौओं की माता को बार–बार नमस्कार है।

कल्पवृक्षस्वरूपायै सर्वेषां सततं परम् ।
श्रीदायै धनदायै च बुद्धिदायै नमो नमः।।3।।

शुभदायै प्रसन्नायै गोप्रदायै नमो नमः।
यशोदायै सौख्यदायै धर्मज्ञायै नमो नमः।।4।।

अर्थ – जो सबके लिए कल्पवृक्षस्वरूपा तथा श्री, धन और बुद्धि प्रदान करने वाली हैं, उन भगवती सुरभि को बार–बार नमस्कार है। शुभदा, प्रसन्ना और गोप्रदायिनी सुरभि देवी को बार–बार नमस्कार है। यश और सौख्य प्रदान करने वाली धर्मज्ञा देवी को बार–बार नमस्कार है।

फलश्रुति–

स्तोत्रस्मरणमात्रेण तुष्टा हृष्टा जगत्प्रसूः।
आविर्बभूवतत्रैव ब्रह्मलोके सनातनी।।5।।

महेन्द्राय वरं दत्त्वा वांछितं सर्वदुर्लभम् ।
जगाम सा च गोलोकं ययुर्देवादयो गृहम् ।।6।।

अर्थ –इस प्रकार स्तुति सुनते ही सनातनी जगज्जननी भगवती सुरभि संतुष्ट और प्रसन्न हो उस ब्रह्मलोक में ही प्रकट हो गईं। देवराज इन्द्र को परम दुर्लभ मनोवांछित वर देकर वे पुनः गोलोक को चली गईं, देवता भी अपने–अपने स्थानों को चले गए।

बभूव विश्वं सहसा दुग्धपूर्णं च नारद।
दुग्धाद्घृतं ततो यज्ञस्ततःप्रीतिः सुरस्य च।।7।।

अर्थ– नारद! फिर तो सारा विश्व सहसा दूध से परिपूर्ण हो गया। दूध से घृत बना और घृत से यज्ञ संपन्न होने लगे तथा उनसे देवता संतुष्ट हुए।

इदं स्तोत्रं महापुण्यं भक्तियुक्तश्च यः पठेत् ।
स गोमान् धनवांश्चौव कीर्तिवान् पुण्यवान् भवेत् ।।8।।

अर्थ – जो मानव इस महान पवित्र स्तोत्र का भक्तिपूर्वक पाठ करेगा, वह गोधन से संपन्न, प्रचुर संपत्ति वाला, परम यशस्वी और पुत्रवान हो जाएगा।

सुस्नातः सर्वतीर्थेषु सर्वयज्ञेषु दीक्षितः।
इह लोके सुखं भुक्त्वा यात्यन्ते कृष्णमन्दिरम् ।।9।।

अर्थ उसे संपूर्ण तीर्थों में स्नान करने तथा अखिल यज्ञों में दीक्षित होने का फल सुलभ होगा। ऐसा पुरुष इस लोक में सुख भोगकर अन्त में भगवान श्रीकृष्ण के धाम में चला जाता है।

सुचिरं निवसेत्तत्र कुरुते कृष्णसेवनम् ।
न पुनर्भवनं तस्य ब्रह्मपुत्र भवे भवेत् ।।10।।

।।इति श्रीब्रह्मवैवर्तमहापुराणे प्रकृतिखण्डे महेन्द्रकृतं सुरभिस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

अर्थ चिरकाल तक वहाँ रहकर भगवान की सेवा करता रहता है। हे ब्रह्मपुत्र नारद ! उसे पुनः इस संसार में नहीं आना पड़ता है।

इस प्रकार श्रीब्रह्मवैवर्तमहापुराण के प्रकृति खण्ड में महेन्द्रकृत सुरभिस्तोत्र पूरा हुआ।

72.4 संकट नाश के लिए संकटादेवी नामाष्टकम्

संकटा प्रथमं नाम द्वितीयं विजया तथा॥
तृतीयं कामदा प्रोक्तं चतुर्थं दुःखहारिणी।

शर्वाणी पञ्चमं नाम षष्ठं कात्यायनी तथा॥
सप्तमं भीमनयना सर्वरोगहराऽष्टमम्।

नामाष्टकमिदं पुण्यं त्रिसंध्यं श्रद्धयाऽन्वितः ॥
यः पठेत्पाठयेद्वापि नरो मुच्येत संकटात्।

72.5 संकट नाशक श्री भद्रकाली स्तोत्र

भगवान रुद्र बोले –"देवि आपकी जय हो चामुण्डे! भगवती ! भूतापहारिणी! एवं सर्वगते परमेश्वरी! आपकी जय हो , देवी !आप त्रिलोचना! भीमरूपा! वैद्या! महामाया! महोदया !मनोजवा! जया! जृम्भा! भीमाक्षी! क्षुभिताशया! महामारी ! विचित्रांगा! नृत्यप्रिया! विकराला! महाकाली ! कालिका! पापहारिणी! पाशहस्ता! दण्डहस्ता! भयानका! चामुण्डा! ज्वलमानास्या! तीक्ष्णदंष्ट्रा ! महाबला! शतयानस्थिता ! प्रेतासनगता! भीषणा! सर्वभूतभयंकरी! कराला! विकराला! महाकाला ! करालिनी ,काली ,कराली, विक्रांता और कालरात्री इन नामों से प्रसिद्ध है आपके लिये बारम्बार नमस्कार है।

इस स्तुति से पाठ कर्ता ब्रह्म को पाने का अधिकारी हो जाता है और सभी संकटों का नाश भी हो जाता है.

शिव जी को प्रेम से स्तोत्र शक्ति से वश में करने के लिए महान श्रीकाली मैया के गुप्त नाम भी श्रवण करें।

काली दक्षिण काली च कृष्णरूपा परात्मिका ।
मुण्डमाला विशालाक्षी सृष्टि संहारकारिका ॥

स्थितिरूपा महामाया योगनिद्रा भगात्मिका।
भगसर्पि पानरता भगोद्योता भागाङ्गजा ॥

आद्या सदा नवा घोरा महातेजाः करालिका ।
प्रेतवाहा सिद्धिलक्ष्मीरनिरुद्धा सरस्वती ॥

एतानि नाममाल्यानि ए पठन्ति दिने दिने ।
तेषां दासस्य दासोऽहं सत्यं सत्यं महेश्वरि ॥

ॐ कालीं कालहरां देवीं कंकाल बीज रूपिणीम् ।
कालरूपां कलातीतां कालिकां दक्षिणां भजे ॥

72.6 त्रैलोक्य विजय भद्रकाली स्तोत्र

नमः शंकरकान्तायै सारायै ते नमो नमः।
नमो दुर्गतिनाशिन्यै मायायै ते नमो नमः।।

नमो नमो जगद्धात्र्यै जगत्कर्त्र्यै नमो नमः।
नमोऽस्तु ते जगन्मात्रे कारणायै नमो नमः।।

प्रसीद जगतां मातः सृष्टिसंहारकारिणि।
त्वत्पादे शरणं यामि प्रतिज्ञां सार्थिकां कुरु।।

त्वयि मे विमुखायां च को मां रक्षितुमीश्वरः।
त्वं प्रसन्ना भव शुभे मां भक्तं भक्तवत्सले।।

युष्माभिः शिवलोके च मह्यं दत्तो वरः पुरा।
तं वरं सफलं कर्तुं त्वमर्हसि वरानने।।

फलश्रुति–

जामदग्न्यस्तवं श्रुत्वा प्रसन्नाभवदम्बिका।
मा भैरित्येवमुक्त्वा तु तत्रैवान्तरधीयत।।

एतद् भृगुकृतं स्तोत्रं भक्तियुक्तश्च यः पठेत्।
महाभयात् समुत्तीर्णः स भवेदवलीलया।।

स पूजितश्च त्रैलोक्ये त्रैलोक्यविजयी भवेत्।
ज्ञानिश्रेष्ठो भवेच्चौव वैरिपक्षविमर्दकः।।

लेखक का परिचय
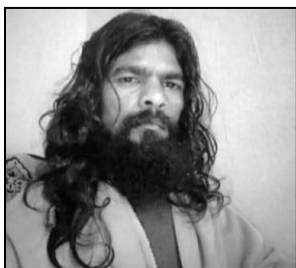
शंकराचार्यांश ब्रह्मानन्द अक्षयरुद
(राष्ट्र हितार्थ ईष्ट चरण पादुका योजना,मानस रत्न)
जन्म स्थान : गुना, मध्य प्रदेश
शिक्षा : B.E. computer science SSSIST (RGPV Bhopal) M.Sc., B.Ed.
पूर्व सेवा : Smile Foundation Delhi, M.P. Con shivpuri
सद्‌गुरु : महादेव (सन् 2005 सलकनपुर)

प्रकाशन :

1. **अक्षय आनन्द** एक अद्वितीय कृति (कार्तिक मास, सन् 2010),
2. ग्रन्थ रहस्य (सन् 2014)
3. भैरव गीता (जून 2021)
4. संसार में कितना सुख (फरवरी 2022)
5. जिज्ञासा और समाधान (अप्रैल 2022)
6. नारी जीवन एक संघर्ष (मई 2022)
7. संभोग से समाधि किस किसकी लगी (मई 2022)
8. महिमा (मई 2022)
9. स्तोत्र निधिवन भाग 1
10. स्तोत्र निधिवन भाग 2
11. शिव चरित मानस भाग 1
12. शिव चरित मानस भाग 2,
13. दुष्कर्म और नरक की यातनाएं
14. ब्राह्मण गीता
15. शास्त्रों के अद्‌भुत रहस्य
16. मैं ब्रह्म हूँ
17. शीघ्र कल्याणकारी कालखण्ड
18. देवी रहस्य,

आगामी प्रकाशन : शिव चरित मानस भाग 3 व भैरव गीता भाषान्तर, साँझ ढलेगी तेरी भी, हे वीर! ब्रह्मचारी, **राधा पुराण, ज्योति**, **आकर्षक–पिण्ड**, मुमुक्षा, अक्षयरुद्र एक आत्मकथा

इष्ट : पराम्बा भुवनेश्वरी

संकल्प : राष्ट्र को एकता और अखण्डता के सूत्र में बाँधने एवं आतंकवाद के नाश के लिए, राष्ट्र हितार्थ इष्ट चरण पादुका योजना के तहत एक करोड़ महामन्त्र लेखन का दिव्य संकल्प (85 लाख पूर्ण)

लक्ष्य : प्रत्येक जीव की मुक्ति अर्थात् कैवल्या में स्थित करना।

रुचिकर ग्रन्थ : विवेक चूड़ामणि, अवधूत और अष्टावक्र गीता, शिवगीता, जीवन्मुक्त व ईश्वरगीता योगवासिष्ठ, उपनिषद (ब्रह्मविद्या खण्ड), भर्तृहरि शतक व श्रीमद्‌देवीभागवत सहित सभी पुराण।

आध्यात्मिक उपाधि : अखिल भारत वर्षीय मानस प्रचार समिति नसीराबाद (राजस्थान) से प्राप्त ''मानस रत्न''।

वास्तव्य
पराशक्ति निवास कुंज, एल.आई.जी.–55 साड़ा कॉलोनी (फेस–1) तहसील–राघौगढ़ (473226)
जिला गुना (म.प्र.)
मोबाइल : 9340–53–7971, 88398–76–329, 8982529036